ध्वनि
का
अभिप्राय विषयक विज्ञान

THEORY OF PHONOSEMANTICS

प्रमोद कुमार अग्रवाल

PRAMOD KUMAR AGRAWAL

Go to Contents

ध्वनि
का
अभिप्राय विषयक विज्ञान

THEORY
OF
PHONOSEMANTICS

S O U N D S Y M B O L I S M

प्रमोद कुमार अग्रवाल

PRAMOD KUMAR AGRAWAL

Universal Theory Research Centre

Go to Contents

Publishers Universal Theory Research Centre,
D-9, Lal Bahadur Nagar East,
J L N Marg, JAIPUR (Rajasthan) INDIA

Author : Pramod Kumar Agrawal

E-mail : agrawalkpramod@gmail.com
pramod@soundmeanings.xyz
pramod@universaltheoryonline.com

Price : ₹ 585.00
$ 30.00

Copy Right© : All Right Reserved with the Author

ISBN : 978-81-920373-0-1

Year : 2010

Citation: Agrawal, P. K. (2010). *Theory of Phonosemantics*. ISBN 9788192037301.Universal Theory Research Centre. JAIPUR

Go to Contents

मन की बात

आज से करीब 35 वर्ष पूर्व जब हम स्नातक के विद्यार्थी थे, एक बात जो नित्य हमारी परेशानी का कारण थी, वो थी तकनीकी समीकरणों को स्मृतिबद्ध करना। विश्वविद्यालय के प्राचार्य गणों से इस सन्दर्भ में अनेक चर्चाओं के दौरान हम सबका एक ही मत था, कि कहीं कोई एक ही समीकरण है, जो कि प्रत्येक में मूल रूप में विद्यमान है। आध्यात्मिक मतों के अनुसार यही परिभाषा ब्रह्म की भी है। विज्ञान भाव में ब्रह्म एक समीकरण दिखाई देने लगा, तथा ब्रह्म के दर्शन का अर्थ उस मूल समीकरण को जानना ही हो गया।

जो मूल समीकरण है, जो आधारभूत वास्तविकता है, वही ब्रह्म है। प्रत्येक स्थान एवम् काल में मूल रूप से उपलब्ध होने से यह सत्ता सापेक्षता से परे है। अतः अगोचर है। सापेक्षता की शून्यता में सहजता की अनन्तता इतनी सहज है कि बुद्धि के समावेश से उत्पन्न विषमता में, अनेकत्व के आरोप से, अद्वैत की परिभाषा को खो देती है। अतः बुद्धि सृष्टि (अनेकत्व) को तो आप देख सकते हैं, परन्तु निरपेक्ष में सृष्टियता के मूल (एकत्व) को नहीं देख सकती।

इतना तो प्रमाणित है, कि ब्रह्म जो समग्र सिद्धान्तो का मूल है, वहाँ तक हम पहुँच तो नहीं सकते, परन्तु उस पथ के राही तो बन ही सकते हैं। जो भी हमें प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है, वह सत्य अवश्य है परन्तु वास्तविकता भी है या नहीं, इस विषय में भारतीय शास्त्रों का मतैक्य नहीं है। चाहे प्रत्यक्ष प्रमाण हो, चाहे अनुमान प्रमाण हो या शब्द प्रमाण। प्रत्येक में हमारी अवधारणाऐं ही पथ में अवरोध उत्पन्न करती हैं। कर्ता का बल अहंकारित अवधारणाओं से निर्मित है। अवधारणाओं के विलीनीकरण से बल के अभाव में क्रिया असहज हो उठती है। तथा वास्तविकता को जानना असंभव प्रतीत होने लगता है। अतः समग्र सिद्धान्त को जानने की राह इतनी सहज नहीं है जितनी प्रतीत होती है।

यह पथ किस प्रकार सुगम हो, यह विषय इस स्थान पर अपेक्षित नहीं। ***अपने को धारणाविहीन करने के प्रयास में दृश्य को बिना माने हुए जानने का प्रयास। अनेक "जाने हुए"***

में से एक तर्क का सर्जन, तथा अनेक तर्कों से मूल तर्क तक पहुंचने का प्रयास, यही ब्रह्म पथ या समग्र सिद्धान्त में स्वरति है।

जैसे जैसे हम समग्र सिद्धान्त के तनिक भी नजदीक पहुंचते हैं, प्रत्येक दुरूह प्रश्न सहज दिखाई देने लगता है। जब क्रियाओं में कारण, व कारणों में क्रियाएँ दिखाई देती हैं, तो अनेक अवधारणाएँ विलीन होने लगती हैं। प्रत्येक विषय में (एकात्म सत्ता) अद्वैत को देखने से अन्धेरा हटने लगता है।

भौतिक जगत्, वानस्पतिक जगत् व मानसिक जगत् तीनों पूर्णतया अलग होने के बाद भी अद्वैत के कारण एक ही तत्त्व से बंधे दिखाई देते हैं। जो प्रक्रियाएँ भौतिक जगत् में हैं, वे ही वानस्पतिक जगत् में हैं तथा वे ही मानसिक जगत् में भी हैं। मात्र सन्दर्भ का अन्तर है। भौतिक जगत् में जिसे 'गुण' कहा जाता है, मानसिक जगत् में उसे 'स्वभाव ' कहा जाता है। भौतिक जगत् का 'बल' मानसिक जगत् का 'साहस' है। भौतिक जगत् का 'न्यूट्रल', मानसिक जगत् का 'आलम्बन' है। भौतिक जगत् तथा दर्शन के तर्कों को समान रूप से देखने के प्रयास में शुद्ध ज्ञान आभासित होने लगता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में हम ध्वनि पर ही केन्द्रित हैं। भौतिक जगत् की ध्वनि, जिसकी स्वीकृति भौतिक जगत् में हो रही है, यहाँ से यह वानस्पतिक जगत् को हो रही है तथा तदुपरान्त मानसिक जगत् को हो रही है। ध्वनि में उपलब्ध वैविध्यता ही संदेश की स्पष्टता है व स्पन्दनता उसकी जीवन्तता है। ध्वनि की यह वैविध्यता अनेक स्वर व अनेक व्यन्जनों में प्रकृति ने हमें उपलब्ध करायी है। ***'क' से लेकर 'ह' तक के मूल व्यंजन किस प्रकार विभिन्न भाव उत्पन्न कर ध्वनि के अर्थ को प्रस्फुटित कर रहे हैं, इस को स्पष्ट करना ही ग्रन्थ का उद्देश्य है।*** *प्रत्येक अक्षर की ध्वनि को सैद्धान्तिक दृष्टि से स्थापित कर, उसका भावात्मक अर्थ स्थापित करने का एक प्रयास हम कर रहे हैं। शब्द कोई भी हो, उस शब्द में प्रयुक्त प्रत्येक अक्षर का अपना सुनिश्चित ध्वन्त्यात्मक अर्थ है तथा उसी अर्थ के साथ वह प्रयुक्त हो रहा है, यही स्थापित करना हमारा उद्देश्य है। एक संक्षिप्त उदाहरण हम ले रहे हैं। शब्द है 'इस'। यहाँ 'इ' का अर्थ है ''प्रत्यक्षात्मक'' तथा 'स' का अर्थ है ''व्यक्त''। ''प्रत्यक्षात्मक व्यक्त'' का अर्थ भी वही है जिसे हम 'इस' कह रहे है या अंग्रेजी में हम लें 'दिस', अर्थात् प्रस्तुत (द) का प्रत्यक्षात्मक (इ) व्यक्त (स), यहाँ भी अर्थ वही है।*

समग्र सिद्धान्त को अनेक स्थानों पर उद्धरित करने का उद्देश्य, मात्र ध्वनि के भाव को समझना ही है, समग्र सिद्धान्त को स्थापित करना नहीं। हमारे विचार में जो समग्र सिद्धान्त का स्वरूप है, उसके तर्कों को आधार मानते हुए हमने ध्वनियों के विभिन्न अर्थों को प्रस्तुत किया

है। परन्तु सिद्धान्त का आरोपण प्रमाण नहीं होता है। अतः तर्कों के प्रकाशन के साथ साथ हमने शब्दों को प्रमाण रूप में उद्धरित किया है। इस प्रमाण में हमने करीब 2600 शब्द लिये हैं। शब्दों में अनके उर्दू, फारसी व अंग्रेजी के साथ 20 अन्य भाषाओ को भी लिये गया है, परन्तु उदाहरण के प्रांगण में किसी के साथ भी पक्षपात नहीं है। हमने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि जिस एकात्म तर्क के आधार पर हम विभिन्न ध्वनियों के विभिन्न अर्थ लेकर, जब हम उनको शब्द में प्रयुक्त करते हैं तो परिभाषित अर्थ भी वही प्रकट होता है जो व्यवहार में हम जानते हैं, भाषा चाहे कोई भी हो।

कुछ प्रश्न अनुत्तरित भी हैं, जैसे हिन्दी में 'द' का ध्वनि अर्थ 'प्रस्तुत'' है। अंग्रेजी के 'द' का अर्थ भी 'प्रस्तुत' ही है। यहां तक तो सही है, परन्तु फिर भी प्रकृति ने 'द' का अर्थ प्रस्तुति ही क्यों रखा? सम्भवतय इसका उत्तर हमें तब प्राप्त होगा जब हम 'द' की ध्वनि तरंग के उतार चढ़ाव पर रिसर्च कर रहे होंगे। दूसरा प्रश्न जो मेरे मित्र अनेक बार मुझ से करते हैं कि प्रमोद! तुम्हे यह 'द' का अर्थ कैसे पता लगा? उत्तर सहज नहीं है। तर्कों व व्यवहार के झंझावातों से अक्षर की ध्वनि को उसके अर्थों में स्थापित करना सम्भवतः मेरे 'मैं' के द्वारा सम्भव ही नहीं है, निश्चय ही मेरे अन्तःकरण में स्थित गोविन्द व ब्रह्म स्थित प्रकृति की ही कृपा है।

लेकिन फिर भी, मैं आज भी पूर्ण रूप से यह कहने में अपने आप को अक्षम अनुभूत करता हूँ, कि जो कुछ भी किया गया है, वह पूर्ण हो गया है। यह एक प्रारम्भिक प्रयास है। अभी तो हम मनुष्यों के द्वारा बोले जाने वाली भाषा में ही इस ध्वनि संकेत विज्ञान को उपयोग में लेने का प्रयास कर रहे हैं। इसकी विकास प्रक्रिया में पशुओं व पक्षियों की ध्वनियों को भी कम्प्यूटर द्वारा विघटित कर उसके तात्पर्य को जानना सम्भव हो सकेगा। तब हम एक नये संसार में प्रवेश कर रहे होंगे। वनस्पति के सम्बन्ध में अभी तक भी हम ध्वनि को प्रमाणित नहीं कर पाये हैं। परन्तु हो सकता है यह कमी हमारी हो, या हमारे यंत्रों की हो। भौतिक संसार में शब्द तो हम सुनते ही रहते हैं, आवश्यकता है, उन ध्वनियों को सक्षम यंत्रों के द्वारा विघटित कर उनके संदेश को समझने की। आज की तारीख में कुछ भी कल्पना करना उचित नहीं है, परन्तु कभी एलियनस् से बात करने के लिये हमें इसी विज्ञान का सहारा लेना पड़ सकता है।

इस विषय का इतिहास बहुत ही संक्षिप्त है। सुकरात काल में ध्वनि को प्राकृतिक आधार देने का प्रयास किया गया था। उनके ही काल में यह समाप्त भी हो गया। अनेक बार प्रयास अवश्य हुए परन्तु भाषा में दर्शन (Phonosemantics) का प्रयास असफल ही रहा। यदि दर्शन को भाषा में देखने का प्रयास सफल होता तो प्रकृति की अपनी भाषा उद्भूत हो चुकी

होती। इस सारे व्यापार में मूल अवरोध व्याकरण ही रहा। व्याकरण बन्धन है। सत्य को जानने के लिये बन्धन अवधाराणाओं व पूर्वाग्रहों से मुक्ति ही एक मात्र मार्ग है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में 2500 शब्दों की जो शब्दावली दी गयी है, उसमें सर्व प्रथम मूल शब्द, फिर उसका शब्द कोष के अनुसार शाब्दिक अर्थ तथा उसके बाद शब्द में उपयोग लिये गये प्रत्येक अक्षर को स्पष्ट करने का प्रयास किया हुआ है। पुस्तक के अन्त में हिन्दी तथा IPA की एक पूर्ण अक्षरावली भी उपलब्ध है जो किसी भी शब्द का अर्थ निकालने में सहायक सिद्ध हो सकती है। ***पुस्तक में अनेक स्थानों पर ऐसे शब्दों का योग किया गया है जो हिन्दू आध्यात्मिक ग्रन्थों में बहुतायात में प्रयुक्त हुये हैं। उन शब्दों का प्रयोग विषय की आवश्यकता वश हुआ है। उनका हमारी वर्तमान धार्मिक/आध्यात्मिक मान्यताओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह शुद्ध विज्ञान भाव है। या उन्हें केवल विज्ञान भाव से ही देखा गया है।*** *इस प्रकार के अनेक शब्दों को हमने अलग से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। हिन्दू आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का अर्थ सम्भवतः इतना आसान भी नहीं है, लेकिन पाठक उसके भाव के पास वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पहुंच पाये, तो यह इस ग्रन्थ की अतिरिक्त उपलब्धि होगी।*

फिर भी शब्दों के रूढ़ अर्थ हमारी मान्यताओं में बसे रहते हैं, अतः वैज्ञानिक अर्थों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। आध्यात्मिक अर्थ व वैज्ञानिक अर्थ, दोनों को अलग अलग देखा जाना चाहिये।

एक आरोप जो इस ध्वनि विज्ञान में अनेक स्थानों पर सम्भव है, वह है एक ही ध्वनि के विभिन्न अर्थ होना। परन्तु यह आरोप उचित नहीं है। एक ही ध्वनि के विभिन्न अर्थ बताने का उद्देश्य ध्वनि को परिभाषित करना मात्र ही है। यदि हम इस सन्दर्भ में हठ ही कर लें कि हमें तो एक ध्वनि का एक ही अर्थ चाहिये तो हम कहेंगे कि 'क' का अर्थ 'क' ही तथा 'प' का अर्थ 'प' ही है। इसके अतिरिक्त कोई भी जबाव हमारे पास नहीं है। क्योंकि 'क' का स्वरूप तो 'क' ही है, परन्तु उसको हम जितनी तरह से भी परिभाषित करेंगे, वह उतने ही अर्थों में परिलक्षित होने लगेगा। ध्वनि का मूल अर्थ हमने प्रत्येक उपयुक्त स्थान पर वर्णित कर दिया है तथा उस वर्णन की जो आत्मा है वही उसका मूल स्वरूप है। उस मूल स्वरूप में प्रत्येक ध्वनि का एक ही अर्थ प्रकट होता है जो ज्ञान व अनुभूति का संयुंक्त विषय है।

सम्पूर्ण ध्वनि विज्ञान, ध्वनि की आत्मा का दर्पण मात्र है। तथा प्रकृति उसकी जननी है यदि मनुष्य ने अपनी सुविधानुसार किसी शब्द को किसी भाव के लिये निर्धारित कर दिया है तो वह इस विज्ञान के द्वारा अनुमोदित आवश्यक नहीं होगा। हाँ, आदिवासी व पुरातन भाषायें जो

स्वतः ही विकसित हुई हैं, उनके लिये ज्यादा उपयुक्त होगा। मूल शब्द यदि स्वतः विकसित नहीं है तो उसका अपभ्रंश ज्यादा प्राकृतिक होगा।

चूंकि ध्वनि का उद्देश्य पूर्णतया मनोभाव को प्रकट करना ही है अतः भौगोलिक स्थिति, तापमान, संस्कृति आदि का प्रभाव भाषा पर पड़े बिना नहीं रह सकता। उदाहरण के लिये भारत देश में पिता का अर्थ प्रत्यक्ष बन्धित/ सुरक्षा अंगीकार उन्मुख (पि) के भाव सत्ता (ता) है। तथा इंगलेंड में फादर' अर्थात् बिना शर्त अंगीकार उन्मुख (फा) की प्रस्तुति (द) में एकाग्र (र) है। आप देंखेगें कि भारत में पिता द्वारा पुत्र को आशीर्वाद सशर्त (बंधित) होता है तथा इंगलेंड में बिना शर्त होता है। यह संस्कृति का अन्तर है। यहाँ परिवार बन्धित है वहाँ परिवार स्वच्छन्द है। इसी प्रकार भौगोलिक स्थिति, तापमान आदि का प्रभाव भी इस प्रकार होता है कि हमारे वाक्यन्त्रों का विकास भी समान दिशा में नहीं होता।

प्रकृति प्रदत्त ध्वनियों में से हमने अपनी सुविधानुसार उतना ही अंश स्वीकार किया है, जो हमें आवश्यक दिखाई देता है। उदाहरण के लिऐ 'ऋ' व 'ऌ' को प्रायः हम भी भूल चुके हैं। चूंकि ऋ व ऌ मात्रा ही है, परन्तु व्यंजन के साथ मिलकर ये क्या स्वरूप बनाते हैं? यह हमारी कल्पना के भी बाहर है।

ग्रन्थ में एक ही सिद्धान्त की अनेक बार पुनरावृत्ति होती प्रतीत होती है, जो कि अनिवार्य है। ध्वनि विज्ञान और आध्यात्म दोनों को समान रूप से स्वीकार करती है उसके स्पष्टीकरण के लिये सिद्धान्तों का विस्तार आवश्यक है। यह पुनरावृत्ति नहीं है। क्योंकि विषय तक पहुंचने के लिये, मूल सिद्धान्त जो कि समग्र सिद्धान्त है उसकी सन्निधि निरन्तर अपेक्षित है। उससे विचार श्रृंखला भटकती नहीं है। हमारा ध्यान विषय पर ही केन्द्रित रहता है।

प्रमोद कुमार अग्रवाल

P r e f a c e

As an engineering student thirty-five ago, one problem that I always faced was remembering technical equations on discussions with students and professors. We ever concluded that there must be a 'one universal basis' for all technical equations. We referred to this 'common basis' as 'the universal theory'. On further study, I noted that according to spiritual concepts, the definition of 'BRAHM' is the same as that of the universal theory. Thus realization and understanding of 'BRAHM' became my life's objective.

The 'BRAHM' is the basic equation and the basis of an equation or the 'universal theory'. The 'BRAHM' is absolute and is always operative everywhere and anytime; however, it is not accessible due to the absence of relativity, and only the differences are visible.

It is well known that 'BRAHM', which is based on all principles, cannot be achieved or accessed; however, we can attempt to follow the path of attaining 'BRAHM'. Indian Philosophers do not have an opinion on whether what we perceive or feel is the truth or not. Whether it is 'visual proof', 'guess proof', or 'theoretical proof', our reservations /affirmations create obstacles in our journey towards realizing the truth, and the objective itself starts seeming impossible.

Einstein explained the 'movement of light' in the physical world, and other philosophers explained the 'flow of message' in the mental world. Some standard logics are selected. Using the universal principle, one can see the pure form of 'light' and 'message' in the filtrate.

In this book, I am focusing only on the 'sound' (dhwani). The physical sound, which is being produced by the physical world, is being

transferred to the biological world and finally transmitted to the psychological world. This sound comes out from the brain to the physical world. This sound emitted consists of several variations, which we call 'vowels' and 'consonants'. This book aims to explain the emotions provided by nature to all the 'vowels' and 'consonants'. I have attempted to establish every sound's meaning and the theoretical aspect with its' expressive aspect. Every alphabet has its specific expression, and this expression can be used in any reference. For instance, in Hindi, take the word 'इस'. /इ/ means 'in view' and /स/means 'to express', which means "expression within view". And in the English the word 'This'- /Th (द)/ means ' offered', /i (इ)/ means 'in view' and /s (स)/ means 'expression'. Thus meaning in both languages is the same.

My motive is not to explain the universal theory in detail but use it to understand 'the underlying meanings of sound'.

I have tried here to explain the different meanings for different sounds keeping the unified theory in mind. But, the application of principle cannot be treated as proof. Thus I have tried to publish the examples along with the logic as proof. I have used around Eighteen hundred words for proving the theory. The words are from Hindi, Urdu, Persian, English, and 25 other languages. I have attempted to do justice to every language. I have also attempted to prove that in every language, the alphabet used to form a word has the same meaning as the individual alphabet before forming the word.

Few questions such as why nature has given a particular symbol to that sound are still unanswered. For instance, why has nature symbolized /द / as 'offered'? These questions can possibly be answered only by doing researches on the waveform of different sounds.

Nature is presenting a number of sounds along with their meanings. The typical sound of dripping water, the special sound of the wind storm, the screeching sound of a pulley's rotating belt, all these sounds enter the ear, and we can very well distinguish them without much effort. We can co-relate the difference with our universal logic. For example, /k/ denotes consciousness; the / k^h / which is a mixed sound of /k/ and /h / would mean the end of consciousness because everything ends with the sound of /h /. Try and observe this logic in various sounds based on universal logic; you will get the result.

When we say 'the natural language', it does not mean that we are referring only to the human language. Natural language can include animal and physical language also. As and when we will start to understand animal and physical objects' sounds, we will be entering into a new era of sound science. The sound of the coin tells the worth of the coin. In olden times, expert car mechanics could identify faults in the engine by listening to the engine sound

Though it is unimaginable today, soon, by using this sound science, we will able to talk with the 'Aliens'.

The history of Phonosemantics is very short and can be traced to the 7th century (BC) when 'Yask' tried to give meaning to sound. There-after in the 5th century (BC), Socrates and Plato made some efforts, and even today, many philosophers are trying to open the secret of sound. This book is the first on the subject.

At the end of the book, a full vocabulary of the alphabets of Hindi and IPA (International Phonetic Association) is provided, which will assist you in finding the meaning of any word. ***This work also includes some common words frequently used in various Hindu spiritual books. These words are used out of need and requirement***

of the subject. These words are actually not related to our religious or spiritual beliefs. *The words used in the Hindu spiritual field do have very complicated meanings. These words explain the philosophy of life; however, it is not our subject.*

There are many words, which are affixed within our belief. In such a case, we should visualize the spiritual and scientific aspects separately.

Nature is the mother of the Phonosemantics. If human beings artificially have fixed any word for a particular expression, then that word may not be explained by our present theory. On the other hand, our theory will be more suitable for tribal and traditional languages that have been developed on their own.

The geographical situation, temperature, and tradition of that particular place, the difference in vocal cords always affect the pronunciations. But the difference in pronunciation does not affect Phonosemantics.

In this work, there may be a repetition of the same principle. This is not the repetition. To reach in the depth of the subject, the basic principle is required to be kept in mind continuously. This helps to keep us in touch with 'BRAHM (universal theory)'.

To facilitate the readers, I have used different fonts for different uses. मुख्य भाषा के रूप में हिन्दी English is used as the basic language. For DIACRITICAL MARKS, the universal theory of existence, हिन्दी भावार्थ, ɪnternational phonetic alphabet, English word meanings, English meanings, different fonts are used.

Pramod Kumar Agrawal

अनुक्रमणिका
(CONTENTS)

1.0 विषय परिचय (INTRODUCTION)		
1.1	ध्वनि की उपयोगिता (USES OF SOUND)	1
1.2	भाषाओं की व्युत्पत्ति (EVOLUTION OF LANGUAGES)	4
1.3	प्राकृतिक उद्‌बोधन की सीमायें (LIMITATION OF NATURAL PRONUNCIATION) (भाषा में स्वनिर्धारण, ध्वनि द्वारा अपूर्ण प्रस्फुटन, ध्वनि उच्चारण की सीमा)	5
1.4	ध्वनि विज्ञान का सांख्य प्रकरण (DIVISION OF SOUND) (ज्ञेयत्व व्यंजन, प्राकट्‌य मात्रा, विसर्जित उपलब्धि)	6
1.5	आत्म सत्ता, सत्ता का मानचित्र (LINE DIAGRAM OF EXISTENCE)	8
1.6	बहिर्गमन प्रक्रिया (OUT FLOW PROCESS)	11
1.7	अन्तर्गमन प्रक्रिया (IN FLOW PROCESS)	12
1.8	मनन प्रक्रिया (THOUGHT PROCESS)	12
1.9	क्षर ब्रह्म (PERISHABLE)	13
1.10	अक्षर ब्रह्म (IPMERISHABLE)	13
1.11	ध्वनि विज्ञान का न्याय प्रकरण (PROOF)	15
1.12	ध्वनि विज्ञान और व्याकरण (GRAMMAR)	16
1.13	ध्वनि विज्ञान और धातु शास्त्र (ROOT THEORY)	18
1.14	ध्वनि विज्ञान और श्रुति (THE VED)	22
1.15	ध्वनि विज्ञान और मन्त्र (CODE)	25

2.0 देव प्रकरण (DEV PRAKARAṆ)		
2.1	'क' से लेकर 'ङ' तक की ध्वनियों की स्थापना ; वाङ्मय कोष व विज्ञानमय कोष के मध्य देव पक्ष ; पुरुष की दर्शनोन्मुखता में प्रकृति की प्रदर्शनोन्मुखता के प्रणय की स्पष्टता ; दोनों की परस्पर अनुपब्लधता और देव संज्ञा का तम ; जिसका संकेत ङ है। 'क' व 'ख' रजोगुणी भाव तथा 'ग' व 'घ' सतोगुणी भाव ; सत् रज तम' के 'भूत, वर्तमान व भविष्य' के साथ सम्बन्ध ; 'क' व 'ख' तथा 'ग' व 'घ' में विद्या–अविद्या का द्वैत ;	27
2.2	देव सत्ता का रेखाचित्र	31
2.3	'क' से लेकर ङ तक की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उदाहरणर्थक विवरण।	32
3.0 पितृ प्रकरण (PITṚ PRAKARAṆ)		
3.1	च से लेकर ञ तक की ध्वनियों की स्थापना ; प्राणमय कोष व आनन्दमय कोष के मध्य पितृ पक्ष स्थित ; पुरुष का आलम्बन व प्रकृति का स्पन्दन दोनों का प्रणय ही संज्ञा की ओजस्विता ; दोनों की परस्पर अनुपलब्धता ही पितृ पक्ष का तम ; 'च' व 'छ' रजोगुणी भाव 'ज' व 'झ' तथा सतोगुणी भाव ; व्यावहारिकता में पितृ की संक्षिप्त व्याख्या ; 'च' व 'छ' तथा 'ज' व 'झ' दोनोंमें विद्या–अविद्या का द्वैत ;	48
3.2	पितृ सत्ता का रेखाचित्र	50
3.3	'च' से लेकर 'ञ' तक की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उदाहरणार्थक विवरण	51
4.0 ऋषि प्रकरण (ṚṢI PRAKARAṆ)		
4.1	'प' से लेकर 'म' तक की ध्वनियों की स्थापना ; आनन्दमय कोश व विज्ञान मय कोष के मध्य ऋषि पक्ष ; ऋषि का धर्म गन्धर्व का अंगीकरण ; 'आनन्द द्वारा विवरण विहीनता' तथा 'विज्ञान के द्वारा आलम्बन विहीनता' ही ऋषि पक्ष का तम ; 'प' अन्न के अंगीकरण में उन्मुख ; आनन्द के द्वारा सुरक्षा तथा विज्ञान द्वारा बन्धन ; 'फ' अपरीक्षित अंगीकृत उन्मुख ; 'ब' भूतकाल में होने से बन्धित या सुरक्षित होना 'भ' स्वच्छन्द अंगीकृत ; दोनोंमें विद्या–अविद्या का द्वैत	64
4.2	ऋषि सत्ता का रेखाचित्र	66

Go to Contents

4.3	'प' से लेकर 'म' तक की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उदाहरणार्थक विवरण	67
	5.0 गन्धर्व प्रकरण (GAṄDHARV PRAKARAṆ)	
5.1	'त' से लेकर 'न' तक की ध्वनियों की स्थापना ; प्राणमय कोश व वाङ्मय कोश के मध्य गन्धर्व ; गन्धर्व का धर्म ऋषि में प्रस्तुतिकरण ; प्राण द्वारा अ–वैविध्यता तथा वाक् द्वारा प्राण–विहीनता ही प्रस्तुत उत्सुक अन्न में स्थित तमस ; प्रस्तुतोन्मुख अवस्था जो कि 'त' व 'थ' रजोगुणी भाव है तथा 'द' व 'ध' प्रस्तुत हो चुके सतोगुणी भाव ; विद्या–अविद्या का द्वैत पूर्वानुसार ;	85
5.2	गन्धर्व सत्ता का रेखाचित्र	88
5.3	'त' से लेकर 'न' तक की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उदाहरणार्थक विवरण	89
	6.0 प्रवृत्ति प्रकरण (PRAVṚTI PRAKARAṆ)	
6.1	नाम–रूपात्मक सत्ता में सोम के कारण काल का प्रवेश ; 'ण' सत्ता का मूल तम भाव ही काल का कारण 'ट' व 'ठ' सोम की प्रवृत्त उन्मुखता ; 'ड' व 'ढ' ही प्रवृत्त हो चुका स्थापित हो चुकी ; विद्या–अविद्या का स्वरूप पूर्वानुसार ;	105
6.2	काल सत्ता का रेखाचित्र	107
6.3	ट से ण तक ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उदाहरणार्थक विवरण	107
	7.0 लोकात्मक प्रकरण (LOKĀṄTAR PRAKARAṆ)	
7.1	ध्वनि का प्रवाह, सूक्ष्म से स्थूल तक ; लोकानुसार व्यवहार–परिवर्तन ; देह, मस्तिष्क के सापेक्ष में असत् ; देह में संकेत प्रदान करने से मस्तिष्क की ध्वनि से मुक्ति ही स, श, ष, ह असत् में उपलब्धता ;	113
7.2	स, श, ष, ह ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उदाहरणार्थक विवरण	115
	8.0 मात्रात्मक प्रकरण (MĀTRĀTMAK PRAKARAṆ)	
8.1	क्रन्दसी त्रिलोकी में ''स्वर'' स्वलोक में स्थित ; महलोक में भाव प्राकट्यता में उपलब्ध विभिन्न मात्राओं से व्यंजन का स्वरूप निर्धारण ; 'ऋ' एकाग्रता में अंगीकरणात्मक, 'लृ' विस्तार में उपलब्धात्मक, 'इ' प्रत्यक्षात्मक, 'उ' छिपावात्मक तथा 'अ' सत् अभावात्मक अस्तित्व मात्रा का स्थित अक्ष ; इ व	134

	अ तथा उ व अ मिलकर 'य' तथा 'व' बनना ;	
8.2	अ से लेकर अः तक तथा य र ल व की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उदाहरणार्थक विवरण	135
	9.0 THE THEORY OF PHONOSEMANTICS	
9.1	INTRODUCTION	158
9.2	LIMITATIONS OF THE NATURAL PRONUNCIATION (Fabricated, Limited Description, Vocal Organ, Geographical & Social Situation)	159
9.3	SCIENCE OF PHONOSEMANTIC AND REALITY (The Difference Between Truth & Reality)	160
9.4	INTERNATIONAL PHONETICS	161
	10.0 THE UNIVERSAL THEORY OF EXISTENCE	
10.1	INTRODUCTION	163
10.2	MOTIVATING REASONS (Support, Analyzer, Activator, Vibrations, Variations)	165
10.3	EXPRESSING IMAGE (Acquire-Ability, Offer-Ability, Liveliness-Ability, Analyzing-Ability, Stimuli)	165
10.4	OTHER DEFINITIONS (The Existence, Life Wave, Entity Wave, Thought Process)	166
	11.0 THE UNIVERSAL THEORY AND THE PHONOSEMANTICS	
11.1	MODEL OF EXISTENCE (PLACEMENT OF ALPHABETS IN THE MODEL)	168
	12.0 PHONOSEMANTICS AND DIVISION OF SOUNDS	
12.1	INTRODUCTION (25 Consonants ; 5 Vowels ; 4 Consonants Of Physical Availability)	171
12.2	CONSONANTS	172

	Acquire-Ability { IDENTITY} (ṚṢI) [m p f b bʰ] Offer Ability {APPEARANCE} (GAṄDHARV) [n t (ɵ t̪ʰ) (ð d) d̪ʰ] Analyzing-Ability {CLARITY} (DEV). [ŋ k kʰ g gʰ] Liveliness-Ability, {LIVELINESS} (PITṚ) [ɲ tʃ tʃʰ (z dʒ) dʒʰ] Stimuli, {OCCUPIER} [ɽ t tʰ d dʰ] Physical Appearance. [s ʃ s̺ h]	
12.3	VOWELS Basic Vowels [ʊ ɪ rʲ lʲ ə ãː əh] ; Established/Continuous [uː iː ɑ rʲː lʲː] ; Composite Vowels [e (æ ɛ) o ɔ] ; Other Combinations [eː ɛː oː ɔː a aː ɜː ʌ ɒ]	176
12.4	CONSONANTS MADE OF VOWELS (Hidden (v) ; Visible (j) ; Concentrated (r) ; Expanded (l) : Other Unknown Consonants)	179
13.0	**INTERNATIONAL PHONOSEMANTICS USING I P A**	
13.01	ENGLISH	181
13.02	ARABIC	201
13.03	BULGARIAN	203
13.04	CHINESE	204
13.05	CATALAN	205
13.06	CROATIAN	206
13.07	CZECH	207
13.08	DUTCH	208
13.09	FRENCH	209
13.10	GALICIAN	209

13.11	GERMAN	211
13.12	HEBREW	212
13.13	HINDI	213
13.14	HUNGARIAN	215
13.15	JAPANESE	217
13.16	KOREAN	218
13.17	FARSI	220
13.18	EUROPEAN	221
13.19	SINDHI	222
13.20	SWEDISH	224
13.21	SLOVENE	225
13.22	THAI	226
13.23	TABA	227
13.24	TURKISH	228
13.25	TUKANG BESI	230
14.0 अक्षरावली (MEANINGS OF SOUNDS)		
14.1	हिन्दी वर्णमाला की ध्वनियाँ – SOUNDS OF HINDI ALPHABET	231
14.2	व्यंजन के साथ संयोजित स्वर – VOWELS ALONGWITH CONSONANTS	238
14.3	अन्य संकेत – OTHER INDICATIONS	239
14.4	IPA SOUNDS AND THEIR MEANINGS - IPA वर्णमाला की ध्वनियां और उनके अन्तर्निहित भाव	241
14.5	VAIDIK WORDS AND THEIR MEANING -वैदिक शब्द ध्वनियां और उनके अन्तर्निहित भाव	247
14.6	NON-ENDING PROCESS…. –आगे अभी और….	254

1.0 विषय परिचय

1.1 ध्वनि की उपयोगिता

अनुपयोगी जीव स्वतः ही विलुप्त हो जाता है, यही डार्विन का मूल सिद्धान्त है। सभी अस्तित्व कहीं ना कहीं जीव हैं। समग्र सिद्धान्त की दृष्टि में यह उक्ति वानस्पतिक जीवों पर ही लागू न होकर सभी पर लागू है। अतः डार्विन के मूल सिद्धान्त को हम कहें कि, अनुपयोगी अस्तित्वों (भौतिक, वानस्पतिक, मानसिक) का स्वतः ही विलोप, यही सिद्धान्त है। ऊर्जा (भौतिक, वानस्पतिक, मानसिक) भी एक अस्तित्व ही है।

यह प्रकृति जितनी भी प्रकार की भौतिक ऊर्जाओं को उत्पन्न, स्थित व समाहित करती है, उनमें से प्रत्येक का कहीं ना कहीं उपयोग है। मूल रूप से ऊर्जायें ही प्रत्येक प्रक्रिया के संचलन के लिये उत्तरदायी हैं। गर्मी, चुम्बक, विद्युत् गति आदि ऊर्जायें सभी स्थूल पदाथों के साथ कहीं न कहीं समाहित होकर इस प्रकृति को चलाती हैं। ध्वनि भी एक ऊर्जा है। क्या इसका कोई उपयोग नहीं? सिद्धान्त रूप से यह संभव नहीं है। कहीं ना कहीं इसका उपयोग अवश्य है, अन्यथा डार्विन के मूल सिद्धान्त के अनुसार प्रकृति ने इसे कभी का समाप्त कर दिया होता।

आखिर ध्वनि करती क्या है? सोनाग्राफी इसका अच्छा उदाहरण है। एक संदेश जो देह के अन्दर के अवयव हमें देना चाहते हैं, वह ध्वनि के माध्यम से सामने आ रहे हैं। ध्वनि तरंग का द्रव्यात्मक बोध कुछ भी ना हो, परन्तु वह एक वाहक का काम तो करती ही है। ध्वनि के अन्य उपयोग अभी रहस्य ही हैं, परन्तु संदेश पहुंचाने का कार्य तो ध्वनि करती ही है। इसमें कहीं कोई संदेह नहीं है।

जब से यह सृष्टि उत्पन्न हुई है, ध्वनि का अस्तित्व स्वप्रमाणित है। अब यदि ध्वनि का अस्तित्व है तो उसकी उपयोगिता भी साथ ही प्रमाणित होती है। सम्भवतया हम आज भी यह नहीं जान पाये, कि एक भौतिक पदार्थ दूसरे भौतिक पदार्थों को क्या संदेश देता है, परन्तु संदेश के प्रसारण व उसकी स्वीकृति को नकारा नहीं जा सकता। संदेश के प्रसारण में प्रत्येक ध्वनि का अपना विशिष्ट अर्थ है। इस अर्थ के माध्यम से ही संदेश प्रसारित होते हैं। यह अर्थ प्रकृति ने भौतिक पदार्थों को दिये हैं। अब चूंकि प्रकृति एक ही है अतः सम्पूर्ण सृष्टि में जो विशिष्ट अर्थ प्रकृति ने विभिन्न भौतिक पदार्थों को दिये हैं, वे समान ही है।

पत्थर से पत्थर टकराइये, जो स्वर भारत में निकलता है, वही स्वर अमेरिका में भी निकलता है। दोनों पत्थर एक ही संदेश देते है। कारण स्पष्ट है कि एक बात कहने के लिये दोनों पत्थर एक ही भाषा का उपयोग कर रहे हैं। भौतिक पदार्थ किस प्रकार अपनी बात ध्वनि के माध्यम से कहते हैं, इसका एक उदाहरण हम लेते हैं। ऊपर से पानी की एक बूंद पत्थर पर गिरी, गिरते ही दो प्रतिक्रियाऐं एकसाथ हो रही है। पहली है पानी के अणु विपरीत दिशा में प्रवृत्त हो रहे है, तथा दूसरी है पत्थर द्वारा पानी को आश्रय पदान करना। प्रवृत्त का संकेत 'ट' व आश्रय का संकेत 'प' होने से ध्वनि प्रकट हो रही है वह है 'टप'।

जब आंधी आती है, आप ध्यान दें कि उसमें उठने वाला स्वर भी आंधी शब्द का घोष करता प्रतीत होता है। अब आप आंधी शब्द को लें। 'आ' अर्थात् सत्ता 'ँ' अर्थात् विषमता, 'ध्' अर्थात् धारणात्मक व 'ई' अर्थात् बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई। अर्थात् (हवा) की सत्ता में, जो विषमता (दबाव) है, उसमें धारणा (धूल) का जो प्रत्यक्षी करण हो रहा है, वही आंधी है।

जब भूकम्प आता है, उस समय पृथ्वी के अन्दर से आती हुई ध्वनि (घड्–घड्–घड्.....) 'घ' व 'ड़' पर आधारित होती है। 'घ' का अर्थ कृत्य की सीमितता या घिरा हुआ तथा 'ड़' अर्थात् प्रवृत्त होया हुआ। पृथ्वी के अन्दर जो शिलायें चलायमान हो रही हैं वे स्वतन्त्र नहीं हैं। उनकी सीमितता का भाव 'घ' से है, व अन्तःस्थित दबाव में प्रवृत्त होना 'ड़' से है।

कहने का अर्थ यह है कि, प्रकृति कोई भी शब्द करती है तो उस शब्द के साथ ही वह यह संदेश भी देती है कि क्या किया जा रहा है, व क्यों किया जा रहा है।

दूसरे शब्दों में कहें, तो प्रकृति का प्रत्येक अंग अपने प्रत्येक कृत्य के लिये दूसरे अंगों को संदेश भेजता है। क्या हम उन सब सन्देशों को समझ पाते हैं? ध्वनि के इन विविधतापूर्ण अर्थों तक पहुंचने का ही हमारा प्रयास है।

लोहे की शिला पर लोहे की गोली फेंकिये, साथ ही चाँदी की शिला पर चाँदी की गोली फेंकिये। दोनों की ध्वनियों में अन्तर होगा। लोहे के टकराते ही जो ध्वनि उत्पन्न होगी उसमें ट, ल के साथ में 'न' का समावेश होगा। जैसे ही लोहे की गोली टकरायेगी, उछल कर पलट कर आयेगी। उछल कर पलट कर आना ट (प्रवृत्त) का ''ल'' (विस्तार) है परन्तु 'न' उसका अपना परिचय है। लोहा सघन है यह सघनता 'न' में निहित है, तो उसका तेजी से पलट कर आना, हमें यह बताने का प्रयास कर रहा है कि मैं अपने संस्कारों में दृढ़ हूं, मुझे बदला नहीं जा सकता। समर्पण मेरा स्वभाव नहीं है, अतः पलट कर तेजी से आ रहा हूं। और एक बात जो मुख्य है, वह यह है कि मेरी ध्वनि 'न' पर आधारित है, अर्थात् मैं पौरुष का प्रतिबिम्ब हूँ व समर्पण से रहित हूं। कठोर व भंगुर होने से अपने आप को बदल नहीं सकता। मुझ से निर्मित आश्रय में कमजोर पदार्थ सुरक्षापूर्वक रह सकते हैं। मैं अन्य को सुरक्षा देने के लिये ही बना हूं। मैं 'न' की ध्वनि में ''रमण'' कर रहा हूं। अतः आप मुझे 'नर' कह सकते हैं।

उपर्युक्त 'न' के विपरीत यदि किसी मुलायम धातु से धातु टकराती है, तो ध्वनि 'म' के समान हो जाती है। गोली कम उछलती है, अपनी आकृति में भी बदलाव करती है। कारण स्पष्ट है कि 'म' प्रकृति का भय सूचक संकेत है तथा लचीलापन इसका स्वभाव है। उसे आश्रय चाहिये, अतः पलट कर आने की गति कम है।

एक कुत्ते को पत्थर मारिये, वह भय (भीरुता) के कारण म्यॉ-म्यॉ की ध्वनि करेगा। वही कुत्ता जब गुर्राता (भौंकना नहीं) है तो नह्रं–नह्रं की ध्वनि उत्पन्न करता है। 'म' भय का सूचक है तथा 'न' शौर्य का सूचक है।

प्रकृति ने अनेक ध्वनियों के साथ–साथ अर्थों को प्रस्तुत किया है। पानी से टपकता 'ट', पहिये से घिसती हुई बेल्ट व उससे निकलती ध्वनि ''ची''का स्वर। जब आपके कान खुले हों तो हर ध्वनि में आप उसके अर्थ को खोज सकते हैं। एक चिड़िया जब अपने बच्चों को खाना खिलाती है तो चिड़िया कहती है चीं–चीं तथा बच्चे कहते हैं चुं. –चुं.। आप उनके भाव देखिये व अर्थ निकालिये। फिर आप अपने एकात्म तर्क से उसका सामंजस्य देखिये। संगति बैठाने का प्रयास नहीं कीजिये परन्तु जो संगति सहज ही बैठ रही है, उसी संगति को अन्य सन्दर्भो में प्रयुक्त कर देखिये। उदाहरण के लिये

यदि 'क' का अर्थ चेतन है तो 'ख' जो कि 'क' व 'ह' का मिश्रण है का अर्थ चेतन की समाप्ति ही होगा। क्यों होगा? क्योंकि 'शब्द' की समाप्ति तब ही होती है जब हमारे मुख से 'ह' निकलता है। अनेक ध्वनियों में दोनों को एक साथ देखने का प्रयास कीजिये। विभिन्न ध्वनियों के कारणों में जा कर आप ध्वनियों के प्राकृतिक अर्थ समझ सकते हैं। और यही हमारा उद्देश्य है। दर्शन के लिये एकात्म तर्क में सत्य को स्थापित करने के अनेक रास्ते हैं, यहां उनको पूर्णरूप से स्थापित करना हमारा उद्देश्य नहीं है।

1.2 भाषाओं की व्युत्पत्ति

प्रकृति द्वारा प्रत्येक भाव के लिये एक विशेष ध्वनि निश्चित की गयी है। वह चाहे भौतिक पदार्थ के रूप में हो, अथवा वानस्पतिक पदार्थ के रूप में या मानसिक पदार्थ हो, वह जब भी उद्बोधन करती है तो अपनी विशिष्ट शैली में ही करती है। प्रकृति सहजता में स्थित रहती है। अतः जिस प्रकार प्रकृतिप्रदत्त बहिर्गमन सहज है, उसी प्रकार प्रकृति प्रदत्त अन्तर्गमन भी सहज ही है। सुनने वाले तथा बोलने वाले दोनों, एक ही प्रकृतिप्रदत्त सहजता में स्थिर रहते हुऐ भावों का आदान–प्रदान करते हैं। अतः एक ही भाव के लिये जो ध्वनि सुनने वाले के लिये सहज है, वही ध्वनि बोलने वाले के लिये भी सहज है। अनेकानेक ध्वनियों में से जैसे ही भावसम्मत ध्वनि प्रकट होती है, तो बोलने वाला तथा सुनने वाले दोनों ही सहज अनुभूति करते हैं। यह सहजता उन्हें पुनः उसी ध्वनि को उच्चारित करने के लिये प्रेरित करती है। धीरे–धीरे ध्वनि व भाव दोनों एकाकार होने लगते हैं व भाषा का बीजारोपण हो जाता है।

कल्पना कीजिये, एक शिशु व एक माता, दोनों कोई भाषा नहीं जानते हैं। शिशु भूख से विह्वल होकर जब रोता है तो ध्वनि उत्पन्न होती है ''अम्''। सुनने वाले या बोलने वाले दोनों के लिये यह कोई भाषा नहीं हैं, परन्तु ''अम्'' ध्वनि की, न केवल मानसिक अपितु दैहिक प्रेरणा भी, सुनने वाली माता को सहज प्रकृति, से शिशु को दूध उपलब्ध कराने के लिये प्रेरित करती है। एक ध्वनि ''अम्'' और वार्तालाप समाप्त। धीरे धीरे 'शिशु' सीख जाता है कि 'म' का उच्चारण तथा उपलब्ध होता हुआ पदार्थ एक ही वस्तु के दो रूप हैं। उपलब्ध होता पदार्थ (दूध) व ध्वनि 'म' एकाकार हो जाते हैं। इसी प्रकार जब अनेक ध्वनियाँ अनेक भावों के साथ एकाकार होती हैं तो नाम (ध्वनि) व रूप (भावों) के संयोग से भाषा की सत्ता जन्म लेने लगती है।

भौगोलिक सन्दर्भ, कंठनलिका की विविधता, काल विशेष की आवश्यकता आदि अनेक कारण हैं जो भाव व ध्वनि में सीमितता उत्पन्न करते हैं तथा जो भाषाओं में विविधता का कारण है।

1.3 प्राकृतिक उद्‌बोधन की सीमाएँ

सहजता में प्रस्फुटित होता हुआ कोई भी शब्द प्राकृतिक ही होगा। उसकी ध्वनि का अर्थ वही होगा जो प्रकृति के द्वारा निर्धारित है परन्तु मनुष्य भी जब कोई उद्‌बोधन करता है, तो वह दो तरह की ध्वनियों के मिश्रण का उपयोग करता है। पहला है सहज एवं प्राकृतिक व दूसरा है स्वनिर्धारित। हम स्वनिर्धारित ध्वनियों की चर्चा नहीं कर रहे हैं, परन्तु यह बात स्पष्ट हैं, कि इस स्वनिर्धारण के कारण हम शब्दों के पूरे अर्थ नहीं समझ पाते। अतः किसी भी ध्वनि का अर्थ करने में हमें इस बाधा को स्वीकार करना पड़ेगा।

दूसरी एक बाधा और रहती है कि प्रकृति प्रत्येक संज्ञा को ध्वनि द्वारा पूर्णतया परिभाषित नहीं कर सकती। प्रत्येक संज्ञा का विवरण असीम होता है, तथा दृष्टि ससीम होती है। संज्ञा का जो भी वर्णन होगा, वह संज्ञा के एक ही पहलू को स्पष्ट करेगा। उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति लम्बा भी है, व काला भी है। तो कोई दृष्टा उसे लम्बूराम कहेगा, कोई कालूराम कहेगा। निश्चय ही लम्बा व काला पर्यायवाची नहीं है। लेकिन फिर भी वे एक ही संस्था को उद्‌बोधित कर रहे हैं। एक उदाहरण लीजिये, 'काला', इस का अर्थ है, स्पष्टोन्मुख करने वाली सत्ता (का) में विस्तार की सत्ता (ला)। अब चूंकि 'का' ही वह संस्था है, जो प्रदर्शित प्रकृति को दर्शन के द्वारा स्पष्ट करने में उत्सुक रहती है, तथा 'का' को विस्तारित करने वाला 'ला' होने से 'काला' पुरुष का सूचक होता है। पुरुष श्यामवर्ण इसलिये भी होता है कि वह स्वयं में माया, अर्थात् प्रकाश से निर्मित नहीं होता वरन प्रकाश को स्वीकृति देता है। अब आप ब्लेक को देखें। ब्लैक का अर्थ है बन्धित अंगीकृतात्मक (ब्) के इंगित उपलब्ध विस्तार (ले) का स्पष्ट–उन्मुख (क)। अर्थात् जो बन्धित अंगीकरण के उपलब्ध विस्तार की चेतना है। अर्थात् बन्धित करने वाला है। एक ही रंग को भारत में 'काला' कहा गया, अंग्रेंजों ने उसे 'ब्लेक' कहा। हमने कहा काला वह है जो विविध प्रकार की स्पष्टता (रंगों) को विस्तार दे सकता है, तथा अंग्रेजों ने स्व में बन्धित करने की चेतना के विस्तार को ही ''ब्लेक'' माना। दोनों ने एक ही रंग को अलग अलग दृष्टि से देखा तथा अलग अलग नाम दिये। लेकिन फिर भी स्पष्ट है कि काला रंग काला ही है।

उपर्युक्त के अलावा, एक बन्धन और है, और वह है, हमे उपलब्ध कंठनलिका, जहां से ध्वनि निस्सरित होती है। कोई भी जीव सभी ध्वनियों को उच्चारित नहीं कर सकता। हमारे कंठ के अनुसार, भारत उपमहाद्वीप में तैतीस व्यंजन व सात स्वर उच्चारित किया जाना सम्भव है। यह हमारी प्राकृतिक सीमा है। हम इस सीमा में ही भाव का प्रदर्शन कर सकते हैं। अतः सहजतम उच्चारण के बाद भी हम भाव के स्वरूप को सटीक रूप से प्रकट नहीं कर सकते। लेकिन यह मनुष्य की सीमा है प्रकृति की नहीं। यह सीमा भारत में कुछ और है तथा अमेरिका में कुछ और। अनेक बार आश्चर्य के साथ देखा जाता है, कि अनेक ध्वनियां पाश्चात्य देशों में वे ही हैं जो कि भारत में हैं। उदाहरण के लिये 'माँ' 'मदर', 'पिता', 'फादर' आदि आदि। अनेक विद्वानों ने इसका कारण भाषा के भौगोलिक विस्तार को बताया है। परन्तु मेरी मान्यता है कि यह मात्र प्रकृति के उद्‌बोधन के कारण है, जो कि सारे विश्व में एक ही है।

सारा विश्व ही क्यों, यदि सुदूर अन्तरिक्ष से कोई जीव पृथ्वी पर आता है, तो उसकी भाषा भी हमारी प्राकृतिक भाषा के अनुरूप ही होगी।

अनेक विद्वानों ने प्राकृतिक भाषा को मूल भाषा मानने का प्रयास किया है, परन्तु भाषा की स्पष्टता के अभाव में इसे प्रमाणित करने में असफल रहे हैं।

1.4 ध्वनि विज्ञान का सांख्य प्रकरण

मूल रूप से ध्वनियाँ तीन भागों में विभाजित हैं।

प्रथम है– **व्यंजन,** द्वितीय है **स्वर** (मात्रा), व तृतीय है **उपलब्धि**। 'व्यंजन' ज्ञेयत्वा है। ''स्वर'' प्राकट्यता व 'उपलब्धि' विसर्जन है।

ज्ञेयत्व व्यंजन 'क' से शुरु हो कर 'म' तक हैं। जो कि प्रकृति के मूल 25 गुणो को दर्शाते हैं। यदि इनमें मात्रा का समावेश न हो, तो इनका ध्वनित होना असम्भव होता है। मात्रा के अभाव में यह बाद वाले व्यंजन पर अवलम्बित होकर, अपनी ध्वनि को प्रकाशित करने में सक्षम हो जाते हैं। जैसे 'ध्वनि' में ध् में मात्रा का अभाव है, लेकिन यह 'व' की मात्रा का उपयोग कर लेता है। मात्रायुक्त व्यंजन स्थापित तो है, परन्तु स्थूलत्व प्राप्ति के बिना यह प्रकट नहीं है। सत्य, सत्यलोक से विसर्जित होता हुआ, 'तपःलोक' में मनन को प्राप्त होता हुआ, जनःलोक में व्यंजित होता हुआ, महःलोक में मात्रात्मक होता हुआ, स्वर्लोक में स्थापित हो जाता है। यहाँ भुवः लोक से स्थान प्राप्त करता (स्थूलता प्राप्त करता) हुआ, भूःलोक में प्रकट हो जाता है।

सांख्य की दृष्टि से 25 व्यंजन पांच भागों में विभाजित हैं। 'क, च, ट, त, प' **रजोगुणी–विद्या** भाव है। 'ख, छ, ठ, थ, फ' **रजोगुणी –अविद्या** भाव है। 'ग, ज, ड, द, ब' **सतोगुणी–विद्या** भाव है, 'घ, झ, ढ, ध, भ' **सतोगुणी–अविद्या** भाव है तथा 'ङ, ञ, ण, न, म' **तमोगुणी** भाव है। इन 25 व्यंजनों में से 'क, ख, ग, घ, ङ' विज्ञान व वाक् के मध्य **देवपक्ष** में स्थित हैं। 'च, छ, ज, झ, ञ' आनन्द व प्राण के मध्य **पितृपक्ष** में स्थित हैं। 'ट, ठ, ड, ढ, ण' सोम के प्रभाव से काल में **प्रवृत्तिपक्ष** हैं। 'त, थ, द, ध, न' वाक् व प्राण के मध्य **गन्धर्वपक्ष** हैं, तथा 'प, फ, ब, भ, म' आनन्द व विज्ञान के मध्य **ऋषिपक्ष** है। 'क्ष' जो कि 'क, च, ह' से मिलकर बनता है, योग्यता की उपलब्धता को बता रहा है। **'त्र'** जो 'तर' से मिलकर है पुरुष व प्रकृति के मध्य एकाग्रता (ध्यानावस्था) को दिखा रहा है। 'ज्ञ' जो कि ज तथा ग से मिलकर बना है, ज्ञेय व ऊर्जा के सम्मेलन से होने वाला प्रस्फुटन है।

उपर्युक्त सत्, रजस् व तमस्, क्रमशः भूतकाल, वर्तमानकाल व भविष्य काल मिलकर में रहते है। प्रत्येक प्रक्रिया भविष्य अर्थात् तमस् के कारण, वर्तमान में रजोगुणी होती हुई, भूत में सत् को प्राप्त करती है।

तकरीबन सारे भाव व्यंजनों में निहित रहते हैं। प्रत्येक व्यंजन मूल रूप से दूसरे व्यंजन से समकोणिक अवस्था में रहता है, अर्थात् एक दूसरे के लिये सूक्ष्म है। उपर्युक्त व्यंजन तीनों गुण सत्, रजस्, व तमस् में विभाजित हैं व अस्तित्वगत होने में विद्या–अविद्या के द्वैत से युक्त हैं। कोई भी संज्ञा का निर्माण उपर्युक्त सम्पूर्ण व्यंजनों के संयोग से होता है, लेकिन प्रधानता जिसकी होती है, उसी गुण से उसका परिचय किया जाता है। **'ककार'** देवपक्ष को, **'चकार'** पितृपक्ष को, **'तकार'** गन्धर्वपक्ष को, **पकार** ऋषिपक्ष को व **'टकार'** प्रवृतिपक्ष को बता रहा है। उपर्युक्त पांचों के बिना कोई भी संज्ञा प्रकट हो ही नहीं सकती। उदाहरण के लिये एक शब्द लेते हैं 'दान' अर्थात् प्रस्तुति की सत्ता (दा) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न)। अब यदि दान दिया जा रहा है तो बिना 'अंगीकृत करने वाले' के तो होगा ही नहीं। ऋषिपक्ष उसे अंगीकृत कर रहा है। जो भी प्रक्रिया है उसकी स्पष्टता देवपक्ष हैं, व ओजस् पितृपक्ष है। प्रक्रिया में, काल के समावेश से, क्रिया प्रवृत्त हो रही है, यही प्रवृत्ति पक्ष है। कहने का अर्थ है कि 'दान' कहने मात्र से सम्पूर्ण अक्षरसाम्राज्य उसका सहभागी है। परन्तु प्रधानता 'दान' में ''प्रस्तुति की सत्ता'' अर्थात् गन्धर्वपक्ष के सत् (दा) के साथ में गन्धर्वपक्ष के तमस् (न) का जुड़ाव है। इस प्रकार संज्ञा का परिचय वही है, जिसे प्रस्तुत किया जा रहा है।

सांख्य की दृष्टि से स्वर अर्थात् मात्रा दो भागों में विभाजित हैं। प्रथम हैं **दृश्य मात्रा,** द्वितीय है **ध्यान मात्रा**। दृश्य मात्रा पुनः तीन भागों में विभाजित है, बाह्यमुखात्मक दृश्य मात्रा **(इ)** अन्तर्मुखात्मक दृश्य मात्रा **(उ)** स्वमुखात्मक दृश्य मात्रा **(अ)** इसी प्रकार ध्यान मात्रा भी तीन प्रकार की है। एकाग्र अंगीकरण ध्यानमात्रा **(ऋ)** उपलब्ध विस्तार विहंगम ध्यानमात्रा **(ऌ)** तथा व्यंजन उपलब्ध रिक्तता की मात्रा **(अं)** इस प्रकार 'अ' दो प्रकार से अर्थ देता है। प्रथम स्वमुखात्मक दृश्य मात्रा है तथा द्वितीय व्यंजन के लिये रिक्तता (अभाव) अर्थात् स्थान उपलब्ध कराने को आतुर, परन्तु फिर भी व्यंजन का अभाव।

इन पांच स्वरों के अलावा, अन्य जो भी **स्वर** हैं, वे उपर्युक्त पाँच स्वरों के विभिन्न समीकरणों से प्रभावित/निर्मित हैं। उदाहरण के लिये, **'ए'** का निर्माण 'इ' व 'अ' के संयोग से है, लेकिन दोनों मिलकर भी स्वर एक ही है। अतः हम 'ए' को कहेंगे 'प्रत्यक्षित (प्रत्यक्षमाण) सत्' तथा **ऐ** को कहेंगे 'अस्तित्वगत प्रत्यक्ष'। इसी प्रकार **'य'** जो कि 'इ' व 'अ' के ही संयोग से बना हुआ व्यंजन है, व्यंजन होने से गुण/गति/द्रव्यबोध से युक्त है, जिसे हम कहेंगे 'प्रत्यक्ष' होना।

उपर्युक्त के अलावा दो मात्राऐं और भी हैं, वह हैं तमस् मात्रा **(अं)** व कर्ता मात्रा **(अः)**

इस प्रकार मूल रूप से हम स्वरों की संख्या सात मानेंगे।

तृतीय है **उपलब्धि**। उपलब्धि किसे हो रही है, क्यों हो रही है? उपलब्धि की आकांक्षा ही मूल काम वेग है, जहां से सारी प्रक्रिया शुरू होती है। व्यक्त वैविध्यता की उपलब्धि **'स'** है, ऊर्जित अहसास की उपलब्धि **'श'** है व व्याप्ति की उपलब्धि **'ष'** है, चूंकि कामवेग सब स्थानों पर व्याप्त ही रहता है। अतः कामवेग का संकेत भी 'ष' ही है। जैसे ही संकेत आत्मसंस्था से बाहर निकलता है, वह मूल असत् **'ह'** को उपलब्ध हो जाता है, व सारा प्रपंच समाप्त हो जाता है। इस प्रकार उपलब्धता की संख्या को चार मानेंगे।

1.5 आत्म सत्ता

आत्मसंस्था में 5 प्रकार के कोश होते हैं जिसमें प्रथम है, **विज्ञानमय कोश,** द्वितीय है **वाङ्मय कोश,** तृतीय है **प्राणमय कोश**, चतुर्थ है **आनन्दमय कोश,** तथा पांचवा केन्द्र में है, **मनोमय कोश**। मनोमय कोश केन्द्र में है, जहां प्रत्येक कर्म का संचालन होता है, तथा इन्द्र का स्थान है। अतः वहाँ अर्जुन स्थापित है।

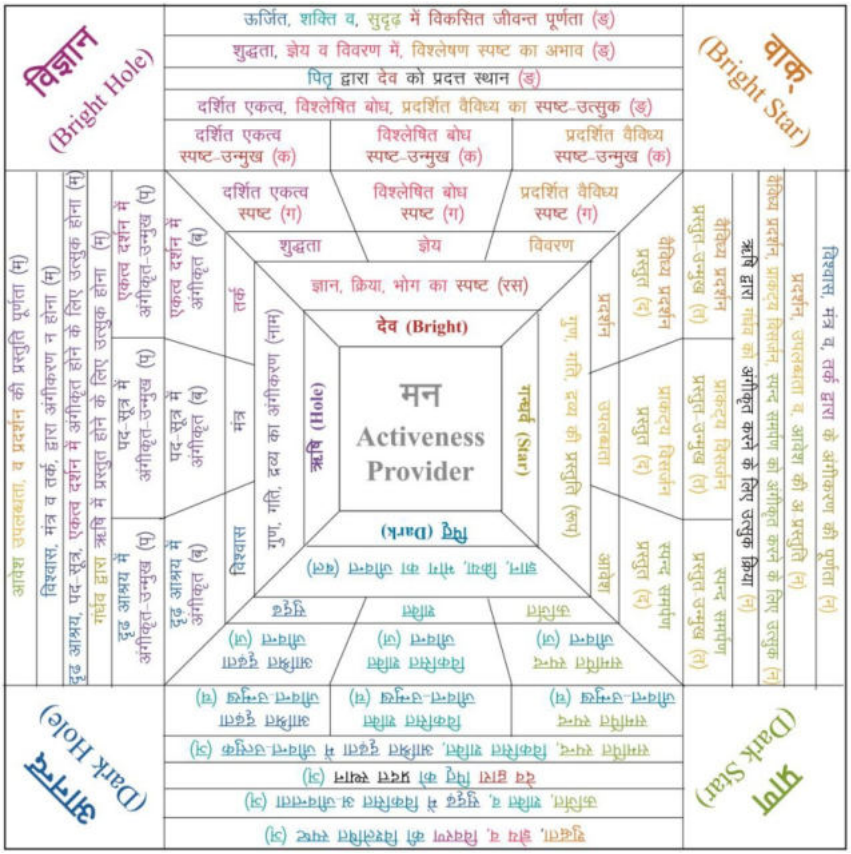

Go to Contents

विद्या	क	ग	च	ज	त	द	प	ब	ट	ड
अविद्या	ख	घ	छ	झ	थ	ध	फ	भ	ठ	ढ़

आत्म सत्ता का स्वरूप

तथा

ध्वनि का अभिप्राय विषयक विज्ञान

9, 10 / Page

Go to Contents

विज्ञानमय कोश में युधिष्ठिर विराजमान है, जो प्रत्येक संज्ञा के धर्म का विश्लेषणकर्ता है। वाङ्मय कोश में नकुल है, जो सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है, तथा वैविध्यता (गौ) को उपलब्ध कराने वाला है, तथा राजा विराट के राज्य में गौशाला (ज्ञान वैविध्यता) का प्रधान है। प्राणमय कोश में सहदेव विराजमान है, जो अश्वशाला का प्रधान है। अश्व का अर्थ प्राण ऊर्जा की उपलब्धता है। आनन्दमय कोश भीम के लिये है, जो भोजनशाला का प्रधान होने से आनन्द का संचालक है तथा जो सारी पाण्डवसेना का रक्षक है। द्रौपदी उपर्युक्त पांचों का उद्दीप्त स्वरूप है।

उपर्युक्त पांचों में से विज्ञानमय कोश व आनन्दमय कोश के सम्मेलन से **ऋषितत्त्व** जन्म ले रहा है, विज्ञान व वाक् के मध्य **देवतत्त्व** जन्म ले रहा है। वाक् व प्राण के मध्य **गन्धर्वतत्त्व** जन्म ले रहा है तथा प्राण व आनन्द के मध्य **पितृतत्त्व** जन्म ले रहा है। सम्पूर्ण आत्मसंस्था तमस् से घिरी हुई है व देव, ऋषि, गन्धर्व व पितृ सभी के साथ तमस् जुड़ा हुआ है अतः असुर तत्त्व प्रत्येक के साथ जुड़े हुऐ हैं।

अन्तर्मस्तिष्क से प्रकट होने वाला दृश्य, 'नाम व रूप' के द्वैत में, मन के प्रांगण में 'ऋषि व गन्धर्व' के रास्ते प्रवेश करता है। ऋषि तत्त्व 'नाम' का उद्बोधन करता है, व गन्धर्व तत्त्व सम्बन्धित 'रूप' का दर्शन कराता है। नाम 'सूत्र पद' है, तथा दो भागों में विभाजित है।

प्रथम है– '**एकत्व दर्शन**' व द्वितीय है– '**दृढ आश्रय**'। 'एकत्व दर्शन' का 'दृढ आश्रय' (अन्तर्मुखी) या 'दृढ आश्रय' का 'एकत्व दर्शन' (बाह्यमुखी), दोनों का ही अंगीकरण **'नाम'** कहलाता है। इसमें 'एकत्व दर्शन' विज्ञानमय कोश का प्रभाव है, व 'दृढ आश्रय' आनन्दमय कोश का प्रभाव है।

इसी प्रकार गन्धर्व जब 'रूप' का दर्शन करा रहा है, तो रूप दो भागों में विभाजित हो रहा है। वाङ्मय कोश **'वैविध्य प्रदर्शन'** कर रहा है तथा प्राणमय कोश '**स्पन्द समर्पण**' कर रहा है। 'वैविध्य प्रदर्शन' व 'स्पन्द समर्पण' से 'अर्थ विसर्जित' हो रहा है जिसको हम **'रूप'** कहते हैं।

सोम की दक्षिणावर्त आवृत्ति में आत्म संस्था 'बहिर्गमित' तथा उत्तरावर्त आवृत्ति संस्था 'अन्तर्गमित' हो जाती है।

1.6 बहिर्गमन प्रक्रिया

हम जो भी कुछ बाहर की तरफ व्यक्त करना चाहते है, उसका व्यक्त दो भागों में विभक्त हो सत्ता में दक्षिणावर्त आवृत्ति से युक्त हो जाता है।

यह आवृत्ति है ''.....द्रव्य (गन्धर्व) → गति (गन्धर्व) →स्पन्दन (प्राण) → ऊर्जित (पितृ) → शक्ति (पितृ) → सुदृढ (पितृ) → आलम्बन (आनन्द) → विश्वास (ऋषि) → पदसूत्र (ऋषि) → तर्क (ऋषि) → विश्लेषक (विज्ञान) → शुद्धता (देव) → विश्लेषित (देव) → विवरण (देव) → वैविध्यता (वाक्) → गुण (गन्धर्व) → द्रव्य (गन्धर्व → .....''

1.7 अन्तर्गमन प्रक्रिया

हम जब भी किसी संकेत को देखते है वह सत्ता में उत्तरावर्त आवृत्ति में प्रवृत्त रहता है। यह आवृत्ति ''..... द्रव्य (गन्धर्व) → गुण (गन्धर्व) → वैविध्यता (वाक्) → विवरण (देव) → विश्लेषित (देव) → शुद्धता (देव) → विश्लेषक (विज्ञान) → तर्क (ऋषि) → पदसूत्र (ऋषि) → विश्वास (ऋषि) → आलम्बन (आनन्द) → सुदृढ (पितृ) → शक्ति (पितृ) → ऊर्जित (पितृ) → स्पन्दन (प्राण) → गति (गन्धर्व) → द्रव्य (गन्धर्व) → .....''

1.8 मनन प्रक्रिया

नाम क 'एकत्व दर्शन', जब रूप के 'वैविध्य प्रदर्शन' व के साथ रमण करता है, तो संज्ञा स्पष्ट–उन्मुख होती है, जिसे हम चेतनत्व कहते हैं। इसी प्रकार नाम का 'दृढ़ आश्रय' जब रूप से 'समर्पित स्पन्द' के साथ एकाकार होता है, तो जीवन्त उन्मुख होने लगता है। बहिर्गमन प्रक्रिया में यह जीवन्त व चेतन असत् में स्थापित होकर जीवन्तता व संदेश का सर्जन कर देते हैं। मनन प्रक्रिया में उपर्युक्त ऊर्जस् व चेतन को असत् की प्राप्ति नहीं होती है तथा जीवन्तता व चेतन पुनः 2 भागों में विभाजित हो कर 'ऋषि के दृढ़ आश्रय' व 'गन्धर्व के स्पन्द समर्पण' में प्रवेश करते हैं। इसी प्रकार चेतनता 'ऋषि के एकत्व दर्शन' व 'गन्धर्व के वैविध्य प्रदर्शन' में प्रवेश कर जाते हैं। अर्थात् नाम व रूप जहां से आये थे, वहीं पुनः स्थापित हो जाते हैं। यह मनन की एक आवृत्ति है। नाम–रूप का संयुक्त होना, उनका स्पष्ट–उन्मुख व जीवन्तोन्मुख होना व पुनः स्थापित होने में नाम व रूप के अनेक नये समीकरणों का सर्जन हो जाता है, तथा इसे ही हम विचार करना कहते हैं। इस प्रक्रिया की अनेक बार पुनरावृत्ति में जैसे ही कभी हमारा स्मृत जीवन्त उपलब्धि के अनुसार स्पन्दित होता है, तो स्मृति में पूर्ण क्षर प्रकट हो जाता है। इसे ही हम **पहचानना** कहते हैं। अब यह वस्तु का पहचानना हो, या समस्या का पहचानना, प्रक्रिया वही है।

उपर्युक्त प्रक्रिया में, जहां देवपक्ष व पितृपक्ष क्रम से एक के बाद एक आ रहे हैं, गन्धर्व व ऋषि भी एक साथ न आकर, क्रम से एक के बाद एक आ रहे हैं। सोम की एक

आवृत्ति में, स्पष्ट (देव) को प्रस्तुत (गन्धर्व) होने में, जीवन्त (पितृ) का, अंगीकरण (ऋषि) का क्रम है, जो **बहिर्गमन क्रम** है। तथा प्रस्तुति (गन्धर्व) के स्पष्ट (देव) को, अंगीकृत (ऋषि) करने, की जीवन्तता (पितृ) का क्रम **अन्तर्गमन क्रम** है। मनन में यही क्रम उल्टा व सीधा दोनों दिशाओं में एक के बाद एक आवृत्ति होता है। ऋग्वेद में सोम तत्त्व को परिभाषित करने में इसी प्रकार का वर्णन उपलब्ध है। यशोदा दही रूपी अवधारणाओं को रई द्वारा उल्टे व सीधे क्रम में बिलो रही है। इस मनन प्रक्रिया से मक्खन प्रकट हो रहा है। इस मक्खन का सेवन हमारा अन्तश्चेतन (कृष्ण) कर रहा है। सारी यज्ञ प्रक्रिया के मध्य में नर–नारायण के रूप में अर्जुन व श्रीकृष्ण हैं, तथा गीता रूपी मनन चल रहा है।

1.9 क्षर ब्रह्म

स्पष्ट–उन्मुखता (क), जीवन्त–उन्मुखता (च) को असत् में स्थान उपलब्धता (ह), यह तीनों मिल कर ही 'क्ष' का निर्माण करते हैं। इस 'क्ष' में जो रतिमयता (र) है, अर्थात् योग्यता में जो रतिमयता है, उसे ही 'क्षर' कहा जा रहा है। इस 'क्षर' की 5 कलायें हैं। प्राण, आप, वाक्, अन्न व अन्नाद। **'प्राण'** अर्थात् जीवन्त का प्रकृतिभाव, **'वाक्'** अर्थात् स्पष्टता का प्रकृतिभाव, **'आप्'** अर्थात् प्रकृति का सत्ता में **अंगीकृति** भाव, **'अन्न'** अर्थात् उसका मात्रात्मक अस्तित्व बोधभाव तथा **अन्नाद** अर्थात् उस मात्रात्मक अस्तित्व बोध का प्रस्तुति भाव। पुरुष उपर्युक्त पांचों प्रकृति भावों में रत (र) होकर योग्यता (क्ष) को स्थापित कर रहा है।

1.10 अक्षर ब्रह्म

अग्नि, सोम व इन्द्र, ये ही तीनों वेदों के प्रमुख विषय हैं। अग्नि यज्ञ में लोकान्तर प्रक्रिया का संकेत है। सोम आत्मसंस्था की आवृत्ति है, जिसका संचालक काल है, तथा इन्द्र आत्म संस्था में कारण–क्रिया सम्बन्ध का संचालक है। यह इन्द्र अपर लोकान्तर में तीन भागों में विभाजित दिखाई देने लगता है। ये तीन भाग हैं, विष्णुमाया, ब्रह्मामाया तथा शिवमाया। **विष्णुमाया** स्पष्टोन्मुखता है तथा सत्ता के देवपक्ष से वैविधिक उपलब्धता है। **शिवमाया** सत्ता के पितृपक्ष से संरक्षित जीवन्त उपलब्धता है तथा **ब्रह्मामाया** यह सम्पूर्ण आत्म संस्था में स्थापित जगत् तत्त्व है, जहां सम्पूर्ण संस्कार, स्मृतियां आदि निवास करते हैं। यह निवास नाम–रूप के द्वैत में है, अतः ब्रह्मा के 4 मुख हो जाते हैं।

उपर्युक्त ब्रह्मा के 4 मुखो में से प्रथम है, 'विश्लेषित वैविधिक उपलब्धता', जो कि देवपक्ष के कर्म का फल है। द्वितीय है सामर्थ्य जीवन्त उपलब्धि', जो कि पितृपक्ष के कर्म का फल है। तृतीय है 'नामात्मक माया', जो कि ऋषिपक्ष के कर्म का फल है। तथा चतुर्थी है 'रूपात्मक माया', जो कि गन्धर्वपक्ष के कर्म का फल है। चारों से मिलकर ब्रह्मा की सृष्टि स्थापित हो रही है। उपर्युक्त सृष्टि चारों तरफ से असुरपक्ष से घिरी हुई होने से, तमोमय होती है, व काम का उदय करती है। तथा रतभाव जो कि मूल रूप से तमस् (रिक्तता) में स्थापित होता है, काम के कारणं प्रवृत्त हो जाता है। ब्रह्मा के चारों मुख जैसे ही काम में प्रवृत्त होते है, सृष्टि चलायमान हो जाती है। यह चलायमानता **सोम के** फल स्वरूप **आयु** को जन्म देती है। चारों पक्ष एक के बाद एक क्रम से रजोमुखी होते हैं, अतः यह रजोमुखिता आवृत्तिमय होती है। एक आवृत्ति में काल की एक इकाई सम्पूर्ण हो जाती है। काल की एक इकाई को आयु, तथा इस आवृत्ति को हम सोम कह रहे हैं। सोम की एक आवृत्ति में कृष्ण आयु (ऋषि पक्ष), देव आयु (सूर्य पक्ष), शुक्ल आयु (गन्धर्व पक्ष), व पितृ आयु (चन्द्र पक्ष), ये चारों आयुक्रम में रजोगुणी होते हैं, व सम्पूर्ण आवृत्ति आयु की मात्रात्मक इकाई निमिष है, जो काल को रजोमुखी करती रहती है। यह क्रम बहिर्गमन है, इसके ठीक विपरीत क्रम अन्तर्गमन है।

यहां एक बात बहुत ही स्पष्ट रहना आवश्यक है कि रजोगुण हालांकि क्रम से एक के बाद एक को स्फुरित करता है, परन्तु व्यवहारिक रूप से कोई भी पक्ष कभी भी शून्य नहीं होता है। सैद्धान्तिक रूप से **अमावस्या** में देवपक्ष शून्य है, परन्तु वो यह अमावस्या के क्षण का आकार नगण्य है, अर्थात् क्षणिक ही है।

यही स्थिति **पूर्णिमा** की भी है। पूर्णिमा में पितृपक्ष मात्र संकेत रूप में ही शून्य है। **कृष्णाष्टमी** को ऋषिपक्ष की पूर्णता है, तो **शुक्लाष्टमी** (राधा अष्टमी) को गन्धर्वपक्ष की पूर्णता है। यह पूर्णता भी रजोगुण के सम्पूर्ण सामर्थ्य में स्थित नहीं है, क्योंकि वह काल खण्ड, जहां हम ऋषिपक्ष को पूर्ण कह रहे हैं, वहाँ देवपक्ष व पितृपक्ष दोनों ही अर्द्धजाग्रत अवस्था में रज को प्राप्त कर रहे हैं। हाँ गन्धर्व पक्ष में रजस् शून्य समान (क्षाणिक) अवश्य है। सम्पूर्ण रजस् 5 भागों में विभाजित हो रहा है, क्योंकि असुरपक्ष भी रजस् का शोषक है, जो कि संम्पूर्ण यज्ञ से उत्पन्न फल का भोक्ता बनने का प्रयास कर रहा है। यही राहु व केतु की प्रक्रिया है।

यज्ञ प्रक्रिया से जो भी फल उत्पन्न हो रहा है, वह दो भागों में विभाजित हो रहा है, मर्त्य व अमर्त्य। **मर्त्य भाग** का भोक्ता असुर प्राण (राजा बली) है, जो कि **अपर** लोकों (तल से पाताल तक) में होता हुआ, सूक्ष्म से स्थूल में परिवर्तित हो रहा है तथा **अमर्त्य भाग** का भोक्ता इन्द्र है, जो कि **पर** लोकों (भू से सत्यम् तक) मात्र कार्य–कारण के सम्बन्ध रूपी अमर्त्य भाव का पान कर सत्ता का गोवर्धन कर रहा है तथा स्थूलता का कारण नहीं बनता।

1.11 ध्वनि विज्ञान का न्याय प्रकरण

प्रस्तुत विषय के लिये न्याय को अधिक स्पष्ट करना आवश्यक नहीं है, परन्तु शोध की प्रामाणिकता व शोध की शुद्धि के लिये आवश्यक है।

प्रत्यक्ष को पूर्णतया प्रामाणिक इसलिये नहीं माना जाता क्योंकि हम कभी भी प्रत्यक्ष का पूर्ण दर्शन नहीं करते। दृश्य में हमारी अवधारणायें भी स्थापित हो जाती हैं, तथा शुद्ध दृश्य कभी उपलब्ध नहीं होता। **अनुमान** को प्रामाणिक इसलिये नहीं माना जा सकता, क्योंकि अनुमान भी प्रत्यक्ष पर आधारित होता है, तथा अनुमान का सूत्र अवधारणाओं पर आधारित होता है।हमारे यहां शास्त्रीय पद्धति में **'शब्द'** को प्रमाण माना है। शब्द जो ईश्वर प्रदत्त हो अर्थात् श्रुति ही प्रमाण है, ऐसा माना जाता है, परन्तु श्रुति को हम उसके सही अर्थों में समझने में समर्थ हो सके हैं, यह विवाद का विषय है।

ध्वनि विज्ञान के शोध में जिस पद्धति का उपयोग किया गया है, वह है, तप, प्रसाद तथा विश्लेषणात्मक भोग। एक ही ध्वनि में एकाकार होकर अपने स्व व अपने तमस् को तिरोहित करने का प्रयास (तप) कीजिये, ध्वनि का संकेत रूपी प्रसाद तुरन्त उपलब्ध होता है। उस सात्विक अर्थ को, अपनी सत्ता के असत् में स्थापित करने के प्रयास में कुछ उदय होता है। यह उदित सत् ही यदि विचार में दृश्यगत हो जाये तो हम उस ध्वनि के अर्थ के आभासित सत् के साक्षी हो सकते हैं। परन्तु फिर भी हम उस उदित सत् को पूर्ण सत्य नहीं मान सकते, क्योंकि उस सत् में असत् का द्रव्य तो हमारी अपनी सत्ता का है। अतः हम व्यावहारिक धरातल पर परीक्षण के द्वारा उसे शोधित करते हैं। शोधित करते–करते उदित अर्थ में बदलाव सम्भव है, जिसे स्वीकृति दिया जाना आवश्यक है। प्रत्येक आज के ज्ञान साथ में कल तक का सारा ज्ञान संग्रह मिथ्या हो सकता है, ऐसी भावना को साथ रखना जरूरी है।

शोधित करते–करते एक समय ऐसा आता है, जब हमारा विवेक हमारी बुद्धि का साथ छोड़ने लगता है, तब कल्पनाओं में खोकर पुनः धरा पर उतरना मुश्किल प्रतीत होने लगता है। हम मानने का प्रयास करने लगते हैं। 'स्व पर अविश्वास' का अभ्यास इस 'मानने' को भी जटिल बना देता है तब श्री गणेश ही मात्र उपाय होता है। **श्रीगणेशजी महाराज** से प्रार्थना की जाती है कि महाराज आप ही लिखें, क्यों कि मैं तो अभी तक अपने आप से ही पूर्णतया सहमत नहीं हूँ।

न्याय में उपर्युक्त प्रक्रिया को आप क्या रूप देते हैं, परन्तु उपयुक्त प्रक्रिया के लिये श्रीगणेशजी का मुझे आशीर्वाद प्राप्त है।

1.12 ध्वनि विज्ञान और व्याकरण

जो विद्या भाषा का विश्लेषण करती है, व्याकरण कहलाती है। ध्वनि से लेकर वाक्य तक फैली हुई भाषा के ध्वनि, शब्द, पदांश, पद, वाक्यांश और वाक्य तक की विभिन्न संरचनाएं हैं, व्याकरण इनका विवेचन करती है और ये संरचनाएँ अर्थ की अभिव्यक्ति में जो–जो भूमिकाएँ निभाती हैं, उनका विश्लेषण करती है।

इतना सब होने के बाद भी हम व्याकरण को विज्ञान की संज्ञा में स्थान नहीं दे सकते, क्योंकि विज्ञान सार्वभौम संस्था है, जब कि व्याकरण एक भाषा विशेष का ही विश्लेषण मात्र है। विभिन्न भाषाओं की व्याकरण भी विभिन्न है तथा प्रचलन के आधार पर व्याकरण उनको स्पष्ट करने का प्रयास करती है।

हम जिस ध्वनि विज्ञान को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं वह भाषा से पहले कि अवस्था है। कह सकते हैं कि भाषा का कारण स्वरूप है। ध्वनि विज्ञान भाषा की वैविध्यता में पक्षपात नहीं करता तथा एकात्म तर्क के आधार पर सभी भाषाओं के लिये एक संयुक्त मंच प्रस्तुत करता है। एक ही मंच पर प्रत्येक भाषा सामाजिकता, भौगोलिकता के आधार पर अपनी अपनी व्याकरण का प्रदर्शन करती है, लेकिन फिर भी मंच तो ध्वनि विज्ञान का ही होता है।

हमारा सारा भाषा विज्ञान कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य आदि से ही शुरू होता है, जब कि ध्वनि विज्ञान यन्त्र (मुंह) का आग्रही नहीं है। ध्वनि कहीं से भी प्रकट हो, वह अपने विशिष्ट अर्थों को लेकर ही होती है। मनुष्य द्वारा बोली जाने वाली वही बोली जीवित रहती है, जो प्रकृति को ग्राह्य होती है, अन्य विलीन हो जाती है। आदिवासियों ने जब

और जैसा भी बोलना सीखा उनमें से प्रकृति को ग्राह्य ध्वनियाँ जीवित रहीं तथा जो ध्वनि संज्ञा को स्पष्ट नहीं करती थी स्वतः विलीन होती गयी।

प्रकृति ने यदि रक्षा करने वाले का भाव 'प' में दिया है तो पुत्र द्वारा पिता को सम्बोधित किया जाने वाला शब्द 'प' ही जीवित रहा, उसकी अन्तर्मुखिता से 'पु' हो गया व अनेक विविधताओं में से 'त्र' की स्वीकृति होने से 'पुत्र' हो गया। अर्थात् सम्बोधन वही जीवित रहा जिसे प्रकृति ने स्वीकार किया। यह सब डार्विन के सिद्धान्त की तरह ही प्रतीत होता है।

व्याकरण ने उस भाषा को जोकि हमें प्रकृति ने दी थी, उसका विश्लेषण किया तथा उसे विभिन्न सूत्रों में बांध कर सरलतम करने का प्रयास किया। व्याकरण हमें बताता है कि किस प्रकार कवर्ग में कहीं भी अनुस्वार आने से वह अनुस्वार 'ङ्' में परिवर्तित हो जाता है। यह सरलीकरण है, परन्तु ध्वनि विज्ञान कहता है कि 'स्पष्ट करने की प्रक्रिया' में 'स्पष्ट करने' का तमस् हमेशा उपलब्ध रहता है अतः 'ङ' के अलावा दूसरा कोई तम आ ही नहीं सकता। ऋक् वेद को साथ में लिखने पर 'ऋग्वेद' हो जाता है क्योंकि 'क्' वर्तमान काल में है, 'वेद' को ग्रहण करते ही भूत काल में आ कर 'ग्' हो जाता है।

व्याकरण में ध्वनियों पर भी विचार किया है। कुछ संयुक्त व्यंजन जैसे 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' को विभाजित भी किया है। 'क्ष' को क + ष् + अ माना है, त्र को त्+र्+अ माना है तथा 'ज्ञ' को ज्+ञ्+अ माना है। ये विभाजन ध्वनि विज्ञान से अनुमोदित नहीं हो पाते हैं। ध्वनि विज्ञान में 'क्ष' का विभाजन 'क्'+'च'+'ह' परिलक्षित हो रहा है। क्योंकि 'स्पष्ट से रहे आत्मक' तथा 'ऊर्जित हो रहे आत्मक' को स्थूलत्व की प्राप्ति ही 'क्ष' है। अर्थात् स्पष्ट करने में सफल व ऊर्जित होने में भी सफल, यह 'योग्यता' की निशानी है। यही योग्यता जब एकाग्रता में अंगीकृत 'र' होती है तो 'क्षर' बनता है। और इसी 'क्ष' के पहले 'अ' लगने से 'अक्ष' हो जाता है जो किसी भी प्रकार की योग्यता का शून्य सापेक्ष है। 'त्र' ''प्रस्तुत उन्मुखता में अंगीकृत एकाग्र'' अर्थात् प्रकृति का स्वभाव दिखाई देता है तथा 'ज्ञ' को हम 'ग' अर्थात् 'जानना' तथा 'ज' अर्थात् 'मानना' के मध्य वस्तु की प्राकट्यता जान रहे हैं। प्रमाणित करने के लिये हम 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' से बनने वाले अनेक शब्दों के अर्थ देख सकते हैं (पश्चिमी भाषाओं में उपलब्ध हैं)।

इसी प्रकार प्रचलित व्याकरण में संयुक्त स्वरों को लेकर अति–अस्पष्टता है। त्रयी की स्वाभाविक स्वीकृति में हम तीन के अतिरिक्त प्राकट्यात्मक स्वर मान ही नहीं

सकते। यह व्यावहारिक नहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। बाकी स्वरों को हम यदि लेंगें तो हम उन्हें मूल नहीं मानकर संयुक्त ही मानना पड़ेगा। इनका संयुक्ति– करण भी वैज्ञानिक आधार पर ही होगा। 'अ' के साथ 'इ' के तीन संयुक्ताक्षर, 'अ' के साथ 'उ' के तीन संयुक्ताक्षर व 'इ' के साथ 'उ' के तीन संयुक्ताक्षर होने चाहिये जो सम्भवतया प्रकृति ने अनुपयोगिता के कारण विलीन कर दिये या यह भी सम्भव है कि 'इ' व 'उ' के संयुक्ताक्षर किसी अन्य भाषा में उपलब्ध हों।

1.13 ध्वनि विज्ञान और धातु शास्त्र

प्राचीन काल से ही ध्वनि के अभिप्राय को समझने के अथक प्रयत्न किये गये है। इनमें पाश्चात्य व भारतीय दोनों ही धाराओं के दार्शनिक शामिल हैं। महर्षि यास्क व अन्य दार्शनिकों ने अपनी आन्तरिक स्वप्रज्ञा से विभिन्न ध्वनियों को अभिप्राय में समझने का प्रयत्न किया हे, इनमें धातु पद्धति का प्रमुख स्थान है। हम उच्चारण करते हैं ध्वनि का, उच्चारित ध्वनि जो तरंग उत्पन्न कर रही है, उसे अर्थ अभिप्राय आयोजित करना, यही धातु का स्वरूप है। परन्तु उपरोक्त पद्धति का आधार मात्र अनुभूति ही है।

अन्तः के समर्पण से उत्पन्न स्वप्रज्ञित प्राकट्य बोध। दार्शनिक आधार पर यह पूर्णतया प्रतिपादित होती प्रतीत नहीं होती परन्तु फिर भी वर्तमान काल तक भी ध्वनि को समझने की हमारे पास एक मात्र कुंजी है।

प्रस्तुत ध्वनि विज्ञान किस प्रकार धातुओं में प्रयुक्त होता है, तदोपरान्त धातु का क्या स्वरूप बनता है तथा धातु का प्रचलित स्वरूप क्या है, यहां उसका विश्लेषण किया गया है। प्रचलित धातु स्वरूप केवल अनुभूति पर आधारित है अतः यह अपेक्षा हमें नहीं है कि यह सटीक अर्थ देगा परन्तु फिर भी प्रमाण के लिये पर्याप्त प्रतीत हो रहा है।

धातु	**संस्कृत अर्थ** –ध्वनि विज्ञान से व्याख्या, व्यहारिक विवेचना।
एध	**वृद्धौ**– प्रत्यक्ष के सत् में (ए) प्रस्तुति विहीनता (ध),
स्पर्द्ध	**सङ्घर्षे** – व्यक्तात्मक (स) अनुमोदन (प) के द्वारा प्रस्तुति–अप्रस्तुति का प्रत्यक्ष (र्द्ध) ; *किसी को मानने में प्रस्तुति अप्रस्तुति के मध्य सङ्घर्ष है।*
गाधृ	**प्रतिष्ठालिप्सयो ग्रन्थे च।** स्पष्टता (**गा**) को धारण करने वाला (धृ) धारित को स्पष्ट करने (प्रतिष्ठा के लिये) का स्वभाव (प्रतिष्ठालिप्सयोः) ;*जो धारित है (ज्ञान), उसे स्पष्ट करने का स्वभाव (ग्रन्थे)*

बाधृ	**विलोडने** – बन्धित सत्ता (बा) को धारण करने वाला (धृ) ;*विलोडने से दही बन्धित सत्ता अर्थात् मक्खन को प्राप्त हो जाता है।*
दध	**धारणे** – प्रस्तुति (द) को धारण करना (ध)
वदि	**अभिवादन स्तुत्योः** – छिपे सत् (व) की प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) ; *अभिवादन में छिपे सत् को प्रस्तुत किया जाता है।*
भदि	**कल्याणे सुखे च** – स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) की प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) ; *बिना किसी बन्धन के अंगीकार करने की जो प्रस्तुति है वह सुख भी है कल्याण कारक भी है।*
मुद	**हर्षे** –अन्तर्गमित पदार्थ (मु) की प्रस्तुति (द) ;*पदार्थ हमारे अन्दर की तरफ प्रस्तुत होता है।*
ष्वद,	**आस्वादने** – व्याप्तात्मक/संवेगात्मक/कामवेगात्मक (ष), में छिपे सत् (व) की प्रस्तुति (द,) ; *भोग की प्रस्तुति।*
उर्द	**मने क्रीडायां च** – छिपी (उ) प्रस्तुति के द्वारा (र्द) ; *प्रस्तुति में जो छिपाव होता है वही क्रीड़ा कहलाता है।*
गुर्द	**क्रीडायामेव** – छिपे स्पष्ट (गु) को प्रस्तुत के द्वारा करना (र्द) ; *प्रस्तुति में जो स्पष्ट का छिपाव है वही क्रीड़ा कहलाती है।*
षूद	**क्षरणे** – अन्तर्विलीन होती व्याप्त (षू) प्रस्तुति (द)।
स्वाद	**आस्वादने** – व्यक्तात्मक (स्) छिपी सत्ता (वा) को व्यक्त करना (द) ; *स्वाद हमेशा छिपा रहता है, उसकी सत्ता को व्यक्त करना, स्वाद है।*
पर्द	**कुत्सिते शब्दे** –सशर्त अनुमोदन (प) प्रस्तुति के द्वारा (र्द) ; *प्रस्तुत के द्वारा जो अनुमोदन में शर्ते हैं।*
यती	**प्रयत्ने** – प्रत्यक्ष सत् (य) में प्रत्यक्ष होता हुआ प्रस्तुतोन्मुख (ती) ; *प्रस्तुत–उन्मुख ही प्रयत्न है जो कि प्रत्यक्ष सत् में प्रत्यक्ष हो रहा है।*
युतृ	**भासने** – अन्तःस्थित प्रत्यक्ष सत् (यु) के द्वारा प्रस्तुतोन्मुख (तृ) ; *प्रस्तुत–उन्मुख के द्वारा अन्तःस्थित सत् जो प्रत्यक्ष हो रहा है।*
विथृ	**याचने** – बाह्य प्रत्यक्ष छिपे सत् (वि) के द्वारा स्थापन (थृ) ; *हीनता में स्थापित करना।*

श्रथि	**शैथिल्ये** – प्रज्ञात्मक जीवन्त अनुभूति (श्र) का प्रत्यक्ष स्थापित/प्रस्तुति विहीन (थि) ; *साहस की प्रस्तुति विहीनता।*
मन्थ	**विलोडने** – संग्रह/पदार्थ (म) का होता हुआ स्थापन (न्थ) ; *विलोडन से पदार्थ में मक्खन स्थापित हो जाता है।*
खाद्द	**भक्षणे** – चेतना के लिये स्थान उपलब्धता (खा) में धारणात्मक प्रस्तुति (द्द) ; *खाद्द को धारण करने से चेतना उपलब्ध होती है।*
खद	**स्थैर्ये हिंसायां च** – चेतन विहीनता/विवेक विहीनता (ख) की प्रस्तुति (द)
बद	**स्थैर्ये** – बन्धित (ब) प्रस्तुति (द) ; *स्थार्थ से बन्धित है।*
गद	**व्यक्तायां वाचि** – स्पष्ट (ग) प्रस्तुति (द)।
णद	**अव्यक्ते शब्दे** – इच्छाओं की (ण) प्रस्तुति (द) ; *जो उपलब्ध नहीं है, उसकी प्रस्तुति।*
अर्द	**गतौ याचने च** – सत् शून्य अस्तित्व (अ) प्रस्तुति के द्वारा (र्द) ; *प्रस्तुति के द्वारा स्वयम् को शून्य अस्तित्व का मानना (प्रार्थना)*
नर्द, गर्द	**शब्दे** – क्रिया (न) प्रस्तुति के द्वारा (र्द), स्पष्ट (ग) प्रस्तुति के द्वारा (र्द) ; *दोनों का अर्थ ही शब्द व्यक्त करना है।*
अदि	**बन्धने** – सत् शून्य अस्तित्व (अ) की प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) ; *प्रत्यक्ष प्रस्तुति का अभाव अर्थात् प्रस्तुति ना हो पाना।*
बिदि	**अवयवे** – प्रत्यक्ष बन्धन (बि) की प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) ;*प्रत्येक अवयव अपने रूप के बन्धन में रहता है।*
णिदि	**कुत्सायाम्:** –प्रत्यक्ष इच्छाओ (णि) की प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) ; *अपनी इच्छाओं को ही स्थापित करते रहना।*
टुनदि	**समृद्धौ** – अन्तःस्थित प्रवृत्ति (टु) में अंगीकृत उत्सुक (न) का प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) ; *अन्तः में अंगीकृत करने की प्रवृत्ति की प्रस्तुति।*
चदि	**आह्लादने दीप्तौ च** – जीवन्त–उन्मुख (च) की प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) ; *जहां जीवन्तता निरन्तर भास रही है।*
त्रदि	**चेष्टायाम्।** – भाव/समर्पण के द्वारा (त्र) प्रस्तुति को प्रत्यक्ष करना (दि) ; *प्रस्तुति को प्रत्यक्ष करने में जो समर्पण है वही चेष्टा है।*
क्लदि	**आह्वाने रोदने च** – चेतनात्मक विहंगम (क्ल) की प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) ;

	चेतनात्मक विस्तार को प्रस्तुत करना आह्वान है।
शुन्ध	**शुद्धौ** – अन्तर्मुखी अनुभूति (शु) में अंगीकृतात्मक धारणा (न्ध) ; *अंगीकृतात्मक धारणा के अन्तर्गत जो अनुभूति स्वीकृत की जाती है।*
लोकृ	**दर्शने** – विस्तार की दिशा (लो) में चेतन के द्वारा (कृ) ; *चेतन के द्वारा दृश्य का विस्तार होना।*
श्लोकृ	**सङ्घाते** – अहसासात्मक (श्) विस्तार की दिशा (लो) चेतन के द्वारा (कृ) ; *चेतन के द्वारा स्पर्श के अहसास का विस्तार।*
रेकृ	**शङ्कायाम्** – इंगित एकाग्र (रे) चेतन के द्वारा (कृ) ;*चेतन के द्वारा एक विशेष दिशा में एकाग्र होना।*
श्लकि	**गत्यर्थाः** – अहसासात्मक (श्) विस्तार (ल) का प्रत्यक्ष चेतन (कि) ; *जहां चेतन में विस्तार का अहसास हो।*
शकि	**शङ्कायाम्** –जीवन्तक अहसास (श) में प्रत्यक्ष चेतना (कि);*चेतना जीवन्तक अहसास को प्रश्न वाचक बना देती है।*
कुक	**टादाने** –अन्तर्मुखी विषय (कु) की चेतना (क);*विषय को अन्दर प्राप्त करना।*
चक	**तृप्तौ प्रतिघाते च** – जीवन्त–उन्मुख (च) चेतन (क) ; *चेतन जीवन्त की तरफ हो रहा है (तृप्तौ), चेतन बल–उन्मुख हो रहा है (प्रतिघाते)।*
रघि	**गत्यर्थाः** – प्रवाह (र) से प्रत्यक्ष घिरा हुआ (घि) ; *गतिशील होना।*
राघृ	**सामर्थ्ये** – एकात्म सत्ता (रा) के घेराव के द्वारा (घृ) ; *सब को घेरने के द्वारा जो एकात्म सत्ता बनती है वही सामर्थ्य है।*
लाघृ	**आयामे च** – विस्तार सत्ता (ला) के घेराव के द्वारा (घृ), *घेराव के द्वारा जो विस्तार दिख रहा है वही आयाम है।*
फक्क	**नीचैर्गतौ** – अनियन्त्रित अनुमोदन (फ) की विषयात्मक चेतना (क्क) ; *विषय की चेतना में क्रिया अनियन्त्रित है।*
राखृ	**शोषणालमर्थयो** – एकात्मक सत्ता (रा) चेतन विहीनता के द्वारा (खृ) ; *बिना समझ की एकात्मक सत्ता।*
शाखृ	**व्याप्तौ** – अहसास सत्ता (शा) चेतन विहीनता के द्वारा (खृ) ; *बिना समझ की अहसास सत्ता, जो हमेशा व्याप्त रहती है।*

बुगि	**वर्जने** – अन्तःस्थित बन्धन (बु) का प्रत्यक्ष स्पष्ट (गि) ; *वर्जित होना बन्धन है।*
मघि	**मण्डने** – पदार्थ (म) को प्रत्यक्ष घेराव (घि) ;*पदार्थ को घेर घार कर कुछ बनाना।*
लघि	**शोषणे** – अर्पित भावना (ल) को प्रत्यक्ष घेराव (घि); *जो अर्पित है, उसका घेराव करना।*
शिघि	**आघ्राणे** – प्रत्यक्ष जीवन्त अनुभूति (शि) का प्रत्यक्ष घेराव (घि)।
वर्च	**दीप्तौ** – छिपे सत् (व) के द्वारा जीवन्तता उपलब्ध हो रही (र्च) ; *निरन्तर (छिपा सत्) उपलब्ध होने से दीपक जलता है, जिससे जीवन्तता प्रकाशित है।*
षच	**स्चेने सेवने च** – व्याप्त/इच्छित (ष) जीवन्त–उन्मुख (च) ; *जीवन्त की तरफ उन्मुखता की व्याप्तता सब जगह है।*
कच	**बन्धने** – स्पष्टोन्मुख (क) जीवन्तोन्मुख (च) ; *दोनों विपरीत भाव हैं, एक दूसरे को बांधते है।*
पचि	**व्यक्तीकरणे** – अनुमोदन (प) में प्रत्यक्ष जीवन्त–उन्मुख (चि) ;*अनुमोदन को बलशाली बनाना।*
ष्टुच	**प्रसादे** – व्याप्तात्मक (ष) अन्तर्मुखी प्रवृत्त (टु) में जीवन्त–उन्मुख (च); *जिस व्याप्तात्मक अन्तर्मुखी प्रवृत्ति में जीवन्तता प्राप्त होती है।*
लोचृ	**दर्शने** – छिपे विस्तार का प्रत्यक्ष (लो) जीवन्त–उन्मुखता के द्वारा (चृ) ; *समर्पण के द्वारा छिपे हुऐ विस्तार को प्रत्यक्ष करना, प्रतिमा में ईश्वर का विस्तार छिपा रहता है जो समर्पण से प्रत्यक्ष होता है।*

1.14 ध्वनि विज्ञान और श्रुति

भारत देश का सारा वाङ्मय कहीं ना कहीं वेद से जुड़ा हुआ है। अनेक विद्वानों ने वेदों का अर्थ व्याकरण के आधार पर करने का प्रयास किया है, लेकिन कहीं भी मतैक्य नहीं है। ध्वनि विज्ञान के आधार पर हमने अथर्ववेद के अष्टादश काण्डम्–सूक्तम्–4 मंत्र संख्या 1 को व्याख्याकी करने का प्रयास किया है, उसे आप देखें।

आ रोहत	सत्ता (आ) की अंगीकृत–एकाग्र की दिशा (रो) का स्थूल (ह) का प्रस्तुत–उन्मुख (त) ; *सत्ता का (आ) उद्भव होता (रोह) भाव (त)*
जनित्रीं	जीवन्त (ज) के प्रत्यक्ष अंगीकृत–उत्सुक (नि) को प्रत्यक्ष करती हुई प्रकृति (त्रीं) ; के जीवन्त के अंगीकृत–उत्सुक (जनि) का प्रदर्शन करती हुई प्रकृति (त्रीं)
जात वेदसः	अस्तित्व की सत्ता (जा) का प्रस्तुत–उन्मुख (त) इंगित छिपे सत् (वे) की प्रस्तुति (द) का व्यक्त (सः) ; अस्तित्व में लाया गया (जात) छिपे ज्ञान का व्यक्त (वेदसः) है
पितृ याणैः	प्रत्यक्ष अनुमोदन (पि) का भाव केन्द्रित (तृ) प्रत्यक्ष सत्ता (या) के प्रवृत्त की इच्छा का सत् (णैः) ; जीवन्त करने वाला (पितृ) प्रत्यक्ष सत्ता को प्रवृत्त की इच्छा का सत् (याणैः)
सं व	साथ प्रकट (सं) होती हुई छिपी सत्ता (व) ; साथ में प्रकट होने वाली छिपी सत्ता
रोह यायि	अंगीकृत एकाग्र की दिशा में (रो) स्थूल (ह) प्रत्यक्ष करना (या) प्रत्यक्ष प्रत्यक्षता (यि) ; उद्भव होने (रोह) को प्रत्यक्ष करने की प्रत्यक्ष प्रत्यक्षता (यायि)
अवाङ्द् अव्येषितो	वाक् के अभाव (अवाक्) की प्रवृत्त हो चुकी सीमितता (ढ) छिपावात्मक इंगित प्रत्यक्ष (व्ये) को प्रत्यक्ष का इच्छावेग (षि) के भाव की दिशा (तो) ; वाक् की समाप्ति पर (अवाङ्ढ) छिपा हुआ विषय (व्ये) को प्रत्यक्ष करने का इच्छावेग (षि) की दिशा में (तो)
हव्यवाङ्	स्थूल (ह) छिपावात्मक प्रत्यक्ष की (व्य) छिपी सत्ता का (वा) स्पष्ट होने को उत्सुक (ङ्) ; विषय (हव्य) की छिपी सत्ता को स्पष्ट करने को उत्सुक (ङ्)
ईजानं	बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ (ई) ऊर्जता की सत्ता (साहस) (जा) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक होना (नं)
युक्ताः	से युक्त सत्ता।
सुकृता	अन्तःस्थित उपलब्ध (सु) प्रज्ञात्मक चेतना (कृ) के भाव की सत्ता (ता)

	अन्तःस्थित उपलब्ध प्रज्ञात्मक चेतना (सुकृ) की भाव सत्ता
धत लोके	जमने (ध) का भाव (त) विस्तार की दिशा में (लो) इंगित विषय (के) ; जमने का भाव (धत) इंगित विवरण उन्मुख के विस्तार की दिशा में (लोके) जमने का भाव (धत) है।

सत्ता द्वारा उद्भव होता हुआ भाव **(आ रोहत)** उसका जीवन्त प्रकृति के द्वारा प्रत्यक्ष किया जाता है **(जनित्रीं)** वह अस्तित्व में लाया गया छिपा ज्ञान, **(जातवेदसः)**, जीवन्त करने वाला प्रत्यक्ष होने की इच्छा का सत् {प्रदर्शन इच्छा शक्ति} **(पितृ याणैः)**, इन दोनों के साथ में प्रकट होने वाली छिपा सत् है **(सं व)** जो कि उद्भव होने को प्रत्यक्ष करने की प्रत्यक्ष प्रत्यक्षता है **(रोह यायि)** ।

वाक् के अभाव की समाप्ति पर **(अवाङ्ढ)** छिपे हुऐ विषय **(व्ये)** को प्रत्यक्ष करने का इच्छा वेग **(षि)** उस दिषा में **(तो)**, स्थूल विषय **(हव्य)** की छिपी सत्ता को स्पष्ट करने को उत्सुक **(ङ)** है। यह उत्सुकता बाह्य प्रत्यक्ष होती हुई **(ई)** प्राचेतस् की सत्ता साहस **(जा)** को अंगीकृत करने की उत्सुकता **(नं)** से युक्त **(युक्ताः)** है। वह अन्तःस्थित उपलब्ध प्रज्ञात्मक चेतना **(सुकृ)** की भाव सत्ता द्वारा उस लोक में **(लोके)** जमने **(ध)** का भाव **(त)** है।

भावार्थ :– सत्ता द्वारा जो भी कुछ बाहर प्रकट किया जाता है वह उत्पन्न करने वाली प्रकृति के द्वारा ज्ञान का व्यक्त, जीवन्त करने वाला तथा प्रवृत्त की इच्छा का साथ में प्रकट होने की सत्ता है यही उद्भव होने को प्रत्यक्ष करने की प्रत्यक्ष प्रत्यक्षता है।

जब वाक् प्रदर्षित होने को होता है तो विषय का प्रत्यक्ष करने का इच्छा वेग, स्पष्टता व साहस, तीनों की प्रत्यक्षता से युक्त है। यह तीनों से युक्त प्रत्यक्षता अन्तः करण में स्थित प्रज्ञा के द्वारा अन्तःचेतना स्मृत लोक में जम जाती है।

यह बहिर्गमन प्रक्रिया है। जब कोई बोलने के लिये प्रवृत्त होता है तो प्रत्यक्ष करने की इच्छा के साथ उत्सुक होता है। तब वह साहस (पितृ) व चेतना (देव) के द्वारा विवरण का विस्तार कर बाहर बोल पाता है।

Whatever is being presented outside (speaking or some-thing executing) by the existing entity, is made of three indivisible ingredients,

which are '(A) the expression of knowledge, (B) feelings of power, (C) and the desire to be acted'. This is the visible expression produced by the entity.

Whatever is being executed is made of three indivisible ingredients, (A) Clarity, (B) Courage, (C) Desire. The 'combined whatever' is being stored in the 'brain memory' (different lok) with the help of intellectual mind (conscious).

उपरोक्त सूत्र स्पष्ट रूप से कर्म प्रक्रिया को स्मृति में संग्रह प्रक्रिया को स्थापित करता प्रतीत होता है जिसे हम अंग्रेजी में *Perceptive Learning* कह सकते हैं।

1.15 ध्वनि विज्ञान और मन्त्र

क्या मंत्रों के उच्चारण का मनुष्य पर कोई प्रभाव होता है? आधुनिक भौतिक विज्ञान इसे नहीं मानता। परन्तु यदि मंत्रों की ध्वनियाँ 'मन' को प्रभावित कर सकें तो ऐसा सम्भव है। हमारा मस्तिष्क, मन सब कुछ प्रकृति प्रदत्त है। ध्वनि भी प्रकृति प्रदत्त है, तो मस्तिष्क द्वारा ध्वनि की भाव स्वीकृति को नकारा नहीं जा सकता। उदाहरणार्थ हम जानते हैं कि अधिकांश मनुष्यों में असफलता का मूल कारण उसका बहिर्गमित स्वभाव होता है। गायत्री मंत्र अन्तर्गमित्व की ओर अग्रसर होती ध्वनियों का समूह है। अनेकों बार जपने में कहीं भी आप पूर्ण श्रद्धाभाव में आकर एक बार भी इसे जप गये, आप में अन्तर्गमित्व प्रकट हो जायेगी, और यही अन्तर्गमन शीलता आपकी सफलता का कारण होगा।

ऊँ भू र्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धी महि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ऊँ	त्रयी प्रवृत्त (अन्तःस्थित, बाह्यस्थित व स्वस्थित)
भूः	अन्तःस्थित होता हुआ स्वच्छन्द अंगीकरण–उन्मुख
भुवः	अन्तःस्थित स्वच्छन्द अंगीकरण उन्मुख में छिपा सत्
स्वः	उपलब्धात्मक छिपा सत्
तत	प्रस्तुत होता हुआ, विस्तीर्ण
सवितुः	व्यक्त के (स) प्रत्यक्ष छिपा सत् (वि) का प्राप्त करने वाला भाव, (तुः)
वरेण्यं	छिपे सत्(व) इंगित एकाग्रता (के) प्रवृत्तइच्छात्मक (ण्) प्रत्यक्ष होना
भर्गो	स्वच्छन्त अंगीकरण (भ) का प्रज्ञात्मक स्पष्ट दिशा में (र्गो)
देवस्य	देवों का, इंगित प्रस्तुत (दे) के छिपे सत (व) का (स्व)
धी	प्रत्यक्ष का जमाव (धी)

मही	संग्रह (म) का बहिर्गमन भाव (ही)
धियो	प्रत्यक्ष जमाव (धि) की प्रत्यक्ष दिशा में (यो)
यो	प्रत्यक्ष दिशा में (यो)
प्रचोदयात्	प्रज्ञात्मक अनुमोदन (प्र) की ऊर्जितोन्मुख दिशा (चो) में प्रस्तुत (द) प्रत्यक्ष सत्ता (या) भावत्व (त्)

त्रयी प्रवृत्त (ऊँ) प्रक्रिया में छिपा सत् {ज्ञेय} अन्तःस्थित होता हुआ अंगीकरण–उन्मुख (भूः) अन्तः में स्वच्छन्द स्थित (भुवः) हो उपलब्ध हो जाता है (स्वः)। अन्तः में प्रस्तुत होते हुऐ (तत) यह प्रत्यक्ष छिपे सत् को प्राप्त करने वाला भाव (सवितु) में एकाग्रता में वर्णित (वरेण्यं) किया जाता है।

अब जो स्वच्छन्द अंगीकरण किया गया था, वह प्रज्ञा द्वारा स्पष्ट होता हुआ (भर्गो) विषय (विवरण) को स्पष्ट करता है (देवस्य)। इस बाह्य प्रत्यक्ष का जो मस्तिष्क में जमाव है (धी) उसका संग्रह बहिर्गमन भाव (मही) के जमाव की प्रत्यक्ष दिशा में (धियो) उस दिशा को (यो) ऊर्जा उन्मुखता प्रदान करता है (प्रचोदयात्)।

प्रवृत्त एकाग्र भाव में भौतिक देह, वानस्पतिक देह, और फिर मानसिक देह में जो सत्व स्वच्छन्दता से अंगीकृत किया जा रहा है, वह प्रस्तुत होता हुआ, भाव को प्रत्यक्ष करने वाले {सवितु} के द्वारा वर्णित होता है तथा उपलब्ध स्पच्छन्द प्रज्ञात्मकता के द्वारा यह सत्व जमाव को प्रत्यक्ष {संग्रह} कर रहा है। यही संग्रहित सत् बहिर्गमन में उसी दिशा में प्राचेतस् {ऊर्जता} उपलब्ध करा रहा है।

When 'Something' is being stored inside the brain, (through material, biological, and psychological world), in that process, that 'something' is being received, is being detailed by "SAVITU" (SŪRYA), analysed by 'DEV' and accurated with the help of intelligence ***{learning}****. That stored (memory) is being used to provide the energy in the direction of executing out that 'something'* ***{replay}.***

Whenever you receive something that 'inflowing' is became habit of yourselves. That habit is being used to inflow the existent (clarity, courage, and desire) is the system.

- - - - - - - - - - - - - - - -

2.0 देव प्रकरण
(DEV PRANARAṆA)

प्रकृति व पुरुष के मध्य तीन तरह के द्वैत हैं। प्रथम द्वैत के अन्तर्गत **वाङ्मय कोश** व **विज्ञानमय कोश** का द्वैत है। जहां प्रकृति की अदृश्य एवं अव्यवस्थित वैविध्यता (वाक्), पुरुष के एकत्व दृष्टाभाव (विश्लेषण विज्ञान), के द्वारा समाहित होकर बोध की स्पष्टता का सर्जन करती है। यह द्वैत ही आत्मसंस्था का **देवपक्ष** है।

पुरुष एकत्व में विश्लेषित कर्ता है। तथा अस्पष्टता से युक्त है। उसका धर्म **स्पष्ट–उन्मुखता** है। पुरुष प्रकृति की वैविध्यता में एकत्व को स्थापित कर, तर्क की तरफ स्पष्टोन्मुख (दर्शक) रहता है। परन्तु इससे बोध में स्पष्टता नहीं आती है। दूसरी तरफ प्रकृति पुरुष को अदृश्य एवं अव्यवस्थित वैविध्यता उपलब्ध कराती है। तथा उसका उद्देश्य 'स्व' को **स्पष्ट करना** (प्रदर्शन) है। प्रकृति का धर्म वर्णित स्थापना के लिये उन्मुख बने रहना है। प्रदर्शित 'अस्पष्ट एवं अव्यवस्थित' में जब एकत्व का समावेश होता है, तो विवरण उत्पन्न होने लगता है। 'वैविध्यता (वाक्) का एकत्व (विज्ञान)' अर्थात् शुद्धता, जब 'एकत्व (विज्ञान) की वैविध्यता (वाक्), अर्थात् विवरण से मिलते हैं, तो बोध निर्मित हो जाता है। यही **संज्ञा की स्पष्टता** है।

इस प्रक्रिया में पुरुष दर्शनाभिमुख तथा प्रकृति प्रदर्शन की तरफ उन्मुख रहते हैं। दोनों अस्पष्ट हैं। दोनों की अस्पष्टता विपरीत प्रकार की है। पुरुष **रूप** के अभाव में व प्रकृति **नाम** के अभाव में है। यही **देव संस्था का तमस्** है। और जब यह एक दूसरे के पूरक बनते हैं, तो दोनों के मध्य **रजस्** (कर्म) प्रकाशित हो जाता है। ज्ञेय को प्रकाशित करना ही **कर्म** है। पुरुष व प्रकृति के मध्य में दर्शन व प्रदर्शन की उत्सुकता है, वही विज्ञान –वाक् के द्वैत का **'काम'** भाव है। इसी 'काम' के कारण **'रजस्'** उत्पन्न होता है। रजस् द्वारा, पुरुष उत्सुक से उन्मुख बन जाता है। तथा इसी प्रकार प्रकृति भी, उत्सुक से उन्मुख हो जाती है। दोनों की उन्मुखता से ही रजोगुणी भाव गति मय होता है, जो ज्ञेय को स्पष्ट करने का कर्म करता है। तथा स्पष्ट किया हुआ ज्ञान ही **बोध** कहलाता है, जो कि सतोगुणी भाव है।

उपर्युक्त विवरण में जिस **देव–पक्ष के 'काम'** को लिया गया है, ध्वनि दर्शन के अनुसार उसका संकेत **'ङ'** है। देव–पक्ष को वैविध्य चेतन कहा जा रहा है, इस का **रजोगुणी भाव 'क' व 'ख'** है तथा **सतोगुणी भाव 'ग' व 'घ'** है।

सारी आत्मसत्ता का निर्माण पुरुष की अनन्त क्षमताओं, व प्रकृति की अनन्त वैविध्यताओं में से लिया हुआ एक सीमित बिम्ब है। प्रत्येक सत्ता का पुरुष एक सीमितता लिया हुआ आकाश भाव है। प्रकृति भी उसी सीमितता में पृथ्वी भाव है।

इस सीमितता की व्याख्या उस असत् से मिलती है, जहां समाहित होकर दोनों (सत्त्व) सत् रूप में स्थापित होते हैं। असत् हमें स्थान उपलब्ध कराता है, प्रत्येक व्यंजन के लिये। उपलब्ध स्थान अपने सीमित दायरे में है। यह सीमित दायरा 'हकार' है। **असत् में सत् के लिये स्थान उपलब्धता ही 'ह' कार** है।

जहां तक तमस् का सवाल है, वह तो कारण शरीर है। व अव्यय का प्रथम वितान है। अतः सत् व असत् से परे है। लेकिन रजस् जो कि वर्तमान है, अपने स्वरूप के लिये असत् में स्थान उपलब्धता पर आधारित है। 'क' **वैविध्य चेतना** है। दृष्टा व अदृश्य (ज्ञाता व ज्ञेय) के मध्य विश्लेषण करता है, विश्लेषण कर रहा है। तथा दृश्य में तर्क की स्पष्टता का मुख्य कारक है। यह संपूर्ण प्रक्रिया एक सीमित दायरे में ही होती है। इस के बाहर वैविध्य चेतन की गति नहीं है। इस दायरे को **बुद्धि** कहते हैं। इस बुद्धि की उपलब्धता, देव सत्ता के मूल सर्जन (असत् से उपलब्धता) में है। अतः अ–परिवर्तनीय है। यह दायरा ही बुद्धि है। परन्तु इस दायरे में उपलब्धता की सघनता **सूर्य**(वैविध्यता की उपलब्धता) है। सूर्य को इसीलिये बुद्धिप्रदाता कहा जाता है। सूर्य (अन्तःस्थित होते हुऐ व्यक्त का **स्वप्रज्ञित** प्रत्यक्ष) अस्पष्ट की सम्भावनायें उपलब्ध कराता है। तर्क की समग्रता में दृष्य की विशालता को प्रकट करना सूर्य का काम है। परन्तु तर्क व दृष्य के मध्य जो सामंजस्यता है, वह ही चेतना है। वस्तु की स्पष्टता ही अतःकरण में स्थित होकर **स्मृति** बनती है। तथा **आकृति** तर्क व दृष्य से मिलाकर बनती है।

स्मृति में यह दृष्य व तर्क हमेशा साथ ही प्रवेश करते हैं। तदुपरान्त हम कभी उसके अनुरूप दृष्य (संयोजित प्रस्तुति) (रूप) देखते हैं तो तर्क (संयोजित अंगीकरण) (नाम) स्वतः ही प्रकट हो जाता है, जिसे 'पहचानना' कहते हैं। तथा तर्क (नाम) उत्पन्न होने से दृष्य (रूप) स्वतः स्मृत हो उठता है। बौद्धिकता सहज प्रश्न उठाती है, कि जो वस्तु हमने देखी ही नहीं, उसके तर्क व दृष्य का द्वैत हमारे पास है ही नहीं, उसे हम कैसे देख पाते हैं? इसका कारण स्पष्ट है।

एक ही तर्क अनेक दृष्यों में समाहित रहता है, तथा **एक दृष्य अनेक तर्कों का प्रकटीकरण** है। नवीन वस्तु देखने पर अनेक तर्क व्याख्यासहित मूर्त रूप ले कर, नवीन तर्कों का सर्जन कर लेते हैं एवम् वस्तु को प्रकाशित कर देते हैं।

लेकिन उसके बाद भी अनेक वस्तुयें ऐसी होती हैं, कि हमारी तर्क दक्षता के परे होती हैं। या उससे सम्बन्धित कोई तर्क हमारी स्मृति में नहीं होता है। या मोहवश कुछ तर्क हम अनावश्यक रूप से उपयोग करते हैं। ऐसी स्थिति में वस्तुऐं हमारी समझ के परे हो जाती हैं। उन्हें हम **चमत्कार या जादू** कहने लगते हैं।

यहाँ यह बात स्पष्ट रहनी आवश्यक है, कि ज्ञेय की स्पष्टता मात्र ही उसकी प्राकट्यता नहीं है। ज्ञेय की स्पष्टता के साथ, पदार्थ की प्रस्तुति (गन्धर्व पक्ष), पदसूत्र द्वारा अंगीकृत (ऋषी पक्ष) व जीवन्त (पितृ पक्ष) के एक ही बिन्दु पर समादिष्ट होने से, ही प्राकट्यता उत्पन्न होती है।

सम्पूर्ण प्रपंच में एक बात स्पष्ट है, कि एक **तमस्** है, जो **रजस्** को उन्मुख कर 'निरन्तर' करता है, **सत्** होने के लिये। यही **ब्रह्म** का स्वरूप है। तमस् **भविष्य** में है, रजस् **वर्तमान** में है। तथा सत् हमेशा **भूत** में ही स्थित रहता है। उपर्युक्त प्रक्रिया में **'ङ'** तमस् है जो 'स्पष्ट' का योनित्व है, स्वयम् अस्पष्टता में स्थित होने के कारण स्पष्ट प्राप्ति उत्सुक है। अस्पष्टता में स्थित होने से स्पष्टता की विषमता का प्रतीक है। एक शब्द है। गङ्गा (ग ङ् गा), अर्थात् स्पष्टता में स्पष्ट प्राप्ति उत्सुक स्पष्टता की सत्ता। अर्थात् अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं हुआ है। स्पष्ट होने की प्रक्रिया चल रही है। यह प्रक्रिया समाप्त ही न हो यदि शिव के जटाओं में स्थान न मिले, अर्थात् आलम्बन से अनुमोदन न मिले।

जटा अर्थात् जीवन्तता में प्रवृत्त हो रही सत्ता। शिव अर्थात् आलम्बन। इस प्रकार ' जीवन्तता में प्रवृत हो रही सत्ता' में जाकर गङ्गा प्राकट्यता को प्राप्त होती है।

'ङ' का स्वर पूर्ण रूप से स्पष्टहीनता का द्योतक होने से यही **ओजस् की पूर्णता** भी है। नगाड़ा बजने पर उठने वाला स्वर 'ङ' ही है, जो सुनने वाले में भीरुता को समाप्त कर जीवन्तता की पूर्णता का (साहस का) संचार करता है।

जो ध्वनि (ङ्) स्पष्टता के लिये कारण शरीर है वही ध्वनि जीवन्तता की पूर्णता की द्योतक है। इसी प्रकार ध्वनि (ञ) जीवन्तता की तरफ उत्सुक होने का कारण 'स्पष्टता की पूर्णता' है व दोनों एक दूसरे के ठीक विपरीत होने पर भी एक दूसरे के कारण हैं। 'स्पष्टता की पूर्णता' में जीवन्तता की रिक्तता' है व जीवन्तता की पूर्णता' में 'स्पष्टता की रिक्तता' है। स्पष्टता जानने की प्रक्रिया **(बृहस्पति)** एवम् ओजस् मानने की प्रक्रिया **(शुक्राचार्य)** है। दोनों विपरीत होते हुये भी पूरक हैं। मानना व जानना, दोनों साथ–साथ एक के बाद एक चलते हैं। कुछ हम जानते हैं। उसमें से कुछ हम मान लेते

हैं, फिर कुछ जानते हैं, फिर उसमें से कुछ मान लेते हैं। अनेक बार ऐसा भी होता है, कि हम कुछ मान लेते हैं, तथा जो माना हुआ है, वैसा ही जानने का प्रयत्न करते हैं। फिर कुछ मानते हैं, तथा फिर उसमें से कुछ जानने का प्रयत्न करते हैं। अर्थात् जानने व मानने की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। यही **सोम चक्र** है।

शुद्धता जो जानने की निरन्तरता में रत हैं, उसे **'क'** कहते है। **'वैविध्य शुद्धता'', 'वैविध्य बोध'** व **'वैविध्य विवरण', तीनो में गुण, गति, द्रव्य** तीनों को ही स्पष्टोन्मुख करने का संकेत 'क' है। गुण को जानना, गति को करना, व द्रव्य को भोगना, तीनों को ही प्रकट करने का काम **वैविध्य चेतना** है। तात्पर्य यह है कि विज्ञता का अर्थ केवल ज्ञान की विज्ञता नहीं है, यह ''करने'' की विज्ञता भी है। व 'भोग' की विज्ञता भी है। व्यवहार रूप में हम इसे ही वैविध्य चेतना कह रहे हैं। तथा इसे **देव–पक्ष** के रूप में भी जान रहे हैं। लेकिन पुनः यह सब जीवन्तता विहीन है। 'आनन्दमय कोश' व 'प्राणमय कोश' के द्वैत से उपलब्ध प्राचेतस् के द्वारा ही इसमें जीवन्तता उत्पन्न होती है। जिस से यह प्रकाशित होता हैं।

'ख' का अर्थ वैविध्य चेतन की सीमितता, अविद्यमानता, या स्थान उपलब्धता तीनों ही हैं। 'क' व 'ख' विद्या–अविद्या का द्वैत है। जहां अविद्या स्वयम् अज्ञेय होने से विद्या में ज्ञेयता उपलब्ध कराती है। अविद्या द्वारा सीमित दायरे में ज्ञेयता के लिये स्थान उपलब्ध कराने से, 'ख' के दोनों अर्थ हो जाते हैं। साधारण तया 'ख' का अर्थ, 'क' की सीमितता के कारण, 'क' के विपरीत भाव में आता है। लेकिन होता रजोगुणी ही है।

'ग' तर्क व विवरण से बना हुआ स्पष्ट दृश्य है। तथा **'घ'** उसकी स्थान रिक्तता या अविद्यमानता है। देव सत्ता जहां तक ज्ञेय स्पष्ट कराती है, उसकी स्थान उपलब्धता की सीमा अर्थात् घेराव 'घ' है। उदाहरण के लिये 'घर', अर्थात् ज्ञेय स्पष्ट की सीमा के अन्दर रत या घेराव/अंधकार (स्पष्ट का विपरीत) में रत। यहाँ जो 'ग' की सीमितता है, वही 'घ' का स्वरुप है। यह सीमित 'ग' नहीं वरन् 'ग' की सीमितता है। 'घ' वहीं है जहां सूर्य उपलब्ध नहीं है।

दृश्य का अर्थ **ज्ञेय** भी है, **क्रेय** भी है व **भोगेय** भी है। यदि हमने कहीं ज्ञेय शब्द लिया है तो उसे तीनो संदर्भ भी स्वीकार करना चाहिये। ज्ञेय, जो हम जानते है, क्रेय जो हम करते है तथा भोगेय, जो हम स्मृत करते हैं। तीनों ही इसमें शामिल हैं। हम सचिन को खेलता हुआ देख **रहे** हैं, हम स्वयम् **खेल रहे** हैं, तथा हम **सीख रहे** हैं। तीनो में चेतना का वही काम हैं जो ऊपर वर्णित है।

विज्ञान	'ऊर्जित, शक्ति, सुदृढ़ में विकसित जीवन्त पूर्णता **(ङ)**			**वाक्**
	'श ुद्धता, ज्ञेय व विवरण में विश लेषित स्ष्ट का अभाव **(ङ)**			
	'दर्शित एकत्व (श ुद्धता) स्पष्ट–उत्सुक **(ङ)**	'विश्लेषित बोध' (ज्ञेय) स्पष्ट–उत्सुक **(ङ)**	प्रदर्शित वैविध्य'(विवरण) स्पष्ट–उत्सुक **(ङ)**	
	'दर्शित एकत्व' (श ुद्धता) स्पष्ट–उन्मुख **(क)**	चेतन 'विश्लेषित बोध' (ज्ञेय) स्पष्ट–उन्मुख **(क)**	प्रदर्शित वैविध्य' (विवरण) स्पष्ट–उन्मुख **(क)**	
	'दर्शित एकत्व' (श ुद्धता) स्पष्ट **(ग)**	'विश्लेषित बोध' (ज्ञेय) स्पष्ट **(ग)**	प्रदर्शित वैविध्य' (विवरण) स्पष्ट **(ग)**	
'एकत्व दर्शन' अंगीकृत **(ब)** **ऋषि**	**ऋषि**	तीनो में श ुद्धता ज्ञेय विवरण का स्पष्ट **देव**	**गन्धर्व**	'वैविध्य प्रदर्शन' प्रस्तुत**(द)**

देव सत्ता का रेखाचित्र (2.21)

2.3 'क ख ग घ ङ' की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का विवरण

कई	विश्लेषण हो रहे (क) का प्रत्यक्ष होता हुआ (ई) ; *जितने भी बाह्यप्रत्यक्ष हैं, उनमें जो विश्लेषित हो रहे है।*
कवर	स्पष्ट हो रहे (क) आवरण/छिपे सत् (व) में केन्द्रित (र) ; *जो आवरण को स्पष्ट करने में संलिप्त रहता है।*
कगार	***किनारा*** = स्पष्ट हो रही (क) स्पष्टता (गा) में संकुचन (अ–विस्तार) (र) ;*स्थान उपलब्धता में जहां संकुचन हो जाये उसे कगार कहते है।*
कच्चा	शुद्ध–उन्मुख (क) को जीवन्त–उन्मुखात्मक जीवन्त–उन्मुखता (च्चा) ; *शुद्धता को निरन्तर जीवन्त करने का अर्थ पकाना है अर्थात् जो पकाया जा रहा है।*
कवि	विश्लेषित हो रहे/स्पष्ट हो रहे (क) छिपे हुऐ सत् का प्रत्यक्ष (वि), *छिपे हुऐ सत् के प्रत्यक्ष को जो विश्लेषित करता है, कवि कहलाता है।*
कविता	विश्लेषित हो रहे/स्पष्ट हो रहे (क) छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) का अर्थ प्रस्तुत हो रहा होना (ता) ; *विश्लेषण के द्वारा छिपे सत् के अर्थ को प्रस्तुत करना।*
कश	**चाबुक** = भोग में स्पष्ट हो रहे (क) जीवन्त अनुभूति (श)
कशा	**कोड़ा** = भोग में स्पष्ट हो रही (क) व्यतीत/अहसास की सत्ता (शा),
कस	**परीक्षा = *प्रयत्न*** = ज्ञान में विश्लेषण हो रहे/ स्पष्ट हो रहे (क) का व्यक्त (स) ; *परीक्षा में योग्यता का विश्लेषण व्यक्त होता है।*
कसम	स्पष्ट हो रहे (क) व्यक्त (स) में प्रस्तुत/समर्पित होने के लिये उत्सुक (म) ; *जो स्पष्ट व्यक्त किया गया उसके प्रति समर्पण।*
कह	क्रियात्मक स्पष्ट हो रहे (क) को असत् स्थित स्थान उपलब्धता (स्थूलता) (ह) ; *विवरण का सत्ता से बाहर निकलना, मुंह से निकली हुई बात, आपकी सत्ता से बाहर निकल कर भौतिक लोक में ही जा रही है।*
कहना	कह को करना (ना)
कहर	क्रियात्मक स्पष्ट हो रही (क) सत्ता से बाहर निकालने/मृत्यु (ह) में अंगीकृत

	एकाग्र (र) ; *मृत्यु की तरफ स्पष्ट करने में एकाग्र।*
कट	स्पष्ट हो रहा (क) विकर्षण उन्मुख (ट) ; *विकर्षण से विभाजन हो रहा है।*
कटक	**सेना** = जीवन्तविहीन–उन्मुख (क) को प्रवृत्त हो रही (ट) चेतना (क) ; *ऐसी चेतना जो जीवन्त विहीन करनेके लिये प्रवृत्त हो रही है।*
कल	स्पष्ट हो रहा (क) उपलब्ध अ–निरन्तर विस्तार (ल), *समय की उपलब्धता रुक कर स्पष्ट हो रही है।*
कच	**बाल** = स्पष्ट हो रहा (क) जीवन्त उन्मुख हो रहा होना (च) ; *बाल सिर में उगते हैं* = बन्धित सत्ता (बा) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *सिर से बंधे हुऐ उगता हुआ विस्तार।*
कता	**बनावट** = स्पष्ट हो रही (क) वैविध्य–प्रदर्शनोन्मुखता (ता) ; *किसी वस्तु की बनावट उसकी विविधता का स्पष्टीकरण है जो कि वस्तु उसका प्रदर्शन कर रही है। प्रदर्शित हो रही बनावट स्पष्ट होरही है।*
कथा	ज्ञानात्मक स्पष्ट हो रहा (क) स्थापित होये हुऐ भाव की सत्ता (था) ; *जो स्थापित है, उसका स्पष्ट होना।*
कद	**व्यक्तित्व विशालता** = जिद = स्पष्ट हो रही (क) प्रस्तुति (द) ; *प्रस्तुति का स्पष्टीकरण ही कद है।*
कदर	**प्रतिष्ठा** = ज्ञानात्मक/क्रियात्मक चेतना की (क) प्रस्तुति (द) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; चेतना की *प्रस्तुति में संलिप्त।*
कण	स्पष्ट हो रहा (क) प्रवृत्तोत्सुक, अप्रवृत्त (ण),
कप	स्पष्ट हो रहा (क) सुरक्षात्मक/बन्धनात्मक अंगीकरण होता हुआ (प) ; *कप में वस्तु की सुरक्षा/बन्धन स्पष्ट होती है।*
कपट	चेतन का (क) बन्धित अनुमोदन (प) में प्रवृत्त हो रहा (ट), *आन्तरिक बन्धन के द्वारा प्रवृत की चेतना*
कपि	**बन्दर** = चेतना (क) का प्रत्यक्ष बन्धित अनुमोदन (पि) ; *जिसमें चेतना बंधित रहती है।*
कफ	**बलगम** = स्पष्ट हो रहा (क) अपरीक्षित/बिना शर्त अनुमोदन (फ) ; *खांसी स्वतः ही बिना रोक टोक आती है।*

कफन	स्पष्ट हो रहा (क) बिना शर्त अनुमोदन (फ) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *शव बिनाशर्त के वस्त्र को अनुमोदित करता है।*
कब	स्पष्ट–उन्मुख (क) अंगीकृत बन्धन (ब) ; *अंगीकृत समय के बन्धन को स्पष्ट करने का प्रयास।*
कम	स्पष्ट हो रहा (क) अ–अंगीकृत (म) ; *हम अंगीकृत नहीं करेंगे तो वस्तु कम ही होगी।*
कमर	कम में अंगीकृत रत (र)
कर	क्रियात्मक चेतना (क) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *क्रियात्मक चेतना के द्वारा कर्म किया जाता है।*
करार	चेतना (क) के संमोहन/ऐकाग्रित सत्ता (रा) में एकाग्र (र) ; *चेतना का सम्मोहन (मानने) में संलिप्त हो जाना।*
कलह	भोगात्मक स्पष्ट हो रही (क) उपलब्ध विस्तार (ल) की स्थूल उपलब्धि (ह) ; *स्थूलता के विस्तार से कलह स्पष्ट होती है।*
कला	भोगात्मक स्पष्ट हो रही (क) अर्पित भावना की सत्ता (ला) ; *कला द्वारा भावना को स्पष्ट किया जाता है।*
कागज	ज्ञानात्मक स्पष्ट कर रही (का) स्पष्ट की (ग) जीवन्तता (ज) ; *जहां ज्ञानात्मक स्पष्टता को जीवन्त किया जा रहा है।*
कागद	उपर्युक्त में प्रकट स्थान (ज) की जगह प्रस्तुति (द)
काछ	**जांघ का ऊपरी हिस्सा** = क्रियात्मक चेतनता (का) की उर्जाविरोध– उन्मुखता (छ) ; *इस हिस्से की जांघ को हिलाया नहीं जा सकता।*
काच	**शीशा** = स्पष्ट कर रहे (का) जीवन्त–उन्मुख को (च) ; *जो जीवन्त कर रहे हैं, उसे ही स्पष्ट कर रहे है।*
काज	**कृत्य** = क्रियात्मक चेतना (कर्म) (का) ओजस्/जीवन्त (ज) ; *कर्म को जीवन्त करने से कृत्य बनता है।*
कातर	**अधीर** = स्पष्ट कर रहे (का) समर्पित भाव (त) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *स्पष्ट को समर्पित/प्रस्तुत करने में पूर्णतया एकाग्र (अधीर) हैं।*
काम	कर्म = प्रणय क्रियात्मक/भोगात्मक चेतना (का) का होना।

कान	ज्ञानात्मक स्पष्ट कर रहे (का) को अंगीकृत उत्सुकता (न) ; *स्पष्ट को जाने की इच्छा।*
कापी	स्पष्ट कर रहे (का) का होता हुआ अनुमोदन (पी), *जो स्पष्ट हो रहा है वह निरन्तर अनुमोदन के द्वारा हो रहा है।*
का	स्पष्ट कर रहा (का) ; *सम्बन्ध, कर्म, विश्लेषण।*
कार्य	क्रियात्मक चेतना (कर्म) (का) द्वारा (ि) प्रत्यक्ष (य) ; *कर्म करने से जो प्रत्यक्ष होता है।*
काल	चेतना (का) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *चेतना का विस्तार काल से ही उपलब्ध होता है।*
काला	चेतना (का) में उपलब्ध विस्तार की सत्ता (ला) ; *कर्ता, पुरुष काला है। जितना रिक्त (काला) है उतना ही चेतना का विस्तार सम्भव होगा।*
काश	चेतना (का) व्यतीत उपलब्धि (अहसास) (श) ; *व्यतीत हो चुकी उपलब्धि में चेतना होना*
किस	पहचान = चुम्बन = ज्ञानात्मक/भोगात्मक –चेतना (कि) का व्यक्त (स); पहचानना/प्रणय अनुभूति करना
किन	ज्ञानात्मक पहचान रहे (कि) में अंगीकृत उत्सुक भाव (न), पहचान करनी है।
कित	क्रियात्मक पहचान रहे (कि) भाव (त), क्रिया कहां करनी है।
किरच	**पतली तलवार** = बाह्यस्थित स्पष्ट (कि) एकाग्र, पतली (र) में जीवन्त हो रहा होना (च) ; *पतली धार जो जीवन्त होती है, उसका बाहर दिखाई देना।*
किरन	प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक/क्रियात्मक चेतना (कि) में प्रज्ञा/एकाग्र/प्रवाह (र) को अंगीकृत के लिये उत्सुक क्रिया (न),
किरपा	**कृपा** = प्रत्यक्ष क्रियात्मक चेतना (कि) में एकाग्र (र) अनुमोदन की सत्ता (पा) ; स्पष्ट हो रही (कृ) अनुमोदन की सत्ता (पा) ;
कीक	**चीख** = बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई क्रियात्मक चेतना का (की) स्पष्टोन्मुख (क) ; बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई ऊर्जित हो रहा (ची) स्पष्ट विहीनता उन्मुख (ख) ; *जो ऊर्जा बाह्यप्रत्यक्ष हो रही है, उसमें कोई स्पष्टता नहीं है।*
कीच	**कीचड़ = लेप** = बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई स्पष्ट–उन्मुख (की) में अस्पष्टता होना

	(च) ; *बाहर को दिखाई देती हुई अस्पष्टता।*
कीर्ति	बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई स्पष्ट उन्मुख (की) की स्वप्रज्ञित के द्वारा (ि) प्रत्यक्ष भाव (ति) ; *स्पष्ट होते हुऐ के द्वारा होने वाला बाहर दिखाई देने वाला भाव।*
कुँआ	अन्धत्व हो रही (कु) तमस् सत्ता (आँ) ; *अंधेरा व खाली।*
कु	अन्धत्व उन्मुख, अन्तःस्थित चेतन, अनभिज्ञ उन्मुख।
कुकर्म	अन्धत्व उन्मुख (कु) कर्म (कर्म)
कुच	**स्तन** = अन्तःस्थित भोगात्मक चेतना (कु) जीवन्त हो रही होना (च) ; *भोग की चेतना जहां से जीवन्त हो रही है।*
कुचलना	अन्धत्व–उन्मुख (कु) चलना (चलना)
कुछ	अनभिज्ञ–उन्मुख (कु) ऊर्जितावरोध हो रहा होना (छ) ; *ऊर्जा में अवरोध से भिज्ञता पूर्ण नहीं है।*
कुतर्क	अन्धत्व/अनभिज्ञ उन्मुख (कु) तर्क (तर्क)
कुत्सन	**निन्दा** = अन्धत्व–उन्मुख (कु) भावात्मक (त्) व्यक्त (स) क्रिया (न) ; *बिना समझे भावों को व्यक्त करने की क्रिया।*
कुत्सा	**निन्दा** = अन्धत्व–उन्मुख (कु) भावात्मक (त्) व्यक्त की सत्ता (सा)
कुदरत	**प्रकृति** = अन्तः स्थित प्रदर्शन की चेतना का (कु) अर्थ प्रस्तुति (द) में एकाग्र (र) भाव (त) ; *प्रकृति पुरुष के समक्ष प्रदर्शन की प्रस्तुति में एकाग्र रहती है।*
कुब्जा	अन्धत्व–उन्मुख (कु) बन्धनात्मक (ब्) जीवन्त सत्ता (जा) ; *अन्धत्व के द्वारा जो बन्धित सत्ता होती है।*
कुमक	अन्धत्व–उन्मुख (कु) सामग्री (म) स्पष्ट हो रही होना (क)
कुल	अन्तःस्थित चेतन (कु) में उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जितना विस्तार हो सकता है, उतना करना।*
कुश	**शौर्य** = अन्तःस्थित क्रियात्मक चेतना (कु) में जीवन्त उपलब्ध संस्कार (श) ; *संस्कारों में जीवन्तता/बल होना।*
कुशल	**अभ्यास** = अन्तःस्थित चेतना में (कु) संस्कारों (श) का उपलब्ध विस्तार (ल); क्रियात्मक *चेतना के संस्कारों में जितना विस्तार हो सके।*

कुशासन	अन्धत्व उन्मुख (कु) संस्कारित सत्ता (शा) की व्यक्त (स) क्रिया को (न) ; *जो संस्कार अन्धत्व की तरफ जाते हो, उनके द्वारा क्रिया।*
कूत	**अनुमान** = अन्तर्विलीन होता हुआ विषय (कू) प्रस्तुत उन्मुख भाव (त) ; ज्ञानात्मक गुप्त भाव, *जो विलीन (गुप्त) है, वह प्रस्तुत हो रहा है।*
कूतना	कूत का करना (ना) *गुप्त को जानना।*
कूद	अन्तर्विलीन होती हुई चेतना/बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई जीवन्तता (कू) की प्रस्तुति (द) ; *बाहर को दिखाई देती हुई क्रियात्मक जीवन्तता की प्रस्तुति।*
कूल	**ठंडा** = अन्तर्विलीन होती हुई चेतना (कू) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *चेतना गर्म का संकेत है, चेतना (गर्म) विलीन हो रहा है।*
कृष्ण	अन्तः प्रज्ञित 'वैविध्य चेतना' (कृ) को व्याप्तात्मक (ष्) प्रवृत्त करने की इच्छा (ण), *प्रज्ञात्मक चेतना को सब तरफ फैलाने की इच्छा।*
कृत	अन्तः चेतना द्वारा (कृ) प्रस्तुत हो रहा भाव (त) ; *चेतन द्वारा किये हुऐ को प्रस्तुत करना।*
कृपा	चेतना में होती हुई (कृ) अनुमोदनता (पा)।
कृपाण	अन्तः चेतना द्वारा (कृ) की अनुमोदना (पा) को स्थापित करने की इच्छा (ण) ; बीज (कृ) का जल के द्वारा अनुमोदन (पा), स्थापित करने की इच्छा (ण) ;
कृश	**दुर्बल** = चेतना में होता हुआ (कृ) ऊर्जात्मक व्यतीत (श) ।
कृमिक	चेतना द्वारा (कृ) प्रत्यक्ष प्रस्तुत होने को उत्सुक (मि) का विवरण उन्मुख (क)।
कृत्य	चेतना द्वारा (कृ) क्रियात्मक भावत्व (त्) का प्रत्यक्ष (य), *चेतन ने जिस क्रिया को प्रत्यक्ष किया है।*
कृषि	चेतना द्वारा (कृ) प्रत्यक्ष व्याप्ति (षि) ; *यह चेतन सब जगह व्याप्त है*
केउ	**कोई** = इंगित स्पष्ट हो रहा (के) छिपाव (उ) ; *छिपी हुई कोई वस्तु स्पष्ट हो रही है।*
केतु	इंगित चेतना (के) में प्राप्त हो रहा भाव (तु) ; *चेतन में जो भाव अन्दर आ रहा है। अन्तर्गमित सत् का चेतनात्मक भाव।*
केन	**उपनिषद का नाम** = इंगित स्पष्ट हो रही (के) अंगीकृत करने की उत्सुकता (न) ; *जिज्ञासा का भाव।*

केत	**ध्वज** = इंगित–स्पष्ट हो रहा (के) भाव (त) ; *भाव जो इंगित रूप से स्पष्ट हो रहा है।*
केर	**सम्बन्ध सूचक, जानने की इच्छा** = इंगित स्पष्ट हो रहे (के) में एकाग्र (र) ; *जो स्पष्ट हो रहा है, उसमें ध्यान लगाना।*
केवल	इंगित स्पष्ट हो रहे (के) में छिपे हुऐ सत् (व) की विस्तारित उपलब्धता (ल) ; *छिपे सत् को (केवल इतना ही) स्पष्ट होने की उपलब्धता।*
कैत	**फल विशेष ओर, तरफ** = स्पष्ट हो रहे के सत् में प्रत्यक्ष (कै) का भाव (त)।
कैन	**टहनी** = स्पष्ट हो रहे के सत् में प्रत्यक्ष (कै) को अंगीकृत करने को उत्सुक (न) ; *जो प्रत्यक्ष स्पष्ट हो रहा है, तना उसे अंगीकृत करने को उत्सुक है।*
कैंया (मारवाड़ी)	सत् के स्पष्ट हो रहे के प्रत्यक्ष (कै) में विषमात्मक (ं) प्रत्यक्षता (या) ; *प्रत्यक्ष हो नहीं पा रहा।*
कैलास	सत् के स्पष्ट हो रहे के प्रत्यक्ष (कै) के उपलब्ध विस्तारण उपलब्धता (ला) का व्यक्त (स) ; *जो सत् स्पष्ट होकर प्रत्यक्ष हो रहा है, उसकी उपलब्धता का व्यक्त।*
कैसा	सत् के स्पष्ट–उन्मुख में प्रत्यक्ष (कै) व्यक्त सत्ता (सा) सत् के ज्ञानात्मक स्पष्ट उन्मुखता।
कोच	**सिखाने वाला** = चेतना की छिपी दिशा को (को) जीवन्त हो रहे होना (च) ; *चेतना में जो छिपाव है, उसे जीवन्त करना।*
कोख	चेतना की छिपी दिशा में (को) चेतन के लिये स्थान उपलब्धता/ स्पष्ट सीमित उन्मुख (ख)।
कोटि	**तलवार की धार = प्रकार** = चेतना की दिशा में (को) प्रत्यक्ष प्रवृत्ति (टि) ; *भोगात्मक चेतन की दिशा 'तलवार की धार' है व ज्ञानात्मक चेतन की दिशा 'प्रकार' है।*
कोना	चेतना की दिशा में (को) रिक्तता (ना) ; *जिस दिशा में ज्ञानात्मक चेतन रिक्त हो जाता है।*
कोनी	**नहीं** = चेतना की दिशा में (को) बाह्य प्रत्यक्ष रिक्तता (नी) ; *चेतन की भोगात्मक रिक्तता की दिशा में प्रत्यक्ष हो रही है।*
कोय	**कोई** = चेतना की दिशा में (को) प्रत्यक्ष (य), *ज्ञानात्मक चेतनकी दिशा, प्रत्यक्ष*

	रूप में किसी को देखने की है।
कोरक	**कली** = चेतना की दिशा में (को) अंगीकृत एकाग्र (र) का स्पष्ट हो रहे होना (क) ; *जो भोगात्मक चेतना प्राप्त करने की दिशा में एकाग्र है।*
कौन	चेतना के सत् में छिपे हुऐ (कौ) का अंगीकृत उत्सुक (न) ; *जानने की इच्छा करना।*
कौरव	चेतना के सत् में छिपे हुऐ (कौ) एकाग्र (र) का छिपा हुआ सत्/सूत्र (व) ; *वह सूत्र जो ज्ञानात्मक चेतना के छिपने में एकाग्र रहता है (अस्पष्टता)।*
कौवा	चेतना के सत् में छिपे हुई (कौ) छिपी सत्ता (वा) ; *वह सत्ता जो चेतन (ज्ञानात्मक) को छिपाये रखती है।*
कौशल	सत् की चेतना में छिपे हुऐ (कौ) जीवन्त/ऊर्जित उपलब्धि (श) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *चेतना में (ज्ञानात्मक व क्रियात्मक दोनों) जो जीवन्त ऊर्जा छिपी है, उसका विस्तार। कौशल छिपी हुई जीवन्त ऊर्जा है।*
क्या	स्पष्टोन्मुखात्मक (क्) की प्रत्यक्ष सत्ता (या) ; *सत्ता जो स्पष्ट होना चाह रही है।*
क्यों	स्पष्टोन्मुखात्मक (क्) विषम (ं) प्रत्यक्ष दिशा (यो) ; *क्रिया की दिशा में विषम स्पष्ट उन्मुखता।*
क्रम	स्पष्ट हो रहे (क) का होता हुआ (्र) होना (म) ; *निरन्तर होते हुऐ का स्पष्ट होते होना।*
क्रोध	चेतना की दिशा (को) में बाह्यप्रज्ञित/द्वारा (्र) अवधारणा (ध), *अवधारणा के द्वारा जो चेतन बाहर प्रकट हो रहा है।*
खतरा	अविश्लेषित हो रहे (ख) भाव (त) में ध्यान (रा) ; *ध्यान बिना विश्लेषित भाव में है।*
खता	अविश्लेषित हो रही (ख) भाव सत्ता (ता) ; *भाव सत्ता का विश्लेषण ना करना।*
खत	अतर्कोन्मुख (ख) प्रस्तुत–उन्मुख होना (त) ; *खत में कोई तर्क नहीं होता*
खई	**युद्ध** = अतर्कोन्मुख (ख) का होता हुआ बाह्यप्रत्यक्ष (ई) ; *बिना तर्क की क्रियान्विती।*
खग	चेतन सीमितता का (ख) स्पष्ट (ग) ; *समझ की कमी का स्पष्ट।*
खचर	चेतन की सीमितता (ख) में ऊर्जित हो रहे (च) में अंगीकृत रत (र) ; *बिना*

	समझ वाले के द्वारा ऊर्जा देने में संलिप्त।
खच्चर	ज्ञानात्मक चेतन की सीमितता (ख) में निरन्तर ऊर्जित हो रहे (च्च) में अंगीकृत रत (र) ; *बिना समझ वाले के द्वारा निरन्तर ऊर्जा देने में संलिप्ति।*
खज	**भक्ष्य** = चेतन प्राप्ति के लिये उपलब्धता (ख) में जीवन्त (ज) ; भोगात्मक *चेतन प्राप्ति के लिये उपाय करना।*
खद	**ठहराव** = चेतना में सीमितता (ख) की प्रस्तुति (द) ; *क्रियात्मक चेतन जहाँ रूक जाये।*
खर	चेतन में सीमितता (ख) का एकाग्र (र) ; *समझ की (ज्ञानात्मक चेतन) सीमितता में संलिप्त।*
खरा	अविश्लेषित हो रहा (ख) सम्मोहन (रा) ; *बिना समझ लगाये जिसमें सम्मोहत हो वह खरा दिखाई देता है।*
खल	चेतना में सीमितता (ख) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *समझ (ज्ञानात्मक चेतन) की कमी का विस्तार।*
खस	स्पष्ट–उन्मुख सीमितता (ख) का व्यक्त (स) ;*स्पष्ट ना हो पाये ऐसा व्यक्त।*
खसरा	अस्पष्ट–उन्मुख (ख) के व्यक्त (स) में एकाग्र सत्ता (रा) ; *खसरा में चेहरा अस्पष्ट हो जाता है।*
खाक	चेतन विहीन सत्ता (खा) का स्पष्ट हो रहे (क) ; *चेतना समाप्त होने से सब कुछ खाक में मिल जाता है।*
खाना	चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता (खा) करना (ना), *चेतन प्राप्ति के लिये उपाय करना।*
खाद्य	चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता (खा) धारणात्मक (ध्) प्रस्तुति (द्) ; *जो वस्तु धारण (भोग) करने के लिये प्रस्तुत है, चेतन प्राप्ति के उपाय के लिये।*
खाम	**लिफाफा** = ज्ञेय प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता (खा) होना (म) ; *वह स्थान जिस में ज्ञेय समा सके।*
खाल	चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता (खा) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जिस फैलाव के अन्दर चेतना उपलब्ध होती है, उसका होना।*
खित	**पृथ्वी** = चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्ध का प्रत्यक्ष (खि) प्रस्तुत उन्मुख

	(त) ; *पृथ्वी चेतन प्राप्त करने के लिये आकाश में प्रस्तुत होती है।*
खिन	**क्षण** = चेतन के लिये स्थान उपलब्ध के प्रत्यक्ष (खि) को अंगीकृत करने को उत्सुक (न) ; *चेतन में काल के लिये जो भी स्थान उपलब्ध हो रहा है, उसे प्राप्त करना।*
खीर	बाह्यप्रत्यक्ष चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता (खी) में एकाग्र (र) ; *खीर को मह लोक भी कहा जाता है जो प्रत्यक्ष होते हुऐ संकेत को स्थान उपलब्ध करता है।*
खुद	अन्तःस्थित विश्वासोन्मुख (खु) प्रस्तुति (द) ; *स्वयम् की प्रस्तुति।*
खुदा	**अहम् की सत्ता = शिव = स्थायित्व** = अन्तःस्थित हो रहे विश्वास (खु) के प्रस्तुति की सत्ता (दा), *आत्मविश्वास की प्रस्तुति।*
खुनस	अहंकार (खु) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) का व्यक्त (स), *जिद्द को स्वीकृत कराने में व्यक्त।*
खुर	दृढ़ता (खु) में अंगीकृत एकाग्र (र), *खुर सख्त होते हैं।*
खुलना	अन्तर्मुखी चेतना के लिये उपलब्ध स्थान (खु) को विस्तार उपलब्ध (ल) करना (ना)।
खून	अन्तर्विलीन होती हुई चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता (खू) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *खून अन्तर्विलीन है, चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता प्राप्त करता है।*
खूब	अन्तर्विलीन होती हुई चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता (खू) का बन्धन (ब) ; *जहाँ स्थान उपलब्धता समाप्त हो रही है।*
खेत	इंगित चेतन के लिये स्थान उपलब्धता (खाली) (खे) का भाव (त), *जहां चेतन उत्पन्न हो सकता है।*
खेल	इंगित चेतन के लिये स्थान उपलब्धता (खे) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *खेल में चेतन (क्रियात्मक व भोगात्मक दोनों) का विस्तार होता है।*
खेद	इंगित चेतन के लिये स्थान उपलब्धता (खे) प्रस्तुति (द), *दूसरे के भोगात्मक चेतन में स्वयम् को प्रस्तुत करना।*
खैरात	सत् के चेतना विहीन (बिना तर्क के) के प्रत्यक्ष (खै) में ध्यान (रा) का भाव (त) ; *बिना तर्क की भावना।*

खैर	**कुशलता के सन्दर्भ में = ठीक ठाक** = सत् में चेतन प्राप्ति के लिये स्थान उपलब्धता के प्रत्यक्ष (खै) एकाग्र (र) ; *चेतन के लिये स्थान मिलने से कुशलता प्राप्त होती है।*
खोइ	अस्पष्ट दिशा में (खो) प्रत्यक्षात्मक (इ) ;
खोखा	चेतन उन्मुख दिशा में (खो) चेतन विहीन सत्ता (खा) ;*अस्पष्ट स्थान पर चेतन विहीन सत्ता।*
खोज	उन्मुख दिशा में (खो) में जीवन्तता (ज) ; *जीवन्तता की दिशा अस्पष्ट है।*
खोआ	उन्मुख दिशा में (खो) सत्ता (आ) ; *सत्ता अस्पष्ट स्थान पर स्थित है।*
खोट	चेतन विहीन का दिशा में (खो) प्रवृत्त (ट) ; *चेतन की अस्पष्ट दिशा में प्रवृत्त होना, गलत दिशा में प्रवृत्त।*
खोद	छिपे हुऐ इंगित (खो) की प्रस्तुति (द) ;*जो अन्दर छिप गया है उसकी प्रस्तुति का प्रयास करना, खोद कर।*
खोल	चेतन के लिये स्थान उपलब्धता की दिशा में (खो) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *खोल के अन्दर चेतन के लिये स्थान उपलब्ध होता है।*
खोना	उन्मुख दिशा (खो) करना (ना) ; *दिशाओं को अस्पष्ट कर देना।*
खोर	**पतली गली** = अस्पष्ट दिशा में (खो) एकाग्र (र) ; *जो दिशाऐं अस्पष्ट हो रही हैं उनमें एकाग्र।*
गऊ	स्पष्ट/गुणात्मक वैविध्यता स्पष्ट (ग) की निरन्तर अन्तर्गमिता (ऊ) ; *स्पष्टता को निरन्तर स्वीकृत करना।*
गगन	स्पष्ट वैविध्यता (ग) में स्पष्ट वैविध्यता (ग) के लिये रिक्तता (न), *अर्थात् 'ग' जहां निवास करता है उस स्थान में 'ग' के लिये उपलब्ध रिक्त स्थान है, वही आकाश है।*
गज	स्पष्ट बोध (ग) में जीवन्त (ज) ; *स्पष्ट की दिशा में जीवन्त होना (गणेश का भाव)।*
गढ़	ज्ञानात्मक स्पष्ट (महल) (ग) की स्थापित सीमाबद्धता (ढ़) ; *सीमा के अन्दर जो स्थापित है।*
गज़र	**समय समय पर बजता शब्द** = स्पष्टता (ज्ञेय) (ग) के जीवन्त (ज) में अंगीकृत

	एकाग्र (र) ; भोगात्मक *स्पष्टता (ध्वनि) को जीवन्त करने में एकाग्र होना।*
गज़ल	**सौन्दर्य के सन्दर्भ में** = स्पष्टता (ग) में व्यक्त ओजस् (ज) की विस्तारित भावना (ल) ; *ज्ञानात्मक व भोगात्मक स्पष्टता के व्यक्त को ओजस के द्वारा विस्तार।*
गण	ज्ञेय स्पष्टता (ग) में प्रवृत्त होने की इच्छा (ण) ; *जो स्पष्ट दिशा में प्रवृत्त होने की इच्छुक हैं।*
गणना	स्पष्ट (ग) को स्थापन करने की इच्छा (ण) करना (ना) ; *गणना करने से ज्ञेय स्थापित हो रहा।*
गणता	**समूह** = स्पष्ट संख्या (ग) को स्थापन करने की इच्छा (ण) का भाव (ता) ; *संख्या में जो स्थापित होता हो।*
गणित	स्पष्ट हो चुके (ग) में प्रत्यक्ष के स्थापन करने की इच्छा (णि) का भाव (त) ; *जो स्पष्ट हो गया, उसे स्थापित करने का भाव।*
गणेश	स्पष्ट हो चुके उद्देश्य (ग) की इंगित प्रवृत्त होने की इच्छा (णे) में जीवन्त/ऊर्जित उपलब्धता (श) ; *जो स्पष्ट हो चुका है, उसमें प्रवृत्त होने के लिये जीवन्तता।*
गत्	स्पष्ट हो चुके (ग) भावात्म (त्) ; *बीता हुआ, सत् हमेशा भूतकाल में होता है।*
गत	स्पष्ट हो चुका (ग) प्रस्तुत–उन्मुख (त) ; *हालत।*
गति	स्पष्ट गत्यात्मक वैविध्य (ग) का प्रत्यक्ष प्रस्तुत उन्मुख (ति) ; *गति का भाव।*
गथ	**पूंजी** = स्पष्ट द्रव्यात्मक वैविध्य (ग) का स्थापित हो रहा होना (थ) ; *द्रव्य का स्थापित हो रहा होना।*
गधा	स्पष्ट गुणात्मक वैविध्यता (ग) में धारणा की सत्ता (धा) ; *जिसकी ज्ञानात्मक स्पष्टता में धारणा बसी हुई हो।*
गन	स्पष्ट गत्यात्मक वैविध्यता (ग) का पौरुष (न) ; *बन्दूक, जिसमें गति का पौरुष हो।*
गम	**दुःख** = स्पष्ट (ग) पौरुषविहीन (म) ;*पौरुष विहीनता का भोगात्मक स्पष्ट।*
गर	**यदि** = स्पष्ट गुणात्मक वैविध्यता के वर्णन (ग) में अंगीकृत प्रज्ञा (र) ; *निर्णय में प्रज्ञा का हस्तक्षेप।*

ग़रक	***गर्क*** = **किसी कार्य में लीन** = स्पष्टता (ग) में अंगीकृत एकाग्र (र) चेतना (क)। क्रियात्मक स्पष्टता में एकाग्र
ग़रज	विषय की स्पष्टता (ग) में अंगीकृत एकाग्र (र) जीवन्त (ज) ; *हमारी जीवन्तता उस एकाग्रता में है जो हमारे लिये स्पष्ट है।*
गरम	स्पष्ट (ग) में अंगीकृत एकाग्र (र) होना (म); *भोगात्मक स्पष्ट में एकाग्र होना।*
गलन	**गलकर गिरना** = स्पष्ट विषय (ग) उपलब्ध विस्तारित (विरल) (ल) क्रिया (न) ; *ठोस का द्रव में बदलना।*
गाउन	स्पष्टता (गा) के छिपाव (उ) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *जो स्पष्टता को छिपाने के लिये उत्सुक है।*
गाइ	**गाय** = स्पष्टता (गा) का प्रत्यक्षात्मक (इ) ; *स्पष्टता का प्रत्यक्ष।*
गाज	**गर्जन** = स्पष्टता (गा) में जीवन्तता (ज); *भोगात्मक जीवन्तता के द्वारा स्पष्ट होना।*
गाछ	**पौधा** = स्पष्टता (गा) की ऊर्जित हो रही सीमितता (छ) ; *जो सीमित ऊर्जता के द्वारा स्पष्ट की तरफ उन्मुख हो।*
गान	स्पष्टता (गा) की क्रिया (न)।
गाम	**गांव** = स्पष्टता (गा) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *जिसकी स्पष्टता अभी धीरे धीरे प्रस्तुत हो रही है।*
गाल	**बकवाद करने का स्वभाव** = स्पष्टता (गा) को उपलब्ध विस्तारण (ल) ; *स्पष्ट बात को अत्यधिक विस्तार से कहना।*
गिर	**भाषण (वाणी के अर्थ में)** = प्रत्यक्ष स्पष्ट (गि) में रत (र) ; *स्पष्ट बात को प्रत्यक्ष करने में संलिप्त।*
गिरना	**नीचे गिरना** = प्रत्यक्ष गत्यात्मक स्पष्ट (गि) को एकाग्र (आकर्षित) (र) करना (ना) ; *गत्यात्मक स्पष्ट का आकर्षण की तरफ जाना।*
गिल	**मिट्टी** = प्रत्यक्ष विषय (गि) का विकेन्द्रण (ल) ; *मिट्टी की दीवार टूट जाती है।*
गिला	**दुःख = शिकायत** = प्रत्यक्ष विषय में स्पष्टता (गि) विस्तारण (ला) ; *बीती हुई भोगात्मक स्पष्टता का विस्तारित करना।*

गीत	बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई स्पष्टता (गी) का प्रस्तुत हो रहा होना (त)।
गीता	गीत की सत्ता (ा)
गीर्ण	**वर्णन किया गया** = बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ विवरण स्पष्टता (गी) में स्व केन्द्रित (ा) स्थापन–प्रवृत्त को उत्सुक (ण) ; *जो भी विवरण प्रत्यक्ष हो रहा है, उस में स्वयम् की इच्छित तो स्थापित करना, अपनी बात कहने के लिये उत्सुक रहना।*
गु	**परवाना** = विषय स्पष्टता में छिपा हुआ (गु)।
गुप्त	विषय स्पष्टता में छिपाव का (गु) अनुमोदनात्मक (प्) भाव (त) ।
गुम	छिपावात्मक बोध का (गु) होना (म) ।
गुर	छिपावात्मक बोध की (गु) प्रज्ञा (र) ; *छिपाये हुऐ ज्ञान में एकाग्र।*
गुरू	अन्तःस्थित बोध (गु) की अन्तःस्थित प्रज्ञा (रू.) ; *छिपाये हुऐ ज्ञान का अन्तः में प्रज्ञात्मक उपलब्धता।*
गुहा	**गुफा** = छिपावात्मक बोध की (गु) स्थूल स्थान उपलब्धता (हा) ; *वो स्थूल स्थान जहां छिपा जा सकता है।*
गृ	बोध का अन्तःकेन्द्रित (गृ) ; *अन्तः स्पष्ट के द्वारा, अन्तःस्पष्ट होता हुआ।*
गृह	अन्तः बोध के द्वारा (गृ) असत् में स्थान उपलब्धता (ह) ; *घर, जहाँ प्रज्ञा उपलब्ध स्थान के अन्दर रहे उस स्थान को गृह कहते हैं।*
ग्रह	बाह्य बोध के द्वारा (ग्र) असत् में स्थान की उपलब्धता (ह) ; *यहां ग्रह का अर्थ है, जहां प्रज्ञा स्थान के उपर रहे उसे ग्रह कहेंगे।*
गर्ह	स्व बोध के द्वारा (गं) असत् में स्थान उपलब्धता (ह) ; *अर्थात् जहां प्रज्ञा सत्ता के अन्तर्गत ही रहता हो, जैसे हमारे संस्कार।*
गेह	**घर** = इंगित बोध को (गे) असत् में स्थान उपलब्धता (ह) ; *इंगित मनुष्य का बोध है, और इंगित असत् में स्थान उपलब्धता वो स्थान है, जो रहने के लिये उपलब्ध है।*
गै	सत् की स्पष्टता का प्रत्यक्ष, स्पष्टता का प्रत्यक्ष।
गैब	**सो सामने ना हो** = सत् की स्पष्टता के प्रत्यक्ष (गै) में बन्धन (ब)।
गैबी	**अजनबी** = सत् की स्पष्टता में प्रत्यक्ष (गै) प्रत्यक्ष होता हुआ बन्धन (बी) ; *आप*

	पहचान नहीं सकते।
गैर	**दूसरा** = सत् की स्पष्टता में प्रत्यक्ष (गै) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *आप जहां एकाग्र है वह आपके अलावा दूसरा ही है।*
गो	**किरन** = बोध की उस दिशा में (गो) ; *जिस दिशा से बोध उत्पन्न हो रहा है।*
गो	स्पष्ट क्रिया की दिशा में (गो) ; *अर्थात् जाओ या क्रिया करो।*
गोप	**रक्षक** = स्पष्ट के सत् में छिपा हुआ (गो) रक्षित अनुमोदक (प) ; *ज्ञेय की दिशा में रक्षा करने वाला।*
गोल	स्पष्ट की दिशा में (गो) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *स्पष्ट दिशा में विस्तार गोलाकार ही होता है।*
गोष्ठि	स्पष्टता की दिशा में (गो) व्याप्तात्मक (ष्) प्रवृत्त सीमितता में प्रत्यक्ष ठहरे हुऐ (ठि) ; *जो एक स्थान पर ठहर कर स्पष्टता को व्याप्त करते हैं।*
गोण	**मातहत** = स्पष्ट की दिशा में (गो) में प्रवृत्त उत्सुक (ण) ; *जो स्पष्ट अर्थात् मालिक की दिशा में प्रवृत्त उत्सुक रहता है।*
गौतम	अस्तित्व में स्पष्ट का छिपाव (गौ) का प्रस्तुत उन्मुख को (त) अ–अंगीकृति (म) ; *जो स्पष्ट के द्वारा प्रस्तुत होने पर भी अंगीकृत नहीं करता, गौतम ऋषि।*
गौर	अस्तित्व में स्पष्ट के छिपा हुआ (गौ) में एकाग्र (र) ; *जो छिपा हुआ है, उसमें एकाग्र।*
ग्रन्थ	बोध (विवरण स्पष्टता) को बाह्य केन्द्रित/ द्वारा (ग्र) अंगीकरण उत्सुकात्मक (न्) स्थापन उन्मुख (थ) ; *परिभाषा के हिसाब से ग्रन्थ एक प्रयास (न्) है, कुछ स्थापित (थ) करने हेतु, विवरण स्पष्टता को बाह्य प्रकट करने के द्वारा (ग्र)*
ग्रह	*यदि ह का अर्थ असत् में स्थान उपलब्धता है तो नवग्रह वाला ग्रह, और यदि ह का अर्थ असत् को ग्रहण कर लिया जाये तो होगा, निगलना, पकड़ना आदि।*
ग्रहण	पकड़ने (ग्रह) को प्रवृत्त उत्सुक (ण)।
ग्राम	चेतन की सत्ता का निरन्तर (ग्रा) होना (म), *जहां चेतन सत्ता निरन्तर रहती है।*
घ	*विषय स्पष्टता की स्थान उपलब्धता, घेरा, सघन, घेराव ।*

घट	**घड़ा, प्रयास करना** = घेराव (घ) में प्रवृत्त (ट्)
घटक	**संयोजक** = घेराव (घ) में प्रवृत्तता (ट) का संचेतक (क) ; *जो सब को घेर कर प्रवृत्तता पैदा करता है।*
घटा	विषय स्पष्टता (प्रकाश) की सीमितता (धूमिलता) (कालापन) (घ) में प्रवृत्त सत्ता (टा) ; घिरी हुई (घ) प्रवृत्त सत्ता (टा)
घास	घिरी हुई, सत्ता/सघन (घा) का व्यक्त (स)
घात	घेरी हुई सत्ता (घा) का प्रस्तुत उन्मुख (त)
घन	सघन (घ) का अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न)

3.0 पितृ प्रकरण (PITṚ PRANARAṆA)

प्रकृति एवं पुरुष के मध्य जो द्वितीय द्वैत है, उसके अन्तर्गत हम **प्राणमय कोश** व **आनन्दमय कोश** के द्वैत को ले रहे हैं। यहाँ प्रकृति की **'अप्रतिष्ठित व अव्यवस्थित स्पन्दता'** (प्राण), पुरुष के **'स्थायित्व अनुमोदनात्मक भाव'** (आलम्बन) के द्वारा समाहित होकर ज्ञेय में जीवन्तता का सर्जन करती है।

पुरुष का 'तमस्' भाव उसकी स्पन्दनहीनता व प्रकृति का 'तमस्' भाव उसके स्पन्दन की प्रतिष्ठाविहीनता है। **दोनों ही अ–जीवन्तता** हैं।

प्रकृति स्पन्दन–समर्पण के द्वारा आनन्द स्थापना के लिये जीवन्त–उत्सुक बनी रहती है, तथा उसी प्रकार पुरुष भी आलम्बन में स्पन्दन को आश्रय देकर स्थापना के लिये नियन्त्रण–उत्सुक बना रहता है। दोनों के मध्य जो समर्पण आलम्बन की उत्सुकता का भाव है, वही पितृ–पक्ष का 'काम' है। तथा आलम्बविहीन व स्पन्दन व स्पन्दनविहीन आलम्बन के मध्य जो जीवन्तविहीनता है, वही **'ञ'** की ध्वनि है।

'ञ' में दो ध्वनियां एक साथ दिखाई देती हैं। नाक से निकलने वाली ध्वनि 'काम' का द्योतक है, व मुंह से निकलने वाली ध्वनि 'तमस्' का द्योतक है। यही स्थिति 'ङ' के साथ है। 'ङ' व 'ञ' दोनो ठीक विपरीत होने से एक दूसरे के लिये द्यावा–पृथिवी के द्वैत का काम कर रहे हैं। 'ञ' यदि जीवन्तविहीनता है तो स्पष्टता की पूर्णता है, इसी प्रकार 'ङ' यदि स्पष्टता की रिक्तता है तो जीवन्त की पूर्णता भी है। स्पष्टता की पूर्णता जीवन्तविहीन होने से प्रकट तो हो ही नही सकती, अतः इसके लिये 'काम' उसमें सन्निहित रहता है। इसी प्रकार शक्ति की पूर्णता स्पष्ट विहीन होने से आकृतिरहित है। अतः स्पष्टता का 'काम' उसमें सन्निहित रहता है। स्पष्टता 'ग्यान' है व शक्ति (जान) सन्निहित विश्वास से वह 'ज्ञान' हो रहा है। क्रिया के परिप्रेक्ष्य में स्पष्टता 'दिशा' है तथा शक्ति 'प्रयत्न' है, दोनो ही का होना आवश्यक है, तथा वे एक दूसरे के पूरक हैं। 'अर्थ' के परिप्रेक्ष्य में स्पष्टता 'भोग' है, तथा शक्ति जीवन्त अनुभूति' है।

'तमस्' रिक्तता का बोध है। तथा 'काम' उस रिक्तता को पूर्णता में बदलने का संवेग है। क्योंकि यह 'तमस्' हमेशा ही बना रहता है। अतः 'काम' भी निरन्तरता मे स्थित रहता है। ध्वनि विज्ञान में नाक से निकलने वाली ध्वनि निरन्तरता के रूप में ही दिखाई देती है। यह ध्वनि स्व–आधारित नहीं होती, अतः जिस भी व्यंजन पर यह आधारित होती है, उसी के 'काम' को आवेग प्रदान कर देती है। प्रस्तुत सन्दर्भ में यह शक्ति प्राप्ति के लिये आवेग प्रदान करती है।

'स्पन्द प्रकृति' व 'आलम्बक पुरुष' के मध्य ही शक्ति स्थिति रहती है। इस ओजस्विता को प्राप्त करने के लिये 'स्पन्द प्रकृति' उत्सुक से उन्मुख हो जाती है। तथा 'आलम्बक पुरुष' भी उत्सुक से उन्मुख हो जाता है। प्रकृति व पुरुष की उन्मुखता से ही 'रज' गतिमय हो जाता है। ध्वनि विज्ञान मे यह ध्वनि 'च' व 'छ' की होती है। जो विद्या–अविद्या के द्वैत में रहती है। देवपक्ष वैविध्यता का विश्लेषण कर आलम्बन को 'निश्चय' उपलब्ध कराती है। यह 'निश्चय' प्राण को आलम्बन प्रदान करने को उत्सुक हो 'विश्वास' का सर्जन करने लगता है। इस आलम्बन व प्राण के द्वैत में जिस 'रजस्' में उपलब्ध हो जीवन्त का संग्रह कर रहे है वह **'च'** कहलाता है तथा जो प्राण अवरोधित रहता है, अजीवन्तोन्मुख रहता है वह **'छ'** कहलाता है।

'समर्पित स्पन्द' जीवन्तोन्मुख प्रसन्नता 'च' है। तथा 'आश्रित दृढ' जीवन्तोन्मुख नियन्त्रण भी 'च' ही है। दोनों को एक साथ मिलने से हम कहेंगे कि 'च' का अर्थ है निरन्तर सामर्थ्य जीवन्त उन्मुख शक्ति हो रहा। क्योंकि 'उन्मुख' स्वतः ही 'हो रहा' में रूपान्तरित हो रहा है।

आलम्बन द्वारा प्राण को नियन्त्रित कर जीवन्त संचय कर शक्ति युक्त करना ही पितृप्राण है जो कि **'ज'** है। इस व्यापार में कुछ प्राण आलम्बन के द्वारा अनुमोदन होते हुऐ भी अन्तश्च में पूर्व स्थापित पूर्व आग्रहों व अवधारणाओं के कारण अनियन्त्रित व रह जाते है, जिन्हे अप्रसन्न हम **'झ'** कह रहे हैं।

इस प्रकार 'रजस्' का वर्तमान जैसे ही 'सत्' के भूत को प्राप्त करता है, जीवन्त संचयन बदल कर जीवन्त शक्ति दिखाई देने लगती है। अन्तर्मुखी व्यापार में यह जीवन्त शक्ति 'वृत्तान्त' के साथ मिल कर स्मृति में एकत्रित होती जाती है। तथा **माया** कहलाने लगती है। यही माया का संकलन **अहंकार** कहलाने लगता है। अतः माया का वो भाग जो 'जीवन्त शक्ति' पर आधारित है, अहंकार का एक पक्ष है, व जो 'वृत्तान्त' पर आधारित है, वह अंहकार का दूसरा पक्ष है।

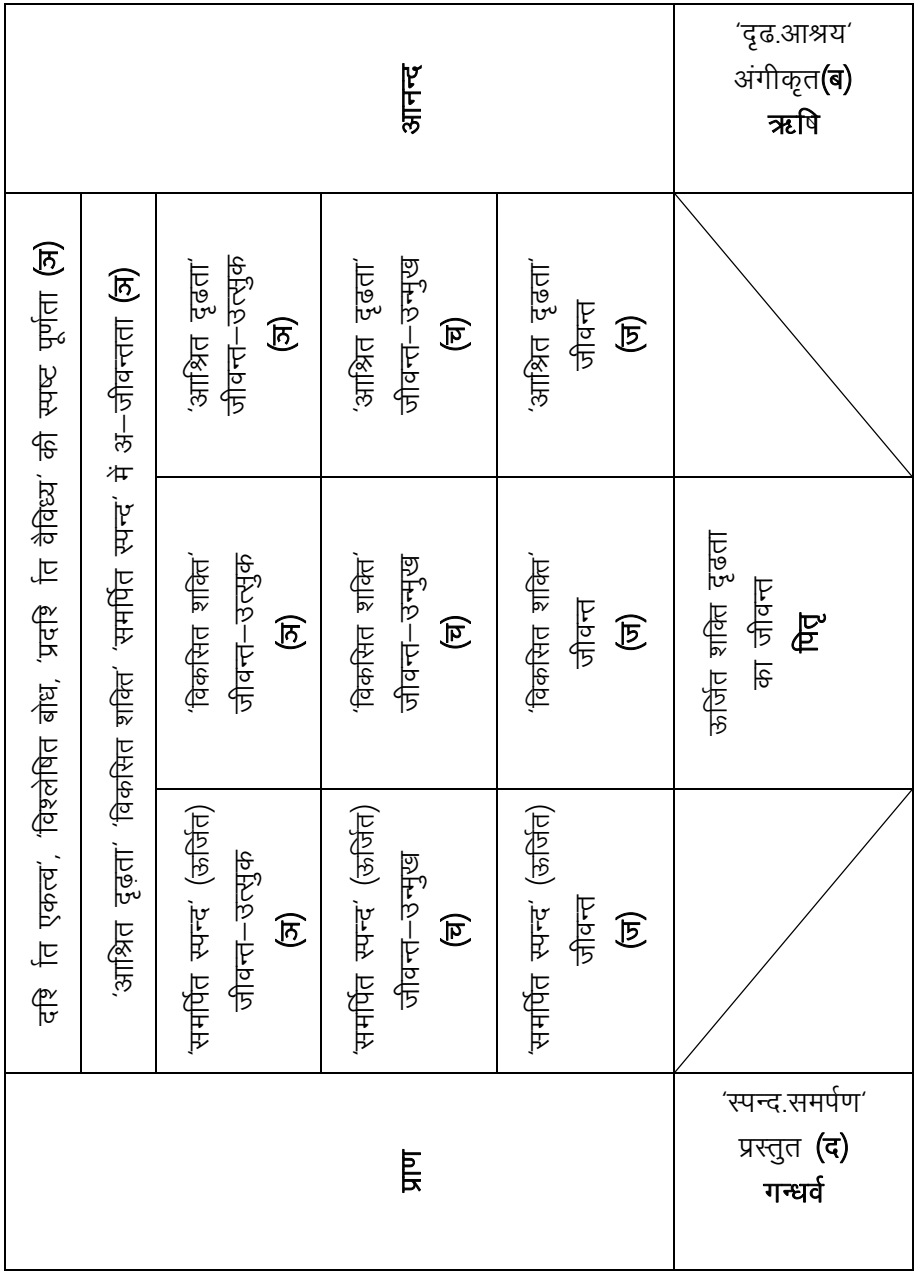

पितृ सत्ता का रेखाचित्र (3.2)

Go to Contents

यह ' जीवन्त शक्ति' साहस भी हो सकती है, तथा इसका अभाव भीरुता कहलायेगा। इस प्रकार जिसे हम जीवन्त शक्ति कह रहे हैं, ध्वनि विज्ञान में 'ज' है। तथा इस जीवन्त शक्ति में अनियन्त्रण व अप्रसन्नता 'झ' है। यदि 'ज' को हम धैर्य कह रहे हैं तो 'झ' को धैर्यविहीनता व खिन्न ही कहेंगे।

देव प्रकरण में जिस प्रकार देव संस्था संज्ञा को 'वैज्ञानिक' करती है, उसी प्रकार पितृ संस्था में संज्ञा को 'आनन्दित' किया जाता है। **अज्ञान से मुक्ति के लिये देव हैं तो भय से मुक्ति के लिये पितृ** है।

3.3 'च छ ज झ ञ' की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का विवरण

चंक	**चंक = पूरा पूरा** = जीवन्त हो रहे (च) में पूर्णता (ङ्) की स्पष्ट हो रहे (क) ; जीवन्त *प्राप्त करने से ओजस् से पूर्णता आ रही है।*
चंगा	**स्वस्थ** = जीवन्त हो रहे (च) में पूर्णता (ङ्) की स्पष्टता (गा), *जीवन्तता में पूर्णता स्पष्ट हो रही है।*
चंचल	जीवन्तोन्मुख (च) में चेतन पूर्णात्मक (ञ्) जीवन्त हो रहे (च) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जीवन्तोन्मुखता में चेतनपूर्ण जीवन्तोन्मुख की उपलब्धि करते रहना।*
चंट	जीवन्त हो रहे (च) कामनात्मक/फल की इच्छा (ण्) में प्रवृत्त उन्मुख (ट) ; *प्रवृत्त में फल की इच्छा के लिये* जीवन्तता *हो रही हो।*
चंद	**थोड़ा** = जीवन्त हो रही (च) रिक्तात्मक (न्) प्रस्तुति (द)।
चन्द्र	जीवन्त हो रही (च) पौरुषात्मक (न्) बाह्यप्राज्ञ (र्) प्रस्तुति (द) ।
चकला	जीवन्त हो रही (च) स्पष्ट हो रहे (क) की उपलब्ध विस्तारता (ला) ; *रोटी, बेलने से रोटी विस्तारित होती है।*
चकवा	जीवन्त हो रहे (च) चेतन (क) में छिपाव की सत्ता (वा) ; *क्रियात्मक जीवन्तोन्मुख में भोगात्मक चेतन का छुपाव।*
चकित	जीवन्त उन्मुख (च) प्रत्यक्ष चेतन (कि) का भाव (त) ; *ज्ञानात्मक जीवन्तोन्मुख में भोगात्मक चेतन का भाव।*
चक्र	जीवन्त हो रहे (च) बाह्यकेन्द्रित (र्) चेतन (क) ; *चक्र में प्रत्येक वस्तु बाहर की*

	तरफ भागती है। यहां चेतन भोगात्मक है।
चट	जीवन्त हो रहे (च) प्रवृत्त उन्मुख (ट) ; *क्रियात्मक जीवन्तोन्मुखता प्रवृत्त होने के लिये है।*
चड़	लकड़ी के चटकने का स्वर=दृढ़ता= जीवन्त हो रहे (च) स्थायित्व बीतता हुआ/टूटतर हुआ (ड़) ; *ऊर्जा उपलब्धता से वस्तु का टूटना।*
चमड़ी	जीवन्त अर्जित हो रहे (च) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक संग्रह (म) में प्रत्यक्ष बीतता हुआ स्थायित्व (ड़ी) ; *जीवन्त होता हुआ मांस (संग्रह) जिसका स्थायित्व बीतता जाता है।*
चर	जीवन्त अर्जित हो रहे (च) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जीवन्तता (घास) को अर्जित करने के लिये एकाग्र।*
चरबी	जीवन्त अर्जित हो रहे (च) के अंगीकृत एकाग्र (र) का बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ बन्धन/सुरक्षा (बी) ; *जीवन्त अर्जित करती हुई, देह में एकाग्र हो सुरक्षा देती है।*
चल	जीवन्त अर्जित हो रहे (च) का उपलब्ध विस्तार (ल)। *जीवन्त अर्जन का निरन्तर विस्तार हो रहा है।*
चाक	**कील पर धूमने वाला** = जीवन्तता कर रही (चा) गत्यात्मक चेतना (क) ; *गति में जीवन्तता अर्जित कर रही है।*
चाबी	जीवन्त कर रही (चा) बाह्यप्रत्यक्ष होते हुआ बन्धन/सुरक्षा (बी) ; *बन्धन या सुरक्षा ताला है जिसे चाबी जीवन्त कर रही है।*
चाह	जीवन्त अर्जित कर रही (चा) स्थूल उपलब्धता (ह) ; *स्थूल प्राप्ति के लिये जीवन्त अर्जित हो रहा है।*
चित्	प्रत्यक्ष जीवन्त हो रहा (चि) भावात्म (त्) ।
चित्र	प्रत्यक्ष जीवन्त हो रहा (चि) बाह्यप्रज्ञ प्रस्तुत उन्मुख (त्र) *बाह्यप्रज्ञ प्रस्तुत का प्रत्यक्ष में जीवन्त होना।*
चिमटा	प्रत्यक्ष जीवन्त हो रहा (चि) पदार्थ (म) प्रवृत्त उन्मुख सत्ता (टा) ; *पदार्थ को प्रवृत्त करने के लिये जो प्रत्यक्ष क्रियात्मक जीवन्त हो रहा है।*
चिराग	प्रत्यक्ष जीवन्त हो रहा (चि) एकात्म अंगीकृत {सम्मोहित} सत्ता (रा) का स्पष्ट

	(ग) ; *एकात्म सत्ता में स्पष्टता को प्रत्यक्ष जीवन्त करने वाला।*
चिलम	प्रत्यक्ष जीवन्त हो रही (चि) विस्तारित उपलब्धि (ल) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *चिलम प्रस्तुत-उत्सुक है जीवन्त उन्मुख के विस्तार में।*
चीं चीं	बाह्यप्रत्यक्ष हो रही जीवन्त (ची) जीवन्त उत्सुकात्मकता (ञ्) ।
चीक	**कष्ट से निकलने वाला स्वर** = बाह्यप्रत्यक्ष हो रहा जीवन्त (ची) बल विहीनता (क) ;*जीवन्त में बल विहीनता का प्रत्यक्ष होता हुआ।*
चीख	बाह्यप्रत्यक्ष हो रही जीवन्त उन्मुखता (ची) में अस्पष्ट उन्मुखता होना (ख) ; *अस्पष्ट आवाज जो जीवन्तता प्राप्ति के साथ बाहर निकल रही है।*
चीता	बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई की जीवन्त हो रही (ची) प्रस्तुत उन्मुखता (ता) ; *प्रस्तुति, जो जीवन्तता के साथ बाहर (प्रत्यक्ष उन्मुख) आती है।*
चीन	***पताका*** = बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई का जीवन्त हो रहा (ची) पौरुष (न) ; *पौरूष जो जीवन्तता के साथ बाह्यप्रत्यक्ष हो रहा है।*
चीप	***सस्ता***= बाह्यप्रत्यक्ष होती हुआ जीवन्त अर्जित हो रहा (ची) को अनुमोदन (प) ; *अनुमोदन (सस्ता) होने से जो जीवन्तता के साथ बाह्यप्रत्यक्ष हो रहा है।*
चीस	***टीस*** = बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई का जीवन्त अर्जित हो रही (ची) व्यक्त (स) ; *व्यक्त जो जीवन्तता के साथ बाह्यप्रत्यक्ष हो रहा है।*
चुम्बन	अन्तर्मुखी जीवन्त ऊर्जित कर रहे (चु) में प्रस्तुत होने को उत्सुकात्मक (म्) बन्धन (ब) को अंगीकृत करने को उत्सुक क्रिया (न)। *अन्तःस्थित जीवन्त अर्जित करते हुऐ उत्सुकात्मक बन्धन क्रिया।*
चुग्गा	अन्तर्मुखी जीवन्त अर्जित हो रही (चु) भोगात्मक (ग्) स्पष्टता (गा)।
चुन	अन्तर्मुखी जीवन्त हो रही (चु) अंगीकृत करने को उत्सुक क्रिया (न) ; *अन्तर्मुखी स्वीकृत करने की क्रिया की जीवन्त उत्सुकता।*
चुप	अन्तर्मुखी जीवन्तोन्मुखता (चु) अनुमोदन (प) ; *बाह्यमुखता का अभाव।*
चुराना	अन्तर्गमित जीवन्त हो रहे (चु) में ध्यान (रा) करना (ना) *अन्तः की तरफ क्रियात्मक होते जीवन्त में केन्द्रित।*
चुसकी	अन्तर्गमित जीवन्त हो रहे (चु) उपलब्धि (स) का बाह्यप्रत्यक्ष स्पष्ट हो रहा वैविध्य (की) ;*चुसकी की आवाज बाह्यप्रत्यक्ष है, स्वाद की उपलब्धि है, तथा*

	क्रियात्मक जीवन्तता अन्तर्गमिता है।
चूक	ग्लती = अन्तर्गमित (निरन्तर) जीवन्त हो रही (चू) चेतना (क), *निरन्तर अन्तर्गमित होते हुऐ जीवन्त में चेतन का हस्तक्षेप।*
चूर	अन्तर्गमित (निरन्तर) हो रही में जीवन्त हो रहा (चू) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *निरन्तर अन्तर्गमित हो रहे जीवन्त (निरन्तर चोट लगने के कारण) में अंगीकृत एकाग्र।*
चूल	**चोटी** = अन्तर्विलीन हो रही में जीवन्त हो रहा (चू) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *वह विस्तार जो दूर से देखने के कारण विलीन हो रहा हो।*
चूसना	निरन्तर अन्तगर्भित में जीवन्त हो रहा (चू) उपलब्ध (स) करना (ना) ; *निरन्तर अन्तः प्राप्ति से जीवन्त उपलब्ध हो रहा है।*
चेअॅर	इंगित जीवन्त हो रहा (चे) सत् को अन्दर छिपाने वाले सत् के द्वारा (अॅर्) ; *चेअॅर सत् है जिसके द्वारा सत् (व्यक्ति) को अन्दर छिपाकर भोगात्मक जीवन्त किया जाता है।*
चेत	इंगित दिशा में जीवन्त हो रहा (चे) भाव (त) ; *दिशा विशेष में भाव को ज्ञानात्मक जीवन्त हो रहा ।*
चेतना	इंगित जीवन्त हो रहा (चे) भाव (त) अंगीकृत करना (ना) *दिशा विशेष में भाव को ज्ञानात्मक जीवन्त करना।*
चेप	इंगित जीवन्त हो रहे (चे) अनुमोदन (प) ; *अंगीकरण में जीवन्त होना अर्थात् चिपकना। इंगित अनुमोदन में जीवन्त होना, अर्थात् अनुमोदन से न हटना।*
चेला	इंगित जीवन्त हो रहे (जीवन्त संचयन) (चे) के उपलब्ध विस्तार की सत्ता (ला) ; *ज्ञानात्मक जीवन्तता का संचयन में विस्तार करना।*
चैन	सत् में जीवन्त अर्जित हो रहे (प्रफुल्लित हो रहे) की प्रत्यक्ष (चै) क्रिया (न) ; *जीवन्तता अर्जित होने से प्रफुल्लता उत्पन्न होती है, जिससे चैन मिलता है।*
चैतन्य	सत् में जीवन्त अर्जित हो रहे सत् का प्रत्यक्ष (चै) भाव (त) का अंगीकृत करने के लिये उत्सुकात्मक (न्) प्रत्यक्ष (य) ; *प्रफुल्लता को अंगीकृत करने की उत्सुकता का प्रत्यक्ष*
चोआ	**सुगन्धित द्रव** = जीवन्त–उन्मुखता की दिशा में (चो) सत्ता (आ) ; *जो सत्ता में*

	भोगात्मक जीवन्तता उत्पन्न करता है।
चोक	**मड़ मड़े की जड़ = दवा** = जीवन्त–उन्मुखता की दिशा में (चो) संचेतक (क) ;*वह संचेतक जो दैहिक जीवन्तता उत्पन्न करता है।*
चोक्ष	**शुद्ध** = जीवन्त–उन्मुखता की दिशा के (चो) योग्य (क्ष) ; *जिसमें जीवन्तता उत्पन्न करने की योग्यता हो।*
चोटी	**बालों बाली चोटी** = जीवन्त-उन्मुखता की दिशा में (चो) बाह्य प्रत्यक्ष होता प्रवृत्त (टी) ; *जीवन्त उन्मुख हो बाहर की तरफ प्रवृत्त होना अर्थात् बढ़ना।*
चोपी	**चाह रखने वाला** = जीवन्त हो रही दिशा में (चो) बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ अंगीकरण उन्मुख (पी) ; *जो बाह्यप्रत्यक्ष है उसमें जिस दिशा से (चाह की दिशा से) अंगीकरण को जीवन्तता प्राप्त होरही है।*
चौना	**कुएं की जगत पर की ढाल**= जीवन्त–उन्मुखता के सत् का अन्दर की तरफ (चौ) करना (ना) ; *अर्जित उन्मुखता का ढाल अन्दर की तरफ है।*
च्यवन	जीवन्तोन्मुखात्मक (च्) प्रत्यक्ष के सत् (य) में छिपे हुऐ सत् (व) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *जिस से जीवन्तता उत्पन्न होती हो, ऐसे छिपे सत् को प्रत्यक्ष प्राप्त करने के लिये उत्सुक।*
च्युति	**स्खलन = पतन** = जीवन्त अर्जित हो रहे आत्मक के (च्) अन्तःस्थित प्रत्यक्ष (यु) का प्रत्यक्ष प्रस्तुत–उन्मुख (ति) ; *जीवन्तता के गुणसूत्र जो अन्तः में स्थित हैं, उनका प्रत्यक्ष में प्रस्तुत–उन्मुख होना।*
छंग	गोद = जीवन्तवरोधोन्मुख (छ) का जीवन्त होता हुआ (ङ्) स्पष्ट (ग) ; *गोद में जीवन्त अवरोध (बन्धन) व जीवन्त (सुरक्षा) दोनों काम साथ हो रहे है, पितृ में जीवन्त होना पुनरार्वति के रूप में होता है अतः यह ताल के रूप में भी प्रयुक्त हो सकता है।*
छँटना	जीवन्त–अवरोध हो रहे (छ) होता हुआ (ण्) प्रवृत्त (ट) करना (ना) ; *अवरोध के अन्दर से प्रवृत्त करना, बड़े छोटे नाप अलग छँट जाते है।*
छंद	जीवन्त–अवरोध हो रही (छ) प्रस्तुत होती हुई (न्) प्रस्तुति (द) ; *छांट कर प्रस्तुति करना।*
छकना	**तृप्त होना** = ऊर्जावरोधोन्मुख (छ) चेतना (क) करना (ना) ; *तृप्त होने से*

	संचयन होती ऊर्जा में अवरोध हो जाता है।
छत	जीवन्त-अवरोध-उन्मुख (छ) भाव (त) ; *छत सूर्य से आती जीवन्तता को रोकती है।*
छत्र	जीवन्त-अवरोध-उन्मुख (छ) बाह्य केन्द्रित (केन्द्र के बाहर) (त्र) प्रस्तुत भाव (त) ; *जो धूप का अवरोध करता है।*
छन्न	**गायब = लुप्त = आच्छादित** = जीवन्त–अवरोध– उन्मुख (छ) की रिक्तात्मक (न्) क्रिया (न) ; *जीवन्तता के अवरोध को स्वीकृति देने से जीवन्तता रिक्त हो जाती है।*
छन	जीवन्त–अवरोध–उन्मुख हो रहे (छ) की क्रिया (न) ; *अर्जित में अवरोध ही छानना है।*
छल	जीवन्त–अवरोध–उन्मुख हो रहे (छ) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जीवन्तता के आने में अवरोध का विस्तार करना, अर्थात् जीवन्तता को नहीं आने देना।*
छाप	जीवन्त–अवरोध–उन्मुख (छा) का अनुमोदन (प) ; *जहां अवरोध नहीं है वहीं रंग आता है।*
छाल	जीवन्त–अवरोध–उन्मुख (छा) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *छाल को पहन कर जीवन्तता का आना/जाना रोका जाता है।*
छावा	**बच्चा** = जीवन्त सीमितता (छा) में छिपी हुई सत्ता (वा), *जो सत्ता सीमित मात्रा में जीवन्तता का अर्जन करता है।*
छिति	**पृथ्वी** = प्रत्यक्ष जीवन्त–अवरोध–उन्मुख (छि) की प्रत्यक्ष प्रस्तुतोन्मुख (ति) ; *यहां "छि" का अर्थ पुरूष के द्वारा दिया हआ आकाश अवकाश सीमितता भाव है, जहां "ति" अर्थात् प्रकृति का स्पन्दित प्रदर्शन प्रस्तुत होकर स्थापित होता है।*
छिप	जीवन्त अवरोध में प्रत्यक्ष हो रहा (छि) अनुमोदन (प), *अवरोध का अनुमोदन किया जा रहा है।*
छींक	**छीङ्क** = बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई जीवन्त–अवरोध हो रही (छी) में पूर्ण जीवन्तात्मक (ङ्) स्पष्ट–उन्मुख (क) ; (उद्वेलन भाव में), *छींक में पूर्ण जीवन्तता अवरोध में से होती हुई बाहर प्रकट होती है।*

छीज	**घाटा** = कमी = बाह्य प्रत्यक्ष होती हुई जीवन्त–अवरोध हो रहा (छी) जीवन्त/अर्जित (ज) ; *जहां जीवन के बाहर प्रकट होने में समस्या आ रही हो, कमी के कारण।*
छीन	**मंद = शिथिल** = बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई जीवन्त–अवरोध हो रही (छी) क्रिया (न) ; *क्रियात्मक जीवन्तोन्मुख में अवरोध के कारण क्रिया शिथिल हो रही है।*
छूत	अन्तर्विलीन हो रहा जीवन्त–अवरोध (छू) भाव (त) ; *जहां छूने का (स्पर्श करने का) अवरोध समाप्त हो रहा हो।*
छूना	अन्तर्विलीन हो रहा जीवन्त–अवरोध (छू) करना (ना), *जीवन्तता–अवरोध को विलीन करने से स्पर्श होता है।*
छेक	**छेद** = इंगित अवरोध–उन्मुख में (छू) स्पष्ट हो रहे (क) ; *जिस स्थान पर अवरोध में से स्पष्ट हो रहा हो।*
छोभ	**चित्त में खलबली** = जीवन्त–अवरोध हो रही दिशा में (छो) स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; छिपे सत् में जीवन्त–अवरोध–उन्मुख (छो) का स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; *जिस दिशा में जीवन्त अवरोध उत्पन्न हो रहा हो उस दिशा में स्वच्छन्द अंगीकरण।*
छोटा	जीवन्त अर्जित सीमितता की दिशा में (छो) प्रवृत्तता (टा) ; *जीवन्तता कम मात्रा में अर्जित हो, ऐसी प्रवृत्ति।*
छोर	**सिरा** = जीवन्त अर्जित सीमितता की दिशा में (छो) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जहां जीवन्तता का अर्जन समाप्त हो जाये।*
छोह	**दया = ममता** = जीवन्त–अवरोध हो रही की दिशा में (छो) असत् में स्थान उपलब्धता/स्थूल उपलब्धता (ह) ; *स्थूल उपलब्ध की दिशा से जीवन्त में अवरोध उत्पन्न हो रहा है।*
जंग	**जड्.ग** = शौर्य/शक्ति का (ज) साहस पूर्णात्मक (ड्) स्पष्ट (ग)।
जंगल	**जड्.गल** = जीवन्त का (ज) पूर्ण होता हुआ (ड्.) स्पष्ट (ग) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जहां जंग का विस्तार होता है।*
जंभाई	**जम्भाई** = जीवन्त में से (ज) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकात्मक संग्रह (म्) को स्वच्छन्द अंगीकरण की सत्ता (भा) के द्वारा प्रत्यक्ष होते रहना (ई) ; *हमारे*

	जीवन्त में जो संग्रह प्रत्यक्ष होना चाहता है, उसका स्वच्छन्दता से प्रत्यक्ष।
जई	**अंकुर** = जीवन्त (ज) बाह्य प्रत्यक्ष होते रहना (ई)।
जकना	**भौचक्का** = अस्पष्ट (ज) के चेतन (क) करना (ना) ; *''ज'' पितृ प्रकरण में विलोम अर्थ में होता है, चेतन में अस्पष्ट पैदा करना। ज्ञानात्मक जीवन्त में भोगात्मक चेतन करना।*
जग	**संसार** = जीवन्तता (ज) का स्पष्ट बोध (ग)।
जगह	जीवन्त (ज) के स्पष्ट (ग) को असत् में स्थान उपलब्धता {स्थूल सन्दर्भ में} (ह) ; *जगह जहां जीवन्त स्पष्ट (अस्तित्व गत) हो सके।*
जटा	जीवन्तता (ज) में प्रवृत्त हो रही की सत्ता (टा) ; *जटा को सिर से निरन्तर जीवन्तता मिलती रहती है, शिव की जटा गंङ्गा के द्वारा जीवन्तता को प्रवृत्त करती है।*
जटना	**ठगना** = अस्पष्टता/जीवन्त (ज) को प्रवृत्त–उन्मुख (ट) करना (ना) ; *जीवन्त के प्रवृत्त करने से चेतन विलीन हो समझ कम हो जाती है व मनुष्य ठगा जाता है।*
जठर	**पेट** = जीवन्त अर्जित (ज) को स्थापन–उन्मुख (ठ) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जो जीवन्तता को अर्जित करता हुआ अपने अन्दर स्थापित करता है।*
जठल	**जलपात्र** = जीवन्त के (ज) ठहराव उन्मुख (ठ) में उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जल जीवन्तता का ही द्योतक है, वह विस्तारित जगह जहां जल ठहरा हुआ है।*
जड़	जीवन्तता (ज) प्रवृत्त होयी हुई (ड़), {पिड़ की जड़}, अचेतन (ज) प्रवृत्त होया हुआ (ड़) ; *जिसमें जीवन ना हो।*
जड़ता	**अचेतनता** = अचेतन (ज) में प्रवृत होया हुआ (ड़) का भाव (ता) ; *बल में प्रवृत्त होने से चेतन समाप्त हो जाता है।*
जत	**जिस मात्रा का** = अर्जित (ज) प्रस्तुत हो रहा (त) ; *जो प्रस्तुत हो रहा है वही अर्जित है।*
जतन	**प्रयत्न** = बल (ज) से प्रस्तुत हो रहे (त) को अंगीकृत करने को उत्सुक (न) ; *बल से प्राप्त करने का प्रयास।*
जद	**जब** = जीवन्त अर्जित (ज) प्रस्तुति (द) ;*जीवन्तता की अर्जित करने के बाद*

	प्रस्तुति।
जन	जीवन्तता (ज) को अंगीकार करने के लिये उत्सुक (न)।
जनना	जीवन्त (ज) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) करना (ना) ; *जीवन्तता प्राप्त करना।*
जना	उत्पत्ति = जीवन्त (ज) करना (ना) ।
जन्म	जीवन्त (ज) की अंगीकृत करने को उत्सुकात्मक (न्) होना (म) ; *जीवन्त को अंगीकृत करना ही जन्म है।*
जप	नियन्त्रित शक्ति/बल/ओजस् (ज) का अनुमोदन/का बन्धित अंगीकरण (प) ;*जप के द्वारा शक्ति, बल आदि को बढ़ाया तो जाता है, परन्तु बन्धन का कारण भी बनता है।*
जब	नियन्त्रित शक्ति/बल/ओजस् (ज) में बन्धन (ब)।
जय	ओजस् (ज) का प्रत्यक्ष (य) ।
जया	ओजस् (ज) की प्रत्यक्षता (या) ।
ज़र	**नींद में** = चेतना विहीन में (ज़्) एकाग्र (र) ; *{सोना}*, ओजस् का निरन्तर (ज़्) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *{गोल्ड}* ।
जल	जीवन्तता (ज) की अर्पित भावना (ल), *जल समर्पण का द्योतक है।*
जस	**जैसा** = नियन्त्रित निश्चय (ज) व्यक्त/उपलब्धि (स), *जैसा निश्चित किया गया है वैसा ही व्यक्त होना।*
जहर	शक्ति/बल/ओजस्/जीवन्तता (ज) को असत्/ मृत्यु उपलब्धता (ह) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जहां जीवन्तता मृत्यु को प्राप्त होता है*
जाँच	**जाञ्च** = नियन्त्रित जीवन्तता (जा) को पूर्ण स्पष्टात्मक (ञ्) ऊर्जित हो रहा (च) ; *ज्ञानात्मक जीवन्तता के द्वारा स्पष्टात्मक ऊर्जता अर्थात् स्पष्ट करने के लिये ऊर्जा, अर्थात् जांच।*
जाग	**जागना** = ओजस् (जा) का स्पष्ट (ग) ; जागरण = जीवन्तता (जा) का स्पष्ट (ग) ; *जागने से ओजस् व जीवन्तता स्पष्ट होने लगती है।*
जात	**गुण सूत्रो के अनुसार पुत्र** = नियन्त्रित ओजस् (जा) का भाव (त) ; *ओजस् में*

	गुण–सूत्रों का नियंत्रण है।
जाना	नियन्त्रित ऊर्जित (जा) करना (ना) ; *यहां क्रियात्मक ऊर्जित करना अर्थात् गतिशील करना।*
जाम	**रूका हुआ** = बल (जा) का संग्रह (म) ; *बल के संग्रह से रास्ता रूका हुआ है।*
जाल	नियन्त्रित शक्ति (जा) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जाल शक्तिशाली भी होता है व विस्तारित भी होता है।*
ज़ाहिर	नियन्त्रित व्यक्तात्मक ऊर्जिता (ज़ा) का प्रत्यक्ष स्थूल (हि) में उपलब्ध एकाग्र (र) ; *जो व्यक्त ध्वनि (स्थूल) के रूप में बाहर अंगीकृत हो ज़ाहिर हो रहा है।*
जिन्द	**प्रेत** = प्रत्यक्ष बल (जि) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुकात्मक (न्) प्रस्तुति (द) ; *जो किसी भी बल को अंगीकार करने के लिये उत्सुक है, अर्थात् कोई भी कार्य करने के लिये उत्सुक।*
जिच	**बेबसी** = प्रत्यक्ष निश्चय (जि) में जीवन्त उन्मुखता (च) ; *जो निश्चय ज्ञानात्मक जीवन्तता किया जा चुका है, उसमें ही जीवन्त रहना।*
जिन	प्रत्यक्ष नियन्त्रित बल (जि) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *देखें "जिन्द"।*
जीभ	बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ ऊर्जित (जी) का स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; *जो भी बाहर से भोगात्मक ऊर्जा आ रही है, उसे स्वच्छन्द रूप से अंगीकृत करना।*
जीवन्त	**प्राण** = बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई ऊर्जित (जी) में छिपे हुऐ सत् (व) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुकात्मक (न्) भाव/प्रस्तुत उन्मुखता (त) ; *बाहर जो जीवन्तता दिखाई दे रही है, उसमें जो छिपा सत् (अनुभूति) है, उसी की स्वीकृति जीवन्त है।*
जीवन	बाह्यप्रत्यक्ष होते हुए ओजस् (जी) में छिपे हुऐ सत् (व) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *बाहर जो जीवन्तता दिखाई देरही है, उसमें जो छिपा सत् (अनुभूति) है, उसे स्वीकृति की इच्छा/स्वीकृति करते रहना ही जीवन है।*
जुई	**करछी के आकार का हवन करने का पात्र** = अन्तःस्थित शक्ति (जु) बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई (ई) ; *यज्ञ में करछी से द्रव्य डाला जाता है जो द्रव्य के*

	अन्दर स्थित शक्ति को जलने के कारण बाहर प्रत्यक्ष करता है।
जुगत	अन्तःस्थित जीवन्त में (जु) स्पष्टता का (ग) प्रस्तुतोन्मुख (त) ; *आन्तरिक ज्ञानात्मक जीवन्त से क्रियात्मक स्पष्ट करना*
जुट	**मिला हुआ** = अन्तःस्थित बल (जु) में प्रवृत्त उन्मुख (ट) ; *अन्तर्मुखी होने से बल आपस में मिलने में प्रवृत्त है।*
जुझार	अन्तःस्थित बल (जु) धैर्यविहीनता/अनियन्त्रित शक्ति (झा) में अंगीकृत रत (र) ; *बल धैर्यविहीनता के साथ में अंगीकृत (क्रियात्मक) एकाग्र है।*
जुड़ना	अन्तर्मुखी बल (जु) में प्रवृत्त की इच्छा (ड़) करना (ना) ; *बल को प्रवृत्त करने की इच्छा करना।*
जोई	**पत्नी** = ऊर्जित दिशा में (जो) बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ (ई) *ऊर्जित प्रकृति जन्य भाव है जो व्यक्ति की आन्तरिक पत्नी से ही बाह्य प्रकट होते हैं।*
जोत	जीवन्तता की दिशा में (जो) प्रस्तुत उन्मुख (त) ;*जीवन्त उत्पन्न करने की दिशा।*
जोड़	शक्ति की दिशा में (जो) प्रवृत्त होयी हुई (ड़) ; *ऊर्जता जोड़ने से शक्ति प्राप्त होती है।*
जोम	**उमंग** = जीवन्तता की दिशा (जो) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *जीवन्तता की दिशा में स्वयम् को प्रस्तुत करना उमंग है।*
जोश	**साहस** = शक्ति/ बल की दिशा में (जो) जीवन्त उपलब्धि/अनुभूति (श)।
जौहर	सत् की जीवन्तता में छिपा हुआ (जौ) असत् में स्थान उपलब्धता/मृत्यु (ह) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जीवन्तता में छिपी मृत्यु स्वीकृत एकाग्रता।*
ज्ञात	प्राकट्यता (ज्ञा) का भाव (त)।
ज्ञान	प्राकट्यता (ज्ञा) की क्रिया (न)।
ज्ञाप	प्राकट्यता (ज्ञा) का अनुमोदन (प)।
ज्ञेय	इंगित प्राकट्य (ज्ञे) के प्रत्यक्ष का सत् (य) ; *जो ज्ञात होने के लिये प्रकट हो रहा है।*
ज्या	**धनुष की डोरी** = शक्ति–आत्मक (ज्) प्रत्यक्ष सत्ता (या) ; *धनुष की डोरी को*

	शक्ति के द्वारा खेंचा जाता है।
ज्वर	शक्ति–आत्मक (ज्) छिपे सत् (व) में एकाग्र (र) ; *ज्वर उत्पन्न होने से शक्ति अर्थात् तापमान के छिपे सत् में देह एकाग्र हो जाती है।*
ज्योतिष	निश्चयात्मक (ज्) प्रकट की दिशा में (यो) प्रत्यक्ष प्रस्तुत हो रही (ति) इच्छा (ष) ; *जो निश्चित (ज्ञानात्मक जीवन्तता) है, उसे प्रकट करने की इच्छा प्रस्तुत करना।*
ज्वाला	ऊर्जितात्मक (ज्) छिपी सत्ता में (वा) उपलब्ध विस्तारता (ला)।
झंडा	अनियन्त्रित (हिलता हुआ) ओजस् (झ) में होती हुई (ं) स्थापित सत्ता (डा)।
झक	अनियन्त्रित जीवन्तता/धैर्यविहीन (झ) स्पष्टोन्मुख (क) ; *अनियंत्रण के साथ जो स्पष्ट किया जा रहा है।*
झट	धैर्य विहीन (झ) प्रवृत्त उन्मुख (ट)।
झप	**पलकों का झपकना** = धैर्यविहीन (झ) अनुमोदन (प)।
झड़प	धैर्यविहीन (झ) स्थापन उत्सुकता (ड़) का अनुमोदन(प) *धैर्यविहीनता के साथ किसी तर्क को स्थापित करने के लिये क्रियात्मक अनुमोदन।*
झष	**मछली** = धैर्य विहीन (झ) व्याप्त कामवेग (ष)।
झांक	धैर्यविहीनता में (झा) स्पष्ट प्राप्ति उत्सुक (ङ्) स्पष्ट–कर रहा (क) ; *जो देखने की इच्छा है उसे धैर्यविहीनता के साथ देख रहा।*
झाड़	**छोटा वृक्ष** = अनियन्त्रित (झा) को प्रवृत्त उत्सुक (ड़) ; *जो बिना किसी नियंत्रण के जीवन्त होने में प्रवृत्त है।*
झाड़ना	**सफाई करना** = अनियन्त्रित जीवन्तता (झा) को प्रवृत्त उत्सुक (ड़) करना (ना) ; *झाड़ने में बिना किसी नियंत्रण के कपड़े को जीवन्तित (क्रियात्मक) किया जाता है।*
झार	**केवल = एकमात्र** = जीवन्त सीमितता (झा) का अंगीकृत एकाग्र (र), *जीवन्त (क्रियात्मक)की जा सीमितता है, उसका अंगीकार करना।*
झिपना	**झेंपने** = ओजस् में अनियन्त्रण का प्रत्यक्ष (झि) अनुमोदन (प) करना (ना) ;*जब ओजस् अनियन्त्रित होता है तो उसके अनुरूप क्रिया, क्षेंपना कहलाती है।*

झाग	धैर्य विहीनता/अनियन्त्रित शक्ति (झा) स्पष्ट (ग) ; अनेकात्म बल (झा) स्पष्ट (ग) ; *झाग धैर्य खोकर तुरन्त फट जाते है।*
झिर	**झिरी** = प्रत्यक्ष जीवन्त सीमितता (झि) अंगीकृत एकाग्र (र) ;*सीमितता में से देखना।*
झीना	**बारीक = पतला** = बाह्यप्रत्यक्ष जीवन्त सीमितता (झी) करना (ना) ; *जिसका जीवन्त बाहर से सीमित दिखाई दे।*
झुक	अन्तःस्थित शक्तिविहीन (झु) का स्पष्टोन्मुख (क) ; *अन्दर की शक्ति विहीनता को मानना।*
झुलाना	अन्तःस्थित अस्थिर जीवन्त (झु) उपलब्ध विस्तारता (ला) करना (ना) । अस्थिर क्रियात्मक जीवन्त को विस्तारित करना अर्थात् हिलाना।
झूठ	अन्तर्विलीन अस्थिर जीवन्त (झू) का स्थापन उन्मुख (ठ) ; *अन्दर छिपी हुई जो अस्थिर जीवन्तता (ज्ञानात्मक) है, उसकी स्थापना करने का प्रयास।*
झूल	निरन्तर अन्तर्मुखी बल अस्थिरता (झू) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *निरन्तर अन्तर्मुखी बल (भोगात्मक) से झूल टिकी रहती है पर अस्थिर रहती है।*
झूर	**सूखा** = अन्तर्गमित होती ओजस् विहीनता (झू) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *सूखा; सत्ता के अन्दर आती हुई ओजस् विहीनता में एकाग्र*

4.0 ऋषि प्रकरण (ṚṢI PRANARAṆA)

सम्पूर्ण जगत् चार अविभाजित तत्त्वों से मिलकर बना है। प्रथम है शून्य, द्वितीय है असत्, तृतीय है प्रकृति व चतुर्थ है पुरुष। पुरुष का बाकी तीन तत्त्वों से सम्बन्ध तीन प्रकार के पुरुषों को प्रकट करता है। शून्य से पुरुष को 'मात्रा' मिलती है, असत् से पुरुष को 'विस्तरण' मिलता है तथा प्रकृति से पुरुष को 'काम' मिलता है। 'काम' कारण बनता है, विस्तारण के लिये, शून्य के आधार पर।

पुरुष प्रकृति के साथ जो दो प्रकार से युग्म बनाता है। प्रथम है 'पुरुष की विज्ञानमयता', जो कि 'प्रकृति की वाङ्मयता' के साथ रमण करती हुई **देवपक्ष** का संचेतन करती है। तथा द्वितीय है, 'पुरुष की आनन्दमयता', जो 'प्रकृति की प्राणमयता' के साथ समायोजित हो कर **पितृपक्ष** को ऊर्जित करती है। देवपक्ष, पुरुष को प्रकृति के 'वैविध्य प्रदर्शन' से विश्लेषण द्वारा 'एकत्व दर्शन' कराता है। जिसके लिये पुरुष अंगीकृत–उन्मुख रहता है। तथा पितृपक्ष पुरुष को प्रकृति के 'स्पन्द समर्पण' को आलम्बन द्वारा 'दृढ आश्रय ' देता है। यहां भी पुरुष अंगीकृत –उन्मुख रहता है। 'एकत्व दर्शन' व 'दृढ आश्रय' के मध्य 'पद सूत्र' की स्थापना हो जाती है। तथा मूल रूप से प्रकृति की 'अर्थ प्रस्तुति', जो 'वैविध्य प्रदर्शन' व 'स्पन्द समर्पण' से मिलकर बनती है। पुरुष में 'पद सूत्र' के रूप में अंगीकृत होती है।

गन्धर्वपक्ष द्वारा स्थापन के लिये 'प्रस्तुत अर्थ' को, 'पदसूत्र' में अंगीकृत करना ही आत्म संस्था का **ऋषिपक्ष** है।

पुरुष व प्रकृति बिना असत् के संस्थागत नहीं हो सकते। असत् में पुरुष की सत् रूप में उपस्थिति आकाश कहलाती है। तथा प्रकृति की उपस्थिति पृथ्वी कहलाती है। मूल पुरुष अनन्त है, परन्तु अनन्त कभी भी संस्थागत नहीं हो सकता। संस्थागत होने के लिये पुरुष को सीमाबद्ध होना पड़ता है। यह सीमा पुरुष को असत् से प्राप्त होती है। असत् से प्राप्त सीमा में सत् के अन्दर पुरुष की उपस्थिति को आकाश कहते हैं। अतः आकाश के महाभूत में रिक्तता व्याप्त रहती है। जहां वह पृथ्वी से उपलब्ध अर्थ प्रस्तुति को

पदसूत्र में अंगीकरण कर सके। यहां आकाश की रिक्तता को तमस् नहीं समझा जाना चाहिये। यह आकाश की एक उपाधि है, जिसे ध्वनिविज्ञान में **'न'** कहते है। यही आकाश इस 'न' में एकाग्र (र) हो कर 'नर' बनता है। यहां एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि 'आकाश'' पंचमहाभूत होने से भौतिक संस्था है, तथा इसी में बसी हुई अंगीकरण संस्था को हम ऋषि कहरहे हैं।

ऋषि का स्वभाव गन्धर्व का अंगीकरण है, तो उसका तम भाव **अनंगीकृत** होगा। यह अनंगीकृत ध्वनि रूप में **'म'** में दिखाई देता है। प्रकृति ('स्पन्द समर्पण', 'अर्थ विसर्जन' व 'वैविध्य प्रदर्शन') द्वारा पुरुष ('दृढ आश्रय','सूत्र पद'व 'एकत्व दर्शन') में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकता ही 'म' है। यहाँ जो अनंगीकृतता है, वही पूर्ण संग्रहण का द्योतक भी है। परन्तु यह संग्रहण अ–अनुमोदित है।

इसे अंगीकृत करने का इच्छावेग ही ऋषि का 'काम' है। 'काम' के जाग्रत होने से जो अनंगीकृत्य है, उसका अंगीकरण करने के लिये ऋषि उत्सुक हो जाता है। ठीक इसके विपरीत गन्धर्व भी 'स्पन्द समर्पण', 'अर्थ विसर्जन' व 'वैविध्य प्रदर्शन' को स्थापित कराने के लिये, उत्सुक हो जाता है। दोनों का काम विपरीत स्वभाव का है। इस काम के अन्तर्गत जो उत्सुकता है, वह उन्मुखता में परिवर्तित हो जाती है। तथा ऋषि में से **'प'** व **'फ'** अर्थात् **परीक्षित अंगीकार–उन्मुख'** तथा **अपरीक्षित अंगीकार–उन्मुख** दिखाई देने लगते हैं। ऋषि द्वारा अंगीकरण अपनी सीमा के अन्दर ही होता है, अतः 'रजस्' भाव में दोनों प्रकार की 'उन्मुखता' प्रकट रहती है।

सम्पूर्ण 'रजस्' भाव वर्तमान काल में है, तथा जैसे ही वर्तमान की आयु समाप्त होती है, 'रजस्' 'सत्' में दिखाई देता है। व अंगीकृत रूप भूत काल में स्थित हो **'ब'** व **'भ'** दिखाई देने लगता है। 'ब' **बन्धित तथा सुरक्षित अंगीकृत** का द्योतक है, तो 'भ' ठीक विपरीत **स्वच्छन्द तथा असुरक्षित अंगीकृत** का द्योतक है।

ऋषि का धर्म 'तप' है, व 'तप' का अर्थ है 'अर्थ विसर्जन प्रस्तुति'(त) का 'पद सूत्र अंगीकरण उन्मुखता'(अनुमोदन) (प)। प्रत्येक अनुमोदन (प) सुरक्षा देता है, तथा बन्धनों में बांधता है। यह बन्धन हमें आकाश भाव की सीमाबद्धता में स्थित तर्क व विश्वास से मिलते हैं। तर्क बन्धन के बिना ऋषि विश्लेषण नहीं कर सकता, तथा विश्वास बन्धन के बिना उसे आश्रय नहीं दे सकता।

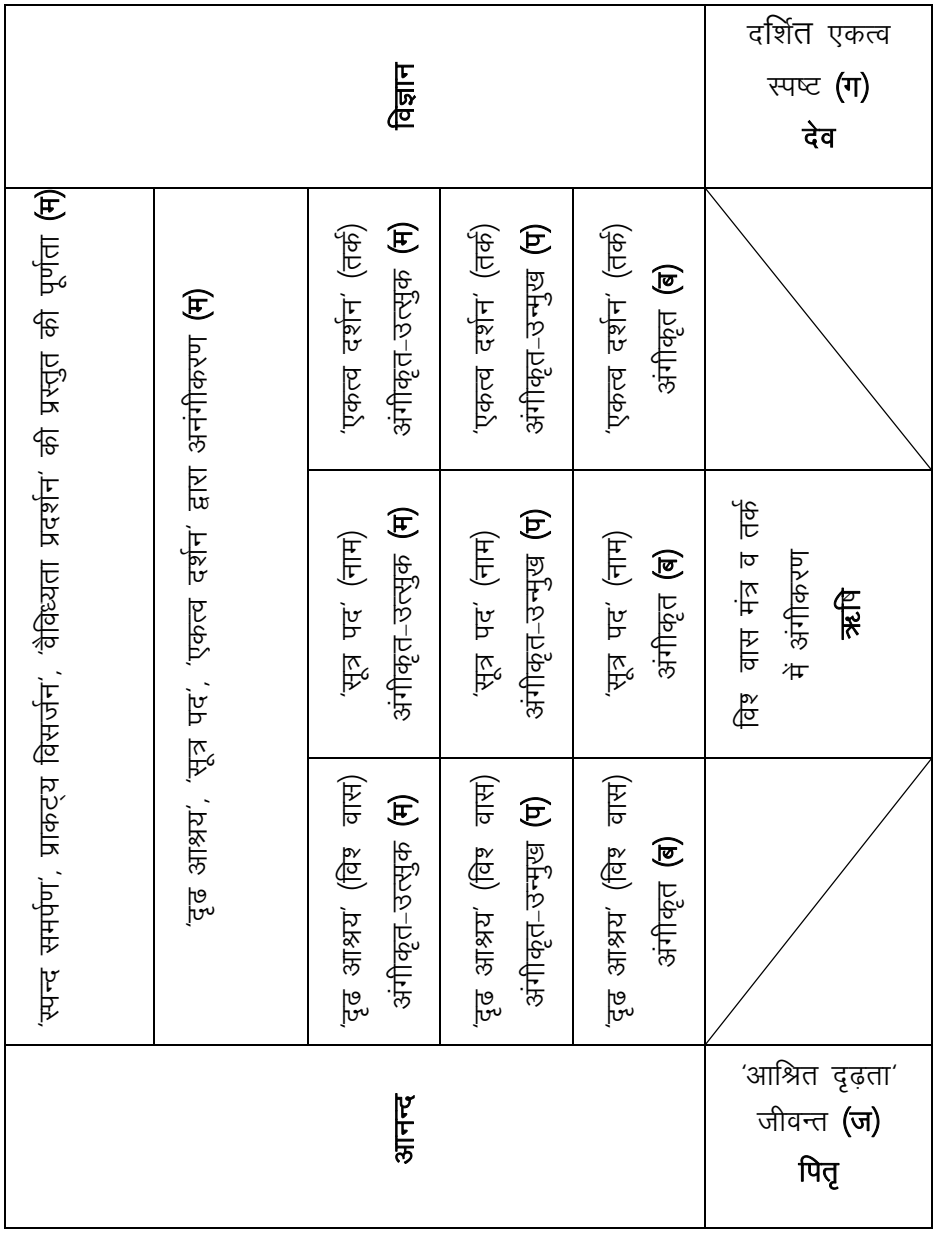

ऋषि सत्ता का रेखाचित्र (4.2)

Go to Contents

4.3 'प फ ब भ म' की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का विवरण

पंक	**कीचड़** = अनुमोदन (प) का नकारात्मक (न्) विषय (क)।
पंकज	कीचड़ (पंक) में जीवन्तता (ज)।
पंगत	कतार = अंगीकार–उन्मुख (प) होती हुई (ङ्) स्पष्ट (ग) की प्रस्तुत–उन्मुखता (त) ; *प्रस्तुति की स्पष्टता के अनुसार अंगीकार करना।*
पंजा	अंगीकार–उन्मुख (प) ऊर्जित होती हुई (ञ्) सत्ता (जा) ; *अंगीकार (क्रियात्मक) के लिये जो सत्ता ऊर्जित होती है।*
पंथ	बन्धित अंगीकार–उन्मुख (प) होते हुए (ं) 'स्थापित भाव'/'भाव सीमितता' (थ) ; *ज्ञानात्मक बन्धन के अनुसार स्थापित भाव।*
पकड़	बन्धित अंगीकार हो रहे (प) को स्पष्ट कर रही (क) प्रवृत्त इच्छा (ड़) ; *बन्धन से अंगीकार कर रहे क्रियात्मक स्पष्ट की प्रवृत्त इच्छा।*
पकाई	अंगीकार हो रहे (प) विश्लेषण (का) बाह्य प्रत्यक्ष होते रहना (ई) ; *निरन्तर ज्ञानात्मक चेतनता को अनुमोदित करना,* ***मानिसक–विचार*** *विमर्श,* ***वानस्पतिक–भोजन*** *पकना।*
पग	अंगीकार उन्मुख (प) गत्यात्मक स्पष्टता (ग)।
पचना	अंगीकार हो रहे (प) को ऊर्जितोन्मुख (च) करना (ना) ; *देह द्वारा अंगीकार हो रहे भोजन से ऊर्जा प्राप्त होना।*
पट	अनुमोदन (प) में प्रवृत्त उन्मुख (ट) ; *किसी व्यक्ति को अपने अनुसार पटा लेना।*
पत	बन्धनात्मक अंगीकार हो रहे (प) में प्रस्तुत उन्मुख (त) ; *बन्धन में अपने आप को प्रस्तुत कर देना।*
पति	बन्धनात्मक/सुरक्षात्मक हो रहे (प) का प्रत्यक्ष प्रस्तुत हो रहा भाव (ति) जो बन्धन व सुरक्षा दोनों प्रदान करता है।
पथ	बन्धित अंगीकार हो रहा (प) का स्थापन–उन्मुख भाव (थ) ; *जो स्थापित है उसी को बन्धित रूप में स्वीकार करना।*
पद	बन्धित अंगीकार हो रहे (प) में प्रस्तुति (द) ; *जो स्वीकृत (ज्ञानात्मक) किया हुआ है, उसी की प्रस्तुति।*

पदार्थ	अंगीकार–उन्मुख (प) में प्रस्तुतता (दा) के द्वारा (ि) स्थापित भाव (थ) ; *अपनी प्रस्तुति में जो स्थापित है।*
पनच	**धनुष की डोरी** = बन्धित अनुमोदन (प) का अंगीकार उत्सुक (न) जीवन्त–उन्मुख (च) ; *धनुष की डोरी बंधी हुई है, व उसको खेंच कर जीवन्त किया जाता है।*
पर	**कारण** =**दूसरा** =**पंख** = अंगीकार हो रही (प) प्रज्ञा (र) ; ***कारण*** *– ज्ञानात्मक अंगीकरण उन्मुखता में एकाग्र,* ***दूसरा****–भोगात्मक अंगीकरण उन्मुखता में एकाग्र,* ***पंख****–क्रियात्मक अंगीकरण उन्मुखता में एकाग्र।*
परख	अंगीकार हो रही (प) प्रज्ञा (र) से हो रही सीमित स्पष्टता (ख) ; *प्रज्ञा के द्वारा एक सीमित विश्लेषित करना।*
पवन	अनुमोदन (प) में छिपे सत् (व) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *अनुमोदन में छिपा सत् प्रवाहित होना है व उसको स्वीकृत करने की उत्सुकता का अर्थ प्रवाह की स्वीकृति है।*
पाटना	अंगीकार कर रहे (पा) में प्रवृत्त उन्मुख (ट) करना (ना) *अंगीकार करते रहने की प्रक्रिया से खाली स्थान पट जाता है।*
पाठन	अंगीकार कर रहे (पा) ठहराव उन्मुख (ठ) की क्रिया (न) *जो ठहरा हुआ अर्थात् स्थापित है, उसे अंगीकार करते रहने की क्रिया।*
पात	अंगीकार हो रही सत्ता (पा) का भाव (त)।
पाद	अंगीकार हो रही सत्ता (पा) की गत्यात्मक प्रस्तुति (द) *सत्ता में गति का अंगीकार हो रहा।*
पाना	अंगीकार होरही सत्ता (पा) करना (ना) ; *सत्ता में क्रिया का अंगीकार हो रहा।*
पानी	अंगीकार हो रही सत्ता (पा) में बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई प्रस्तुत होने को उत्सुक (नी) ; *समर्पण, अयोग्यता।*
पाल	**रक्षक** = सुरक्षात्मक अंगीकार हो रही सत्ता (पा) का विस्तार (ल)।
पास	अनुमोदनता (पा) का व्यक्त (स)।
पितृ	बन्धनात्मक/सुरक्षात्मक अनुमोदन प्रत्यक्ष होता (पि) अन्तःप्रज्ञित (ृ) भाव (त) ;*जो*

	भाव के द्वारा बन्धन व सुरक्षा दोनों प्रदान करता है।
पीना	अंगीकार का बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ (पी) करना (ना)।
पुजारी	अन्तःस्थित अंगीकार हो रहे (पु) ओजस् (जा) में बाह्यप्रत्यक्ष एकाग्र अंगीकरण (री) ; *ओजस् को अंगीकार करने की बाह्यप्रत्यक्ष क्रिया।*
पुट	अन्तःस्थित अंगीकार हो रहा (पु) प्रवृत्त–उन्मुख (ट), *अन्दर की तरफ स्वीकृत करने में प्रवृत्त।*
पुत्र	अन्तर्गमित अंगीकार-उन्मुख (अन्तःस्वीकृती) (पु) का संस्कार-उन्मुख (त्र) भाव (त) ; *पिता द्वारा भाव को प्रज्ञात्मक रूप से स्वीकार करना (संस्कारों में)।*
पुराण	अन्तः में अंगीकार–उन्मुख (अन्तःस्वीकृती) (पु) में एकात्म सत्ता (रा) को प्रवृत्त करने की इच्छा (ण) ; *जो हम स्वीकार (ज्ञानात्मक) कर रहे हैं उसमें एकात्म सत्ता (ब्रह्म) को प्रवृत्त करने की इच्छा।*
पुर	अन्तः में अंगीकार–उन्मुख (पु) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *अपने अन्दर सबको अंगीकार करने की प्रवृत्ति।*
पुस्तक	अन्तर्गमित अनुमोदन (पु) व्यक्तात्मक (स्) भाव (त) का ज्ञेय–उन्मुख (क) ; *ज्ञेय–उन्मुखता के लिये व्यक्त भाव को अन्तर्गमित अनुमोदन करना (पुस्तक में से)।*
पूजा	अन्तर्गमित होती अनुमोदित (पू) ओजस्विता (जा), *ओजस्विता को निरन्तर अन्तर्गमित करना।*
पूर्व	अन्तर्गमित होती हुई अंगीकार–उन्मुख (पू) के द्वारा निरन्तर (र्) छिपा हुआ सत् (व) ; *उद्देश ; कर्म की निरन्तरता के पूर्व में स्थित छिपे सत् का अन्तर्गमन होता रहता है।*
पृथिवी	अन्तः में अंगीकार हो रहे के द्वारा (पृ) प्रत्यक्ष स्थापन उन्मुख भाव (थि) का बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ छिपा सत् (वी) ;*द्यावा–पृथिवी के द्वैत का भाव।*
पृथ्वी	अन्तः में अंगीकार हो रहे के द्वारा (पृ) पूर्व स्थापित भाव (थ्) का बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ छिपा सत् (वी) ; *पंचमहाभूत वाली पृथ्वी।*
पेच	इंगित दिशा में अंगीकार–उन्मुख (पे) जीवन्त (ताकत) अर्जित हो रहा (च) दिशा विशेष में पेच घुमाने से बल उत्पन्न हो रहा है, जोड़ को सख्त कर रहा है।

पेट	इंगित दिशा में अंगीकार उन्मुख (पे) में प्रवृत्त हो रहा (ट) ; *जो हमेशा भोजन को अनुमोदन करने में प्रवृत्त उन्मुख रहता है।*
पैदा	सत् में अनुमोदन की प्रत्यक्ष (पै) प्रस्तुतता (दा) ; *नयी प्रस्तुति के लिये सत् में अनुमोदन होना, आत्मा सत् को अनुमोदित कर नया अस्तित्व पैदा करती है।*
पैर	अनुमोदन के सत् के प्रत्यक्ष (पै) होता अंगीकृत एकाग्र (र) ; *पैर हमेशा देह की अंगीकृत करने के लिये अनुमोदन रहते है।*
पोई	**अंकुर निकलना** = अनुमोदन की दिशा में (पो) बाह्य प्रत्यक्ष होते हुए प्रकट होना (ई)।
पोथी	अनुमोदन की छिपी दिशा में (पो) स्थापित भाव का बाह्य प्रत्यक्ष होते रहना (थी) ; *जिस पर हम विश्वास (अनुमोदन) करते है उसमें स्थापित भाव को प्रत्यक्ष करने बाली।*
पोत	**पक्षी का बच्चा = जहाज** = अनुमोदन की छिपी दिशा में (पो) प्रस्तुत उन्मुख (त) ; ***पक्षी का बच्चा*** *– वानस्पतिक अनुमोदन (दाना) लेने को उत्सुक,* ***जहाज*** *– भौतिक अनुमोदन (पानी का सहारा) लेने को उत्सुक*
पोता	अनुमोदन की उस दिशा में (पो) भाव की सत्ता (ता) ; *जिस दिशा में अनुमोदन (अंगीकरण उन्मुख) किया जा रहा है वहां भावना भी है। भावना के साथ अंगीकरण करना।*
पोल	**खाली जगह** = अनुमोदन की उस दिशा (पो) में उपलब्ध विस्तार (ल), *वह दिशा जहां अनुमोदन हो रहा है वहां विस्तार है, खाली स्थान पर ही अनुमोदन संभव है।*
पौधा	सत् में अनुमोदन के छिपाव (पौ) धारित सत्ता (धा) ; *वह धारित सत्ता जो प्रकृति द्वारा छिपे अनुमोदन पर आधारित है।*
पौली	**ड्यौढी** = सत् के अनुमोदन में छिपी (पौ) प्रत्यक्ष होता हुआ उपलब्ध विस्तार (ली) ; *रास्ता जो लम्बा जा रहा है, अनुमोदन की सत्ता में जो एकाग्र है।*
प्यार	अनुमोदनात्मक (प्) प्रत्यक्षसत्ता (या) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *अनुमोदन की सत्ता में जो एकाग्र है।*
प्यास	अनुमोदनात्मक (प्) प्रत्यक्ष सत्ता (या) का व्यक्त (स) ; *अनुमोदन की सत्ता (पानी) के लिये जो व्यक्तता है।*

प्रकाश	बाह्य अनुमोदन के द्वारा (प्र) में चेतनता/प्रकाशित (का) का अहसास (श), *जिसे हम स्वीकार कर रहे हैं उस चेतना/प्रकाशन का अहसास।*
प्रकोष्ठ	बाह्य अनुमोदन (प्र) का विषय की दिशा में (को) व्याप्तात्मक (ष्) स्थापित उन्मुख (ठ) ; *स्थापित व्याप्तता का होना जो विशेष विषय को अनुमोदित कर रहा है।*
प्रिय	बाह्य प्रत्यक्ष अनुमोदन के द्वारा (प्रि) प्रत्यक्ष (य)।
प्री	**प्रेम** = बाह्य सत् के द्वारा (त्र) बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ अनुमोदन (पी) ; *निरन्तर अनुमोदन प्रकट किया जा रहा है।*
प्रेण	**प्रेरणा करना** = बाह्य इंगित दिशा में अनुमोदित के द्वारा (प्रे) प्रवृत्त की इच्छा (ण) ; *बाहर से जो "एक विशेष दिशा में अनुमोदन" किया जा रहा है, उसमें प्रवृत्त होने की इच्छा।*
प्लब	**जल की बाढ़** = अनुमोदनात्मक (प्) विस्तार (ल) का बन्धन (ब) ; *विस्तार के द्वारा जो बन्धन उत्पन्न हो जाते हैं।*
फंद	**फंदा** = अपरीक्षित अंगीकार हो रहे (फ) रिक्तात्मक (छोटी होती हुई) (ं) प्रस्तुति (द)।
फंस	अपरीक्षित अंगीकार हो रहे (फ) का रिक्त होता हुआ (ं) व्यक्त (स) ।
फक्	**मैथुन = रंग विहीनता** = बिना शर्त अंगीकार हो रहे (फ) में चेतन (क) ; ***मैथुन*** *= योनी में चेतन का अंगीकार होना,* ***रंग विहीनता*** *= वैविध्य के अभाव में चेतन का अक्रिय हो जाना।*
फज़र	**प्रातःकाल** = बिना शर्त अंगीकार हो रही (फ) व्यक्त ऊर्जित (ज़) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *प्रातःकाल में व्यक्त ऊर्जा बिना शर्त ही उपलब्ध होती है, अंगीकार करने के लिये।*
फज़ल	**कृपा** = बिना शर्त अंगीकार हो रही (फ) व्यक्त ऊर्जिता (ज़) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *बिना शर्त के व्यक्त ऊर्जिता (भोगात्मक) उपलब्ध हो अंगीकार होरही है।*
फट	**झट** = अपरीक्षित अंगीकार हो रही(फ) प्रवृत्तोन्मुख (ट) ; *बिना परीक्षण किये प्रवृत्त होना।*
फटका	फट (फट) का कर्म (का)।
फन	**हुनर** = बिना शर्त अंगीकार हो रहा (फ) पौरुष (न) ; *बिना शर्त जो "अंगीकृत*

	करने के लिये उत्सुकता'' को अंगीकार करता है, अर्थात् सीखता है वह फन कहलाता है।
फल	अपरीक्षित (बिना शर्त) अंगीकार हो रहा (फ) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *पेड़ में फल बिना किसी शर्त के विस्तारित होता रहता है।*
फाल	**गिरना = प्रपात** = बिना शर्त अंगीकार हो रहा (फा) उपलब्ध विस्तार (ल), *जो बिना शर्त के नीचे गिर कर विस्तारित हो रहा है*
फाल्स	अपरीक्षित अंगीकार हो रहा (फा) उपलब्ध विस्तारात्मक (ल्) व्यक्त (स) ; *ऐसा व्यक्त का विस्तार जो बिना परीक्षण के अंगीकार हो रहा है।*
फादर	बिनाशर्त अंगीकार कररही (फा) प्रस्तुति (द) में एकाग्र (र)।
फिट	**उपयुक्त** = बिना शर्त प्रत्यक्ष अंगीकार हो रहा (फि) प्रवृत्त उन्मुख (ट) ; *जो स्वतः ही अंगीकार होने में प्रवृत्त हो।*
फिर	**दुबारा** = अपरीक्षित अंगीकार हो रहे के प्रत्यक्ष (फि) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जो एक बार अंगीकृत हो चुका है, उसमें पुनः एकाग्रता।*
फीस	**शुल्क** = बिना शर्त बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ अंगीकार हो रहा (फी) व्यक्त (स) ; *शुल्क बिना शर्त ही होता है जो वापस नहीं हो सकता।*
फील	**अनुभूति** = बाह्यप्रत्यक्ष बिना शर्त अंगीकार हो रहा (फी) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *मस्तिष्क को बिना शर्त अंगीकार के लिये उपलब्ध है, बाहर दिखाई देता हुआ।*
फुट	**अकेला = पैर** = बिना शर्त अन्तर्मुखी अनुमोदन में छिपा (फु) प्रवृत उन्मुख (ट) ; ***अकेला*** *– मानसिक अन्तर्मुखिता, जो अन्तर्मुखी होता है वह अकेला ही रहता है।* ***पैर*** *– गुणात्मक (गत्यात्मक व द्रव्यात्मक) अन्तर्मुखिता, पैर पूरे देह का भार अन्तर्मुखित ही सम्भालते हैं।*
फुर	**सच्चा = उड़ना** = बिना शर्त अनुमोदन में छिपा हुआ (फु) एकाग्र (र) ; ***सच्चा*** *– बिना शर्त ज्ञानात्मक अनुमोदन,* ***उड़ना*** *– बिना शर्त क्रियात्मक अनुमोदन।*
फुल	**पूरा** = बिना शर्त अनुमोदन में छिपा हुआ (फु) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *बिना शर्त जो अन्तः में विस्तारित है, अर्थात् सत्ता को पूरा भरा हुआ है।*
फूट	बिना शर्त अन्तर्विलीन होता हुआ अनुमोदन (फू) में प्रवृत उन्मुख (ट) ; *अनुमोदन जहां विलीन हो रहा हो ऐसी प्रवृत्ति।*

फूल	**पुष्प** = अन्तः में होता हुआ बिना शर्त अनुमोदन की (फू) अर्पित भावना (ल) ; *बिना शर्त जिसकी खुशबू अन्तः में भाव को अर्पित कर रही हो।*
फूल	**मूर्ख** = अन्तःस्थित होते हुऐ अपरीक्षित अनुमोदन (फू) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *बिना सोचे समझे जो ज्ञान स्वीकृत करता हो।*
फूला	अन्तःस्थित होता हुआ बिना शर्त अनुमोदन में (फू) उपलब्ध विस्तारता (ला) ; *बिना शर्त जब द्रव्य अन्तःस्थित होता रहता है तो विषय में फैलाव होता है।*
फेन	**झाग** = प्रत्यक्ष के सत् में बिना शर्त अनुमोदन (फे) को अंगीकार करने के लिये उत्सुक (न) ;*सत् में "अंगीकार करने के लिये उत्सुक" (आकर्षण) को स्वीकृति देना, फेन द्रव में अन्दर परस्पर आकर्षण के द्वारा बनते है।*
फेर	**घुमाव** = प्रत्यक्ष के सत् में बिना शर्त अनुमोदन (फे) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *प्रवृत्ति में शर्त विहीन अनुमोदन से प्रवृत्ति इधर–उधर घूम रही है, फिर रही है।*
फ़ैज़	***लाभ*** = बिना शर्त अंगीकार उन्मुख के सत् का प्रत्यक्ष (फै) व्यक्त जीवन्त (ज़) ;*स्वच्छन्द रूप से जो अंगीकार किया जाता है, ऐसा भोगात्मक व्यक्त जीवन्त (धन)।*
फ़ैयाज	**उदारता** = बिना शर्त अंगीकार–उन्मुख के सत् में प्रत्यक्ष (फै) की प्रत्यक्ष सत्ता (या) का ऊर्जित (ज) ; *स्वच्छन्द रूप से प्रत्यक्ष सत्ता में 'व्यक्त जीवन्त (धन)' का अनुमोदन करना।*
फ़ौज़	**सेना** = बिना शर्त अंगीकार–उन्मुख के सत् में छिपा (फौ) साहस (ज) ; *जो बिना शर्त साहस को अंगीकार करता है।*
बकना	बन्धित (ब) स्पष्टोन्मुख (क) करना (ना) ; *पूर्वाग्रहों को ही स्पष्ट करना।*
बखान	बन्धित (ब) चेतन विहीन सत्ता (खा) की क्रिया (न) ; *बन्धित विषय पर बिना चेतन प्रयुक्त किये व्यक्त करना।*
बच	सुरक्षित (ब) ऊर्जितो हो रहा (च)।
बजना	अंगीकृत सुरक्षा/बन्धन (ब) ऊर्जित (ज) करना (ना) ; *बजने से कोई ना कोई सावधानी का संकेत होता है।*
बच्चा	सुरक्षित/बन्धित (ब) ऊर्जोन्मुखात्मक (च्) अर्जित होते होना (चा) ; *जो सुरक्षा तथा बन्धन में ऊर्जा का अर्जन करता रहता है।*

बद	बन्धित (ब) प्रस्तुति (द), *पूर्वाग्रहों की प्रस्तुति।*
बदना	**कहना = स्वीकार करना** = अंगीकृत बन्धित (ब) प्रस्तुति (द) करना (ना) जो हम मानते हैं, उसकी प्रस्तुति करना।
बध	**हत्या** = बन्धन (ब) धारित/का जमाव (ध) ; *बन्धन यदि जम जाते हैं तो चेतनता समाप्त हो जाती है।*
बनना	अंगीकृत बन्धित (ब) का पुरुष ('दृढ आश्रय, पद–सूत्र एकत्व दर्शन') द्वारा प्रकृति को अंगीकृत के लिये उत्सुक (न) करना (ना) ; *बन्धित भावों के अनुसार प्रकृति को स्वीकृत कर कुछ बनना।*
बम	बन्धित (ब) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक संग्रह (म) ; *बम के अन्दर छर्रो का प्रस्तुत होने के लिये संग्रह बन्धित रहता है।*
बर	**रेखा** = अंगीकृत बन्धन (ब) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *बिना बदलाव के एकाग्रता में अंगीकृत होना।*
बराबर	अंगीकृत बन्धित (ब) एकात्म सत्ता (रा) में अंगीकृत बन्धित (ब) एकात्मता (र) ; *सत्ता एकात्मकता के लिये बन्धित है।*
बल	बन्धित/सुरक्षित (ब) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जो भी उपलब्ध विस्तार है उसको एक स्थान पर बांधने से बल उत्पन्न होता है।*
बस	**भरपूर** = बन्धित अंगीकरण (ब) का व्यक्त/उपलब्धि (स) ; *जहां और अंगीकरण सम्भव ना हो उसका व्यक्त।*
बहना	बन्धित (ब) को असत् में स्थान उपलब्ध/स्थूल उपलब्धि (ह) करना (ना) ; *असत् में स्थान मिलने से बन्धित वस्तु सत्ता से बाहर आने लगती है।*
बाका	**वाणी** = अंगीकृत बन्धित सत्ता (बा) चेतन की सत्ता (का) ; *पूर्वाग्रह में क्रियात्मक चेतन की सत्ता।*
बाग	अंगीकृत सत्ता (बा) का स्पष्ट (ग) ; *पेड़ बन्धित सत्ता हैं, उनका स्पष्ट बाग है।*
बाज	बन्धित सत्ता (बा) की जीवन्तता (ज) ; *बाज की क्रियात्मक जीवन्तता अपने मालिक के पास बन्धित रहती है।*
बाजू	अंगीकृत बन्धित सत्ता (बा) का अन्तःस्थित होता हुआ बल (जू) ; *सत्ता का बल बाजू में स्थित रहता है।*

बात	अंगीकृत बन्धित सत्ता (बा) की प्रस्तुत उन्मुख (त) ; *पहले से अंगीकृत कियेहुऐ बन्धन (पूर्वाग्रह) की प्रस्तुति में प्रवृत्त।*
बाद	**विवाद** = अंगीकृत बन्धित सत्ता (बा) की प्रस्तुति (द) ; *यह प्रस्तुति है 'पूर्वाग्रह' की, जो कि विवाद का कारण बनता है।*
बाध	**अड़चन** = अंगीकृत बन्धित सत्ता (बा) में जमी हुई (ध) ; *पूर्व स्वीकृत बन्धन को जमा हुआ होना सबसे बड़ी बाधा है।*
बाप	बन्धित/सुरक्षित सत्ता (बा) का अनुमोदन (प)।
बायाँ	अंगीकृत बन्धित सत्ता (बा) विषमता (ाँ) प्रत्यक्ष की सत्ता (या) ; *देह का बायां भाग विषमता को प्रत्यक्ष दर्शन के लिये उत्तरदायी होता है।*
बारी	**तट** = बन्धित सत्ता (बा) की बाह्य प्रत्यक्ष होती हुई अ–विस्तारता (री) ; *तट पर समुद्र की विस्तारता सीमित हो जाती है।*
बाल	अंगीकृत बन्धित सत्ता (बा) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *बाल सिर से बंधे रहते है व विस्तारित होते है।*
बाहु	अंगीकृत बन्धित सत्ता (बा) की छिपे असत् में स्थान उपलब्धता (हु) ; *सूक्ष्म से स्थूल में प्रवाह बाहों के द्वारा ही होता है।*
बिकल	**व्याकुल** = अंगीकृत बन्धन की प्रत्यक्ष (बि) चेतना (क) की अर्पित भावना (ल) ; *प्रत्यक्ष बन्धन में भोगात्मक चेतना का विस्तार, बन्धन व्याकुलता का कारण है।*
बिगाना	**पराया** = अंगीकृत बन्धन के प्रत्यक्ष (बि) की स्पष्टता (गा) करना (ना) ; *जिसमें अपने होने (प्रत्यक्ष होने) का बन्धन हो, उसकी स्पष्टता।*
बिजार	**सांड, बैल** = अंगीकृत बन्धन के प्रत्यक्ष (बि) जीवन्तता (जा) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *बन्धन में रहकर जीवन्तता में एकाग्र होना।*
बिरछ	**वृक्ष** = अंगीकृत बन्धन के प्रत्यक्ष (बि) में अंगीकृत एकाग्र (र) की छाव जीवन्त–सीमितता (छ), *वृक्ष बन्धित चेतना है, जो छाव प्रदान करने में एकाग्र है।*
बिना	अंगीकृत बन्धन को प्रत्यक्ष (बि) करना (ना)।
बिल	अंगीकृत बन्धन/सुरक्षा के प्रत्यक्ष (बि) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *चूहे सांप का बिल विस्तारित भी है व सुरक्षा/बन्धन भी देता है।*
बीचि	**लहर** = बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ अंगीकृत बन्धन (बी) में पुनरावृत्त जीवन्तता की

	प्रत्यक्ष हो रहा होना (चि) ; *तट का बन्धन होता है जहां पुनः पुनः जीवन्तता का प्रत्यक्ष हो रहा है।*
बीमा	बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ अंगीकृत सुरक्षा (बी) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक संग्रह (मा) ; *सुरक्षा की प्राप्ति के लिये संग्रह करना।*
बुक	**किताब** = अंगीकृत में अन्तःस्थित बन्धित (बु) स्पष्टोन्मुख (क) ; *स्पष्ट की तरफ उन्मुख करती हुई बन्धित के अन्दर स्थित।*
बुझना	अंगीकृत में अन्तःस्थित बन्धन (बु) अनोजस् (झ) करना (ना) ; *जिसे बन्धित रूप से अंगीकृत कर रहे है, उसका ओजस् समाप्त करना।*
बुरा	अंगीकृत में छिपी बन्धित (बु) एकाग्रता की सत्ता (रा) ; *अन्तःस्थित पूर्वाग्रहों में ध्यान।*
बूढ़	**बुड्ढा** = अन्तर्विलीन होती हुई अंगीकृत सुरक्षा (बू) भूतकाल में सीमितता (ढ़) ; *भूतकाल में जीवन जीना।*
बे अन्त	इंगित दिशा में बन्धित (बे), अन्त (अन्त) ; *जिसका अन्त बन्धित है अर्थात् नहीं है।*
बेकल	**बेचैन** = अंगीकृत बन्धित का इंगित दिशा में (बे) चेतन (क) विस्तार (ल) ; *इंगित बन्धन में भोगात्मक चेतन का विस्तार, बन्धन होने से बेचैन हैं।*
बेकस	**निःसहाय** = अंगीकृत बन्धित का इंगित दिशा में (बे) चेतन (क) का व्यक्त (स) ; *इंगित बन्धन में क्रियात्मक चेतन का व्यक्त, क्रियात्मक चेतन बन्धित है।*
बेजार	अंगीकृत का इंगित दिशा में बन्धित (बे) जीवन्तता (जा) में एकाग्र (र) ; *जीवन्तता का विस्तार ना हो पाने से बेजार है। इंगित बन्धन में क्रियात्मक जीवन्तता में एकाग्रता, क्रियात्मक जीवन्तता बन्धित होने से बेजार है।*
बेल	अंगीकृत बन्धित का इंगित दिशा में (बे) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *अंगीकृत बन्धन सत् का ठहराव ले रहा है।*
बैठ	अंगीकृत बन्धन के सत् में प्रत्यक्ष की (बै) ठहराव (ठ) ; *जो प्रवृत्त नहीं है।*
बैज	**चपरासी** = अंगीकृत बन्धन के सत् में प्रत्यक्ष (बै) जीवन्त (ज) ; *सत् का जो प्रत्यक्ष क्रियात्मक जीवन्त है वह बन्धित है।*
बैर	**शत्रुता** = अंगीकृत बन्धन के सत् में प्रत्यक्ष (बै) रत (र) ; *सत् का जो ज्ञानात्मक*

	रत है, अर्थात् हम जो समझ रहे हैं वह बन्धित अनुभूति है।
बैल	अंगीकृत बन्धन के सत् में प्रत्यक्ष (बै) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *बल के सत् में प्रत्यक्ष।*
बोझ	अस्तित्व में छिपाव का बन्धन (बो) का अनियन्त्रित बल (झ) ; *अस्तित्व में छिपा हुआ बन्धित बल।*
बोतल	अंगीकृत बन्धन की दिशा में (बो) प्रस्तुत हो रहा (त) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जिसके द्वारा बन्धित (भोगात्मक) में विस्तार उपलब्ध हो रहा है।*
बोलना	अंगीकृत बन्धन की दिशा में (बो) उपलब्ध विस्तार/अर्पित भावना (ल) करना (ना) ; *हमारा ज्ञान हमारा बन्धन है। बन्धित दिशा (ज्ञानात्मक) में जो विस्तार (क्रियात्मक) किया जा रहा है।*
ब्रह्म	बाह्य से बन्धनात्मक/सुरक्षात्मक अंगीकरण के द्वारा (ब्र) को असत् में स्थान उपलब्धात्मक (ह्) प्रस्तुत होने के लिये उन्मुख होना (म) ; *बन्धित प्रज्ञा द्वारा सत्व से असत् में प्रस्तुत होना। एक से अनेक जो जाऊँ का भाव, सृष्टि के फैलाव का कारण।*
भंग	अबन्धित अंगीकरण (भ) का होता हुआ (ं) स्पष्ट (ग) ; *जहां बन्धन समाप्त हो जायें वैसा होते होना।*
भंडार	स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) में प्रवृत्त होता हुआ (ं) स्थापित सत्ता (डा) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *ऐसी सत्ता जहाँ स्वच्छन्द प्रवृत्त (क्रियात्मक) हो अंगीकृत (भोगात्मक) एकाग्र किया जाता है।*
भरना	स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) में अंगीकृत एकाग्र (र) करना (ना)।
भक्त	स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) में चेतनात्मक (क्) प्रस्तुत–उन्मुख (त) ; *चेतनात्मक प्रस्तुति के साथ बिना शर्त अंगीकरण करना (भगवान् को)।*
भग	**सूर्य** = स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) का स्पष्ट (ग) ; *सूर्य सबकी स्पष्टता को बिना शर्त अंगीकार करता है।*
भगाना	अबन्धित अंगीकरण (भ) की स्पष्ट सत्ता (गा) का करना (ना) ; *अबन्धित अर्थात् सत्ता को स्वतन्त्र कर देना।*
भजन	स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) में ओजस् (ज) को अंगीकार करने के लिये उत्सुक

	(न)।
भद्र	स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) की होती हुई (द्र) प्रस्तुति (द) ; *बिना लाग लपेट के होती हुई प्रस्तुति।*
भरत	स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) में रत (र) भाव (त)।
भवन	स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) में छिपी हुई सत् (व) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न)।
भाई	स्वच्छन्द अंगीकृत सत्ता (भा) का होता हुआ बाह्य प्रत्यक्ष (ई) ; *बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई स्वच्छन्द अंगीकरण की सत्ता।*
भाट	**चारण** = स्वच्छन्द अंगीकृत सत्ता (भा) में प्रवृत्त हो रहा (ट) ; *स्वच्छन्द रूप से सत्ता को अनुमोदित करने में प्रवृत्त।*
भार	स्वच्छन्द अंगीकृत सत्ता (भा) का एकाग्र (र) ; *स्वच्छन्द रूप से सत्ता को अंगीकृत करने में जहां एकाग्रता है, भार वहीं है।*
भारत	स्वच्छन्द अंगीकृत सत्ता (भा) में प्रज्ञा (र) का भाव (त) ; *स्वच्छन्द रूप से सत्ता को अंगीकृत करने में जो प्रज्ञा का भाव है।*
भाव	स्वच्छन्द अंगीकृत सत्ता (भा) में छिपा हुआ सत् (व) ; *स्वच्छन्द रूप से सत्ता जिसको अंगीकृत कर रही है।*
भावुक	स्वच्छन्द अंगीकृत सत्ता (भा) में छिपा अन्तर्मुखी सत् (वु) की चेतना (क) ; *स्वच्छन्द रूप से सत्ता को अंगीकृत करने में जो अन्तर्मुखी चेतना (भोगात्मक) है।*
भिआ	**भाई** = स्वच्छन्द अंगीकरण की प्रत्यक्ष (भि) सत्ता (आ) ; *जिसे स्वच्छन्द रूप से अंगीकृत किया जाये ऐसी सत्ता।*
भिद	**अन्तर** = अबन्धित अंगीकरण की प्रत्यक्ष (भि) प्रस्तुति (द) ; *अबन्धित अंगीकरण से होने वाली विभिन्न प्रस्तुतियों में अन्तर होगा।*
भीख	स्वच्छन्द अंगीकरण की बाह्य प्रत्यक्ष होती हुई (भी) चेतन विहीनता (ख) ; *क्रियात्मक चेतन विहीनता (कार्य ना करना) में उत्पन्न होता हुआ अबन्धित (आश्रय)।*
भीम	बाह्य प्रत्यक्ष होते हुए स्वच्छन्द अंगीकरण में (भी) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक

	(म) प्रस्तुत–उत्सुक में प्रत्यक्ष होता हुआ स्वच्छन्द अंगीकरण (आश्रय) अर्थात् दृढ़ता।
भीरु	बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई स्वच्छन्द अंगीकरण (भी) की अन्तर्मुखी संलिप्तता (रू) अन्तर्मुखी – संलिप्तता में प्रत्यक्ष होता स्वच्छन्द आश्रय अर्थात् अन्तर्मुखिता में ही जिसको आश्रय दिखाई देता हो।
भीष्म	बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई स्वच्छन्द अंगीकरण (भी) इच्छा शक्ति (ष्) होना (म) ; *स्वच्छन्द अंगीकरण हर जगह व्याप्त है। इच्छा शक्ति रूपी दृढ़ता, जिसमें दृढता का अस्तित्व इच्छा पर आधारित हो।*
भुज	**बाहु** = अन्तःस्थित स्वच्छन्द अंगीकरण (भु) को जीवन्त (ज) ; *बाहु अन्दर की तरफ जीवन्त होती है।*
भुवन	अन्तःस्थित स्वच्छन्द अंगीकरण (भु) में सूत्रात्मक (व) अंगीकृत करने को उत्सुक (न) ; *आकाश पृथ्वी को स्वच्छन्द रूप से जो उसके अन्दर सूत्र है, उसके अनुसार अंगीकृत करता है।*
भूत	अन्तगर्मित होता हुआ स्वच्छन्द अंगीकरण (भू) का भाव (त) ; *स्वच्छन्द अंगीकरण विलीन होकर बन्धित अंगीकरण का भाव होता है, हम भूत काल के जिस भाव में बन्धित होते है, उसी के अनुसार दिखाई देता है।*
भूमि	अन्तःस्थित होता हुआ स्वच्छन्द अंगीकरण (भू) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक प्रत्यक्ष (मि) ; *भुवन का विपरीत।*
भृगु	**शिव का पुत्र** = निरन्तर (ऽ) स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) की अन्तःस्थित स्पष्टता (गु) ; *स्वच्छन्द अंगीकरण के द्वारा विश्वास को बढ़ाना।*
भृत	**दास** = स्वच्छन्द अंगीकरण में निरन्तर (भृ) में प्रस्तुत–उन्मुख/ समर्पण उन्मुख (त) ; *जो अन्तःकरण से निरन्तर समर्पित है।*
भेद	**छेदना** = इंगित स्वच्छन्द अंगीकरण (भे) प्रस्तुति (द) ; *प्रत्यक्ष वस्तु द्वारा बिना रोक टोक के (अन्दर की तरफ) अंगीकरण।*
भेस	इंगित स्वच्छन्द अंगीकरण (भे) व्यक्त (स) *व्यक्त की तरफ जो इंगित अंगीकरण है।*
भैरव	स्वच्छन्द अंगीकरण के सत् के प्रत्यक्ष (भै) एकाग्र (र) में छिपा सत् (व) ; *स्वच्छन्द अंगीकरण के सत् में जो एकाग्र छिपा हुआ है।*

भोग	स्वच्छन्द अंगीकरण की उस दिशा में (भो) बोध (ग) ; *अंगीकरण करने में जो भोगात्मक बोध हो रहा है।*
भोज	स्वच्छन्द अंगीकरण की उस दिशा में (भो) जीवन्त (ज)।
भोला	स्वच्छन्द अंगीकरण की दिशा में (भो) उपलब्ध विस्तार की सत्ता (ला) ; *जो बिना सोचे किसी भी दिशा में अंगीकार को विस्तार करता है।*
भौती	= सत् के स्वच्छन्द अंगीकरण में छिपाव (भौ) का प्रत्यक्ष होता हुआ भाव (ती) ; *सत् में छिपाव अंधेरे का संकेत है।*
भ्रम	बाह्य से स्वच्छन्द अंगीकरण के द्वारा (भ्र) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *प्रज्ञा यदि स्वच्छन्द है तो भ्रम ही पैदा होगा।*
भ्रामर	**शहद** = बाह्य से स्वच्छन्द अंगीकरण के द्वारा (भ्र) सत्ता (ा) में प्रस्तुत होने में (म) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *सत्ता छत्ता है जहां स्वच्छन्द रूप से शहद अंगीकृत किया जा रहा है।*
मंगल	प्रकृति द्वारा पुरुष में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक/संग्रह (म) होता हुआ (ङ्) स्पष्ट (ग) अर्पित भावना (ल) ; *पदार्थ का* संग्रह/ *विस्तारित होना।*
मंच	प्रकृति द्वारा पुरुष में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक/प्रदर्शन उत्सुक (म) होता हुआ (ञ) जीवन्तोन्मुख (च) ; *प्रकृति (कलाकार) द्वारा होता हुआ जीवन्त–उन्मुख (भोगात्मक–प्रदर्शन/ज्ञानात्मक–वक्ता)।*
मंत्र	प्रकृति द्वारा पुरुष में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) होता हुआ (न्) बाह्य प्रज्ञित (ि) प्रस्तुत हो रहा (त) ; *पदार्थ की प्रज्ञात्मक प्रस्तुति।*
मंथ	**मथना** = प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) करने हुऐ (न्) संग्रह भाव (थ) ; **महीना** = प्रकृति द्वारा पुरुष में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) अंगीकरण उत्सुक (न्) ठहरता हुआ भाव (थ) ; *प्रकृति पुरुष में प्रस्तुत होने में व ठहरने में सोम की एक आवृत्ति होती है जिसे महीना कहा जाता है।*
मंदी	प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) का रिक्तात्मक (न्) प्रत्यक्ष होती हुई प्रस्तुति (दी) ; *रिक्तता का प्रत्यक्ष होना।*
मगज	संगृहित ज्ञान (म) की स्पष्ट (ग) ओजस्विता (ज) ; *जहां ज्ञान संग्रहित होकर जीवित रहता है।*

मग	**कप** = संग्रह (म) की क्रियात्मक स्पष्टता (ग)।
मचल	प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ऊर्जित हो रहे (च) का उपलब्ध विस्तार (ल)।
मजदूर	प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) जीवन्त (बल) (ज) की अन्तर्विलीन प्रस्तुति (श्रम) (दू) में संलिप्त (र)।
मजबूत	प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) जीवन्त (बल) (ज) में अन्तर्स्थित होते हुऐ बन्धन (बू) का भाव (त) ; *अन्तर्स्थित बन्धन (बन्धा हुआ बल) का भाव है जहां से कार्य में प्रस्तुत होने के लिये ऊर्जा आती है।*
मजार	प्रकृति (भक्त) द्वारा पुरुष (ईश्वर) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) जीवन्तता (जा) में एकाग्र (र)।
मजाक	प्रस्तुत उत्सुक पदार्थ (म) जीवन्तता (जा) की चेतना (क) ; *प्रस्तुत उत्सुक पदार्थ में भोगात्मक जीवन्तता की भोगात्मक चेतना।*
मति	प्रस्तुत उत्सुक पदार्थ (म) का प्रत्यक्ष भाव (ति) ; *प्रस्तुत उत्सुक पदार्थ का प्रत्यक्ष प्रस्तुत–उन्मुख, नये विचारों की प्रस्तुति*
मद	**आनन्द** = प्रस्तुत उत्सुक पदार्थ (म) की प्रस्तुति (द) ; *प्रस्तुत उत्सुक पदार्थ की प्रस्तुति हो चुकी। प्रकृति द्वारा पदार्थ की प्रस्तुति पुरुष के लिये आनन्द का कारण है। यह पदार्थ गुण (ज्ञानात्मक) गति (क्रियात्मक) व द्रव्य (भोगात्मक) तीनों प्रकार का हो सकता है।*
मधु	प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक संग्रहण (म) में अन्तःस्थित जमा हुआ (धु), *पदार्थ अन्दर जमा हुआ।*
मल	प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक संग्रह (म) का बाह्य विस्तार (ल) ; *देह की अन्दर संग्रह हो बाहर विस्तारित होता है।*
मांस	संग्रह की सत्ता (मा) का होता हुआ (ं) व्यक्त (स) ; *देह में मांस का संग्रह होता है।*
मांग	संग्रहण की सत्ता (मा) होता हुआ (ं) स्पष्ट (ग) ; *संग्रहण की उत्सुकता की स्पष्टता।*
माई	होने की सत्ता (मा) का होता हुआ बाह्यप्रत्यक्ष (ई) ; *माँ के पास पदार्थ उपलब्ध होता है।*

मातृ	संग्रह की सत्ता (मा) की प्रस्तुत उन्मुख निरन्तर (तृ) ; *संग्रह की सत्ता की निरन्तर प्रस्तुति।*
मान	होने की सत्ता (मा) का पौरुष (न) ; *वह पौरूष जो पदार्थ की सत्ता का स्वामी है।*
मानस	संग्रह की सत्ता (मा) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) का व्यक्त (स) ; *मस्तिष्क हमेशा संग्रह को अंगीकृत करना चाहता है।*
माया	संग्रह की सत्ता (मा) में प्रत्यक्ष होती सत्ता (या)।
मार	अनंगीकृत करने को उत्सुक सत्ता (मा) में संलिप्त (र) ; *वो सत्ता जो अंगीकृत ही नहीं हो पायी, अर्थात् समाप्त होने में एकाग्र।*
मालिक	संग्रह की सत्ता (मा) के प्रत्यक्ष विस्तार (लि) की चेतना (क)।
मास	**महीना = वजन =** प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक सत्ता (मा) का व्यक्त (स) ; ***महीना =*** *प्रस्तुत होना आवृत्ति मय है व एक आवृत्ति एक मास होती है।* ***वजन =*** *संग्रह की सत्ता (मा) का व्यक्त (स)।*
मिचना	**आंखों का बन्द होना** = प्रत्यक्ष अनगीकरण (मि) से ऊर्जितोन्मुख (च) करना (ना) ; *ऊर्जा के अंगीकरण को रोकना।*
मिज़ाज	'प्रस्तुत होने के लिये प्रत्यक्ष उत्सुक' (मि) व्यक्त जीवन्तता (ज़ा) का जीवन्त भाव (ज) ; *प्रस्तुत उत्सुक भोगात्मक व्यक्त जीवन्तता में क्रियात्मक जीवन्तता, क्रिया भोग की प्रस्तुत–उत्सुकता पर आधारित है।*
मिटना	प्रत्यक्ष अनंगीकृत (मि) को प्रवृत्त–उन्मुख (ट) करना (ना)।
मिथुन	प्रकृति द्वारा पुरुष में 'प्रस्तुत होने के लिये प्रत्यक्ष उत्सुक' (मि) में अन्तःस्थित ठहराव (थु) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ।
मिलाप	प्रकृति द्वारा पुरुष में 'प्रस्तुत होने के लिये प्रत्यक्ष उत्सुक' (मि) की उपलब्ध विस्तारता (ला) का अनुमोदित (प)।
मिस	**सुश्री** = प्रकृति के 'वैविध्य प्रदर्शन' द्वारा पुरुष में 'प्रस्तुत होने के लिये प्रत्यक्ष उत्सुकता' (सौन्दर्य) (मि) का व्यक्त (स)।
मिसेज	**श्रीमती** = प्रकृति के 'वैविध्य प्रदर्शन' द्वारा पुरुष में 'प्रस्तुत होने के लिये प्रत्यक्ष उत्सुक' (सौन्दर्य) (मि) व्यक्तता का इंगित दिशा (से) में जीवन्त (ज) ; *केवल*

	एक के लिये भोगात्मक जीवन्तता।
मिस्टर	**श्रीमान्** = प्रकृति द्वारा पुरुष में 'प्रस्तुत होने के लिये प्रत्यक्ष उत्सुक' (मि) का उपलब्धात्मक (स्) प्रवृत्त (ट) में संलिप्त (र) ; *यहाँ गुण, गति, द्रव्य, तीनों का सौन्दर्य शामिल है।*
मुआफ	**माफ** = 'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' में छिपाव (मु) सत्ता (आ) का बिना शर्त अनुमोदन (फ) ;*जो प्रस्तुत हो रहा है, उसमें 'छिपी हुई सत्ता' (अपराध) को बिना शर्त अनुमोदित कर देना।*
मुकद्दमा	'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' में छिपा (म) चेतना में (क) में धारित प्रस्तुति (द्द) होना (मा) ;*जो प्रकरण छिपा हुआ है, उसे चेतना (ज्ञानात्मक) में धारित कर प्रस्तुत करना।*
मुकरना	'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' में छिपाव (मु) करना ; *जिसे प्रस्तुत करने की उत्सुकता है, उसमें छिपाव करना, उत्सुकता को नकारना।*
मुजरा	प्रकृति द्वारा पुरुष में 'प्रस्तुत होने के लिये अन्तर्मुखी उत्सुक' (मु) की जीवन्तता (ज) में सम्मोहन (रा) ;*सौन्दर्य के प्रस्तुतिकरण में अन्तर्मुखिता में ऊर्जा के साथ सम्मोहन होना।*
मुद्रा	**सिक्का = मोहर =** कलाकार की मुद्रा अन्तःस्थित 'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' संग्रह की (मु) की बाह्य प्रज्ञित (द्रा) प्रस्तुत सत्ता (दा) ; *संग्रह यहाँ तीन प्रकार का है, धन, अधिकार व कला तीनों की बाह्यप्रज्ञित प्रस्तुति मुद्रा (सिक्का, मोहर व कलाकार की मुद्रा) के नाम से जानी जाती है।*
मुधा	**बेकार** = 'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' संग्रह के अन्तः में (मु) में धारणायें (धा) ; *आपके पास जो संग्रह है, उसमें यदि धारणाऐं हैं तो बेकार है।*
मुरली	'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' संग्रह की अन्तर्मुखी (मु) अंगीकृत एकाग्रता (र) में विस्तार का बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ (ली) ; *अन्तःस्थित प्रस्तुति की उत्सुकता का एकागित होकर बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ।*
मूल	'प्रस्तुत होने के लिये का अन्तर्मुखित होता हुआ उत्सुक' (मू) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *अन्तर्मुखी होते होते हम अपने मूल तक पहुंच जाते है।*
मूत्र	'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' अन्तर्विलीन (मू) का बाह्यकेन्द्रित भाव (त्र) ; *मूत्र अन्तर्विलीन रहता है, बाहर की तरफ प्रस्तुत होने को उत्सुक रहता है।*

मेह	**बरसात** = इंगित दिशा में 'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' संग्रह (मे) का असत्/स्थूल में स्थान उपलब्धता (ह) ;*बादलों का पानी में बदलना सूक्ष्म से स्थूल होने का संकेत।*
मेद	**चरबी** = इंगित दिशा में संग्रहण {मांस} (मे) की प्रस्तुति (द)।
मेघ	'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकता' का इंगित दिशा में (मे) घेराव (घ) ; *मेघ प्रस्तुत होने से पहले, उस दिशा में घिर आते है।*
मेल	'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकता' का इंगित दिशा में (मे) विस्तार (ल) ; *मिलने की दिशा में विस्तार मिलने मे लिये उत्सुकता का।*
मेरा	**स्वयम् का** = 'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' संग्रह का इंगित दिशा में (मे) में एकाग्र सत्ता (रा) ; *जो संग्रह प्रस्तुत है, उस का स्वयम् की दिशा में इंगित होना।*
मैडम	संग्रह के सत् का प्रत्यक्ष (मै) होया हुआ (ड) होना (म) ;*जहां संग्रह का सत् पहले से ही है।*
मैं	**स्वयम्** = 'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' के सत् का निरन्तर प्रत्यक्ष (मैं)।
मोह	संग्रह की दिशा में (मो) असत्/स्थूल में स्थान उपलब्धता (ह) ; *स्थूल को संग्रह करने की दिशा।*
मोटा	संग्रह की दिशा (मो) में प्रवृत्त हो रहा होना (टा)।
मोदक	'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक' की दिशा (मो) प्रस्तुत (द) स्पष्ट–उन्मुख (क) ; *पदार्थ जो प्रस्तुत उन्मुख है क्रियात्मक प्रस्तुति व भोगात्मक चेतन के द्वारा।*
मौर	**मुकुट** = सत् के संग्रह में छिपा (मौ) अंगीकृत एकाग्र सत्ता (र) ।
मौज	सत् के संग्रह में छिपी (मौ) ऊर्जिता (ज) ; *सत् के अन्दर जो ऊर्जिता है वही मौज है।*

5.0 गन्धर्व प्रकरण
(GAṄDHARVA PRANARAṆA)

प्रत्येक सत्ता के दो पक्ष हैं। प्रथम है, 'वैविधिक, स्पन्दित अव्यवस्थित द्रव्यत्व का अप्रकट प्रकाश', एवं द्वितीय है, 'प्रकाशविहीन स्वीकृति'। पंचमहाभूत में प्रतिष्ठा के लिये यही दो महाभूत हैं, जिन्हें हम **पृथ्वी** व **आकाश** कहते हैं। दोनों के मध्य में अन्तरिक्ष है, जहां बाकी तीनों महाभूत, भूत की जीवन्तता/प्राकट्यता के रूप में दिखाई देते हैं। पृथ्वी, आकाश से उपलब्ध सीमा (अवकाश) के अन्तर्गत सत्ता में स्थापित होने को उत्सुक रहती है। तथा आकाश भी पृथ्वी से उपलब्ध सीमित प्रस्तुति को अनुमोदन प्रदान कर अर्थ को अंगीकृत करता है। स्थापित उन्मुख अर्थ की उपलब्धता हमें पृथ्वी कराती है, तथा स्वीकृति हमें आकाशभाव दे रहा है। प्रस्तुत सन्दर्भ में हम पृथ्वी द्वारा उपलब्ध अव्यवस्थित वैविध्यता व अव्यवस्थित स्पन्दन को गन्धर्वपक्ष के रूप में, व व्यवस्था स्वीकृत करने वाले आकाश भाव को हम ऋषिपक्ष के रूप में जान रहे हैं। पृथ्वी हमेशा 'प्रकृति' का अंश है व आकाश हमेशा 'पुरुष' का अंश है।

प्रकृति जो कि गन्धर्व सौन्दर्य में स्थापित होना चाहती है, मूल रूप से सत्ता के दो अव्यय कोशों के मध्य में स्थित रहती है। इसमें प्रथम है वाङ्मय कोश, जिसे हम 'अव्यवस्थित, अस्थापित, अस्पष्ट, वैविध्यता' के रूप में जान रहे हैं। तथा दूसरा है, प्राणमय कोश जिसे हम 'अव्यवस्थित, अस्थापित, जीवन्तता विहीन', स्पन्दन के रूप में जान रहे हैं।

जीवन्तता विहीन से भ्रम हो सकता है परन्तु निःस्पन्द होना भूतकाल की संज्ञा है अतः चूंकि वाङ्मयता व प्राणमयता दोनों ही तमोगुणी भाव हैं तथा भविष्यकाल में होने से, जीवन्त नहीं होते, अतः जीवन्तता विहीन ही होते हैं। हाँ, जीवत्व का कारण जरूर बनते हैं। मूलरूप से विज्ञान, वाक्, प्राण, आनन्द व मन पांचों ही अव्यय की पांच कलायें हैं अव्यय होने से काल से बन्धते नहीं हैं वरन् काल के कारण बनते हैं।

वाङ्मय कोश व प्राणमय कोश के मध्य जो विसर्जनात्मक रतियक अर्थ है वही गन्धर्वभाव है। वह भरपूर विसर्जनात्मक भाव, जिस संस्था को विसर्जित कर रहा है, उसका तामसी भाव विपरीत होने से विसर्जनात्मक रिक्तता है। न्यूनता है, अभाव है, तथा **'न'** कार का घोष प्रस्तुत कर रहा है। रिक्त होने से अर्थात् तमस् होने से इसमें अंगीकार करने का काम उत्पन्न हो रहा है। इस काम को **ऋषि { 'दृढ आश्रय', 'सूत्र पद' व 'एकत्व दर्शन'}** द्वारा **गन्धर्व {'स्पन्द समर्पण', 'प्राकट्य विसर्जन' व 'वैविध्य प्रदर्शन'}** को अंगीकार–उत्सुक करता है। गन्धर्व में उपलब्ध भरपूर अर्थ 'म' भी ऋषि में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक हो रहा है। 'म' व 'न' के मध्य में ऊर्जा स्थापन को लेकर परस्पर तामसी उत्प्रेरणा उत्पन्न हो रही है, उसे ही हम **''मन''** कहते है।

दोनों के मध्य उपर्युक्त काम व्यापार से अव्यवस्थित ऊर्जत्व, जो प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक दिखाई दे रहा था, प्रस्तुत–उन्मुख हो जाता है, जिसे 'त' कहते हैं। अर्थात् 'तमस्' से निकल कर भाव 'रजस्' में आ रहा है तथा भविष्य की इच्छायें वर्तमान के प्रयत्न में प्रवेश कर रही हैं।

उन्मुख भाव दो प्रकार के होते हैं। ऋषि का 'दृढ आश्रय' पितृबल स्थापित करने के लिये 'स्पन्दन समर्पण' को स्वीकार करते हैं व ऋषि का 'एकत्व दर्शन' देवरस स्थापित करने के लिए 'वैविध्यता प्रदर्शन' को स्वीकार करते हैं। दोनों भाव मिलकर क्रमश पितृ (ज) व देव (ग) जीवन्तता व स्पष्टता का सर्जन कर 'ज्ञ' का निर्माण कर रहे है। इस प्रकार देवरस प्रस्तुत–उन्मुखता (दृष्य का प्रदर्शन), पितृबल प्रस्तुत–उन्मुखता (ऊर्जा का समर्पण), 'ज्ञ' प्रस्तुत–उन्मुखता (प्राकट्य का विसर्जन) ऊर्जा का सब ही **'त'** के रूप में व्यक्त हो रहे हैं।

क्या सब ही प्रकार के भाव स्थापित हो पाते हैं। हम कहेंगे नहीं। क्योंकि मूल रूप से पुरुष की स्वीकृति हमें चाहिये, जिसे हम पूर्ण मान रहे हैं। परन्तु होती नहीं। इसके अलावा स्पष्टता की स्वीकृति जिसे पहले 'ञ' कहते हैं व जीवत्व की स्वीकृति जिसे हम 'ङ' कह चुके हैं। इस प्रकार 'त' के भाव को सीमाबद्ध करने के लिये **न, म, ञ** तथा

ङ, चारों की अवावश्यकता है। इसके अलावा एक असुर पक्ष जिसकी फैलने की इच्छा ही सर्वोपरि व जिसने सबको आवृत्त कर रखा है, तथा जिसका संकेत **'ण'** है, वह भी ''त'' की स्थापना में हस्तक्षेप करता है। इस प्रकार 'त' की प्रस्तुत–उन्मुखता एक सीमा के अन्दर ही होती है। इस **सीमा को** हम **'थ'** कहते हैं। व 'थ' 'त' दोनों रजोगुणी हैं ये दोनों विद्या–अविद्या का द्वैत हैं। 'थ' चूंकि ठहराव के साथ पूर्व स्थापित संस्कार भी है अर्थात् 'थ' का अभिप्राय ''पूर्वस्थापित–उन्मुखता'' भी है।

एक उदाहरण है। जैसे एक बच्चा तैरना सीखना चाहता है। तथा 'तैरने' को अपनी दक्षता में स्थापित करना चाहता है। अब यदि जिज्ञासा (ञ) का अभाव है। शौर्य (ङ) का अभाव है। अंगीकरण (न) का अभाव है। उपलब्ध ज्ञेय का (म) का अभाव है। या इच्छा शक्ति (ड़) का अभाव है, तो वह जो भी सीखेगा उपर्युक्त अभावों के बाद जो उपलब्धता है, उनमें ही सीखेगा। यह उपलब्धताओं की सीमा हमें हमारे पूर्व संचित भावों से आती है जो हमारे अन्तःकरण में वसते हैं। यही अन्तःकरण के भाव उपर्युक्त अभावों में दृष्यगत होते हैं। यह जो उपलब्धताओं की सीमा है यही 'थ' का स्वरूप है। अतः प्रस्तुत सीमित में उन्मुख भाव अर्थात् अप्रस्तुत उन्मुख या ठहराव ही **'थ'** का स्वरूप है।

यहाँ आकर वर्तमान समाप्त होने लगता है, तथा जो प्रस्तुत–उन्मुख था प्रस्तुत हो रहा होता हुआ प्रस्तुत हो जाता है। यह जो **प्रस्तुत** है उसे हम **'द'** कह रहे हैं। प्रस्तुत/समर्पित/प्रदर्शित, रूप, आदि सब 'द' का ही स्वरूप है।

जिस स्थान पर रूप स्थापित हो रहा है, वहाँ पूर्व स्थापित भाव (अवधारणा) भी है, अतः अन्तः में जो भाव पूर्व में स्थापित हो कर **जमा हुआ है** वही **'ध'** है तथा जो भाव स्थापित नहीं है वही 'द' है। 'न' व 'म' एक दूसरे के विरोधी होने पर भी एक दूसरे के पूरक हैं। 'म' जो कि 'प फ ब भ' की रिक्तता का द्योतक है, गंधर्व पक्ष की पूर्णता का द्योतक भी है तथा 'न' जो कि 'त थ द ध' की रिक्तता का द्योतक है, ऋषिपक्ष की पूर्णता का द्योतक है। संकेत रूप में याद रखने के लिये हम कह सकते हैं कि 'न' एक गरीब योद्धा है, तथा 'म' एक असुरक्षित सेठ है। दोनों को एक दूसरे की जरूरत है। दोनों के मध्य एक आवृत्तिमय व्यापार चलता है, व इस आवृत्ति को हम सोम कहते हैं। यहां 'म' को हम शुक्लपक्ष की अष्टमी कहेंगे व 'न' को हम कृष्णपक्ष की अष्टमी कहेंगे। अमावस्या (ङ) में पितृपक्ष व पूर्णिमा में देवपक्ष (ञ) स्थित होगा। दिशात्मक रूप से 'न' पश्चिम है, 'म' पूर्व है, 'ङ' दक्षिण है व 'ञ' उत्तर है। ये चारों संस्थायें लोकान्तर व्यवस्था में ''भुवः'' पर स्थिति हैं, तो 'ण' भूलोक पर स्थित है। (5.3)

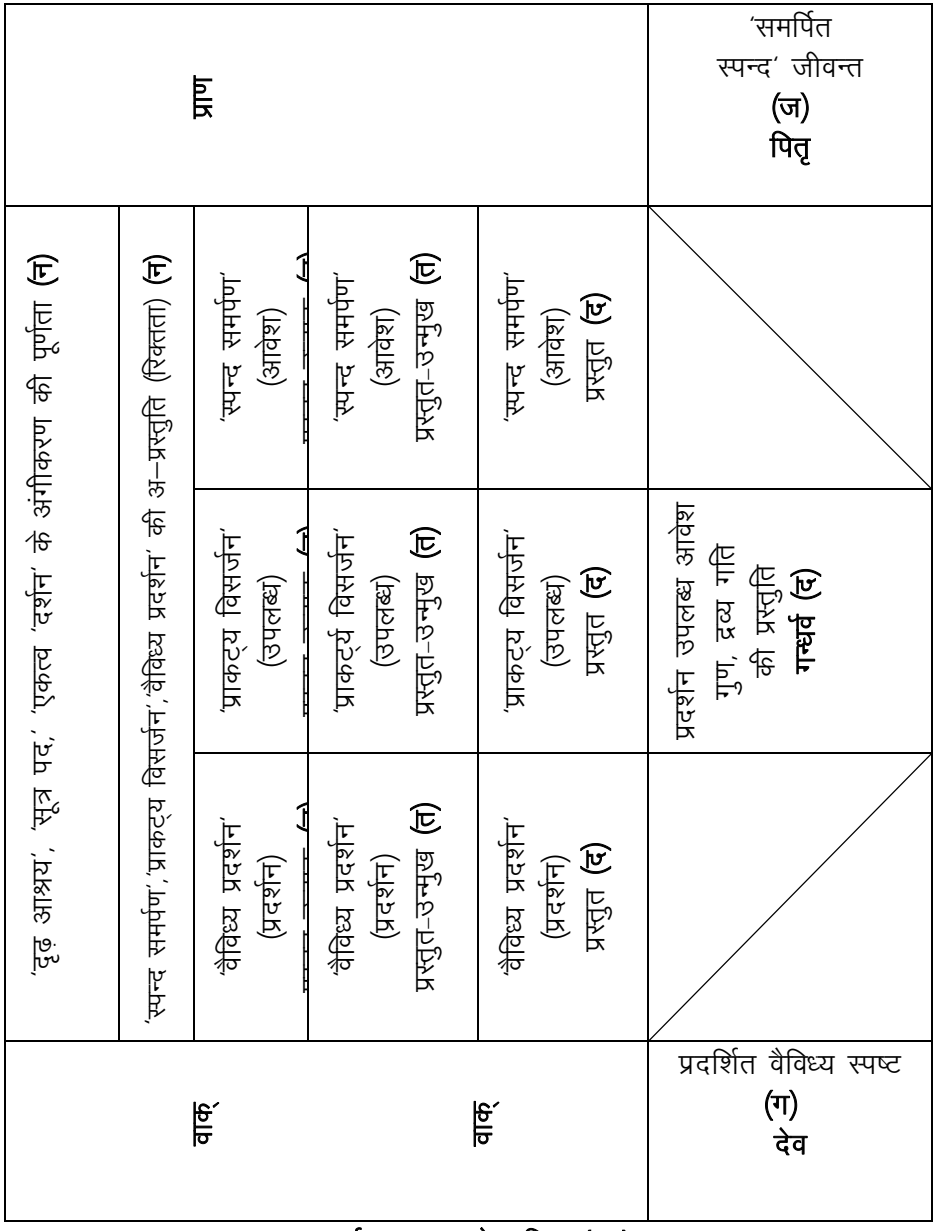

गन्धर्व सत्ता का रेखाचित्र (5.2)

Go to Contents

5.3 'त थ द ध न' की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का विवरण

तं	**नाव** = प्रस्तुत हो रहा (त) अंगीकृत करने के लिये उत्सुकात्मकता (न्) ; *पानी नाव को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक है।*
तउ	**तब** = प्रस्तुत–उन्मुख (त) का छिपाव भाव (उ), प्रस्तुत–उन्मुख (त) में बन्धन (ब) ; *प्रस्तुत उन्मुख में काल का छिपाव।*
तकाई	**ताकने की क्रिया** = प्रस्तुत–उन्मुख भाव को (त) स्पष्ट कर रहे का (का) बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ (ई) ; *जो प्रस्तुत है,उसे बाह्यप्रत्यक्ष स्पष्ट करने का भाव।*
तर्क	प्रस्तुत हो रही (त) स्वप्रज्ञित (र्) चेतना (क)।
तम	गन्धर्व द्वारा उपलब्ध {प्रदर्शन, उपलब्ध, आवेश} भाव (त) का संग्रह (म)।
तय	{उपलबध} भाव (त) के प्रत्यक्ष का सत् (य) ; *प्रस्तुत–उन्मुख भाव जो प्रत्यक्ष किये जा चुके है।*
तब	प्रस्तुत–उन्मुख (त) का बन्धन (ब), *प्रस्तुति का जब तक बन्धन है।*
तन	प्राकट्य भाव (त) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *देह का विस्तार इसी प्रकार होता है।*
तत्त्व	भाव (त) में प्रस्तुत–उन्मुखात्मक (त्) छिपा हुआ सत् (व)।
तज	द्रव्य विसर्जन हो रहे भाव (त) का जीवन्त (ज) ; *द्रव्य विसर्जित उन्मुख भाव में क्रियात्मक जीवन्त अर्थात् छोड़ने की तैयारी में ही है।*
त्वचा	प्रस्तुतोन्मुखात्मक (त्) में छिपी हुई (व) जीवतन्ता कर रही होना (चा) ; *त्वचा यदि छिल जाये तो, छिपे रूप से निरन्तर जीवन्तता करते रहने के लिये प्रस्तुत उन्मुख रहती है, तथा पुनः नयी त्वचा आ जाती है।*
तट	प्रस्तुत हो रहा (त) होता हुआ/प्रवृत्त (ट)।
तटाक	**तलाब** = द्रव्यभाव प्रस्तुत कर रहा (ता) उपलब्ध विस्तार की सत्ता (ला) में बन्धन (ब) ; *बन्धित होकर जो विस्तार बन रहा है, उसमें द्रव्य भाव की प्रस्तुति।*
तना	भाव (त) में 'दृढ़ आश्रय' द्वारा अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) सत्ता (ा) *किसी भी वस्तु को दृढ़ आश्रय देने में सक्षम।*
तनाव	प्रस्तुत–उन्मुख भाव (त) 'दृढ आश्रय' द्वारा अंगीकृत करने के लिये उत्सुकता (ना) का छिपा होना (व) ; *आश्रय में छिपाव होने से तनाव होता है।*

तप	प्रस्तुत–उन्मुख (त) का अनुमोदन (प) ; *प्रकृति को जानना।*
तर	भाव (त) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *भाव को एकाग्रित हो अंगीकृत करना, जल की स्वीकृति के समान है।*
तल	प्रस्तुत–उन्मुख (त) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *प्रस्तुति नीचे की तरफ होती है, उसमें विस्तार तल तक पहुंचा देता है।*
तह	प्रस्तुत हो रहे भाव (त) को असत् में स्थान उपलब्धता/स्थूल उपलब्धता (ह) ; *भाव स्थूल में जाकर लोक बदल लेता है व एक तह ऊपर रह जाती है।*
ताक्	प्रस्तुत उन्मुख कर रहा (ता) स्पष्टोन्मुखत्व/चेतनत्व (क्) ; *ज्ञानात्मक चेतनत्व प्रस्तुत उन्मुख हो रहा है, जानने के लिये।*
ताजा	प्रस्तुत कर रहा (ता) जीवन्तता (जा) ; *भोगात्मक जीवन्तता के लिये प्रस्तुत कर रहा अर्थात् भोजन करने योग्य अर्थात् ताजा है।*
ताड़	प्रस्तुत कर रहे (ता) में बढ़ने की इच्छा (ड़)।
तान	'वैविध्य प्रदर्शन' कर रहे (संगीत का सौन्दर्य) (ता) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ।
ताप	'स्पन्द समर्पण' कर रही (गति) (ता) का अंगीकरण उन्मुख/ अनुमोदन (प) ; *गति को अंगीकरण करने सेगति ताप (ऊर्जा) में बदल जाता है।*
ताम	विकार = प्रस्तुत–उन्मुखता (ता) का संग्रह (म) ; *जो प्रस्तुत कर रहे है, उसी का संग्रह हो रहा है।*
तार	प्रस्तुत कर रहे (ता) में अंगीकृत एकाग्रता/पतलापन (र)।
ताल	प्रस्तुत कर रहे (ता) का उपलब्धात्मक विस्तार (ल) ; *विस्तारित उपलब्धता की प्रस्तुत होती हुई सत्ता।*
तिक्त	**कड़ुवा** = प्रत्यक्ष भाव (ति) में अजीवन्तात्मक (आनन्द विहीन) (क्) भाव (त) ; *ऐसा भाव जिसमें जीवन्तता (आनन्द) नहीं है।*
तिल	प्रत्यक्ष भाव का (ति) उपलब्ध विस्तार (ल) {दिखाई देता हुआ}, *भावों को विस्तारित करने के लिये आहुति में काम आता है।*
तिस	**इसके = उसके** = प्रत्यक्ष प्रस्तुत हो रहा (ति) व्यक्त/उपलब्धि (स)।
ती	**स्त्री** = बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ प्रस्तुत–उन्मुख ; *स्त्री में मूल रूप से प्रदर्शन*

	विसर्जन व समर्पण के बाह्यप्रत्यक्ष का भाव होता है।
तीन	{'वैविध्य प्रदर्शन', 'स्पन्द समर्पण', 'प्राकट्य विसर्जन'} तीनों भाव बाह्यप्रत्यक्ष होते हुये (ती) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न)।
तीर्थ	बाह्यप्रत्यक्ष समर्पण हो रहे भाव में (ती) स्वकेन्द्रित (र्) स्थापित–उन्मुख भाव (थ) ; *समर्पण होते हुऐ भाव जहां स्थापित हो जायें, वही तीर्थ है।*
तीर	बाह्यप्रत्यक्ष गत्यात्मक प्रस्तुत हो रहे (ती) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *अंगीकृत एकाग्रता में बाहर की तरफ गति करने वाले।*
तीव्र	बाह्यप्रत्यक्ष विसर्जन उन्मुख हो रहे (ती) में बाह्यकेन्द्रित (र्) छुपा हुआ सत् (व) ; *छिपे हुऐ सत् (ऊर्जा) के द्वारा, जो बाहर की तरफ विसर्जन हो रहा है वही तीव्रता है।*
तीहा	**तसल्ली** = बाह्यप्रत्यक्ष होते हुऐ समर्पणभाव (ती) को असत् में स्थान उपलब्धता की सत्ता (हा), *समर्पण को स्थान उपलब्धता या स्थूल उपलब्धता तसल्ली का कारण बनती है।*
तुंग	**प्रचंड** = प्राप्त हो रहे (तु) साहस (ङ्) का स्पष्ट (ग)।
तुक	प्राप्त हो रहा (तु) स्पष्टोन्मुख (क) ; *यहाँ स्पष्ट भोगात्मक है।*
तुर	**शीघ्र** = प्राप्त हो रही (तु) अंगीकृत एकाग्रता (र) ; *एकाग्रता से प्राप्ति शीघ्र होती है।*
तुला	प्राप्त हो रही (तु) उपलब्ध विस्तार की सत्ता (ला) ; *तुला से विस्तार को नापा जाता है।*
तुसी	**अन्न के ऊपर का छिलका** = प्राप्त हो रहा (तु) बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ व्यक्त (सी) ; *जो बाहर से व्यक्त हो रहा है।*
तूफान	निरन्तर प्राप्त हो रही (तू) बिना शर्त अनुमोदनता (फा) का शोर्य (न) ; *शोर्य, जो बिना अनुमोदन हुऐ भी निरन्तर प्राप्त हो रहा है।*
तूस	**बल** = अन्तर्मुखी होते हुए भाव (तू) का व्यक्त (स) ; *बालों का मुंह अन्दर की तरफ होता है।*
तूल	**आकाश** = निरन्तर प्राप्त हो रहा (तू) का उपलब्ध विस्तार (ल)।
तृण	**तिनका** = अन्तःकेन्द्रित प्रस्तुत होती हुई (तृ) प्रवृत्त की इच्छा (ण) ; *तिनका हवा*

	में उड़ जाता (प्रवृत्त) है।
तेज	प्रस्तुत हो रही ऊर्जा की इंगित दिशा में (ते) जीवन्तता (ज) ; *एक ही दिशा में ऊर्जा होने से गति तेज होती है।*
तैयार	सत् में प्रस्तुत हो रहे प्रत्यक्ष (तै) प्रत्यक्ष सत्ता (या) में एकाग्र (र) ; *सत् में प्रस्तुति हो रही है वह प्रत्यक्ष सत्ता में एकाग्र है अर्थात् तैयार है।*
तैरना	सत् में प्रस्तुत हो रहे प्रत्यक्ष (तै) में एकाग्र (र) करना (ना) ; *सत् में जो प्रस्तुति हो रही है उसमें एकाग्र होना जरूरी है।*
तैश	सत् में प्रस्तुत हो रहे प्रत्यक्ष (तै) में ऊर्जित अनुभूति (श) ; *सत् में प्रस्तुति हो रही है वह ऊर्जित अनुभूति की है।*
तोड़	प्रस्तुत हो रही दिशा में (तो) टूटने को उत्सुक (ड़)।
तोप	प्रस्तुत हो रही दिशा में (तो) गत्यात्मक अनुमोदन (प) ; *जिस दिशा में गत्यात्मक अनुमोदन प्रस्तुत हो रहा हो।*
तोबा	प्रस्तुत हो रही दिशा में (तो) बन्धन की सत्ता (बा) ; *जिस दिशा में बन्धन की सत्ता प्रस्तुत हो रही है।*
तोष	**संतोष** = प्रस्तुत हो रही दिशा में (तो) उपलब्ध व्याप्तता (ष) ; *जिस दिशा में उपलब्धि व्याप्त हो प्रस्तुत हो रही है।*
त्याग	प्रस्तुत हो रही आत्मक (त्) में प्रत्यक्षता (या) का स्पष्ट (ग) ; *प्रस्तुत करने के गुण की प्रत्यक्षता स्पष्ट हो रही है।*
त्यजन	समर्पण हो रही आत्मक (त्) के प्रत्यक्ष (य) की जीवन्त (ज) क्रिया (न) ; *दूसरे को समर्पित किया जा रहा है। प्रस्तुत करने के गुण के प्रत्यक्ष की जीवन्त क्रिया अर्थात् त्याग की जीवन्त क्रिया।*
त्र	गति/गुण/द्रव्य (तीनों) का प्रस्तुत–उन्मुख (त) बाह्यकेन्द्रित (त्र), प्रकृति
त्रास	**भय = कष्ट** = प्रकृति की सत्ता (त्रा) का व्यक्त (स) ; *प्रकृति के मूल में 'भय' का भाव होता है जो पुरुष में प्रस्तुत होने को प्रेरित करता है। यह भय की सत्ता का व्यक्त ही 'त्रास' है।*
त्रपा	**लज्जा** = भाव में प्रदर्शन युक्त समर्पण (प्रकृति) (त्र) की अनुमोदनता (पा) ।
थंब	**खम्भा** = ठहराव भाव (थ) में होने वाला (म्) बन्धन (ब)।

थम्भन	***स्तम्भन*** = **ठहराव** = अप्रस्तुत हो रही (थ) प्रस्तुत होने को उत्सुक (म्) स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) की अंगीकृत–उत्सुक (न्) ; *स्वच्छन्द अंगीकरण उन्मुख में प्रस्तुत होने को उत्सुक में ठहराव हो रहा है।*
थकना	स्थापित हो रहे (थ) को स्पष्ट हो रहे (क) करना (ना) ; *क्रियात्मक स्थापन को स्पष्ट करना।*
थपकी	स्थापित हो रही (थ) अनुमोदन (प) का बाह्यप्रत्यक्ष स्पष्ट–उन्मुख (की) ; *प्रत्यक्ष हो रही स्थापन के अनुमोदन (भय विहीनता) का भोगात्मक स्पष्ट उन्मुख थपकी (भय विहीनता के स्पष्ट) से बच्चा सो जाता है।*
थर	**परत** = स्थापित हो रही (थ) अंगीकृत एकाग्र/पतलापन (र) ; *पतलापन जो ठहरा हुआ है वह एक परत है।*
थलज	**गुलाब** = स्थापित हो रहे (थ) उपलब्धि विस्तार (ल) में जीवन्त (ज) ; *यहां थल का अर्थ भूमि है।*
था	स्थापित भाव (थ) की सत्ता (ा)।
थान	**ठिकाना** = स्थापित उन्मुख सत्ता (था) का अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *जहां स्थापित हो सकते है उसी अंगीकार करना।*
थाप	**तबले की थाप** = स्थापित सत्ता (था) का अनुमोदन (प) ; *थाप से चेतन स्थापित हो जाता है।*
थाह	भोगात्मक स्थापित उन्मुख सत्ता (था) असत् में स्थान उपलब्धता (ह) ; *असत् में नीचे जाते जाते जहां स्थापित हो जायें वही थाह है।*
थित	**स्थायित्व** = प्रत्यक्ष स्थापित हो रहा (थि) भाव (त)।
थिरा	**पृथ्वी** = प्रत्यक्ष स्थापन उन्मुख (थि) एकात्म सत्ता (रा) ; *आकाश के गुणसूत्र एकात्म हैं, उनके अन्तर्गत स्थापित होती हुई प्रत्यक्ष सत्ता।*
थीम	बाह्यप्रत्यक्ष होते हुऐ स्थापन उन्मुख (थी) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *अर्थात् जो भी कुछ प्रस्तुत उत्सुक है उसकी प्रत्यक्षता में एक स्थापथ्य है।*
थुकाई	**थूकने का कार्य** = अन्तर्स्थित स्थापन उन्मुख (थु) के चेतनता (का) का निरन्तर प्रत्यक्षीकरण (ई) ; *जो अन्तः में स्थापित रहता है, उस चेतना को निरन्तर बाहर प्रत्यक्ष करना।*

थोड़ा	स्थापन उन्मुख दिशा में (थो) में प्रवृत्त विहीनता (ड़ा) ; *स्थापन उन्मुख की दिशा में प्रवृत्त ना होने से स्थापन थोड़ा ही होता है।*
दंग	प्रस्तुत (द) स्पष्ट के पूर्ण अभाव {असमंजस} (ङ) का स्पष्ट (ग) ; *ऐसी प्रस्तुति जहां ज्ञानात्मक स्पष्ट का पूर्ण अभाव हो।*
दम्भ	प्रस्तुत (द) संग्रहात्मक (म्) स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; *संग्रह के लिये स्वच्छन्द अंगीकृत की प्रस्तुति दम्भ है।*
दश	प्रस्तुत (द) व्यतीत (श) ; *आयु की व्यतीति 10 देवों से होती है अतः यह भी दस है।*
दंश	प्रस्तुत (द) नकारात्मक (न्) जीवन्तक उपलब्धता (श)।
दई	**भाग्य** = प्रस्तुति (द) बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई (ई) ;*बाह्यप्रत्यक्ष जो भी प्रस्तुत हो रहा है वही भाग्य है।*
दक्ष	प्रस्तुति (द) योग्य (क्ष) ; *प्रस्तुति की योग्यता दक्षता है।*
दक्षिण	प्रस्तुत (द) प्रत्यक्ष योग्यता (क्षि) को प्रवृत्त करने की इच्छा (ण) ; *दक्षिण से सारी योग्यताऐं प्रत्यक्ष होकर प्रस्तुत होती हैं।*
दान	अर्थ प्रस्तुतता (दा) की क्रिया (न)।
दाग	प्रस्तुतता (दा) का स्पष्ट (ग)।
दानाई	**बुद्धिमानी** = अर्थ प्रस्तुतता (दा) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुकता (ना) का बाह्य प्रत्यक्ष (ई) ; *जानने की इच्छा करना।*
दाम	प्रस्तुत सत्ता (दा) को अंगीकृत होने के लिये उत्सुक (म) ; *अंगीकृत होने का उत्सुक, प्रस्तुत की हुई सत्ता।*
दाय	देने योग्य धन द्रव्य प्रस्तुतता (दा) के प्रत्यक्ष का सत् (य)।
दाब	प्रस्तुतता (दा) से बन्धन (ब) ; *प्रस्तुतता में जो बन्धन है जो प्रस्तुतता को रोकता है।*
दाव	**जंगल** = प्रस्तुतता (दा) का छिपा सत् (व) ; *जहां सब कुछ प्रस्तुत होता है लेकिन छिपा हुआ।*
दाह	प्रस्तुतता (दा) को असत् स्थित स्थान उपलब्धता (ह) *प्रस्तुत सत्ता को असत् में विलीन कर देना*

दास	समर्पण प्रस्तुतता (दा) का व्यक्त (स)।
दिक्	**ओर, तरफ** = प्रत्यक्ष प्रस्तुत (दि) में चेतनत्व (क्) ; *दिखते हुऐमें ज्ञानात्मक चेतनत्व।*
दिखना	प्रदर्शन के लिये प्रत्यक्ष प्रस्तुत (दि) को विश्लेषण के लिये स्थान उपलब्ध (ख) करना (ना) ;*जब प्रत्यक्ष प्रस्तुत विश्लेषण हो सके, ऐसा कर्म, दिखना।*
दिढ़	**दृढ़ता** = प्रत्यक्ष प्रस्तुत (दि) भूत कालीन सत् के लिये स्थान उपलब्धता (ढ़) ; *भूतकाल में जो स्थापित है, उसे ही प्रदर्शित करना।*
दिति	प्रत्यक्ष द्रव्य प्रस्तुत (दि) को प्रत्यक्ष प्रस्तुत हो रहा भाव (ति) ; *जो भी द्रव्य प्रस्तुत है, उसकी प्रस्तुति, अर्थात् द्रव्यात्मक बोध।*
दिधु	**वाण** = प्रत्यक्ष गति प्रस्तुति (दि) में छिपा जमाव {भारीपन} (धु)।
दिधि	**धैर्य** = प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) का प्रत्यक्ष जमाव/धारित करना (धि) ; *प्रस्तुति को हो धारित करने से धैर्य उत्पन्न होता है।*
दिन	प्रत्यक्ष भोग प्रस्तुति (दि) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *प्रकाश से ही प्रस्तुति का अंगीकरण होता है।*
दिमाग	प्रकाशित होने के लिये उत्सुक (दि) प्रस्तुत करने के लिये उत्सुक संग्रह की सत्ता (मा) का स्पष्ट (ग) ; *ज्ञानात्मक प्रकाशन के लिये उत्सुक संग्रह (ज्ञान) को स्पष्ट करने वाली सत्ता।*
दिया	***चिराग*** = प्रकाशित करने वाला/प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) की प्रत्यक्षता (या)।
दिल	प्रकाशित करने वाले/प्रत्यक्ष प्रस्तुति (दि) का उपलब्ध विस्तार (ल) ***देह वाला दिल*** - *प्रत्यक्ष प्रस्तुति (रक्त) का विस्तार करना,* ***भावना वाला दिल*** - *प्रत्यक्ष प्रस्तुति का भावात्मक विस्तार।*
दिवस	प्रकाशित करने वाले (दि) में छिपे सत् (व) का व्यक्त (स) ; *प्रकाश होने से छिपा सत् भी व्यक्त हो जाता है।*
दिशा	प्रकाशित करने वाली (दि) जीवन्त उपलब्धता (शा) ; *जो ज्ञानात्मक जीवन्तता को प्रकाशित करे वही दिशा है।*
दिशेभ	***दिग्गज*** = प्रकाशित करने वाली (दि) इंगित जीवन्त उपलब्धि (शे) का स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) *जो स्वच्छन्द अंगीकरण से प्राप्त जीवन्त उपलब्धि को प्रकाशित*

	कर रहे है।
दीक्षा	प्रकाशित होती हुई (दी) योग्यता (क्षा)।
दीदा	**दर्शन** = प्रकाशित होती हुई (दी) प्रस्तुत सत्ता (दा)।
दीदार	दीदा में अंगीकृत एकाग्र (र)।
दीन	प्रकाशित होती हुई (दी) न्यूनता (न)।
दीप	प्रकाशित होता हुआ (दी) अनुमोदन (प) *प्रकाश को अनुमोदन देने वाला।*
दीर्घ	प्रकाशित होता हुआ (दी) स्वकेन्द्रित (ी) घेराव (घ) ; *बड़ा घेराव।*
दीवार	(दी) में छिपाव की सत्ता (वा) में एकाग्र (र) ; *छिपाव करने के सत्ता (दीवार) प्रकाशित हो रही है।*
दुआ	अन्तःस्थित भाव प्रस्तुति (दु) की सत्ता (आ)।
दुःख	अन्तःस्थित भाव प्रस्तुति (दु) चेतन सीमितता/अविश्लेषित दर्शन हो रहा (ख) ; *अन्तर्मुखी भावों का अतार्किक विश्लेषण।*
दुकान	अन्तःस्थित भाव प्रस्तुति (दु) में स्पष्टोन्मुखता (का) को अंगीकृत करने को उत्सुक (न) ; *जो माल अन्तःस्थित है, उसे दिखाने के लिये उत्सुक।*
दुर	**तिरस्कार** = अन्तःस्थित भाव प्रस्तुति (दु) में विस्तार (र) ; *भाव प्रस्तुति को बाहर ना करने में संलिप्त, अपने आप में सीमित रहना।*
दुल	***छल*** = अन्तःस्थित भाव प्रस्तुति (दु) में विस्तार (ल) ; *ऐसी प्रस्तुति में विस्तार जिसका असली भाव छिपा हुआ है।*
दुर्गा	अन्तर्मुखित प्रस्तुति (दु) की होती हुई स्पष्ट सत्ता (र्गा) ।
दुर्योधन	अन्तःस्थित भाव प्रस्तुति (दु) की स्वकेन्द्रित (ी) प्रत्यक्ष दिशा में (यो) धारणा (ध) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *जो विचारों में स्वधारणाओ को प्रमुखता देता है यह प्रस्तुति दुर्योधन कही जाती है।*
दुविधा	अन्तःस्थित भाव प्रस्तुत (दु) में छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) में धारणा की सत्ता (धा) ; *अन्तःस्थित भाव दो प्रकार के होते हैं, तर्कात्मक तथा भावनात्मक। दोनों में जो अन्तर्निहित भाव है, उससे अ–प्रस्तुति (दुविधा) प्रकट हो रही है।*
दुष्ट	छिपी भाव प्रस्तुति (दु) में कामवेगात्मक/इच्छात्मक (ष्) प्रवृत्त होता हुआ (ट) ; *जो कि इच्छा के कारण प्रवृत्त होता है, भाव प्रस्तुति में।*

दूध	अन्तर्विलीन होता हुआ प्रस्तुत (दू) धारित (ध) ; *दूध में धारित पदार्थ अन्तर्विलीन रहता है।*
दूर	अन्तर्विलीन होता हुआ प्रस्तुत (दू) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *एकाग्र के द्वारा जो प्रस्तुति अंगीकृत हो रही है वह विलीन हो रही है।*
देवी	प्रत्यक्ष प्रस्तुति के सत् में (दे) बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ छिपा सत् (वी) ; *छिपा सत् (गुण बोध) बाह्यप्रत्यक्ष हो रहा है, प्रस्तुति के सत् में।*
देव	इंगित प्रस्तुत में (दे) छिपा सत् (व) *गुणात्मक इंगित प्रस्तुति।*
देना	इंगित प्रस्तुति (दे) करना (ना) *इंगित को प्रस्तुत करना।*
देर	इंगित प्रस्तुति (दे) में एकाग्रता (र), *अभी प्रस्तुति पूर्ण नहीं हुई है।*
देवज	**देवता से उत्पन्न** = इंगित प्रस्तुति (दे) में छिपी हुऐ सत् (व) से जीवन्त (ज) ; *छिपा हुआ सत् गुण बोध है, उसके द्वारा जो जीवन्त हो रहा है, उसकी प्रस्तुति (पैदा होना)।*
देह	इंगित प्रस्तुति (दे) की असत् स्थित स्थान उपलब्धता (ह) ; *देह मनुष्य का असत्/स्थूल भाव है।*
दैन	सत् की प्रस्तुति में प्रत्यक्ष (दै) रिक्तता (न) ; *सत् की प्रस्तुति में जो रिक्तता उत्पन्न होती है, अर्थात् एक सत् प्रस्तुति होने के बाद की स्थिति अर्थात् 'तब'*
दैत्य	अस्तित्व में प्रस्तुति के प्रत्यक्ष (दै) का द्रव्यात्मक (त्) प्रत्यक्ष (य) ; *जो प्रस्तुति है वह गुण–गति से परे मात्र द्रव्य की प्रस्तुति है। जो भी दिखाई देता है, उसमें द्रव्यात्मक, भाव दैत्य है जबकि गुणात्मक भाव 'देव' है।*
दोष	प्रस्तुति की दिशा (दो) में इच्छा की व्याप्तता (श) ; *हमारे कर्म में इच्छा की व्याप्तता है यह कर्म का दोष है।*
दौरा	सत् की प्रस्तुति में छिपी (दौ) ध्यानस्थ सत्ता/सम्मोहन (रा) ; *दौरा पड़ने से व्यक्ति बेहोश हो जाता है।*
दौड़	सत् की प्रस्तुति में छिपी (दौ) प्रवृत्त की इच्छा (ड़)।
द्रव्य	प्रस्तुत के द्वारा छिपावात्मक (द्रव्) प्रत्यक्ष (य) ; *द्रव्य भाव में केवल मात्रा रहती है बाकी सब छिप जाता है।*
धक	**भय से उत्पन्न भाव** = धारणा/जमा हुआ (ध) चेतन (क) ; *धारणा में जब चेतन*

	जाता है तो भय उत्पन्न होता है, क्योंकि निर्भयता धारणा से बनती है।
धट	**तुला** = धारणा/जमे हुऐ (ध) में प्रवृत्त उन्मुख (ट) ; *तुला में वजन के लिये प्रवृत्त किया जाता है।*
धत्	धारणा/जमी हुई का (ध) प्रस्तुत हो रही (त्) ; *प्रस्तुतोन्मुखात्मक धारणात्व, धारण को प्रस्तुत करने की प्रतिक्रिया।*
धन	धारण (ध) को अंगीकृत करने को उत्सुक (न) ; *सम्पदा ।*
धनु	**धनुष** = धारित (ध) को अन्तर्मुखी अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (नु) ; *धनुष की डोरी को अन्दर की तरफ खेंचा जाता है।*
धनी	**पैसे वाला** = धारित (ध) को प्रत्यक्ष होता हुआ अंगीकृत करने को उत्सुक (नी) ; *धन को स्वीकृत करने को उत्सुक।*
धप	**मुलायम वस्तु के गिरने का शब्द** = धारित (ध) का अनुमोदन (प) ; *मुलायम होने से अनुमोदन हो रहा है।* मुलायम होने से ध्वनि 'धप' है यदि मुलायम ना हो 'घट' भी हो सकती है।
धम	**भारी वस्तु के गिरने का शब्द** = धारित (ध) तथा प्रस्तुत उत्सुक संग्रह (म) ; *दोनों की संयुक्त प्रस्तुति हो रही है।*
धर	**धारणा करने वाला** = धारित (ध) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *धारण करने वाला।*
धरा	**पृथ्वी** = धारित (ध) में एकात्म सत्ता (रा) *जो धारणा में ध्यानस्थ है, निरन्तर सबको धारण किया हुआ है।*
धर्म	धारित (ध) स्व प्रज्ञा (र्) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *अर्थात् आपने जो पद धारण कर रखा है, उसमें प्रस्तुत होना ।*
धाक	**ख्याति** = धारित सत्ता (धा) की चेतना (क) ; *धारित सत्ता जब स्पष्टता को प्राप्त होती है तो ख्याती होती है।*
धाड़	**डाकुओं का धावा** = धारित सत्ता (धा) का विध्वन्स (ड़) ; *डाकू प्रत्येक धारित सत्ता को विध्वन्स कर देते है।*
धाता	धारित सत्ता (धा) की भाव सत्ता (ता) *हमने जिस सत्ता को धारण (मनोवैज्ञानिक) कर रखा है, अर्थात् हमारा इष्ट, उसकी भाव सत्ता।*
धातु	धारित सत्ता (धा) का प्राप्त उन्मुख/सघन भाव (तु) *जिस सत्ता को धारण*

	(भौतिक) किया हुआ है, उस धारणत्व को प्राप्त उन्मुख, अर्थात् सघन भाव।
धाम	**पुण्य स्थान** = धारित/जमी हुई सत्ता (धा) में प्रस्तुत होने के लिये उन्मुख (म) ; *जिस सत्ता को धारित (मनोवैज्ञानिक) किया हुआ है, उसमें समर्पण उन्मुख होना।*
धाँय	**बन्दूक से छूटने का शब्द** = धारित सत्ता {गोली} (धा) का होता हुआ ाँ) प्रत्यक्ष {सुनने के सन्दर्भ में} (य)।
धार	धारित सत्ता/जमी हुई सत्ता (धा) में अंगीकृत एकाग्र/पतलापन (र) *सघन सत्ता में पतला पन।*
धारक	धारित सत्ता (धा) में संलिप्त (र) संचेतक (क) ; जो धारण करने में संलिप्त हो।
धारा	धारणा (धा) में प्रवाह की सत्ता/ध्यानगम्यता की सत्ता/सम्मोहन (रा) *धारण किया हुआ प्रवाह।*
धित	**स्थापित** = प्रत्यक्ष जमा हुआ (धि) भाव (त)।
धीमा	बाह्यप्रत्यक्ष होते हुए जमाव में (धी) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकता (मा) ;*जमाव की गति धीमी ही होती है।*
धीर	बाह्यप्रत्यक्ष होते हुए जमाव में (धी) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *एकाग्रता ने जमाव अर्थात् धैर्य को अंगीकृत कर रखा है। जमाव को अंगीकृत करना अर्थात् धैर्य।*
धीरज	धीर में नियन्त्रित जीवन्त (ज) ; *धैर्य में जीवन्तता।*
धुर	अन्तःस्थित धारित/जमाव (धु) में एकाग्र (र) ; *जिसमें अरा {धुरी} लगती है वह सतह* जमी हुई रहती है।
धुन	**निश्चित को करते रहना** = अन्तर्स्थित जमाव को (धु) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *जो भी अन्दर जमाव (निश्चय) है उसे करने को उत्सुक।*
धूप	धारण/जमाव के अन्तर्विलीन होते होने (धू) अनुमोदन (प) ; *सघन भोगात्मक सत् (ऊर्जा) को अन्तर्विलीन होने के लिये अनुमोदन, अर्थात् ऊर्जा को प्राप्त करने की स्वीकृति।*
धूनी	जमाव के अन्तर्विलीन होने (धू) की बाह्यप्रत्यक्ष अंगीकृत करने को उत्सुक (नी) ; *सघन भोगात्मक सत् (गन्ध द्रव्य) के अन्तर्विलीन होने को अंगीकृत करनेको उत्सुक। अर्थात् गन्ध द्रव्य जो जलने से अन्तर्विलीन हो रहे हैं उसे अंगीकृत करना।*

धूल	मिट्टी के बारीक कण = जमाव के अन्तर्विलीन होते होने (धू) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जमी हुई वस्तु के विस्तार के द्वारा अन्तर्विलीन होना धूल है।*
धृतराष्ट्र	अन्तः में जमे हुऐ के द्वारा (धृ) भाव (त) की सम्मोहित सत्ता (रा) में इच्छावेगात्मक (ष्) बाह्यप्रज्ञित (ट्र) में प्रवृत्त (ट) ; *अर्थात् जो अन्तः में तर्क धारित है, वही बाहर की तरफ इच्छावेग के रूप से प्रवाहित होता हुआ/दिशा हीनता रूप/अंधा।*
धेय	इंगित धारणा/जमाव/निश्चय (धे) का प्रत्यक्ष (य)।
धैर्य	जमाव के सत् के प्रत्यक्ष (धै) में स्वप्रज्ञित (र्) प्रत्यक्ष (य) *जमाव के मूल में प्रत्यक्षता।*
धोना	जमे हुऐ की दिशा में (धो) रिक्तता (ना) ; *गन्दगी जमी होती है जिसे रिक्त करना।*
धोती	धारणा की दिशा में (धो) बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ भाव (ती) ; *धोती को धारण (पहना) किया जाता है।*
ध्यान	धारणात्मक (ध्) प्रत्यक्ष सत्ता (या) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *जो ध्यान में है उसी अंगीकृत करने का प्रयास।*
ध्रुव	**स्थिर** = अन्तःस्थित जमा हुआ (ध्रु) बाह्यप्रज्ञित (र्) छिपाव (व) ; *जो अन्तः में जमा हुआ है, परन्तु बाहर दिखाई नहीं देता, सापेक्ष शून्य।*
ध्वज	धारणात्मक (ध्) छिपे सत् (व) का जीवन्त (ज) *अन्तः में जो धारणात्मक अनुभूति है उसे जीवन्तता प्रदान करने वाला।*
ध्वनि	धारणात्मक (ध्) छिपी सत् (व) के प्रत्यक्ष को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (नि) ; *छिपे धारित संकेत को प्रत्यक्ष करने के लिये उत्सुक।*
नंगा	रिक्तता (न) की होती हुई (ङ्) स्पष्टता (ग) ।
नंद	**संरक्षक = पालक** = पौरुष (न) की होती हुई (न्) प्रस्तुति (द)।
नंबर	रिक्तता (न) में होता हुआ (म्) बन्धन (ब) एक का (र)।
नकल	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) स्पष्ट हो रहा (क) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जो भी उपलब्ध विस्तार स्पष्ट हो रहा है उसे ही अंगीकृत करने को उत्सुक।*
नकार	रिक्तता (न) के विषय की सत्ता (का) में एकाग्र (र)।

नकेल	शौर्य में (न) इंगित दिशा में चेतन (के) का विस्तार (ल) ; *बैलो के शौर्य का क्रियात्मक चेतन का विस्तार इंगित दिशा में करना, अर्थात् क्रियात्मक नियन्त्रण।*
नजर	अंगीकृत करने को (न) ऊर्जितता (ज) का एकाग्र (र) ; *ऊर्जितता अर्थात् प्रयास करना एकाग्र में अंगीकृत करने का।*
नज़म	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) व्यक्त जीवन्त (ज़) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *जीवन्त के व्यक्त होने को अंगीकृत करने की उत्सुक।*
नट	शौर्य (न) में प्रवृत्त हो रहा (ट)।
नत	पौरूष (न) का समर्पित हो रहा भाव (त)।
नदी	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) की प्रत्यक्ष होती हुई प्रस्तुति (दी) ; नदी सब को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक रहता है।
नबी़	**पैगम्बर** = अंगीकृत करने को उत्सुक (न) का बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ बन्धन (बी) ; *ईश्वर को अंगीकृत करने की उत्सुकता का बन्धन।*
नफा	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) बिना शर्त अनुमोदनता (फा) ; *नफे के अनुमोदन में कोई शर्त नहीं होती।*
नभ	रिक्तता/अंगीकृत करने को उत्सुक (न) का स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; *आकाश सब को ही बिना शर्त अंगीकृत करता है।*
नम	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *समर्पण भाव।*
नमक	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) की चेतना (क) ; *नमक प्रतिक्रिया को तेज करता है, यहाँ चेतना क्रियात्मक है।*
नयन	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) प्रत्यक्ष (य) क्रिया (न) ।
नर	{'दृढ़ आश्रय','सूत्र पद','एकत्व दर्शन'} की पूर्णता (न) में अंगीकृत–एकाग्र (र) ; {प्रदर्शन, उपलब्ध, आवेश} तीनों से रिक्त (न) में एकाग्र (र) ; *ऋषिता में एकाग्र।*
नरक	रिक्तता में एकाग्र (नर) चेतना (क) ; *ऐसी भोगात्मक चेतना जब हर एकाग्र रिक्त लगे।*
नल	**ट्यूब** = रिक्तता/अंगीकृत करने को उत्सुक (न) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *नल अन्दर से रिक्त होने पर भी विस्तारित होता है।*

नया	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) की प्रत्यक्ष सत्ता (या)।
नशा	अंगीकृत करने को उत्सुक (न) में जीवन्त उपलब्धता/व्यतीति की सत्ता/विश्वास की सत्ता/अहसास की सत्ता (शा)।
नस	**ट्यूब** = अंगीकृत करने को उत्सुक (न) का व्यक्त (स) ; *नस खून को अंगीकृत करने की उत्सुकता व्यक्त करती हैं।*
नाक	अंगीकृत करने की उत्सुकता (ना) का स्पष्ट–उन्मुख भौतिक भोगात्मक (क) {खुशबू} ; नर की सत्ता (ना) का विषय (क) मानसिक भोगात्मक {इज्जत}।
नाग	**शेषनाग** = अंगीकृत करने की उत्सुकता (ना) का स्पष्ट (ग) ; *शेष नाग विष्णु को अंगीकृत करता है।*
नाच	अंगीकृत करने की उत्सुकता (ना) में जीवन्त अर्जित हो रहा (च) ; *नाच जैसे जैसे तेज होता है जीवन्तता बढ़ती चली जाती है।*
नाथ	अंगीकृत करने की उत्सुकता (ना) का स्थापित हुआ भाव (थ) ; *जिस स्थापित भाव को अंगीकृत करने की उत्सुकता है।*
नाम	अंगीकृत करने की उत्सुकता (ना) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *अंगीकृत करने के लिये जो भाव प्रस्तुत हो रहा है वही नाम है।*
नाराज	क्रिया की सत्ता (ना) में सम्मोहन (रा) की ऊर्जता (ज) ; *क्रिया में सम्मोहन की ऊर्जता शामिल है।*
निअर	**निकट** = प्रत्यक्ष न्यूनता (नि) के सत् में (अ) एकाग्र (र)।
निगम	**वेद** = प्रत्यक्ष अंगीकृत करने को उत्सुक (नि) में विवेचित (ग) को प्रस्तुति के लिये उत्सुक (म) ; *अंगीकृत करने की इच्छा में विवेचना की प्रस्तुति हो रही है।*
निडर	बिना (नि) भूत (ड) में एकाग्र (र) ; *जो भूत में एकाग्र ना हो।* सारे डर हमारे भूतकाल की अन्तःस्मृतियों का ही कारण होते है।
निधि	**खजाना** = प्रत्यक्ष अंगीकृत–उत्सुक (नि) में प्रत्यक्ष धारणा (धि) ; *ऐसी धारण योग्य वस्तु जिसे अंगीकृत करने की उत्सुकता बनी रहे।*
निबल	**निर्बल** = बिना (नि) सुरक्षा (ब) के उपलब्ध विस्तार (ल)।
नियम	प्रत्यक्ष अंगीकृत–उत्सुक (नि) में प्रत्यक्ष (य) होना (म) ; *जो प्रत्यक्ष है, उसके प्रति अंगीकृत–उत्सुक होना।*

निरोध	प्रत्यक्ष अंगीकृत–उत्सुक (नि) में एकाग्रता की दिशा में (रो) जमाव/रुकाव (घ) ; *अंगीकृत करने की उत्सुकता में जो प्रवाह है उसमें रूकाव/जमाव हो गया है।*
निल	प्रत्यक्ष न्यूवता/बिना/शून्य (नि) का उपलब्ध विस्तार (ल)।
नीचे	न्यून होता हुआ (नी) इंगित ऊर्जित हो रहा (चे)।
नीति	बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई अंगीकृत करने को उत्सुक (नी) का प्रत्यक्ष भाव (ति) ; *वह प्रत्यक्ष भाव जो निश्चित किया हुआ है उसे अंगीकृत करने के लिये उत्सुक होना।*
नीर	***जल*** = बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ अंगीकरण करने को उत्सुक (नी) एकाग्र (र) ; *जल अंगीकरण करने को उत्सुक रहता है।*
नीरज	जल (नीर) स्थित जीवन्त (ज)।
नुक़ता	**चेतना = बिन्दी** = अन्तः में अंगीकृत ज्ञानात्मक करने के लिये उत्सुक (नु) चेतना (क) की भाव सत्ता (ता) ; *यह चेतना की भाव सत्ता है जो अन्तः के द्वारा स्वीकृत है।*
नुकीला	अन्तः में अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (नु) बाह्यप्रत्यक्ष होते शुद्ध–उन्मुख (की) के उपलब्ध विस्तारता (ला) ; *बाह्यप्रत्यक्ष होता भोगात्मक शुद्ध–उन्मुख (पैना) के विस्तार, जो कि किसी भी वस्तु के अन्दर की तरफ अंगीकृत करने के लिये उत्सुक है (गहराई तक जाने के लिये)।*
नूर	अन्तः में अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (नू) एकाग्र (र) ; *जिसे देखने के लिये अन्तर्गमित एकाग्रित उत्सुकता हो।*
नृत्य	अंगीकृत करने के लिये उत्सुक निरन्तर होता हुआ (नृ) का भावात्मक (त्) प्रत्यक्ष (य) ; *जिस भाव प्रत्यक्ष को निरन्तर अंगीकृत (भोगात्मक) करने के लिये उत्साह हो।*
नृप	दृढ़ आश्रय में अंगीकृत करने के लिये उत्सुक/पौरुष निरन्तर (नृ) का अनुमोदन (प) *दृढ़ आश्रय का निरन्तर अनुमोदन।*
नेत	**ठहराव** = इंगित तक अंगीकृत करने के लिये उत्सुक का एक ही दिशा में (ने) भाव (त) ; *अंगीकृत करने की उत्सुकता इंगित तक ही है।*
नेत्र	अंगीकृत करने के लिये उत्सुक का इंगित दिशा में (ने) बाह्यप्रज्ञ (त्र) प्रस्तुत हो रहा (त) ; *अंगीकृत (भोगोत्मक) करने को उत्सुक का प्रस्तुत हो रहा भाव।*

नेह	***स्नेह*** = अंगीकृत करने के लिये उत्सुक का इंगित दिशा में (न) असत् स्थित स्थान उपलब्धता (ह) *असत् की दिशा में अंगीकृत करने की उत्सुकता।*
नैगम	**निगम सम्बन्धी** = अंगीकृत करने के लिये उत्सुक में सत् का प्रत्यक्ष (नै) स्पष्ट (ग) होना (म) *जो हम ज्ञानात्मक अंगीकृत (जानना) चाहते हैं, उसका स्पष्ट होना।*
नैचा	**हुक्के की दोहरी नली** = अंगीकृत करने के लिये उत्सुक में सत् का प्रत्यक्ष (नै) जीवन्त उन्मुखता (चा), *जो हम भोगात्मक अंगीकृत (भोगना) चाहते है, वहाँ से जीवन्त (तम्बाकू) का अर्जन होना।*
नैरुक्त	अंगीकृत करने के लिये उत्सुक के सत् का प्रत्यक्ष (नै) में अन्तःस्थ अंगीकृत रतियता (रु) का स्पष्टोन्मुखात्मक (क्) भाव (त) ; *जिज्ञासा के प्रत्यक्ष में एकाग्रता को अन्तः में रख, स्पष्ट करने का भाव। जो हम ज्ञनात्मक अंगीकृत (जानना) चाहते हैं, उसका अन्तःस्थल में ज्ञानात्मक चेतना का भाव।*
नोक	रिक्तता की दिशा में (नो) चेतन (क) ; *रिक्तता की दिशा में जब चेतन जायेगा तो उसे नोक ही दिखेगी। जिस दिशा से हम भोगात्मक अंगीकृत (अनुभूति) चाहते हैं वहाँ से भोगात्मक शुद्धता (पैना पन)।*
नोच	अंगीकृत उत्सुकता की दिशा में (नो) में बल जीवन्त–हो रहा (च) *जिस दिशा से हम भोगात्मक अंगीकृत (भोजन) चाहते हैं वहाँ से जीवन्त का अर्जन करना।*
नोट	अंगीकृत उत्सुकता की दिशा में (नो) प्रवृत्त हो रहा (ट) ; *समाचार प्राप्त करने की दिशा में प्रवृत्त हो रहा, अर्थात् नोट कर रहा। जिस दिशा से हम अंगीकृत चाहते है वहाँ पर प्रवृत्त हो रहा, अंगीकृति के लिये प्रवृत्त।*
नौका	सत् के 'अंगीकृत करने के लिये उत्सुक' में छिपी (नौ) स्पष्ट उन्मुखता (का) ; *नौका ही वह स्पष्ट है जो अंगीकृत (सुरक्षा/बन्धन) करने के लिये उत्सुक है।*
नौबत	सत् के 'अंगीकृत करने के लिये उत्सुक' में छिपा (नौ) बन्धित (ब) भाव (त) ; *''अंगीकृत करने के लिये उत्सुक' क्रिया प्रकट होने की नौबत कब आयेगी यहीं बन्धित भाव है।*
न्याय	पूर्ण अंगीकृतात्मक प्रत्यक्ष की सत्ता (न्या) के प्रत्यक्ष का सत् (य) *अर्थात् जो प्रत्यक्ष की सत्ता को मानते हुऐ प्रत्यक्ष है, वही न्याय है।*

6.0 प्रवृत्ति प्रकरण (PRAVṚTI PRANARAṆA)

इन्द्रियों से आने वाला संकेत, दो अविभाज्य अवयवों से मिलकर आता है। यह दो अवयव हैं स्पष्टता एवम् जीवन्तता। दोनों आवृत्तिमय हो कर एक के बाद एक सत्ता द्वारा स्वीकृत किये जाते हैं। यही स्वीकृति अन्तर्गमन कहलाती है। सत्ता के अंतरिक्ष में प्रत्येक अवयव पुनः दो भागों में विभाजित हो जाते हैं। इसमें **प्रथम अवयव** 'स्पष्टता' का, एक भाव 'एकत्व दर्शन' ऋषि में समर्पित हो जाता है, तथा दूसरा भाव 'वैविध्य प्रदर्शन' गंधर्व को स्वीकृति देता है। **द्वितीय अवयव** 'ऊर्जिता' का भी, एक भाव 'दृढ आश्रय' ऋषि में समर्पित हो जाता है तथा 'स्पन्द समर्पण' गन्धर्व में चला जाता है। इस प्रकार ऋषि में 'एकत्व दर्शन' व 'दृढ आश्रय' से **'पद सूत्र'** का सर्जन होता है तथा **गंधर्व** में 'वैविध्य प्रदर्शन' व 'स्पन्द समर्पण' से **'अर्थ प्रस्तुत'** हो जाता है। 'पदसूत्र' को हम **'नाम'** कहते हैं। व 'अर्थ प्रस्तुत' को हम **'रूप'** कहते हैं। इस प्रकार **नाम–रूपात्मक** सृष्टि हमें दिखाई देने लगती है। मस्तिष्क में संगृहीत यह नाम रूपात्मक सृष्टि, मस्तिष्क के अलग–अलग स्थानों में स्थापित हो, काल शून्यात्मक अवस्था में रहती है। मनन प्रक्रिया में जब नाम व रूप प्रणय अवस्था में क्रन्दन करते हैं, तो रूप पुनः दो भागों में विभाजित होकर, 'वैविध्य प्रदर्शन व एकत्व दर्शन' से **'स्पष्टता'** तथा 'स्पन्द समपर्ण' व 'दृढ़ आश्रय' से **'जीवन्तता'** का सर्जन करते हैं। यह 'जीवन्त संकेत' इन्द्रियों द्वारा बहिर्गमित हो स्थूल में प्रत्यक्ष भी हो सकता है और स्पष्टता व जीवन्तता में पुनः विभाजित हो नाम रूपात्मक सृष्टि में संगृहीत हो स्मृत भी हो सकता है।

उपरोक्त प्रणय पटल पर क्रन्दित संपूर्ण प्रकरण वर्तमान काल में स्थित है। तथा **'ट'** के द्वारा ध्वनित होता है। प्रकरण में 'एकत्व दर्शन', 'वैविध्य प्रदर्शन', 'स्पन्द समर्पण' व 'दृढआश्रय', चारों आवृत्तिरूप में एक में एक समाये हुए प्रवृत्त रहते है। यह प्रवृत्ति ही **काल** का वर्तमान है। यह प्रवृत्ति आवृत्ति रूप में दिखाई देती है तथा 'बहिर्गमन', 'अन्तर्गमन व 'मनन' तीनों प्रकार की होती है। **काल** की एक आवृत्ति तरंग की एक 'तरंग लम्बाई (वेव लेन्थ)' है। भौतिक जगत में वही आवृत्ति प्रति सैकण्ड उत्पन्न होने वाले तरंग से गुणित होकर प्रकाश की गति के रूप में प्रस्तुत होती है। अन्तर्गमन प्रक्रिया में जहाँ स्पष्टता व जीवन्तता, 'नाम–रूप' में संग्रहित होती दिखाई देने लगते हैं। बहिर्गमन प्रक्रिया में, यह विपरीत हो स्पष्टता– जीवन्तता के रूप में दिखाई देते हैं। तथा दृष्टा के मस्तिष्क में नाम–रूप में संग्रहित होते हैं। अतः संस्था में जो कोई भी संकेत संगृहीत रहते हैं, वे 'नाम–रूप' में ही रहते हैं। तथा प्रकट हमेशा स्पष्टता– जीवन्तता के रूप में ही होते हैं। इस प्रकार 'ट' अन्तर्गमन प्रवृत्ति में **स्थापना– उन्मुख** रहते हैं तथा बहिर्गमन प्रवृत्ति में **विस्थापन–उन्मुख** रहते हैं। विभाजित होने से **विभाजन–उन्मुख** भी होंगे व संगठित होते रहने से **संगठनोन्मुख** भी होंगे। मूल रूप से 'प्रवृत्तोन्मुख' होने का भाव 'ट' में निहित है। विस्थापित होता हुआ संकेत जैसे ही प्रकट होता है, आत्मसंस्था द्वारा स्वीकृत कर लिया जाता है। तथा भूत काल में स्थित हो कर 'ड' बन जाता है।

'मनन प्रक्रिया' अर्थात् स्वमुखी प्रक्रिया में यह विभाजन बिना प्राकट्यता को प्राप्त हुए निरन्तर गत्युन्मुख है। किसी भी सत्ता के विस्तारित होते होने में कोशों का द्विगुणित होने का सिद्धांत ही प्रयुक्त होता है। यह अनुमान प्रमाण से प्रमाणित हो रहा है। जैसा कि ऊपर बताया गया कि विश्लेषण करने के लिये या सुरक्षित होने के लिये अनेक मनन प्रवृत्ति में अशनाया व युग्म (जोड़े) बनकर नाम–रूपतामक सृष्टि में 'ड' हो जाते हैं परन्तु अनेक भावत्व उपयुक्त जोड़ा नहीं बनाने के कारण भूत में जाने से बाधित हो जाते हैं। यह **'ढ'** बन जाता है।

सारी प्रक्रिया के मूल में जो कारण है, वह है सत्ता में अप्रवृत्त अर्थात् जड़ता। यह जड़ता अप्रवृत्त अर्थात् तमस् से भी उत्सुक नहीं होती। परन्तु जब काम का उदय होता है जिसे हम ण, कह रहे हैं, तो स्वतः ही सोम की आवृत्ति शुरु होकर सारा व्यापार उन्मुखोन्मुख हो जाता है। **"एक से अनेक हो जाऊँ"** यह ब्रह्म की मूल भावना 'काम'

को प्रवृत्त करती है। **विष्णु** व **शिव** मिलकर सोम को प्रवाहित कर **काल** का संचालन करते हैं। तथा **ब्रह्मा** जो कि ब्रह्म की सत्ता है, उद्भूत हो जाती है।

<table>
<tr><td rowspan="5">विज्ञान
आनन्द
प्राण
वाक्</td><td colspan="3">विषमता अनुपलब्धता, तमस् की पूर्णता (ँ) (असुर)</td><td rowspan="5">विज्ञान
आनन्द
प्राण
वाक्</td></tr>
<tr><td colspan="3">अ–प्रवृत्त स्थित
प्रवृत्त उत्सुक
ण</td></tr>
<tr><td rowspan="3">ऋषि
देव
गन्धर्व
पितृ</td><td>आवृत्ति / संचलन
/ प्रवृत्त–उत्सुक
भविष्य (ण)(ड़)</td><td rowspan="3">ऋषि
देव
गन्धर्व
पितृ</td></tr>
<tr><td>आवृत्ति / संचलन
/ प्रवृत्त–उत्सुक
वर्तमान (ट)</td></tr>
<tr><td>आवृत्ति / संचलन
/ प्रवृत्त (ड)
भूत</td></tr>
<tr><td colspan="5">अन्तर्गमन, बहिर्गमन, मनन वृत्तियों की प्रवृत्ति</td></tr>
</table>

काल सत्ता का रेखाचित्र (6.2)

6.3 'ट ठ ड ढ ण' की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का विवरण

टक	प्रवृत्त हो रही (ट) चेतना (क) *प्रवृत्त हो रही भोगात्मक चेतना।*
टकसाल	प्रवृत्त हो रहा (ट) शुद्ध–उन्मुख (क) की व्यक्त सत्ता (सा) का उपलब्धि विस्तार (ल) ; *शुद्धता के व्यक्त के साथ मात्रात्मक विस्तार में प्रवृत्त।*
टच	**छूना** = प्रवृत्त-उन्मुख (ट) ऊर्ज अर्जितोन्मुख (च) ; *छूने से ऊर्जा प्रवृत्त होती है।*
टटोल	प्रवृत्त हो रहा (ट) प्रवृत्त के सत् में छिपा (टो) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *सत् में कुछ छिपा है, उसके लिये प्रवृत्त में विस्तार हो रहा है।*
टप	**पानी रखने का बरतन** = प्रवृत्त हो रहा (ट) अनुमोदन (प) ; *पानी का अनुमोदन।*

टपक	प्रवृत्त हो रही (ट) अनुमोदन (प) की चेतना (क) ; *पानी में गुरुत्वाकर्षण की क्रियात्मक चेतना प्रवृत्त हो रही है।*
टलन	**विकलता =** प्रवृत्त हो रहे (ट) उपलब्ध विस्तार (ल) रिक्तता (न) ; *प्रवृत्त उन्मुख में जो विस्तार हो रहा है, उसमें रिक्तता पैदा होने से विकलता हो रही है।*
टस	**भारी वस्तु खिसकाने का शब्द =** प्रवृत्त हो रहे (ट) का व्यक्त (स)।
टहल	**चाकरी** = प्रवृत्त उन्मुख (ट) को स्थूल में उपलब्धता (ह) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *स्थूल देह में प्रवृत्त होने से सेवा चाकरी होती है।*
टाँग	प्रवृत्त सत्ता (टा) का निरन्तर होता हुआ/पूर्ण ऊर्जित (ङ्) स्पष्ट (ग) ; *जिसके क्रियात्मक स्पष्ट होते होने से सत्ता प्रवृत्त होती है।*
टा	**पृथ्वी** = प्रवृत्त कर रही/ प्रवृत्त सत्ता।
टाइप	प्रवृत्त कर रहे (टा) का प्रत्यक्ष (इ) बन्धित अनुमोदन (प) ; *जो भी प्रवृत्त हो रहा है, तदानुसार ही उसका अनुमोदन हो रहा है।*
टाइम	**समय = काल** = प्रवृत्त कर रहे (टा) का प्रत्यक्ष (इ) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *काल सबको प्रवृत्त कर रहा है।*
टान	**तनाव** = प्रवृत्त कर रहे (टा) में रिक्तता (न) ; *प्रवृत्त में ज्ञानात्मक रिक्तता से तनाव उत्पन्न होता है।*
टाल	प्रवृत्त उन्मुख कर रहे (टा) में उपलब्ध विस्तार (ल) ; *प्रवृत्त सत्ता का विस्तार।*
टिकट	प्रवृत्त प्रत्यक्ष हो रहे (टि) के चेतना (क) का प्रवृत्त उन्मुख (ट) *प्रवृत्त होने के लिये ज्ञानात्मक चेतना प्रवृत्ति के लिये प्रत्यक्ष हो रही है।*
टिकटिक	**घोड़े का प्रवृत्त करने वाला शब्द =** प्रवृत्त प्रत्यक्ष हो रहे (टि) का स्पष्टोन्मुख (क) ; *प्रत्यक्ष प्रवृत्त हो रही क्रियात्मक चेतना, क्रिया को प्रवृत्त करने वाला शब्द।*
टिकाई	**युवराज** = प्रवृत्त प्रत्यक्ष हो रही (टि) चेतना की सत्ता (का) बाह्य प्रत्यक्ष होती हुई (ई) ; *बाहर से जो चेतना की सत्ता दिखाई दे रही है, उसको प्रत्यक्ष की प्रवृत्ति।*
टीका	**माथे का टीका = टिप्पड़ी** = प्रत्यक्ष होने में प्रवृत्त हो रही (टी) चेतनता (का) ; ***माथे का टीका*** *– भोगात्मक चेतन,* ***टिप्पड़ी*** *– ज्ञानात्मक चेतन, बाहर प्रत्यक्ष होने में प्रवृत्त हो रहा है।*
टीस	***दर्द*** = बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ प्रवृत्त (टी) व्यक्त (स) ; *देह में जो दर्द की*

	अनुभूति प्रत्यक्ष हो रही है उसमें जो प्रवृत्तता है उसका भोगात्मक व्यक्त। घाव में प्रवृत्तता दर्द का कारण है। भोगात्मक व्यक्त जो बाहर की तरफ प्रवृत्त हो रहा है। अन्दर से बाहर आने वाला व्यक्त अधिकांश तह दर्दकारी ही होते हैं।
टुक	**थोड़ा** = छिपी प्रवृत्त (टु) का स्पष्टोन्मुख (क) ; *छिपा हुआ अर्थात् थोड़ा सा प्रवृत्त स्पष्ट हो रहा है।*
टूटना	अन्तर्विलीन होता हुआ प्रवृत्त (टू) में प्रवृत्त (ट) करना (ना) ; *प्रवृत्त अन्तर्विलीन, अर्थात् जहां प्रवृत्त मृत हो जाये, उसमें प्रवृत्तता।*
टेकना	**सहारा लेना** = इंगित प्रवृत्त हो रहे (टे) में चेतना (क) करना (ना) ; *कोई चीज गिरने में प्रवृत्त है, उसमें चेतना का उपयोग करके रोकना।*
टेर	**गाने का ऊँचा स्वर** = इंगित प्रवृत्त हो रहे (टे) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *एकाग्रता में कोई इंगित दिशा (गाने की दिशा) में प्रवृत्त हो रहा है।*
टेब	**आदत** = इंगित दिशा में प्रवृत्त हो रहे (टे) में बन्धन (ब) ; *बन्धित दिशा में प्रवृत्त हो रहा।*
टोक	प्रवृत्त हो रहे की दिशा (टो) में प्रश्नवाचक (क)।
टोटका	प्रवृत्त हो रहे की दिशा में (टो) प्रवृत्त हो रही (ट) चेतनता (का) ; *जिस दिशा में प्रवृत्त हो रहे थे उसमें समझ को भी प्रवृत्त कर दिया।*
टोपी	प्रवृत्त हो रही दिशा में (टो) प्रत्यक्ष होता हुआ अनुमोदन (पी) ; *जिस भी क्रियात्मक दिशा में प्रवृत्त हो रहा है, उसका प्रत्यक्ष अनुमोदन उसके साथ है।*
ट्रेन	इंगित दिशा में प्रवृत्त निरन्तर (ट्रे) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *निरन्तर प्रवृत्त को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक इंगित दिशा में, इंगित दिशा पटरियों की दिशा है।*
ठक	**स्तब्ध** = ठहराव–उन्मुख (ठ) चेतन (क) *भोगात्मक चेतन में ठहराव*
ठग	प्रवृत्त में सीमित होरहा (ठ) स्पष्ट (ग) ; *जहां स्पष्टता सीमित हो।*
ठप	**बन्द** = ठहराव हो रहा (ठ) अनुमोदन (प) *जहाँ अनुमोदन रूक गया हो।*
ठस	**जो भीतर खाली ना हो = भरा हुआ** = प्रवृत्त में सीमित हो रही (ठ) उपलब्धि (स), *और ज्यादा भरा ना जा सके।*
ठान	**निश्चय** = निश्चित (ठा) क्रिया को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न)।

ठाम	**स्थान** = निश्चित (ठा) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म)।
ठाल	**बेकारी** = अ–प्रवृत्त उन्मुख (ठा) में उपलब्ध विस्तार (ल)।
ठिकाना	प्रत्यक्ष ठहराव (ठि) में चेतना (का) करना (ना)। *चेतना–भोगात्मक*
ठिर	**सर्दी = सिहरन** = प्रत्यक्ष ठहराव (ठि) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *ठहराव का अर्थ प्रकम्पन विहीनता, ऊर्जाविहीनता अर्थात् सर्दी भी हो सकता है।*
ठीक	बाह्यप्रत्यक्ष हो रहा ठहराव (ठी) स्पष्ट हो रहा (क) ; *विश्लेषण ठहरा हुआ है अर्थात् सब कुछ ठीक है।*
ठुकना	**पिटना** = अर्न्तस्थित ठहराव (ठ) में चेतना (क) को अंगीकृत करने के लिये (ना) ; *देह प्रहार को अपने अन्तः में ठहरा तो लेती पर भोगात्मक चेतन में अंगीकृत उत्सुक भी होती है।*
ठुमरी	अन्तर्मुखी ठहराव (ठु) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) प्रत्यक्ष होती हुई एकाग्रता (री) ; *अन्दर में जो ठहराव है उसे बाहर प्रस्तुत करना ठुमरी है। ऐसी एकाग्र बाह्यप्रत्यक्षता जो दूसरे के अन्तःस्थित ठहराव में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक हो।*
ठेक	**सहारे के लिये लगाई जाने वाले वस्तु** = इंगित ठहराने (ठे) का स्पष्ट–उन्मुख (क) ।
ठो	**बस** = ठहराव की दिशा (ठो)।
ठोकर	छिपाव में ठहराव का अस्तित्व (ठो) की चेतना (क) में रत (र) ; *यकायक ठहराव के कारण जो भोगात्मक चेतना एकाग्र हुई है।*
ठोस	ठहराव की दिशा (ठो) व्यक्त (स), *ठोस पदार्थ ठहरा रहता है।*
ठौर	**जगह** = ठहराव के अस्तित्व में छिपा (ठौ) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जहां हमें ठहरना है, वहां छिपने में रत।*
डगर	पूर्व स्थापित (ड) स्पष्ट (ग) में अंगीकृत एकाग्र (र) *जो पहले से स्थापित है उसमें क्रियात्मक चेतन को एकाग्र करना।*
डट	**निशाना** = पूर्व स्थापित (ड) में प्रवृत्त हो रहा (ट)।
डकार	पूर्व स्थापित (ड) विश्लेषण–उन्मुख की सत्ता (का) में एकाग्र (र) ; *विश्लेषण का अर्थ यहां पचाना है।*

डफार	**रोने के शब्द** = प्रवृत्तित (ड) बिना शर्त अंगीकृत उन्मुखता (फा) में अंगीकृत एकाग्र (र), *जो बिना शर्त अंगीकृत होने की एकाग्रता में प्रवृत्तित है।*
डर	प्रवृत्तित (ड) अकेलापन (र), *यहाँ 'ड' पूर्व स्थापित के रूप में ले तो मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक 'भय' पूर्व स्थापित अकेलेपन की वजह से ही होता है।*
डाइन	पूर्व स्थापित भूत सत्ता (डा) की प्रत्यक्षात्मक (इ) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न), *पूर्व स्थापित (अन्तःकरण में) भूत सत्ता का अवचेतन में प्रत्यक्ष होना।*
डाट	**बोझ संभालने के लिये लगाया जाने वाली वस्तु = टेक** = स्थापित सत्ता (डा) में प्रवृत्त हो रहा (ट) ; *जो सत्ता को स्थापित रखने में प्रवृत्त हो रहा है।*
डाल	स्थापित सत्ता (डा) का उपलब्ध विस्तार (ल)।
डिक्री	प्रत्यक्ष पूर्व स्थापित (डि) के द्वारा (क्) प्रत्यक्ष होता हुआ स्पष्ट–उन्मुख (की), *जो पूर्व में स्थापित हुआ था उसको प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट किया जा रहा है।*
डिबिया	पूर्व स्थापित–प्रत्यक्ष (डि) के प्रत्यक्ष बन्धन (बि) की प्रत्यक्षता (या) ; *जो पूर्व से ही बन्धन को प्रत्यक्ष करती है।*
डील	**शरीर का विस्तार** = बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ स्थापित (डी) उपलब्ध विस्तार (ल)।
डुक	**मुक्का** = अन्तर्मुखी प्रवर्तित (डु) चेतना (क) ; *देह के अन्दर स्थापित होई हुई भोगात्मक चेतना।*
डुबाना	अन्तःस्थित प्रवृत्तित (डु) बन्धित सत्ता (बा) करना (ना) ; *अन्तः में (पानी के) प्रवृत्तित कर सत्ता को बन्धित करना।*
डूबना	अन्तःस्थित होते हुऐ प्रवृत्तित (डू) बन्धन (ब) करना (ना) ; *अन्तः में (पानी के) रहने के लिये बन्धित होना।*
डूमा	**विचार करने का स्थान = रूस की राज सभा का नाम** = अन्तर्मुखिता होये हुए प्रवृत्तित (डू) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकता (मा), *गहन चिन्तन में प्रस्तुत होने की उत्सुकता।*
डेल्टा	इंगित स्थापित (डे) विस्तारात्मकता (ल्) में प्रवृत्त हो रहा होना (टा) ; *जो पूर्व स्थापित है व विस्तारित होने में प्रवृत्त है।*
डेरा	इंगित पूर्व स्थापित (डे) एकात्मक सत्ता (रा) ; *जहां आपकी एकात्म सत्ता स्थापित है।*

डोर	पूर्व स्थापित दिशा में (डो) अंगीकृत पतलापन (र)।
डोलक	पूर्व स्थापित प्रवृत्त दिशा में (ताल) (डो) उपलब्ध विस्तार/अर्पित भावना (ल) का चेतन (क), *ताल के उपलब्ध विस्तार या ताल में अर्पित भावना के साथ भोगात्मक चेतन का प्रयुक्त होना।*
डौल	**ढाँचा** = सत् के स्थापित में छिपा (डौ) उपलब्ध विस्तार (ल), *स्थापित उपलब्ध विस्तार।*
ड्योढ़ी	स्थापितात्मक (ड्) प्रत्यक्ष के सत् की दिशा में (यो) प्रत्यक्ष होती हुई सीमितता (ढ़ी) ; *एक सीमित रास्ता जो सत् की दिशा में (सही दिशा में) स्थापित है।*
ढकना	स्थापन सीमितता (ढ) में चेतनता (ल) करना (ना), *भोगात्मक चेतन की प्रवृत्ति को सीमित करना।*
ढलना	**गिरकर बहना** =स्थापन सीमितता (ढ) में उपलब्ध विस्तार (ल) करना (ना), *स्थापित ना हो पाये में विस्तार करना।*
ढहना	स्थापन सीमितता (ढ) को असत् में स्थान स्थूल उपलब्धता (ह) करना (ना), *स्थापित ना रह पाने में असत् में तब्दील करना।*
ढाल	प्रवृत्तित में सीमितता (आक्रमण रोकना) की सत्ता (ढा) का उपलब्ध विस्तार (ल) {लड़ने वाली ढाल} ; *स्थापन सीमितता की सत्ता में (ढा) उपलब्ध विस्तार (ल) {सड़क का ढाल}।*
ढालना	ता (ढा) को उपलब्ध विस्तार (ल) करना (ना) ; *स्थापन सीमितता (बनावट) के अनुसार विस्तार उपलब्ध करना।*

……

Language is the house of the truth of Being.

Martin Heidegger

……

7.0 लोकान्तर प्रकरण
(LOKĀṄTARA PRANARAṆA)

हमारा मस्तिष्क करोड़ों न्यूरोन्स से मिल कर बना है। ये न्यूरोन्स हमारी स्थूल देह का ही हिस्सा हैं। संगृहीत संकेत, इसी मस्तिष्क में स्मृत रहते हैं। प्रत्येक स्मृति दो भाग में विभाजित है। वह भाग हैं **नाम** व **रूप**। हमारे मस्तिष्क की देह में यह दोनों संकेत अलग अलग स्थान पर रहते हैं। काम के प्रभाव से यह दोनों आतुर होते हैं तथा नाम व रूप का प्रणय होता है। जिस स्थान पर यह प्रणय हो रहा है, उसे हम 'मन' कहते हैं। यह प्रणय ही वह यज्ञ है, जिसे 'मनन' कहा जाता है। यह यज्ञ भूमि पूर्ववर्ती मस्तिष्क की देह के सापेक्ष में सूक्ष्म है। और यही सूक्ष्म व स्थूल का सम्बन्ध ही लोकान्तर प्रक्रिया है।

उपर्युक्त 'मनन' में अनेकानेक अबूझ आकृतियां, अप्रकट अवस्था में ही मनन अरण्य में भ्रमण करती रहती हैं। यदि अनेकानेक में से कोई आकृति प्राकट्य को प्राप्त कर लेती है, तो यह विचार का प्रस्फुटन है। यही आकृति जो कि अक्षर के द्वारा क्षर रूप में प्रवृत्तित है, हमारे मुख में ध्वनि का आकार लेती है। स्थूल देह जैसे ही संकेत ग्रहण करता है, हम कह सकते हैं कि देह में, जो कि मनन यज्ञ के सापेक्ष में असत् है, उस में मात्रा के साथ असत् के स्थान पर उपलब्ध हो जाता है। असत् देह, जो ध्वनि के लिये स्थान उपलब्ध करा रहा है, वह **"हकार"** है। उपर्युक्त सारी प्रक्रिया बहिर्गमन यज्ञ की अन्तःप्रवृत्तित जीवन्तता है।

हमारी स्मृतियां भी असत् देह में ही निवास कर रही हैं (मस्तिष्क कोशिकाऐं असत् देह ही है)। और यहां भी असत् सत् के लिये स्थान उपलब्ध करा रहा है। अतः समीकरण वही हैं। यहां जो भी स्थान उपलब्ध कराया जा रहा है, वह दो भागों में विभाज्य होने के बाद तीन अविभाज्य द्वैत भावो में उपस्थित है। **नाम–रूप** के मध्य जो पहला द्वैत है, जिसे

हम 'वैविध्य प्रदर्शन' व 'एकत्व दर्शन' का द्वैत कह रहे हैं, से आकृति का विवरण प्रकट होता है, जो कि 'वैविध्य चेतना' का धर्म है। इस बोध को जो असत् (स्मृति) में 'स्थान उपलब्धता' है, उसका ध्वनि विज्ञान में संकेत **'स'** है, तथा **'वैविधिक उपलब्धता'** के रूप में जाना जाता है। जो भी कुछ उपलब्ध हो रहा है, किसी के साथ संयोजित ही हो रहा है। अतः इसे **'साथ'** के रूप में भी देखा जाता है। बहिर्गमन व्यापार में यही 'स' **'वैविध्यता को व्यक्त'** कर रहा है। तथा अन्तर्गमन व्यापार में यही 'स' व ''वैविध्यता को उपलब्ध'' कर रहा है।

नाम–रूप के मध्य जो दूसरा द्वैत है, जिसे 'स्पन्द समर्पण' व 'दृढ आश्रय' का द्वैत कह रहे हैं, वह आकृति में जीवन्त भर रहा है। इस जीवन्त को असत् मस्तिष्क, स्थान उपलब्ध कराता है। जहां यह जीवन्त स्मृति रूप में स्थित हो सके। यह जीवन्त की असत् में स्थान उपलब्धता **'श'** कहला रही है। 'स' ही **'वैविध्य स्पष्टता का संस्कार'** है तो **'श' ही 'स्पन्द जीवन्त के संस्कार'** हैं।

उदाहरण के लिये यदि आपने पंखा देखा तथा यदि पंखे के साथ में भय को भी देखा, तो स्मृत होने वाले संस्कारों में 'वैविध्य स्पष्ट संस्कार' में पंखे का वर्णन होगा तथा 'स्पन्द ऊर्जित संस्कार' में भय होगा। अतः अन्तःकरण की स्मृति से जब भी पंखा प्रकट होने का प्रयास करेगा, भय स्वतः ही प्रकट होगा। अन्तर्गमन व्यापार में यह **'श' स्पन्द उपलब्ध जीवन्त** है, तथा बहिर्गमन व्यापार में **'श' स्पन्द व्यतीत जीवन्त** है।

जो भी संकेत हम स्थूल में देखते हैं, वह सूक्ष्म में प्रवेश करता है। तथा यज्ञ के द्वारा स्थापित होता हुआ, स्मृति में संगृहित हो जाता है। इसी प्रकार संगृहित संकेत, काम की आतुरता में सूक्ष्म में प्रवेश करता है, तथा मनन के बाद स्थूल में प्रकट हो जाता है। दोनों ही यज्ञों में, जो कामातुरता स्थापित है, जो कि दोनों यज्ञों को प्रवृत्त कर रहा है, वह प्रत्येक स्थान पर **व्याप्त** है तथा **'ष'** के रूप में दिखाई दे रहा है। मूलरूप से हमारे मस्तिष्क में कामातुरता ही प्रत्येक स्थान पर व्यापतते हैं अतः कामातुरता या **इच्छा की उपलब्धता** के लिये **असत् में स्थान उपलब्धता** ही **'ष'** हैं।

लोकान्तर सृष्टि में, बहिर्गमित प्रक्रिया में प्रत्येक क्षर, **'स'** से **'श'** एवम् **'ष'** में होता हुआ **'ह'** में विलीन हो जाता है। पूर्ण रूप से स्थूल परिवर्तन या असत् में पूर्ण रूप से स्थान उपलब्धता **'ह'** है। **'ह'** पूर्ण स्थूल भाव है, जो **'ष'** की इच्छा उपलब्धता के कारण **'श'** को जीवन्त उपलब्ध करता हुआ, **'स'** को वैविध्य उपलब्ध करा रहा है। अर्थात् असत् में **'ह'** के ही यह चार रूप एक साथ उपस्थित रहते है।

'स' वैविध्यता का मात्रात्मक बोध है, **'श'** अहसास (भय प्रफुल्लता आदि) का मात्रात्मक बोध है, **'ष'** इच्छा का मात्रात्मक बोध है तथा **'ह'** पूर्ण संकेत का मात्रात्मक बोध है। स्थूल में आते ही हमारे सत् को आधार बदल कर एक स्थान **'अपर'** में आ जाता है। अतः जो पर के लिये मात्राऐं हैं वह इस नये लोक में सत् दिखाई देने लगती है। पर लोक में जो व्यंजन थे वो सब कारण शरीर दिखाई देते हैं व पर लोक के कारण शरीर थे वे ब्रह्म में विलीन हो जाते हैं। इस नये लोक में **'स'** बोध करायेगा वैविध्यता की, **'श'** बोध करायेगा ओजस् की, तथा **'ष'** पुनः इच्छा बनकर इस लोक पर आच्छादित हो जायेगा। अतः हम जो कह रहे हैं उसमें वृत्तान्त, ओजस व इच्छा का ही स्पष्टीकरण होगा, जहाँ से यह प्रकट हो रहे हैं वह यज्ञ अदृष्य हो जायेगा।

7.2 'स श ष ह' की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का विवरण

सं	व्यक्त होता हुआ, उपलब्ध होता हुआ।
संकट	ज्ञानात्मक उपलब्ध (स) अ–स्पष्टतात्मक (ङ्) चेतन (क) प्रवृत्त हो रहा (ट) ; *चेतन उपलब्ध को स्पष्ट नहीं कर पारहा, असमज्स की स्थिती है।*
संकोच	उपलब्ध (स) अ–स्पष्टतात्मक (ङ्) चेतन की दिशा में (को) जीवन्त हो रहा (च) ; *जीवन्तता जो उपलब्ध हो रही है, उसकी क्रियात्मक दिशा स्पष्ट नहीं हो पा रही, यही संकोच है।*
संग	उपलब्ध (स) होता हुआ (ङ्) स्पष्ट (ग) ; *उपलब्ध होती स्पष्टता।*
संचार	व्यक्त होती हुई (सं) जीवन्त कर रहे (चा) में एकाग्र (र) ; *जो व्यक्त हो रहा है, उसको जीवन्त किया जा रहा है, जिससे वह व्यक्त दूर तक पहुंचे।*
संध्या	व्यक्त होती हुई (सं) अन्धेरात्मक (अप्रस्तुत प्रकाश) (ध्) प्रत्यक्षता (या)।
संपदा	उपलब्ध होती हुई (सं) अंगीकरण उन्मुख (प) प्रस्तुतता (दा) ; *अंगीकरण योग्य (संपदा) जो सामने है, उसका उपलब्ध होना।*
संभाल	व्यक्त होता हुआ (सं) स्वच्छन्द अंगीकरण की सत्ता (भा) का विस्तार (ल) ; *स्वच्छन्द अंगीकरण, अर्थात् बिना शर्त सुरक्षा देने (संभालने) वाली सत्ता।*
संहार	व्यक्त होता हुआ (सं) मृत्यु की सत्ता (हा) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *मृत्यु की सत्ता को अंगीकृत करने में एकाग्रता का व्यक्त होना।*
सइ	**से = साथ** = साथ होने (स) का प्रत्यक्ष (इ) ; *उपलब्ध प्रत्यक्ष, अर्थात् जो साथ*

	में प्रत्यक्ष है; 'से' अर्थात् इंगित प्रत्यक्ष, वह भी उपलब्ध प्रत्यक्ष ही है।
सई	**वृद्धि** = वैविधिक उपलब्धि (स) बाह्य प्रत्यक्ष {निरन्तर} होती हुई (ई) ; *निरन्तर जो उपलब्धि हो रही है।*
सकना	व्यक्त (स) चेतन (क) करना (ना) ; *क्रियात्मक चेतन को व्यक्त करना।*
सख्त	**कठोर** = व्यक्त (स) चेतन सीमिततात्मक (ख्) भाव (त) ; भोगात्मक *चेतन की कमी से लचक में कमी, अर्थात् कठोर का व्यक्त भाव।*
सखा	साथ (स) की प्रश्न विहीन सत्ता (खा) ; *जहां कोई असमंजस ना हो ऐसे व्यक्ति का साथ।*
सगा	साथ/उपलब्ध (स) की स्पष्ट सत्ता (गा); *जो स्पष्ट रूप से ही साथ है।*
सच	व्यक्त (स) में जीवन्त हो रहा (च) ; जीवन्त *के साथ व्यक्त किया गया।*
सजीव	व्यक्त/उपलब्ध (स) में बाह्य प्रत्यक्ष होते ओजस् (जी) में छिपा हुआ सत् (व) ; *वह छिपा सत् जो ओजस् के रूप में बाहर व्यक्त होता है।*
सटान	**सटने की क्रिया का भाव** = साथ होने (स) को प्रवृत्त कर रहे (टा) की क्रिया (न) ; *वह क्रिया जिसमें वस्तुओं को साथ साथ किया जा रहा हो।*
सत्य	वैविधिक उपलब्ध (स) प्रस्तुतोन्मुखात्मक (त्) प्रत्यक्ष सत् (य) ; *जो उपलब्धि प्रस्तुतोन्मुखात्मक प्रत्यक्ष है। उसे ही प्रत्यक्ष प्रमाण से सत्य कहते हैं।*
सधना	उपलब्धि (स) को जमाव (ध) करना (ना) ; *जमने से गिरती हुई वस्तु भी सध जाती है। बर्फ का जमना भौतिक, दही का जमना याकिसी रोग का जमना वानस्पतिक, तथा किसी ज्ञान का जमना मानसिक 'सधना' है।*
सदा	**आवाज देना = हमेशा =** उपलब्धि व्यक्त (स) की प्रस्तुति की सत्ता (दा) ; *'व्यक्त की प्रस्तुति' का अर्थ **'आवाज देना'** होता है व 'उपलब्ध प्रस्तुति की सत्ता' **'हमेशा'** को जाहिर करती है।*
सनातन	व्यक्त/उपलब्धि (स) अंगीकार करने लिये उत्सुक सत्ता (ना) प्रस्तुत हो रहा (त) अंगीकार के लिये उत्सुक (न) ; *जिस उपलब्ध को पूर्व से अंगीकार करने को उत्सुक रहे हैं, उस प्रस्तुत–उन्मुख को ही अंगीकार करने के लिये उत्सुक होना।*
सपरना	**काम का पूरा होना** = वैविधिक उपलब्ध (स) के अनुमोदन (प) में एकाग्र (र)

	करना (ना) ; *जो भी काम उपलब्ध है उसे अनुमोदन कर, एकाग्र होकर पूरा करना।*
सब	साथ होने (स) का बन्धित अंगीकरण (ब)।
समय	व्यक्त/उपलब्ध (स) होने (म) के प्रत्यक्ष का सत् (य) ; *जो व्यक्त हो रहा है उसमें जो प्रत्यक्ष है, उसका सत् समय है। समय में ही कोई वस्तु प्रत्यक्ष हो सकती है।*
समर्थ	वैविधिक उपलब्ध (स) संग्रह (म) का स्वकेन्द्रित (ी) ठहरा हुआ भाव (थ) ; *जो वैविधिक उपलब्धि को अपने अन्दर ठहरा/स्थापित किये हुऐ है, वही समर्थ है।*
समाधि	उपलब्ध (स) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकता (मा) की प्रत्यक्ष धारणा {जमी हुई} (धि) ; *वह उपलब्ध स्थान जहां समर्पण जमा हुआ है।*
सरपट	**तेज चाल** = व्यक्त/उपलब्ध (स) में अंगीकृत एकाग्र को (र) अनुमोदिन (प) प्रवृत्त हो रहा (ट) ; *एकाग्रता को अंगीकृत करने से व्यक्त (गति) में क्रियात्मक अनुमोदन प्रवृत्त हो रहा है।*
सर्जन	उपलब्ध (स) होते हुऐ (ी) जीवन्त (ज) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ;*अर्थात् जीवन्तता उपलब्ध करायी जा रही है।*
सर्व	**समस्त** =साथ (स) होता हुआ (ी) छिपा हुआ सत् (व), *छिपे हुऐ सत् अर्थात् जितने भी है सब साथ में।*
सह	**सहित = साथ में** = उपलब्ध (स) की स्थूल उपलब्धि (ह) ; *स्थूल रूप से आपके साथ है।*
सहस्र	साथ में (सह) बाह्यप्रज्ञ (ऱ) वैविधिक उपलब्धता (स) ; *साथ में होता हुआ व्यक्त पुरुष तत्व में वैविधिक उपलब्धता तीन प्रकार की है, (अलम्बन, अंगीकरण, विश्लेषण)।*
सहल	**सुगम** = व्यक्त (स) असत्/स्थूल में स्थान (ह) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *भौतिक रूप में व्यक्त की उपलब्धि।*
साँप	व्यक्त की सत्ता (सा) में विषमता/भय सूचनात्मक (ँ) अनुमोदन (प)।
साई	**पेशगी** = उपलब्धता (सा) का होता हुआ बाह्यप्रत्यक्ष (इ) ; *उपलब्धता प्रत्यक्ष की जा रही है।*

साग	**भाजी** = वैविधिक उपलब्धता (सा) का स्पष्ट (ग); *स्पष्ट भोगात्मक है।*
साख	व्यक्त सत्ता (सा) में चेतन के लिये स्थान उपलब्धता (ख) ; *भोगात्मक चेतन प्राप्ति के लिये उपलब्धता की व्यक्त सत्ता।*
सात	व्यक्त सत्ता (सा) का प्रस्तुत हो रहा (त) ; *प्रत्येक सत्ता सात लोकों से व्यक्त होती है।*
साध	वैविधिक उपलब्धता (सा) का जमना (ध) ; *उपलब्धता का अन्तः में जम जाना, सीख जाना, मान लेना।*
साधना	**तपस्या = अभ्यास** = वैविधिक उपलब्धता (सा) का जमाव (ध) करना (ना) ***तपस्या***–*ज्ञानात्मक*–***अभ्यास***–*क्रियात्मक, उपलब्ध कर अन्तःकरण में जमाना।*
साफ	व्यक्त सत्ता (सा) का अपरीक्षित अनुमोदन (फ) ; *व्यक्त सत्ता के परीक्षण की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वो साफ है।*
साम	वैविधिक व्यक्त (सा) का होना/संग्रह (म) ; *ज्ञानात्मक वैविध्यता उपलब्धता का संग्रह।*
साम्य	व्यक्त सत्ता (सा) प्रस्तुत उत्सुकात्मक (म्) प्रत्यक्ष (य) ; *'स्वयं' के जैसा प्रत्यक्ष करने की उत्सुकता।*
सार	वैविधिक उपलब्धता (सा) में अंगीकृत एकात्म (र) ; *जो भी वैविधिक उपलब्धता है, उसमें एकाग्रित होने से, उसका सार निकल आता है।*
सारा	वैविधिक उपलब्धता (सा) में एकात्म सत्ता (रा) ; *जो भी उपलब्ध है, सबको सत्ता रूप में साथ देखना।*
साहस	उपलब्ध सत्ता (सा) में स्थूलता मृत्यु (ह) का व्यक्त (स) ; *जो स्थूल होने अर्थात् मरने के लिये तैयार हो।*
सिंह	प्रत्यक्ष व्यक्त (सि) होती हुई (ीं) स्थूलता मृत्यु (ह), *व्यक्त होती हुई मृत्यु।*
सिटी	प्रत्यक्ष वैविध्य उपलब्धि की (सि) बाह्यस्थित होता हुआ में प्रवृत्त हो रहा (टी) *फैलता हुआ स्थान जहां विविध प्रकार की उपलब्धि हो।*
सिड़	**पागलपन** = प्रत्यक्ष वैविध्य उपलब्धि (सि) को अस्तित्व करने का उत्सुक (ड़) ; *उपलब्ध को ही पुनः अस्तित्वगत् करने की इच्छा।*

सिद्ध	प्रत्यक्ष वैविध्य व्यक्त (सि) की जमावात्मक प्रस्तुति (द्ध) ; *जो व्यक्त किया गया, अगर वह जम गया, तो संशय समाप्त हो गया।*
सिर	प्रत्यक्ष वैविध्य उपलब्धि (सि) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *सिर ज्ञान की उपलब्धि को एकाग्रित होकर अंगीकृत करता रहता है।*
सिवाय	**अलावा** = प्रत्यक्ष वैविध्य उपलब्धि (सि) में छिपी हुई सत्ता (वा) का प्रत्यक्ष (य) ;*उपलब्धि में कुछ और भी छिपा हुआ है, उपलब्धि के अलावा।*
सीता	बाह्य प्रत्यक्ष होती हुई वैविधिक उपलब्धता/व्यक्तता (सी) की प्रस्तुत उन्मुखता (ता) ; *शुद्ध प्रकृति।*
सीध	बाह्य प्रत्यक्ष होती हुई वैविधिक उपलब्धता/व्यक्तता (सी) जमी हुई (ध) ; *जो व्यक्तता प्रत्यक्ष में जमी हुई है, वही सीध है।*
सीन	**दृश्य** = प्रत्यक्ष होती हुई वैविधिक उपलब्ध व्यक्तता (सी) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न)।
सीर	**साझा** = प्रत्यक्ष होती हुई वैविधिक उपलब्धता (सी) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जो भी उपलब्धता है उसे अंगीकृत करने में एकाग्रता क्योंकि उसमें आपका भी 'सीर' है।*
सुंदर	अन्तर्मुखी वैविधिक उपलब्धता (सु) की होती हुई (ं) प्रस्तुति (द) में एकाग्र (र) ; *ऐसी वैविधिक उपलब्धता जो हमारी अन्तर्गमिता के द्वारा एकाग्र है, अर्थात् हम निरन्तर देख रहे है।*
सुंबी	**लोहे में छेद करने की छेनी** = अन्तर्गमित उपलब्धता (सु) की होता हुआ (ं) बाह्य प्रत्यक्ष बन्धन (बी) ; *प्रत्यक्ष बन्धन (लोहे की सत्ता जिसमें छेद करना है) में होती हुई अन्तर्गमित उपलब्धता।*
सु	अन्तर्गमित व्यक्त (सु), अन्तर्गमित वैविधिक उपलब्धि (सु)।
सुर	***देवता*** = अन्तर्गमित/अन्तःस्थित वैविधिक उपलब्धि (सु) में एकाग्र (र) ; *उपलब्ध वैविधिक (ज्ञानात्मक, क्रियात्मक, भोगात्मक) बोध में संलिप्त।*
सुई	अन्तर्गमित उपलब्धता (सु) का प्रस्तुतिकरण (ई) ; *छिपी उपलब्धता अर्थात् नोक। अन्तर्गमित उपलब्धता का प्रस्तुतिकरण होना, आसानी से अन्दर चली जाती है।*

सुक	**तोता** = अन्तर्गमित उपलब्धता (सु) का स्पष्ट उन्मुख (क) ; *जो सीखा वो ही बोला ;* अन्तर्गमित ज्ञानात्मक उपलब्धता को स्पष्ट उन्मुख होना।
सुख	अन्तर्गमित उपलब्धता (सु) भोग के लिये स्थान उपलब्धता (ख) ; *अन्तर्गमित उपलब्धता में भोगात्मक चेतन के लिये स्थान उपलब्धता।*
सुगम	**सहज** = अन्तःस्थित वैविधिक उपलब्धि (सुन्दर) (सु) का स्पष्ट (ग) होना (म) ; *अन्तःस्थित ज्ञानात्मक उपलब्धि का स्पष्ट होना।*
सुग्रीव	अन्तःस्थित वैविधिक उपलब्धि (सुन्दर) (सु) के द्वारा (ग्र) स्पष्ट होता हुआ (ग्री) छिपा सत् (व) ; *अन्तःस्थित ज्ञान के द्वारा छिपे सत् को स्पष्ट करने वाला।*
सुधा	**अमृत** = अन्तःस्थित वैविधिक उपलब्धि (सुन्दर) (सु) की जमी हुई सत्ता (धा) ; *जो हमारे पास है वह जमा हुआ है अतः व्यय नहीं हो सकता अर्थात् अमृत है। यदि उपलब्धि अस्तित्वात्मक है तो अमृत का अर्थ अमर करने वाला होगा।*
सुन	अन्तर्गमित वैविधिक उपलब्धि (सु) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न)।
सुवर्ण	अन्तःस्थित वैविधिक उपलब्धि (सुन्दर) (सु) छिपे सत् के द्वारा (व) प्रवृत्त करने की इच्छा (र्ण) ; *सुन्दरता के गुणसूत्रों छिपा सत् के द्वारा प्रवृत्त होने को उत्सुक।*
सूक	**वाण की ध्वनि** = अन्तर्विलीन होती हुई व्यक्त (सू) का स्पष्ट हो रहा (क) ; *वाण जब चलता है तो उसकी ध्वनि अन्तर्विलीन होती जाती है।*
सूक्ष्म	अन्तर्विलीन होती हुई उपलब्धता (सू) की योग्यता (क्ष) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *उपलब्धि जो अन्तर्विलीन है, केवल योग्यता (गुण) के रूप में प्रस्तुत हो रही है।*
सूझ	अन्तर्गमित होती हुई उपलब्धता (सू) में अनियन्त्रित ऊर्जता (झ) ; *अन्तर्गमित होती हुई जो ज्ञानात्मक उपलब्धता है, उसके लिये आवश्यक जीवन्तता अनियन्त्रित होने से 'सूझता' तो है परन्तु विश्वस्त नहीं होता।*
सूर्य	अन्तर्गमित होती हुई उपलब्धता (सू) में निरन्तर प्रत्यक्ष (र्य) ; *अन्तर्गमित होती हुई ज्ञानात्मक/भोगात्मक उपलब्धि का निरन्तर प्रत्यक्ष।*
सूचना	अन्तर्गमित होती हुई उपलब्धता (सू) को ऊर्जित उन्मुख (च) करना (ना) ;*अन्तर्गमित होती हुई ज्ञानात्मक उपलब्धि को जीवन्त–उन्मुख करना, जीवन्त*

	करने से ज्ञान व्यक्त हो जाता है।
सूतक	**जन्म–मृत्यु के पश्चात अशोच** = होती हुई उपलब्धता (सू) में प्रस्तुत हो रहा (त) चेतन (सावधानी) (क) ;*चेतन की प्रस्तुति स्थिती को सन्देहात्मक बना देती है। ऐसी स्थिती में अन्तःस्थित उपलब्धता नहीं करनी चाहिये।*
सृजक	**सृष्टि करने वाला** = उपलब्धि के द्वारा (सृ) जीवन्तता (ज) का संचेतक (क) ;*उपलब्धता के द्वारा जो जीवन्तता का संयोजन करता है, ऐसी क्रियात्मक चेतना।*
सृष्टि	उपलब्धि के द्वारा (सृ) व्याप्तात्मक (ष्) प्रत्यक्ष प्रवृत्त हो रहा (टि) ; *असत् उपलब्धि के द्वारा जो व्याप्त रूप से प्रत्यक्ष प्रवृत्त हो रहा है वही सृष्टि है।*
सेंध	इंगित उपलब्धि (से) में रिक्तात्मक (ं) जमाव (ध) ; *रिक्तता को जमाने की उपलब्धि।*
सेट	इंगित व्यक्त (से) में प्रवृत्त हो रहा (ट); *इंगित विशेष को व्यक्त करता हुआ।*
सेठ	इंगित उपलब्धि (से) की प्रवृत्त सीमित हो रहा (ठ) ; *जिसे और नहीं चाहिये।*
सेख	**समाप्ति = शेष** = इंगित व्यक्त (से) की चेतनविहीनता (ख) ; *चेतनता की समाप्ति से व्यक्त समाप्त हो जाता है।*
सेतु	**पुल = बांध** = इंगित उपलब्ध (से) का प्राप्त उन्मुख (तु) ; *अभीष्ट की प्राप्ति का उपाय।*
सेना	इंगित व्यक्त (से) के पौरुष की सत्ता (ना)।
सेहरा	**विवाह का मुकुट** = इंगित व्यक्त (से) के स्थूलत्व (ह) में सम्मोहन (रा) ; *भौतिक रूप में जो व्यक्त हो रहा है वह सम्मोहन कर रहा है।*
सैर	वैविधिक उपलब्धि में सत् का प्रत्यक्ष (सै) अंगीकृत एकाग्र (र) ; *सैर में ज्ञान व स्वास्थ्य उपलब्धि के प्रत्यक्ष अंगीकरण में एकाग्र रहते हैं।*
सैल	**जलप्लावन** = व्यक्त में सत् का प्रत्यक्ष (सै) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *सत् का व्यक्त फैला हुआ जल है।*
सो (अं)	व्यक्त की दिशा (सो!) ; *अस्तित्व में छिपाव का व्यक्त (सो ?)*
सोच	व्यक्त की दिशा में (सो) जीवन्त हो रहा (च) ; *व्यक्त को जब जीवन्त प्राप्त*

	होगा तो अर्थ प्रकट होगा (स्पष्टता + जीवन्तता = प्रादुर्भाव)
सोता	**झरना** = उपलब्ध की छिपी दिशा से (सो) प्रस्तुत हो रहा (ता) ; *सोते का जल छिपी दिशा से प्रस्तुत होता है।*
सोना	**नींद** = व्यक्त की छिपी दिशा (सो) करना (ना) ; *व्यक्त जहां छिपे जाये, अर्थात् नींद।*
सोम	व्यक्त/उपलब्ध की अप्रत्यक्ष/कोणिक दिशा में (सो) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *सोम की प्रस्तुति केन्द्र से प्रज्ञा की दिशा में हमेशा समकोणिक अवस्था में प्रवृत्त होता है, जिससे वृत बनता है। इसकी आवृत्ति ही सोम है, केन्द्र शून्य तथा गतिशील बिन्दू प्रज्ञा है।*
सोशल	**सामाजिक** = व्यक्त की दिशा में (सो) जीवन्त ऊर्जित उपलब्धता (श) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *समाज की दिशा से हमें जीवन्त ऊर्जा का विस्तार उपलब्ध होता है।*
सोम्य	**सोम की आहुति** = व्यक्त का छिपी दिशा में (सो) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकात्मक (म्) प्रत्यक्ष (य) ; *प्रत्येक दिशा में प्रस्तुत होने का प्रत्यक्ष।*
सोहना	**शोभित होना** = व्यक्त की दिशा में (सो) असत् में स्थान/स्थूलीकृत (ह) करना (ना) ; *भोगात्मक व्यक्त की दिशा स्थूल की तरफ करना।*
सौंधा	**उत्तम प्रतीत होना** = उपलब्धि के सत् में छिपा हुऐ (सौ) की अंगीकार उत्सुकात्मक (न्) धारणा (धा) ; *ऐसी वस्तु को धारण करने की उत्सुकता जो उपलब्धता के साथ छिपी हुई है।*
सौदा	उपलब्धि के सत् की छिपी हुई (सौ) प्रस्तुतता (दा) ; *आप जो उपलब्ध कर रहे है उसके बदले प्रस्तुत भी कर रहे हैं।*
सौध	**पलस्तर किया हुआ = सफेद** = व्यक्त के सत् के छिपा हुआ (सौ) का जमाव (ध) ; *पलस्तर के सत् में छिपा हुआ जमाव है।*
स्टांप	व्यक्तात्मक (स्) प्रवृत्त कर रहा (टा) होता हुआ (ं) अनुमोदन (प) ; *जो व्यक्त करने की प्रवृत्ति को अनुमोदित कर रहा है, डाक पर लगने वाला हो या अनुबन्ध पर लगने वाला।*
स्कंध	**कंधा** = व्यक्तात्मक (स्) चेतन (क) अंगीकार उत्सुकात्मक (न्) जमाव (ध) ;

	हाथ व्यक्तता के काम आता है, जो कि कंधे पर अंगीकृत रूप से जमा हुआ है।
स्कीम	व्यक्तात्मक (स्) बाह्य प्रत्यक्ष होती हुई स्पष्ट उन्मुख (की) का प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *स्पष्ट होता हुआ व्यक्त।*
स्तन	उपलब्धात्मक (पुत्र के लिये) व्यक्तात्मक (पुरुष के लिये) (स्) प्रस्तुत हो रहे (त) (पुत्र व पुरुष) के लिये प्रस्तुत उत्सुक (न)।
स्तर	उपलब्धात्मक/व्यक्तात्मक (स्) भाव (त) में अंगीकृत रत (र) ; *व्यक्त हो सकने वाले भाव में एकाग्र।*
स्त्री	व्यक्तात्मक (स्) के द्वारा (ई) बाह्य प्रत्यक्ष होती हुइ प्रस्तुत उन्मुख (ती) ; व्यक्तात्मक (स्) प्रत्यक्ष होती हुई प्रकृति (त्री) ; *प्रकृति की व्यक्तता ही स्त्री है।*
स्तोम्	**स्तुति = प्रार्थना** = व्यक्तात्मक (स्) प्रस्तुत/समर्पण हो रही दिशा में (तो) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *समर्पण हो रही दिशा में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक का व्यक्त भाव।*
स्थल	व्यक्तात्मक (स्) स्थापित हो रहा (थ) का उपलब्ध विस्तार (ल), *व्यक्त रूप से जो स्थापित है, उसकी विस्तारित उपलब्धता।*
स्थूल	व्यक्तात्मक/उपलब्धात्मक (स्) में अन्तर्विलीन स्थापित हो रहा (थू) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *'व्यक्त' वैविधिक भौतिक उपलब्धि है। उसका स्थापित होने का अर्थ भौतिक संस्था अर्थात् स्थूल का निर्माण होना है।*
स्थिर	व्यक्तात्मक (स्) प्रत्यक्ष में स्थापित (थि) में रत (र) ; *क्रियात्मक स्थापित व्यक्त में संलिप्त।*
स्पर्श	उपलब्धात्मक/व्यक्तात्मक (स्) अनुमोदन (प) अहसास/अनुभूति /ऊर्जित उपलब्धि के द्वारा (र्श) ; *उपलब्धात्मक/व्यक्तात्मक अनुमोदन (भोगात्मक) के द्वारा होता हुआ अहसास।*
स्मृति	व्यक्तात्मक/उपलब्धात्मक (स्) अन्तः में संग्रह के द्वारा (मृ) प्रत्यक्ष प्रस्तुत उन्मुखता (ति)।
शंकर	पितृप्राण/जीवन्त अनुभूति/विश्वास/ऊर्जित उपलब्धि (श) में होती हुई/ पूर्ण शक्ति–आत्मक (ङ्) चेतना (क) में संलिप्त (र)। *जीवन्त अनुभूति पूर्ण शक्ति*

	रूपी भोगात्मक चेतना में संलिप्त, आनन्द।
शंख	जीवन्त अनुभूति (श) में ऊर्जात्मक पूर्ण (ङ्) विषय विहीनता (ख) ; *शंख की ध्वनि का कोई विषय नहीं होता मात्र साहस विश्वास व ऊर्जा होती है।*
शक	**सन्देह** = विश्वास (श) में स्पष्टोन्मुख/प्रश्न वाचक/अविश्वास (क)
शकुनि	जीवन्त अनुभूति (श) अन्धत्व उन्मुख (कु) को प्रत्यक्ष अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (नि) ; *अन्धत्व उन्मुख जीवन्त अनुभूति स्वीकृत करना।*
शक्ति	जीवन्त अनुभूति का (श) चेतनात्मक (क्) प्रत्यक्ष भाव (ति)।
शत	व्यतीत (श) का प्रस्तुत उन्मुख (त) ; *100 वर्ष की आयु मानी जाती है, अतः पूर्ण व्यतीत का अर्थ 100 लिया जाता है।*
शय	**निद्रा** =व्यतीत/चेतना विहीन उपलब्धि (श) को प्रत्यक्ष (य)।
शब	**रात्रि** = जीवन्त अनुभूति (श) का बन्धित अंगीकरण (ब) ; *रात्री में जीवन्त अनुभूति बन्धित हो जाती है।*
शब्द	अहसास (श) की बन्धनात्मक (ब्) प्रस्तुति (द) ; *अहसास में बन्ध कर ही कोई शब्द बाहर निकलता है।*
शर	**तीर** = असत ऊर्जित उपलब्ध (श) में अंगीकृत एकाग्र (र)।
शरीर	जीवन्त अनुभूति (श) के बाह्य प्रत्यक्ष होते हुए अंगीकृत एकाग्र (री) में रत (र) ; *शरीर जीवन्तिक अनुभूति के एकाग्र में ही रत रहता है।*
शल्य	जीवन्त अनुभूति (श) में उपलब्ध विस्तारात्मक (ल्) प्रत्यक्ष (य) ; *जीवन्त अनुभूति (दर्द) का विस्तारित प्रत्यक्ष।*
शव	जीवन्त अनुभूति (श) में छिपा सत् (व) ; *जीवन्त अनुभूति का समाप्त हो जाना।*
शस्त्र	जीवन्त अनुभूति (श) की व्यक्तात्मक (स्) प्रकृति (त्र)। *जीवन्त अनुभूति जिस साधन से व्यक्त होती है।*
शांत	जीवन्त अनुभूति की सत्ता (शा) का रिक्तात्मक (ं) प्रस्तुत हो रहा (त)।
शाक	**कठिन = विद्युत का झटका** = असत् ऊर्जित उपलब्धता (शा) में चेतना (क) ; *ऊर्जित उपलब्धता में भोगात्मक चेतन।*
शाखा	असत् ऊर्जित उपलब्ध सत्ता (शा) की चेतन के लिये स्थान उपलब्धता (खा) ;

	असत् ऊर्जा उपलब्ध कराने वाली सत्ता (पेड़) द्वारा शाखा में चेतन के लिये स्थान उपलब्ध कराया जाता है।
शान	जीवन्त अनुभूति की सत्ता (शा) का पौरूष (न)।
शाप	चेतनात्मक अंधकार की सत्ता (शा) का अनुमोदन (प) ; *जीवन्त अनुभूति या चेतनात्मक अंहकार एक ही वस्तु है। चूंकि 'श' संस्कारों की सत्ता भी है अतः संस्कारों में अन्धकार अनुमोदन शाप ही है।*
शास्त्र	जीवन्त अनुभूति की सत्ता (शा) की व्यक्तात्मक (स्) प्रकृति (त्र) ; *शास्त्र 'जीवन्त अनुभूति की सत्ता' को व्यक्त करते है।*
शावक	**बच्चा** = जीवन्त अनुभूति की सत्ता (शा) के छिपे सत् (व) का चेतन (क) ; *सत्ता में जो जीवन्त अनुभूति है उसमें चेतना बहुत कम (छिपी हुई) है।*
शाह	जीवन्त अनुभूति की सत्ता (शा) का असत्/स्थूल (ह) ; *जीवन्त अनुभूति की सत्ता का मूर्तमान रूप, जिसको देखने मात्र से ही जीवन्तता की अनुभूति होती है।*
शिव	प्रत्यक्ष जीवन्त अनुभूति/ओजस्विता (शि) में छिपा हुआ सत् (व) ; *जीवन्त अनुभूति की प्रत्यक्षता में छिपे हुऐ हैं, साहस, पितृप्राण, शक्ति, ऊर्जित, दृढता आदि, और उसका सत् जो कि आलम्बन है वही शिव है।*
शिखा	**चोटी** = प्रत्यक्ष जीवन्त अनुभूति (शि) में चेतन विहीनता (खा) ; *चोटी के बाल जीवन्त अनुभूति में चेतन विहीन है।*
शिष्य	प्रत्यक्ष जीवन्त अनुभूति/प्रत्यक्ष संस्कारो (शि) का व्याप्तात्मक /कामनात्मक (ष्) प्रत्यक्ष (य); *जो जीवन्त अनुभूति तथा संस्कारों की व्यापक रूप से कामना करे वही शिष्य है।*
शिशु	प्रत्यक्ष जीवन्त अनुभूति (शि) के अन्तर्गमित संस्कार (शु) ; *जो भी ऊर्जा उपलब्ध हो रही है वह संस्कार रूप में अन्तर्गमित में स्थित हैं।*
शिप	**पानी का जहाज** = प्रत्यक्ष जीवन्त अनुभूति (शि) में अनुमोदन (प) ; *शिप हिलता डुलता रहता है इसलिये जीवन्त की अनुभूति होती है।*
शिष्ट	प्रत्यक्ष संस्कारो (शि) का व्याप्तात्मक (ष्) प्रवृत्त (ट) ; *शिष्ट व्यक्ति प्रत्यक्ष (अच्छे) संस्कारों में व्याप्तात्मक रूप से प्रवृत्त रहता है।*

शी	बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई जीवन्त अनुभूति (शी) ; *बाह्यप्रत्यक्ष हमेशा स्त्रीवाचक होता है, अतः अंग्रेजी में 'शी' का अर्थ स्त्रीवाचक जीवन्त अनुभूति ही है।*
शीघ्र	बाह्य प्रत्यक्ष होते जीवन्त अनुभूति (शी) के द्वारा (ऋ) में घिरी हुई (घ) ; *बाह्यप्रत्यक्षता (गत्यात्मक) जीवन्त अनुभूति के द्वारा घिरी हुई होने से क्रियात्मक जीवन्त के ही नियन्त्रण में है।*
शीत	**सर्दी** = बहिर्गमित होता ऊर्जित अहसास (शी) का भाव (त) ; *ऊर्जा बाहर की तरफ जा रही है।*
शीर	**नुकीला = अजगर** = बाह्यप्रत्यक्ष होते जीवन्त अनुभूति (शी) में एकाग्र (र) ; *बाहर की तरफ जीवन्तता की अनुभूति होती है।*
शील	**आचरण** = बाह्य प्रत्यक्ष होते संस्कारों (शी) का उपलब्ध विस्तार (ल) ; *प्रकाशित (अच्छे) संस्कारों का बाहर की तरफ विस्तार आचरण रूप में होता है।*
शीशा	**दर्पण** = बाह्यप्रत्यक्ष होती जीवन्त अनुभूति (शी) की जीवन्त अनुभूति (शा) ; *जीवन्त अनुभूति सत्ता ही बाह्यप्रत्यक्ष जीवन्त अनुभूति हो रही है। (शीशे के द्वारा)*
शुक	संस्कार (शु) स्पष्टोन्मुख (क) ; *संस्कारों को (सीखे हुऐ) ही क्रियात्मक स्पष्ट करते रहना।*
शुक्र	संस्कारों (शु) के द्वारा (ऋ) चेतना (क) ; *अन्तःस्थित ऊर्जित अहसास में और ऊर्जा का अर्जन होने से गर्मी उत्पन्न होगी।*
शुक्ल	संस्कारों (शु) में चेतनात्मक (क्) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *जो संस्कार है, उन्हीं का प्रकाशित (चेतनात्मक) विस्तार।*
शुचि	**गर्मी** = संस्कारों (शु) की प्रत्यक्ष ऊर्जित उन्मुखता (चि) ; *जो संस्कार है, उनके अनुरूप ऊर्जित होना।*
शुद्ध	संस्कारों (शु) में निर्धारित (घ्) प्रस्तुति (द) ; *वस्तु के जो संस्कार (गुण) है वह निर्धारण के अनुरूप ही हैं।*
शुभ	अन्तर्गमित जीवन्त अनुभूति (शु) का स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; *बिना बन्धन के जो जीवन्त अनुभूति अंगीकृत की जा रही है।*
शुष्क	**सूखा** = अन्तःर्गमित होता ऊर्जित अहसास (शु) में व्याप्तात्मक (ष्) जीवन्त

	विहीन / रस विहीन भाव (क)।
शूद्र	अन्तः में निरन्तर रहने वाला ऊर्जित अहसास (शू) के द्वारा प्रस्तुति (द्र) ; *अन्तः में जो ऊर्जिता है उसकी निरन्तर प्रस्तुति करना।*
शून्य	अन्तः में निरन्तर रहने वाला ऊर्जित अहसास (शू) में रिक्तात्मक (न्) प्रत्यक्ष (य); *अन्तः पूरी तरह से रिक्त है।*
शूर	अन्तः में निरन्तर रहने वाला ऊर्जित अहसास (शू) में अंगीकृत एकाग्र (र) ।
शूल	अन्तः में निरन्तर रहने वाला ऊर्जित अहसास (शू) में उपलब्ध विस्तार (ल) ; *यहाँ अहसास दर्द रूपी है।*
श्रृंग	**पर्वत की चोटी** = ऊर्जित अहसास (श) के द्वारा (ृ) होता हुआ (ङ्) स्पष्ट (ग) ; *ऊर्जित अहसास के द्वारा ही जिसे स्पष्ट किया जा सके, पहुंच कर।*
श्रृंगार	जीवन्त अनुभूति के द्वारा (श्र) होती हुई (ङ्) स्पष्टता (गा) में एकाग्र (र) ; *पूरी अहसास के साथ स्पष्टता (श्रंगार) करने में एकाग्र है।*
शेर	इंगित ऊर्जित अहसास (शे) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *शेर को हमेशा अपनी ऊर्जा का अहसास रहता है।*
शेखी	इंगित ऊर्जित अहसास (शे) में चेतन विहीनता का बाह्य प्रत्यक्ष होते रहना (खी) ; *स्वयम् में ऊर्जा अहसास करते हुऐ अविवेकी बातें करना।*
शेष	इंगित ऊर्जित अहसास (शे) व्याप्त (ष) ; *सब कुछ समाप्त होने के बाद जो शेष बचती है वह ऊर्जित अहसास की कामना ही होती है।*
शैतान	सत् में जीवन्त अनुभूति के प्रत्यक्ष (शै) की प्रस्तुत उन्मुखता (ता) की क्रिया (न) ; *जो जीवन्त अनुभूति को ही प्रस्तुत करता रहता है, जीवन्त अनुभूति विवेक हीनता है। सत् में जीवन्त अनुभूति को ही प्रमुख मान लेना तथा उसको प्रस्तुत करने की क्रिया।*
शैव	अस्तित्व में जीवन्त अनुभूति का प्रत्यक्ष (शै) में छिपा हुआ सत् (व); *सत् में जीवन्त अनुभूति का जो प्रत्यक्ष हो रहा है उसका छिपा हुआ सत् 'विश्वास व दृढ़ता' है, जो कि शिव के आलम्बन से उपलब्ध होता है।*
शैशव	**शिशु सम्बन्धी** = अस्तित्व में जीवन्त अनुभूति का प्रत्यक्ष (शै) के व्यतीत (श) में छिपा हुआ सत् (व) ; *उस सत् का प्रत्यक्ष जो संस्कार आदि में व्यतीत होता*

	है।
शोध	**शुद्ध करने वाला संस्कार** = संस्कार की उस दिशा में/मानने की दिशा में (शो) निर्धारण (ध) ; *मानने को निर्धारण करना।*
शोभ	**सजीला** = विश्वास/अहसास की दिशा (शो) में स्वच्छन्द अंगीकरण (भ); *यहाँ अंगीकरण भोगात्मक है।*
शोला	ऊर्जित अहसास की दिशा में (शो) उपलब्ध विस्तारता (ला)।
शोहरत	मानने विश्वास की दिशा (शो) में स्थूलता (ह) में रत (र) का भाव (त) ; *मानने की दिशा स्थूल संसार में ही सम्भव है। क्योंकि संकेत एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बिना स्थूल का सहारा लिये नहीं जा सकता।*
शौक	अस्तित्व में संस्कारों के छिपा हुआ (शौ) स्पष्ट हो रहा (क) ; *अन्तः में जो जीवन्त अनुभूति (क्रियात्मक) छिपी हुई है, उसका भोगात्मक स्पष्टीकरण 'शौक' ही है।*
श्याम	अन्धकारात्मक/विश्वासात्मक/अहसासात्मक (श्) प्रत्यक्ष सत्ता (या) का होना (म)।
श्रद्धा	अन्धकारात्मक/विश्वासात्मक/अहसासात्मक (श्) के द्वारा (्र) में धारणात्मक् (घ्) प्रस्तुतिता (दा) ; *अन्धविश्वास।*
श्रम	अन्धकारात्मक (श्) प्रज्ञा (्र) का होना (म) ; *जहाँ प्रज्ञा ना हो।*
श्री	**लक्ष्मी = सम्पत्ति** = बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई मानने की अहसास की, विश्वास की प्रज्ञा (श्री)।
श्रीद	**कुबेर** = लक्ष्मी (श्री) की प्रस्तुति (द)।
श्रेय	इंगित मानने के द्वारा (श्रे) का प्रत्यक्ष (य) ; *श्रेय उसी को जाता है जिसको हम मानते है।*
श्वेत	अन्धकारात्मक (श्) के इंगित छिपाव के सत का (वे) भाव (व), *अन्धकार के छिपने से सत् श्वेत हो जाता है।*
षिंग	**कामुक = शूरवीर** = प्रत्यक्ष कामवेग (षि) का होताहुआ (ं) स्पष्ट (ग)।
षंड	कामवेग/व्याप्त (ष) होता हुआ (ं) प्रवृत्त हो चुका (ड)।

षंजन	**आलिंगन** = कामवेग (ष) में होती हुई (ं) ऊर्जित (ज) अंगीकृत करने को उत्सुक क्रिया (न)।
षडानन	**कार्तिकेय** = कामवेग (ष) में बीती हुई (डा) रिक्तता (न) का अंगीकार करने के लिये उत्सुक (न)।
हँकार	**पुकार मचना** = स्थूलता (ह) में होती हुई (ँ) चेतनता (का) का अंगीकृत एकाग्र (र) ; *स्थूल में जो चेतनता (क्रियात्मक) हो रही है, उसके कारण पुकार मचना।*
हंस	स्थूल (ह) में होती हुई (ं) वैविधिक उपलब्धता (स) ; *जिसको स्थूल में उपलब्धि (मोती) होती हो।*
हक	**वाजिब** = असत् में स्थान उपलब्धि (ह) स्पष्टोन्मुख (क) ; *अर्थात् जो भी स्थूल उपलब्धि है, उसे स्पष्ट (साबित) किया जा सकता है।*
हकलाना	असत् में स्थान उपलब्धि (ह) में प्रश्न वाचक/अविश्वास (क) को विस्तार की अस्ति (ला) करना (ना) ; *बोलने के लिये स्थूल में उपलब्धि आवश्यक है, उसमें जब प्रश्न वाचक या अविश्वास का विस्तार हो जाता है तो प्रक्रिया रूक जाती है।*
हकीम	**विद्वान्** = असत् में स्थान उपलब्धता में {देह} (ह) बाह्य प्रत्यक्ष होता हुआ चेतन (की) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *देह को चेतन ज्ञानात्मक के द्वारा प्रत्यक्ष करना।*
हज	**तीर्थ यात्रा** = मृत्यु/मुक्ति (ह) में ओजस् (ज) ; *हज के बाद नया जन्म होता है।*
हटना	स्थूल (ह) को प्रवृत्त हो रहा (ट) करना (ना)।
हठ	**जिद** = स्थूल उपलब्धता (ह) में प्रवृत्त सीमितता होरही (ठ) ; *स्थूल उपलब्धता तक ही प्रवृत्ति सीमित है।*
हड़ताल	स्थूल उपलब्धता (ह) में विध्वन्स (ड़) के भाव की सत्ता (ता) का विस्तार (ल) ; *स्थूल उपलब्धता को अस्तित्व विहीनता का भाव।*
हत्	**मारा हुआ** = असत् में स्थान उपलब्धता (ह) को प्रस्तुत उन्मुख (त), मृत्यु (ह) का भाव (त)।
हद	**सीमा** = असत् में स्थान उपलब्धता/अन्त (ह) की प्रस्तुति (द); *अन्तःकरण ही*

	हद असत् में स्थान उपलब्धता तक ही सीमित है।
हनन	स्थूल उपलब्धता में (ह) रिक्तता (न) की क्रिया (न) ; *स्थूलता में जो उपलब्ध है उसमें से रिक्त करने की क्रिया।*
हप	**मुंह में हप का जाना** = असत् (मुंह) में स्थान उपलब्धता (ह) का अनुमोदन (प) ; स्थूल उपलब्धता (ह) का अंगीकरण उन्मुख (प) ।
हरि	असत् (ह) में प्रत्यक्ष अंगीकृत एकाग्रता (रि) ; *जो एक से अनेक होने के लिये असत् की तरफ एकाग्रित है।*
हर्षित	असत् में स्थान उपलब्धता/स्थूल प्राप्ति (ह) प्रत्यक्ष इच्छित उपलब्धता की होती हुई (र्षि) का प्रस्तुत हो रहा (त) ; *स्थूल वस्तु की प्राप्ति से जो इच्छा की निरन्तर पूर्ति हो रही है।*
हवन	असत् में स्थान उपलब्धता {जलने की क्रिया} (ह) में छिपे हुऐ सत् (व) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *छिपा हुआ सत् (गुणों) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (जानने के लिये उत्सुक) के लिये प्रजलन करना (गुणों के अनुसार प्रजलन होता है)*
हवा	असत् में स्थान उपलब्धता (ह) में छिपी हुई सत्ता (वा) ; *हवा की सत्ता स्थूल (असत्) में दिखायी नहीं देती।*
हवि	असत् में स्थान उपलब्धता {जलने की क्रिया} (ह) के प्रत्यक्ष में छिपा हुआ सत् (वि) ; *छिपा हुआ सत् ज्वलनशीलता है जो जलने की क्रिया का कारण है।*
हसरत	**कामना** = स्थूल (ह) की वैविधिक उपलब्धि (स) में रत (र) का भाव (त) ; *स्थूलता की (भौतिक पदार्थ की) उपलब्धि में एकाग्र।*
हा	स्थूलता।
हाथ	असत् (भौतिक) में स्थान उपलब्धता की सत्ता (हा) की प्रस्तुत उन्मुख सीमितता (थ), *भौतिक प्रक्रिया करने वाला, सीमित दायरे में।*
हाय	मृत्यु की सत्ता (हा) का प्रत्यक्ष (य)।
हाल	स्थूल/भौतिक उपलब्धता (हा) में अर्पित भावना (ल)।
हास	स्थूल उपलब्धता (हा) में वैविधिक उपलब्धि (स) ; *भोगात्मक वैविधिक उपलब्धि ही हास्य का कारण बनती है।*

हाव	**हाव–भाव** = स्थूल उपलब्धता (हा) में छिपा सत् (व)।
हि	प्रत्यक्ष स्थूल उपलब्धता/स्थूल प्रदर्शित ।
हिया	हृदय = साहस = स्थूल प्रदर्शन (हि) की प्रत्यक्षता (या) ; *विवेक के विपरीत भाव है।*
हिलना	स्थूल प्रदर्शन (हि) का विस्तार (ल) करना (ना), *स्थूल प्रदर्शन में देह हिलती है।*
हिस	**ज्ञान = अनुभव** = स्थूल प्रदर्शन (हि) में वैविधिक उपलब्धि (स) ; *स्थूल प्रदर्शन के द्वारा ज्ञानात्मक/क्रियात्मक ज्ञेय की प्राप्ति होती है।*
हिसाब	स्थूल प्रत्यक्ष (हि) में उपलब्धता (सा) का बन्धन (ब) ; *भौतिक रूप से जो प्रत्यक्ष उपलब्धता होती है, उसमें हिसाब का बन्धन रहता ही है।*
ही	**हंसने का भाव** = प्रत्यक्ष होती हुई स्थूल उपलब्धता (ही) ; *उपलब्धता जब स्थूल के द्वारा बाह्यप्रत्यक्ष होती है तो वह हंसी होती है।*
हुनर	छिपी स्थूल उपलब्धि (हु) की क्रिया (न) में एकाग्र (र) ; *स्थूलता में जो जो उपलब्धि छिपी रहती है, अर्थात् अभ्यास में रहती है उसी क्रिया में एकाग्रता हुनर है।*
हुक्म	छिपी स्थूल उपलब्धि में (हु) चेतनात्मक (क्) होना (म) ; *स्थूलता में जो उपलब्धि छिपी है अर्थात् आधीनता जो छिपी है, उसमें क्रियात्मक चेतन का होना।*
हुलास	**उल्लास** = अन्तः में स्थूल उपलब्धि (हु) में विस्तारित/अर्पित भावना (ला) का व्यक्त (स) ; *अन्तः में जो उपलब्धि से उत्पन्न विस्तारित भावना से प्रसन्नता व्यक्त होती है।*
हू	**अभ्यास** = अन्तर्गमित होती हुई स्थूल उपलब्धता (हू) ; *अन्तःस्थित में स्थूल उपलब्धि।*
हूर	**अप्सरा** = अन्तर्गमित हुई स्थूल उपलब्धता (अन्तर्गमन) (हू) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *भोगात्मक स्थूल उपलब्धि को निरन्तर अन्तर्गमित करते रहने में एकाग्रित होना। यहाँ भोगात्मक स्थूल उपलब्धि सौन्दर्य है।*
हूल	**कोलाहल** = अन्तर्गमित होती हुई स्थूल उपलब्धि (अन्तर्गमन) (हू) में उपलब्ध

	विस्तार (ल) ; *भोगात्मक स्थूल उपलब्धि को निरन्तर अर्न्तमित करने रहने में जो अ–एकाग्रता (विस्तार) है। विस्तार के कारण उपलब्धि शोर है।*
हूत	**हरण किया हुआ** = अन्तर्गमित होती हुई स्थूल उपलब्धि (हू) का भाव (त) ; *स्थूल को उपलब्ध कर* अन्तर्गमित *(हरण) कर लेना। अन्तर्गमित में स्थूल उपलब्धि का भाव।*
हृदय	होती हुई उपलब्धि में (हृ) प्रस्तुति (द) का प्रत्यक्ष (य) ; *भौतिक हृदय रक्त को, मानसिक हृदय भाव को उपलब्ध कर बिना विश्लेषित किये पुनः प्रस्तुत कर देता है।*
हृषि	**आनन्द** = होती हुई स्थूल उपलब्धि (हृ) कामना के प्रत्यक्ष में (षि); *कामना की प्रत्यक्षता में जो स्थूल उपलब्धि हो रही है।*
हृष्ट	**हर्षित** = होती हुई स्थूल उपलब्धि (हृ) कामनात्मक प्रवृत्त उन्मुख में (ष्ट) ; *कामना के अनुसार प्रवृत्ति को होती हुई स्थूल उपलब्धि।*
हे	इंगित स्थूल उपलब्धि (हे)।
हेड	**प्रधान** = इंगित स्थूल उपलब्धि का (हे) हुआ होना (ड) ; *इंगित रूप से जो स्थूल में उपलब्ध होआ हुआ है।*
हेतु	**कारण** = इंगित स्थूल उपलब्धि (हे) का प्राप्त उन्मुख भाव (तु) ; *वह प्राप्त होता हुआ उन्मुख भाव जिसके कारण इंगित स्थूल उपलब्धि हो रही है।*
हो	स्थूल उपलब्धि की परोक्ष दिशा में।
होश	स्थूल उपलब्धि की दिशा में (हो) ऊर्जित अनुभूति (श) ; *स्थूल उपलब्धि (भोगात्मक) के लिये जीवन्त अहसास का प्राप्त होना।*
होल	**छेद** = **पशुओं का चारा** = **सम्भावना** = स्थूल उपलब्धता की दिशा में (हो) उपलब्ध विस्तार (ल) ; ***छेद**–क्रियात्मक स्थूल उपलब्धि, **पशुओं का चारा**–भोगात्मक स्थूल उपलब्धि, **सम्भावना**–ज्ञानात्मक स्थूल उपलब्धि, का होता हुआ विस्तार।*
होली	मुक्ति की दिशा में (हो) प्रत्यक्ष होता विस्तार (ली) ; *मुक्त होने का विस्तार करना ईश्वर को पाना है;* मृत्यु (जलाने) की दिशा में (हो) प्रत्यक्ष होता विस्तार (ली), *वह वस्तुऐं जो जलाने के लिये विस्तारित की जाती है।*

8.0 मात्रात्मक प्रकरण

(MĀTRĀTMAKA PRANARAṆA)

प्रत्येक ध्वनि के प्रस्फुटन में व्यंजन मात्र तार्किक प्रतिबोध देते हैं। यदि 'मात्रा' शून्य है, तो व्यंजन अव्यक्त ही रहते हैं। व्यंजन की व्यक्तता विभिन्न मात्राओं की उपलब्धता पर आधारित है।

समग्र सिद्धान्त की अनुरूपता में केन्द्रित होने से हमें स्पष्ट होगा, कि स्वर की स्थिति व्यंजन के **'अपर लोक'** में होती है। क्रन्दसी त्रिलोकी में **'जन लोक'** व्यंजन है। **'स्व लोक'** स्वर है। तथा मध्य में स्थित **''मह लोक''** भाव प्रत्यक्षता को निर्धारित करता है। इस लोक में 'ऋ' **आकाश** को 'लृ' **पृथ्वी** को, 'इ' व 'उ' **जल** व **वायु** को तथा 'अ' **अग्नि** को प्रस्थापित करता है।

एक ही भूत 5 महाभूतों में प्रत्यक्ष है। भूत में उपस्थित आपोमयता 'उ' में स्थित है। **'उ' छिपावात्मक** मात्रा है, जो मात्रा को अन्तःस्थित करता हुआ 'स्व' में विलीन कर देता है। अतः व्यवहार रूप में यह **अन्तःस्थित, अन्तर्मुखित** व **विलीनात्मक** तीनों का भाव है। यह 'उ', निरन्तर विलीन होता हुआ अन्तःस्थित होता हुआ, अन्तर्मुखित होता हुआ, **अन्तर्विलीन** होकर **'ऊ'** के संकेत से जाना जाता है। 'उ' का वितान 'अ' के साथ

तीन तरह से होता है। प्रथम में 'उ' व 'अ' मिलकर **"ओ"** बनाते हैं। परिभाषा के अनुसार यह अस्तित्व में छिपाव का सत् होगा। व्यवहार में इसका **'छिपाव में व्यंजन का अस्तित्व'** तथा **'परोक्ष सत् की दिशा में'** (रजस्) है। द्वितीय वितान में 'अ' व 'उ' के मिलन से **'औ'** का निर्माण होता है। जिसका संकेत है, **'व्यंजन स्थित सत्, स्वमुखित सत्, विलीनात्मक सत्,'** या संक्षिप्त में 'अस्तित्व सत् या व्यंजन का छिपाव' है। तृतीय संयोग में, 'अ' व 'उ' एक के ऊपर एक आकर **'व'** का निर्माण करते हैं। दोनों मात्राएँ गुणित होने लगती हैं। 'महःलोक' में यह मात्रात्मक व्यंजन, मूल व्यंजनों को संकेत प्रदान करने से मंथन में गति प्रदान करता है।

'इ' का अर्थ **प्रत्यक्षात्मक** सत् मात्रा है। व्यवहार रूप में यह माया को बाह्यमुखित करता हुआ, बाह्यस्थित होकर माया को प्रत्यक्ष कर, उपलब्ध कर देता है। 'इ' का अर्थ **बाह्यमुखित, बाह्यस्थित** व **प्रत्यक्षात्मक** तीनों रूपों में दिखाई देता है।

'इ' जब निरन्तर प्रत्यक्ष होता है, तो वह **बाह्यमुखित होता हुआ, बाह्यस्थित होता हुआ,** तथा **बाह्यप्रत्यक्ष** हो जाता है तथा 'ई' के रूप में प्रत्यक्ष होता है। 'इ' 'अ' से मिलकर **'ए'** बनता है यह **'अस्तित्व में प्रत्यक्ष का सत्'** या **'बाह्यस्थित का शून्यात्मक सत्'** है। संक्षिप्त में 'इंगित स्थित (सत्)' व 'इंगित दिशा में (रजस्)' है। द्वितीय में 'अ' व 'इ' के मिलने से **'ऐ'** का निर्माण होता है। जिसका अर्थ है, **'अस्तित्व में सत् का प्रत्यक्ष'** की प्रत्यक्षात्मकता। व्यवहार में यह **'अस्तित्व में व्यंजन का प्रत्यक्ष'** होता है। तृतीय संयोग में 'अ' व 'इ' को एक साथ मिलकर **'य'** का निर्माण होता है। तथा तदनुसार 'महःलोक' में यह मात्रात्मक व्यंजन, मूल व्यंजनों को संकेत प्रदान करने से, मंथन में गति प्रदान करता है। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि जहां 'व' मंथन में **गहराई** प्रदान करता है वहीं 'य' मंथन में **स्पष्टता** प्रदान करता है। इसी प्रकार र एवम् ल मंथन में **एकाग्रता** व **विहंगमता** प्रदान करते हैं।

'अ' जो कि सत् शून्य अस्तित्व है, में शून्य के स्थान पर सत् आने से सत् युक्त अस्तित्व होकर 'अ' सत्ता कहलाता है। **मात्रा की अनुपलब्धता 'अं'** के रूप में संकेतित है। जहाँ भी व्यंजन के साथ 'अं' जुड़ता है, उस व्यंजन में 'तमस्' का उदय हो जाता है। संकेत जब अपनी यात्रा समाप्त कर स्थूल में प्रवेश करता है, तो संकेत **'अः'** के आने लगते हैं, संकेत दूसरे लोक में **'प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक'** होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

ऋषि का अर्थ है अंगीकृत एकाग्रत्व की प्रत्यक्ष व्याप्ति/उद्दीप्त उत्सुक। ऋषिप्राण का धर्म, गन्धर्व का अंगीकरण है। ऋषि, गन्धर्व के अनेकत्व में से, एकत्व के द्वारा वैविध्यता को विश्लेषित करता है। इसमें कर्त्ता भाव तो ऋषि है, परन्तु जो एकत्व का मात्रात्मक बोध है, वह **'ऋ'** की मात्रा है। अर्थात् ध्यान की जो गहराई एकाग्रता है, वह 'ऋ' है। 'ऋ' 'अ' के साथ संयुक्त हो कर **'र'** बन जाता है। स्वभावानुसार 'र' एकत्व लघु एकात्म, ध्यान, प्रज्ञारत, अंगीकृत एकाग्र, बोधगम्य आदि अनेक प्रकार से प्रयुक्त होता है। 'र' के सभी प्रयोगों के मूल में ऋषि प्राण ही होता है। 'र' जिस प्रकार एकत्व है **'ल'** उसी प्रकार अनेकत्व है। 'र' लघुतर है तो 'ल' विस्तार है। अर्थात् 'ल' का प्रयोग 'र' के ठीक विपरीत भाव में होता है। 'र' यदि अंगीकृत एकाग्र है तो 'ल' उपलब्ध विस्तार है। इसीलिये 'र' ऋषि की उपाधि है, तथा 'ल' गन्धर्व की उपाधि है।

'अ' व्यंजन से अभावात्मक सत् है। गति रूप में यह न तो अन्तःस्थित है और न ही बाह्यस्थित है। अतः यह स्वमुखी अस्तित्व है। यह न तो अन्तः में स्थित है, और न ही बाह्यस्थित है। अतः सत् शून्य अस्तित्व है। यह व्यंजन के अभाव में अस्तित्व है। जिस व्यंजन के साथ प्रत्युक्त होता है, उस व्यंजन को सत् की मात्रा प्राप्त कर, व्यक्त कर देता है। लेकिन यह व्यक्तीकरण व्यंजन के शुद्ध रूप को आहत नहीं करता, और न ही इसका स्वयम् का कोई व्यंजनात्मक प्रतिबोध है। 'क्' के साथ 'अ' मिलकर 'क' कर देता है। 'स्पष्टोन्मुखात्मक' के साथ 'अ' मिल कर स्पष्टोन्मुख हो जाता है।

8.2 'अ से लेकर अः तक तथा य र ल व' की ध्वनियों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का विवरण

अक्ल	सत् से अभावित अस्तित्व में (अ) चेतनात्मक् (क्) विस्तार (ल) ; *ज्ञान से अभावित अस्तित्व में चेतनात्मक विस्तार।*
अकोप	**प्रसन्नता** = सत् से अभावित अस्तित्व में (अ) चेतना की दिशा में (को) अनुमोदन (प) ; *अस्तित्व का भोगात्मक चेतना की दिशा में अनुमोदन।*
अक्षर	सत् से अभावित (अ) योग्यता (क्ष) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जहां योग्यता में सत्*

	ना हो, वरन् योग्यता का कारण हो। कारण शिव माया, विष्णु माया, ब्रह्मा माया, सोम व अग्नि से मिलकर अक्षर बनती है। अक्षर अक्ष है रमण का।
अगर	सत् शून्य अस्तित्व (अ) स्पष्ट (ग) का अंगीकृत एकाग्र (र) ; *स्पष्ट से अभावित अस्तित्व का नये स्पष्ट में अंगीकृत एकाग्र।*
अटल	सत् से अभावित अस्तित्व (अ) प्रवृत्त उन्मुख (ट) विस्तार (ल) ; *जहां प्रवृत्त में सत् ना हो, अर्थात् प्रवृत्त ना होने में विस्तार का अस्तित्व।*
अटक	सत् से अभावित अस्तित्व (अ) प्रवृत्त उन्मुख (ट) चेतना (क) ;*जहां प्रवृत्त में सत् ना हो, अर्थात् प्रवृत्त ना होने में चेतना।*
अजिन	**खाल** = सत् शून्य अस्तित्व (अ) प्रत्यक्ष ऊर्जिता (जि) की रिक्तता (न) ; *ऐसा अस्तित्व जिसमें प्रत्यक्ष ऊर्जा की रिक्तता ; अर्थात् ऊर्जा नहीं है। खाल में ऊर्जा नहीं होती।*
अति	सत् शून्य अस्तित्व (अ) में प्रत्यक्ष प्रस्तुत उन्मुखता (ति) ; *अर्थात् जब प्रस्तुति आवश्यकता से ज्यादा हो जाये।*
अथर्व	सत् शून्य अस्तित्व में (अ) स्थापित हो रहा (थ) छिपे हुऐ सत् के द्वारा (व) ; *स्थापन से अभावित अस्तित्व में स्थापन की निरन्तरता का गुण सूत्र, असत् में सत्व की स्थापना।*
अथच	**और भी** = सत् शून्य अस्तित्व में (अ) में स्थापित हो रही (थ) जीवनत–उन्मुखता (च) ; *स्थापन से अभावित अस्तित्व में नये स्थापन की जीवन्त–उन्मुखता।*
अदिति	सत् शून्य अस्तित्व में (अ) प्रत्यक्ष द्रव्यात्मक प्रस्तुति (दि) का बाह्यस्थित भाव (ति) ; *द्रव्यात्मक प्रस्तुति के प्रत्यक्ष भाव का अस्तित्व तो है परन्तु इसमें सत् नहीं है। सत् ना होने से यह प्रस्तुति का कारण ही है, प्रस्तुति नहीं है। अतः अदिती प्रकृति द्वारा प्रस्तुति का कारण स्वरूप है।*
अधिक	सत् शून्य अस्तित्व में (अ) में प्रत्यक्ष धरित/जमा हुआ (धि) चेतना (क) ; *अस्तित्व में धारित होती हुई चेतना, जिसके लिये अब सत् उपलब्ध नहीं है।*
अलस	**सुस्त** = सत् से अभावित अस्तित्व में (अ) उपलब्ध विस्तार (ल) का व्यक्त (स) ; *विस्तार के व्यक्त के लिये सत् उपलब्ध नहीं है।*
अस्ति	**विध** = सत् शून्य अस्तित्व में (अ) उपलब्धात्मक (स्) प्रत्यक्ष भाव (ति) ;

	अस्तित्व में उपलब्ध होता प्रत्यक्ष भाव।
आँ	सत्ता की विषमता (आँ)।
आँख	सत्ता (आ) में विषमता (ँ) को स्पष्ट के लिये स्थान उपलब्धता (ख) ; *सत्ता में जो ज्ञानात्मक विषमताऐं होती हैं आँखें उसे ही देखती है।*
आँच	सत्ता (आ) विषमता (ँ) जीवन्त हो रहा (च), *सत्ता में कष्ट (विषमता) जीवन्त हो रहा।*
आँसू	सत्ता (आ) की विषमता (ँ) अन्तर्मुखी होता हुआ व्यक्त (सू) ; *सत्ता में अन्दर ही अन्दर जो विषमता व्यक्त होती है, वह आँसुओं के द्वारा होती है।*
आइना	सत्ता (आ) को प्रत्यक्षात्मक (इ) करना (ना) ; सत्ता (आ) के अन्दर (इन) ; *की सत्ता ।*
आज	सत्ता (आ) में जीवन्तता (ज) ; *सत्ता की जीवन्तता वर्तमान में ही है।*
आथ	**अर्थ** = सत्ता (आ) में स्थापित/स्थिर हो रहा (थ) ; *सत्ता में जो स्थापित हो रहा है, वही सत्ता के लिये अर्थ है।*
आन	सत्ता (आ) का पौरुष (न)।
आपा	**अपना अस्तित्व, बड़ी बहन** = सत्ता (आ) में अनुमोदन की सत्ता (पा) ; *दूसरी सत्ता जो सत्ता को अनुमोदन प्रदान करें।*
आर	**लोहा, पीतल, सख्त** = सत्ता (आ) में अंगीकृत एकाग्रता {सघनता} (र) ; *सत्ता को द्रव्यात्मक एकाग्र करने से सघनता आती है।*
आलिंगन	सत्ता (आ) के प्रत्यक्ष अर्पित भावना (लि) में होती हुइ (ं) स्पष्ट (ग) अंगीकार करने के लिये उत्सुक (न) ; *अंगीकार करने की अर्पित भावना को स्पष्ट करती हुई उत्सुकता की क्रियान्विती है सत्ता को।*
आलू	सत्ता (आ) का अन्तःस्थित होता हुआ विस्तार (लू) ; *आलू जमीन के अन्दर विस्तारित होते हैं।*
आवेदन	सत्ता (आ) के इंगित छिपे सत् की (वे) प्रस्तुति को (द) अंगीकार उत्सुक (न) ; *सत्ता द्वारा जिस 'सत्' (आवेदन पत्र) को अंगीकार के लिये प्रस्तुत किया जाता है।*
आसन	सत्ता (आ) उपलब्ध (स) अंगीकरण करने के लिये उत्सुक (न) ; *सत्ता के (बैठने) लिये जो भी उपलब्ध है उसे अंगीकार करना।*

आहत	सत्ता (आ) में मृत्यु उन्मुख (ह) का प्रस्तुत उन्मुख (त) ; *सत्ता मृत्यु की तरफ प्रस्तुत उन्मुख है।*
इंतजाम	प्रत्यक्षात्मक (इ) होता हुआ (ं) भाव (त) का जीवन्तता (जा) होना (म) ; *प्रत्यक्ष होते हुए भाव में जीवन्तता का होना।*
इन्द्र	प्रत्यक्षात्मक अस्तित्व (इ) की पौरुषात्मक (ं) बाह्य प्रज्ञ (्र) प्रस्तुति (द) ; *ऐसी प्रस्तुति जो पौरूषात्मक प्रज्ञा से अस्तित्व को प्रत्यक्ष करता है।*
इंतजार	प्रत्यक्षात्मक (इ) अंगीकृत उत्सुकात्मक (ं) के भाव की (त) जीवन्तता (जा) में (र) ; *प्रत्यक्ष अंगीकृत करने के लिये उत्सुक भाव की जीवन्तता में रत।*
इच्छा	प्रत्यक्ष (इ) निरन्तर (च्) जीवन्त उन्मुख सीमितता (छा) ; *जो जीवन्तता विकसित नहीं हो पायी उसका निरन्तर प्रत्यक्ष।*
इतना	प्रत्यक्षात्मक (इ) प्रस्तुत हो रहा (त) करना (ना)।
इज़हार	प्रत्यक्षात्मक (इ) व्यक्त जीवन्तता (ज़्) की स्थूलता (हा) में एकाग्र (र) ; *स्थूलता में (भौतिक रूप से) व्यक्त जीवन्तता (बोलने) को प्रत्यक्ष किया जा रहा है।*
इज्या	**यज्ञ = देवपूजा** = प्रत्यक्षात्मक (इ) की जीवन्तात्मक (ज्) प्रत्यक्षता (या) ; *प्रत्यक्ष जीवन्तात्मकता (बल) को प्रत्यक्ष करना, देवपूजा से बल की प्राप्ति होती है।*
इष्ट	**चाहा हुआ** = प्रत्यक्षात्मक (इ) व्याप्तात्मक/चाहा हुआ (ष्) प्रवृत्त हो रहा (ट)। *व्याप्त/चाह जो प्रवृत्त हो रही है, उसे प्रत्यक्ष करना।*
ईंट	बाह्यप्रत्यक्ष को (ई) प्रवृत्त उत्सुक में (ं) प्रवृत हो रहा (ट) ; *ईंट मकान को धीरे धीरे बाह्यप्रत्यक्ष करने में प्रवृत्त रहती है।*
ईंधन	बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ (ई) प्रस्तुतोत्सुकात्मक् (ं) धारित (ध) की क्रिया (न) ; *प्रत्यक्ष होती हुई जलती हुई प्रस्तुत (क्रियात्मक) होने को उत्सुक धारित (ज्वलनशीलता) की क्रिया।*
ईमान	बाह्यप्रत्यक्ष (ई) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक सत्ता (मा) की क्रिया (न) ; *सत्ता में कुछ भी छिपा कर ना रखना।*
ईश्वर	बाह्यप्रत्यक्ष (ई) जीवन्त अहसासात्मक (श्) छिपा हुए सत् (व) में अंगीकृत रत (र) ; *जीवन्त का अहसास जिस छिपे हुऐ सत् से हो रहा है उसमें एकाग्र।*
उँ	**बच्चे का रोना** = अन्तःस्थित विषमता (उँ) ; *प्राप्त करने की इच्छा।*
उग्र	**तीव्र** = अन्तःस्थित सत् (उ) का बाह्य केन्द्रित (्र) क्रियात्मक स्पष्ट (ग)।

उगना	**उदय होना** = अन्तःस्थित सत् (उ) को भोगात्मक स्पष्ट (ग) करना (ना) ।
उस	परोक्षात्मक (उ) व्यक्त (स) ।
उचाट	**विरक्ति** = अन्तर्मुखिता (उ) को जीवन्त कर रहा (चा) प्रवृत्त उन्मुख (ट) ; *प्रवृत्त जो अन्तर्मुखिता को जीवन्त कर रही है।*
उजला	परोक्षात्मक (उ) जीवन्तता (ज) की उपलब्ध विस्तार (ला) ; *अन्तःस्थित से जीवन्तता का विस्तार हो रहा है। मैले पन का विलोम।*
उजाड़	अन्तःस्थित (उ) जीवन्तता (जा) बीत चुकी हुई (ड़) ; *(वह स्थान) जिसके अन्तः में कोई जीवन्तता बीत चुकी हो।*
उटज	**कुटी** = अन्तःस्थित (उ) प्रवृत्त हो रही (ट) जीवन्तता (ज) ; *प्रवृत्त हो रही जीवन्तता को अपने अन्दर छिपाया हुआ।*
उठना	अन्तःस्थित (उ) प्रवृत्त सीमित उन्मुख (ठ) करना (ना) ; *अन्तः स्थित प्रवृत्त (नींद) को सीमित उन्मुख (जगाना) करना।*
उत्तर	अन्तः (उ) से निरन्तर प्रस्तुत हो रहे में (त्त) अंगीकृतं एकाग्र (र) ; *अन्तः से जो निरन्तर प्रस्तुत हो रहा है उसमें संलिप्त।*
उत्थान	***उन्नति =*** अन्तर्मुखित (उ) प्रस्तुत उन्मुखत्व (त्) को स्थिर कर रही (था) क्रिया (न) ; *अन्तर्मुखित जो प्रस्तुत किया जा रहा है, उसे स्थापित करने की जो क्रिया है, वह उत्थान कहलाता है, बिना स्थापन के उत्थान नहीं हो सकता।*
उत्साह	अन्तःस्थित (उ) भावात्मक (त्) उपलब्धि की सत्ता (सा) का स्थूल (ह) ; *अन्तःस्थित भावात्मक उपलब्धता का स्थूल भाव उत्साह है।*
उत्पाद	अन्तः से (उ) प्रस्तुत हो रही आत्मक (त्) को अनुमोदक/अनुमोदन की सत्ता (पा) प्रस्तुति (द) ; *कारखाने के अन्तः से जो प्रस्तुत किया जा रहा है उसके अनुमोदनता की जो प्रस्तुति है, वह उत्पाद है।*
उदार	अन्तः से (उ) प्रस्तुतता (दा) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; *जिसका अन्तःकरण प्रस्तुत करने में संलिप्त हो।*
उदय	अन्तः से (उ) प्रस्तुति (द) का प्रत्यक्ष (य) ; *जो अन्दर स्थित है उसकी प्रस्तुति का प्रत्यक्ष, यह अन्तःस्थित का उदय है।*
उधार	अन्तः (उ) में धारणा (धा) का अंगीकृत एकाग्र (र) ; *अंगीकृत कर अन्तः में धारण कर लेना, लेकर अपने पास रख लेना।*

उपनिषद	अन्तःस्थित (उ) अनुमोदन (प) को अंगीकार करने के लिये प्रत्यक्ष उत्सुक (नि) कामना (ष) की प्रस्तुति (द) ; *अर्थात् जिज्ञासा का छिपा हुआ अनुमोदन।*
उपहार	अन्तःस्थित (उ) के अनुमोदन (प) के लिये स्थूल उपलब्धता (हा) में अंगीकृत एकाग्र (र)।
उलटना	अन्तर्गमित (उ) को उपलब्ध विस्तार (ल) में प्रवृत्त उन्मुख (ट) करना (ना) ; *विस्तार बहिर्गमित होता है, अतः अन्तर्गमित को बहिर्गमित करना उलटना ही है।*
उषा	अन्तःस्थित (उ) में व्याप्तता/कामेच्छता (षा)।
ऊँघ	निरन्तर अन्तर्मुखात्मक (ऊ) होता हुआ (ँ) घेराव (घ) ; *निरन्तर अन्तर्मुखित होता हुआ घेराव में।*
ऊँचा	अन्तर्गमित होता हुआ (ऊ) विषम (ँ) जीवन्ता अर्जन (चा) ; *विषमता (हीनता) में निरन्तर अन्तर्गमित (विकसित करते) करते रहने से जीवन्त अर्जन विशाल (ऊँचा) हो जाता है।*
ऊँधा	**उलटा = औंधा** = अन्तर्गमित होता हुआ (विपरीत) (ऊ) निरन्तर/विषम (ँ) धारणा (धा) ; *विषमता (विपरीत) में निरन्तर अन्तर्गमित (सीखते) करते रहने से धारणा उलटी हो जाती है।*
ऊजर	**उजला** = अन्तर्गमित होता हुआ (ऊ) ओजस् (ज) में एकाग्र (र) = **उजाड़** = अन्तर्विलीन (ऊ) ओजस् (ज) में एकाग्र (र)।
ऊपर	अन्तर्गमित होता हुआ (ऊ) अनुमोदन (प) में एकाग्र (र), *निरन्तर अन्तर्गमित अनुमोदन से सत्ता ऊँची/महान हो रही है।*
ऊर्ज	निरन्तर अन्तःस्थित हो रही (ऊ) स्वकेन्द्रित (ँ) शक्ति (ज)।
ऊसर	**जहां अन्न ना हो** = अन्तर्विलीन (ऊ) व्यक्त (स) में एकाग्र (र) ; *अन्न का व्यक्त जहां विलीनता में एकाग्र हो।*
ऋक्	अंगीकरणात्मक एकाग्र (ऋ) में चेतनात्मक (क्) ; *यहाँ चेतना ज्ञानात्मक है।*
ऋक्ष	**तारा** = अंगीकरणात्मक एकाग्र (ऋ) के योग्य (क्ष) ; *जिसे एकाग्रता से ही अंगीकृत किया जा सकता है।*
ऋजु	**सीधा = सरल** = अंगीकरणात्मक एकाग्र (ऋ) में ऊर्जिता का छिपाव (जु) ; *बिना ऊर्जा के अंगीकृत किया जाना।*

ऋत	**सत्य** = अंगीकरणात्मक एकाग्र (ऋ) में प्रस्तुत (त) ; *जो अंगीकृत होने के लिये प्रस्तुत है।*
ऋषि	अंगीकरणात्मक एकाग्र (ऋ) की प्रत्यक्ष व्याप्ति/का प्रत्यक्ष इच्छावेग (षि) ; *अंगीकरण करने का प्रत्यक्ष इच्छावेग।*
ऋषभ	अंगीकरणात्मक एकाग्र (ऋ) का व्याप्त/ इच्छावेग (ष) में स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; *अंगीकरण करने के लिये इच्छावेग में स्वच्छन्द अंगीकरण।*
ॠ	**स्मृति** = होती हुई अंगीकरणात्मक एकाग्र।
ऌ	विस्तारत्व/विहंगम होती विसर्जनात्मक (सत्ता)।
एक	इंगित दिशा में (ए) चेतना (क) ; *अर्थात् एक ही दिशा में चेतना।*
एकाग्र	इंगित दिशा में (ए) चेतनता (का) का निरन्तर स्पष्ट (ग्र) ;*चेतन यदि निरन्तर है तो यह एकाग्र है।*
ऍक्सपोज	इंगित सत् की दिशा में (ए) चेतनात्मक (क्) व्यक्त (स) के अनुमोदन की दिशा में (पो) ओजस् (ज) ; *सत् की दिशा में ओजस् उपलब्ध है अनुमोदन के लिये जो चेतन व्यक्त कर रहा है।*
ऍतद्	**वह** = इंगित सत् की दिशा में (ए) प्रस्तुत हो रही (त) प्रस्तुति (द)।
एतबार	इंगित सत् की दिशा में (ए) प्रस्तुत हो रहा (त) बन्धित/सुरक्षित सत्ता (बा) में एकाग्र (र) ; *सुरक्षा/बन्धन देने में एकाग्र सत्ता की दिशा में प्रस्तुत–उन्मुख जो हमे सुरक्षा देने में एकाग्र हो उसी दिशा में हमारा एतबार होता है।*
एता	***इतना*** = इंगित सत् की दिशा में (ए) प्रस्तुत कर रहा।
एवज	इंगित सत् की दिशा में (ए) छिपा सत् (व) का जीवन्त अर्जित (ज) ; *सत् के छिपाव केकारण जीवन्त अर्जित हो रहा है, अर्थात् सत् के छिपाव के एवज में।*
एहसान	**कृतज्ञता** = इंगित दिशा में (ए) स्थूल उपलब्धता (ह) के व्यक्त की सत्ता (सा) की क्रिया (न) ; *इंगित स्थूल उपलब्ध के लिये व्यक्त करने की क्रिया।*
ऐं	**आश्चर्यजनक** = सत् के प्रत्यक्ष (ऐ) में कामनोत्सुक (ं)
ऐंचना	**खींचना** = सत् के प्रत्यक्ष (ऐ) में जीवन्त उत्सुक (ञ्) जीवन्त हो रही (च) करना (ना) ; *जीवन्त करने के लिये अर्जित करना अर्थात् चलाने के लिये खींचना।*
ऐक्ट	सत् के प्रत्यक्ष (ऐ) में चेतनात्मक/स्पष्टोन्मुखात्मक (क्) प्रवृत्त हो रहा (ट) ;

	*ऐक्ट **"कानून**–ज्ञानात्मक", **'क्रिया**–क्रियात्मक' स्पष्टता की तरफ प्रवृत्त उन्मुख प्रत्यक्ष है, कानून/क्रिया को स्पष्ट करने वाला।*
ऐजन	**वैसा ही** = सत् के प्रत्यक्ष (ऐ) अस्पष्ट को ही (ज) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *सत् का प्रत्यक्ष चाहे अस्पष्टत हो, उसे "वैसा ही" अंगीकृत करने की उत्सुकता।*
ऐन	**सटीक** = सत् को प्रत्यक्ष (ऐ) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *जैसा भी प्रत्यक्ष है उसे "सटीक" मानना अंगीकृत करने के लिये।*
ऐसे	**इस प्रकार** =सत् के प्रत्यक्ष (ऐ) को इंगितदिशा में व्यक्त/उपलब्ध (से)
ऐल	***अधिकता*** = सत् के प्रत्यक्ष (ऐ) का उपलब्ध विस्तार (ल)।
ऐश	**आराम** = राख (Ash) = सत् का प्रत्यक्ष (ऐ) में ऊर्जित अहसास {आराम}/व्यतीत {राख} (श)।
ओ	**अस्तिव में छिपे हुए का सत्** = छिपे हुऐ सत् की दिशा में (ओ) ; *सत् की अप्रत्यक्ष दिशा से।*
ओंठ	छिपे हुऐ सत्/अन्तःस्थित सत् की (ओ) हो रही (ं) प्रवृत्त सीमितता (ठ) ; *ओंठ छिपे सत् की सीमा हैं, इसके बाद सत् छिपा नहीं रहता बाहर आ जाता है।*
ओक	**निवास स्थान** = अस्तित्व में छिपे हुऐ का सत् (ओ) चेतना (क) ; *चेतन छिपकर जहां अपना अस्तित्व रखता है।*
ओग	**चन्दा = कर** = सत् की अप्रत्यक्ष दिशा से (ओ) भोगात्मक पार्थिव स्पष्ट (ग)
ओज	सत् की अप्रत्यक्ष दिशा से (ओ) ओजस् (ज)।
ओट	सत् की छिपी हुई दिशा से (ओ) प्रवृत्त हो रहा (ट)।
ओद	**तर** = सत् की अप्रत्यक्ष दिशा से (ओ) समर्पण/प्रस्तुति (द) ; *अप्रत्यक्ष दिशा से समर्पण (जल) प्राप्त करना।*
ओधना	**बन्धन में फंसना** = सत् की अप्रत्यक्ष दिशा से (ओ) जमाव (ध) करना (ना) ; *जमाव अप्रत्यक्ष दिशा से हो रहा है।*
ओर	**दिशा = तरफ** = सत् की अप्रत्यक्ष दिशा से (ओ) अंगीकृत एकाग्र (र)
औंधा	**उलटा** = अस्तित्व में सत् के छिपाव (औ) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुकात्मक (ं) धारणा (धा) ; *सत् को छिपाने की उत्सुकता को धारण कर रखा हैं, अतः औंधा मुंह पड़ा है।*

और	**एवम्** = अस्तित्व में सत् के छिपाव (औ) में अंगीकृत एकाग्र (र) ; इंगित (ए) छिपे सत् (व) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुकात्मक (म्) ; *सत् छिपता जा रहा है और हम उसको एकाग्रित हो अंगीकृत करते जा रहे है तथा कह रहे है ''और'' लाओ।*
औषधी	अस्तित्व में सत् के छिपाव (औ) में व्याप्त इच्छा शक्ति (ष) का प्रत्यक्ष होता हुआ धारण (धी) ; *सत् का छिपाव बीमारी है व उसमें इच्छाशक्ति को धारित कर व्याप्त कराना औषधी है।*
यंत	**सारथी** = प्रत्यक्ष (य) को करता हुआ (ं) प्रस्तुत उन्मुख (त) ; *जो प्रत्यक्ष में प्रस्तुत उन्मुख रहता है।*
यंत्र	प्रत्यक्ष (य) करती हुई (ं) प्रकृति (त्र) ; *प्रकृति जिस साधन से प्रत्यक्ष होती है।*
यकता	**अद्वितीय** = प्रत्यक्ष (य) में चेतना (क) को प्रस्तुत कर रहा (ता); *यहाँ चेतना को ज्ञानात्मक व क्रियात्मक, दोनो ले सकते है।*
यक्ष	प्रत्यक्ष (य) के योग्य (क्ष)।
यतन	**प्रयत्न** = प्रत्यक्ष (य) की प्रस्तुतोन्मुख (त) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *प्रत्यक्ष की प्रस्तुतता का प्रयास करना।*
यति	**त्यागी** = प्रत्यक्ष (सत्य) (य) का बाह्यस्थित भाव (ति) ; *अन्तःस्थित (संग्रह) कुछ भी नहीं।*
यथा	**जिस तरह** = प्रत्यक्ष (सत्य) (य) का स्थिर भाव (था)।
यम	प्रत्यक्ष (सत्य) (य) का प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; *सत्य (प्रत्यक्ष प्रमाण) में प्रस्तुत रहना, नियम।*
यमन	**नियम से बांधना** = नियम (यम) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *नियम को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक, अर्थात् नियम में बन्धना।*
यमुना	प्रत्यक्ष (सत्य) (य) का अन्तर्गमित संग्रह (मु) करना (ना) ; *प्रज्ञ चेतना (कृष्ण) के उत्पन्न होते ही सत्य के अन्तर्गमित संग्रह की प्रवृत्ति उस प्रज्ञ चेतन को समर्पित होती है। यमुना द्वारा कृष्ण का चरण स्पर्श की प्राप्ति।*
यश	प्रत्यक्ष/सत्य (य) का ऊर्जित अहसास (श)।
याचक	प्रत्यक्ष सत्ता (या) की जीवन्त उन्मुख (च) चेतना (क) ; *जीवन्तता के लिये ज्ञानात्मक चेतना को प्रत्यक्ष करने वाली सत्ता।*

याचना	प्रत्यक्ष सत्ता (या) को जीवन्त उन्मुख (च) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (ना) ; *जीवन्तता के लिये* ''अंगीकृत करने के लिये उत्सुक'' *को प्रत्यक्ष करने वाली सत्ता।*
यातना	प्रत्यक्ष सत्ता (या) को समर्पित उन्मुख (त) करना (ना) ; *समर्पण कराने के लिये प्रत्यक्ष करने वाला।*
यातु	**आने वाला** = प्रत्यक्ष सत्ता (या) की अन्तर्गमित प्रस्तुत उन्मुख (तु) ; *प्रत्यक्ष सत्ता के अन्दर की तरफ आ रहा है।*
याद	प्रत्यक्ष सत्ता (या) में प्रस्तुति (द) ; *प्रत्यक्ष किये हुऐ में प्रस्तुत।*
यादु	**तरल** = प्रत्यक्ष सत्ता (या) की अन्तर्गमित प्रस्तुति (दु) ; *तरल पदार्थ सत्ता में अन्दर भी प्रस्तुत हो जाता है।*
युक्त	**संयुक्त** = अन्तः में प्रत्यक्ष (यु) में स्पष्ट हो रहा आत्मक (क्) भाव (त) ; *अन्तः में होने से सब संयुक्त हो रहे है।*
युक्ति	**उपाय** = अन्तःस्थित प्रत्यक्ष (यु) में प्रत्यक्षात्मक चेतनात्मक भाव (क्ति) ; *अन्तःस्थित जो प्रत्यक्षता है वह ज्ञानात्मक चेतन में प्रकट हो रही है।*
युद्ध	अन्तःस्थित प्रत्यक्ष सत् (यु) में धारणात्मक प्रस्तुति (द्ध) ; *युद्ध के मूल में धारणाओं का प्रस्तुतिकरण ही होता है।*
युवा	अन्तःस्थित प्रत्यक्ष सत् (यु) छिपी सत्ता (वा); *युवाओं की सत्ता में सत अन्दर छिपा रहता है।*
यूत	**मिलावट** = अन्तर्गमित होते हुऐ प्रत्यक्ष (यू) का स्पष्ट हो रहा (त) ; *मिलाने वाली वस्तु अन्दर जा रही है।*
यूप	**स्मृति स्तम्भ** = अन्तः में निरन्तर प्रत्यक्ष (यू) का अनुमोदन (प)।
योग	प्रत्यक्ष की दिशा में (यो) स्पष्ट (ग); *भोगात्मक स्पष्ट–जोड़ना, क्रियात्मक स्पष्ट–यौगिक क्रिया।*
योनि	प्रत्यक्ष की छिपी दिशा में (यो) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक रिक्तता का प्रत्यक्ष (नि)।
रंग	अंगीकृत एकाग्र (र) में स्पष्ट उत्सुक होती हुई (ं) स्पष्टता (ग); *जिस से चित्र में स्पष्टता आती है।*
रंक	अंगीकृत एकाग्र (र) हीनता का (ं) स्पष्ट-उन्मुख (क) ; *हीनता स्पष्ट होरही है।*

रंजन	**पित्त** = अंगीकृत एकाग्र (र) में जीवन्तता पैदा करने को उत्सुक होती हुई (ज्ं) जीवन्त (ज) क्रिया (न) ; *जो अंगीकृत किया हुआ है, उसे पचाने की क्रिया।*
रकम	अंगीकृत एकाग्र (र) की चेतना (क) होना (म) ; *रकम का अंगीकरण भोगात्मक चेतना पैदा करता है।*
रईस	**प्रतिष्ठित** = अंगीकृत एकाग्र (र) का बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ (ई) व्यक्त (स) ;*जो भोगात्मक अंगीकृत किया हुआ है उसका बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ व्यक्त।*
रक्त	अंगीकृत एकाग्र (र) का चेतनात्मक (क्) भाव (त) ; *जो नसों में अंगीकृत होकर क्रियात्मक चेतनता प्रदान करता है।*
रक्षक	अंगीकृत एकाग्र (र) के योग्य (क्ष) चेतना (क) ; *वह क्रियात्मक चेतना जो अंगीकरण की योग्यता रखती है। योग्यता होने से ऋषि का अंगीकरण (संरक्षण) प्राप्त हो जाता है।*
रखना	अंगीकृत एकाग्र (र) चेतन के लिये स्थाप उपलब्धता (ख) में अंगीकृत करना (ना), *भोगात्मक चेतन के लिये जो स्थान उपलब्ध है वहाँ अंगीकार कर एकाग्रित करना।*
रचना	अंगीकृत एकाग्र/प्रज्ञा को (र) जीवन्त उन्मुख (च) करना (ना) ; *जीवन्त–उन्मुखता (क्रियात्मक) को अंगीकृत करने में एकाग्र करना। यहाँ अंगीकृत भौतिक, वानस्पतिक व मानसिक तीनों होगें व तीनों के अर्थ तदानुसार ही होंगे।*
रज	अंगीकृत एकाग्र/प्रज्ञा में (र) जीवन्त (ज) ; *ऋषि जो अंगीकार कर रहा है, उसका जीवन्त।*
रजा	**मरजी** = अंगीकृत एकाग्र/प्रज्ञा (र) में जीवन्तता (जा) ; *प्रज्ञा के कारण जो जीवन्तता है वह आन्तरिक इच्छा (मरजी) के कारण है।*
रजिस्टर	अंगीकृत एकाग्र (र) के प्रत्यक्ष जीवन्त (जि) का व्यक्तात्मक (स्) प्रवृत्त हो रहे (ट) में एकाग्र (र) ; *एकाग्र प्रवृत्त होकर व्यक्त को जीवन्त करना, लिखकर व्यक्त को जीवन्त किया जा रहा है।*
रण	अंगीकृत एकाग्र/एकात्म (र) प्रवृत्तित होने की इच्छा (ण) ; *एकाग्रता के साथ प्रवृत्त होना एक चेष्ठा है।*
रत	अंगीकृत एकाग्र (र) में प्रस्तुत हो रहा (त), ; *प्रस्तुत हो रहे में जो एकाग्रता है*

	वह 'रत' भाव है, संलिप्तता है।
रब	**ईश्वर** = अंगीकृत एकाग्र/प्रज्ञा (र) का बन्धन/सुरक्षा (ब)।
रम	**रम जाना** = अंगीकृत एकाग्र (र) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म), *एकाग्र के अन्दर प्रस्तुत हो जाना।*
रव	**ध्वनि** = अंगीकृत एकाग्र /रत (र) में छिपा सत् (व) ; *ध्वनि की अंगीकृत में संदेश का सत् छिपा रहता है।*
रवि	अंगीकृत एकाग्र (र) के प्रत्यक्ष में छिपा सत् (वि) ; *छिपे हुऐ सत् को प्रत्यक्ष करनेमें एकाग्र, सूर्य भौतिक है तो छिपा हुआ सत् 'अन्धेरा' है, यदि मानसिक है तो छिपा हुआ सत् 'समस्या' है, जिसको 'प्रत्यक्ष' अर्थात् 'हल' करने का काम सूर्य का है।*
रसना	अंगीकृत एकाग्र (र) उपलब्ध (स) करना (ना); *एकाग्रित होकर अंगीकृत करने का अर्थ निरन्तरता है जो कि द्रव को अंगीकृत करनेका संकेत है।*
रहना	अंगीकृत एकाग्र (र) को स्थूल स्थान उपलब्ध (ह) करना (ना) ; *जहां स्थान उपलब्ध है वहां एकाग्रित करना।*
रहीम	**दयालु** = अंगीकृत एकाग्र (र) को बाह्यप्रत्यक्ष होती हुई स्थूल (ही) को प्रस्तुत होने के उत्सुक (म) ; *स्थूल अर्थात् "भौतिक सहायता" में प्रस्तुत होने की उत्सुकता में एकाग्र।*
राई	लघु सत्ता/अंगीकृत एकाग्रता (रा) की बाह्यमुखता (ई) ; *जो बाहर से लघु दिखाई देता हो।*
राग	एकात्म सत्ता (रा) का स्पष्ट (ग) ; *राग में स्वरों की सत्ता एकात्म होती है।*
राक्षस	"सुरक्षा देने वाली"/"बन्धित करने वाली" एकात्म सत्ता (रा) की योग्यता (क्ष) का व्यक्त (स) ; *रक्षा करने वाला। बन्धन करने वाला।*
राज	**राजा** = "सुरक्षा देने वाली"/"बन्धित करने वाली" एकात्म सत्ता (रा) का ओजस् (ज) ; सम्मोहन (रा) का ओजस् (ज)।
राज़	**गुप्त** = अंगीकृत एकाग्रता (रा) में व्यक्त जीवन्त (ज़) ; *जिस जीवन्त को अकेले में व्यक्त किया जा सकता हो।*
रात	अंगीकृत एकाग्रता (रा) का भाव (त) ; *सम्मोहित {अप्रकाशित} (रा) प्रस्तुत होरहा (त) {नींद}।*

राधा	अंगीकृत एकाग्रता (रा) में धारित सत्ता (धा) ; प्रज्ञा की सत्ता (रा) माया की सत्ता (धा), *राधा महामाया है।*
राम	अंगीकृत एकाग्रता (रा) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (म) ; एकाग्र सत्ता (रा) का होना (म) ; प्रज्ञावान् (रा) होना (म) ; प्रज्ञा की अस्ति (रा) का संग्रह (म)।
रास	अंगीकृत एकाग्रता (रा) का व्यक्त (स) ; *सम्मोहन (रा) का व्यक्त (स) ; ध्यानस्थ (रा) का व्यक्त (स); मनन प्रक्रिया, श्रीकृष्ण की रास लीला मनन् प्रक्रिया का ही संकेत है।*
राय	**सलाह** = अंगीकृत एकाग्रता (रा) के प्रत्यक्ष का सत् (य), *एकाग्रता में जो निर्णय प्रत्यक्ष हुआ उसका सत्।*
रावण	अंगीकृत एकाग्रता (रा) में छिपे हुऐ सत् (व) को स्थापन करने इच्छा होना (ण) ; *अपनी बात मनवाने की इच्छा।*
राह	अंगीकृत एकाग्रता (रा) को असत् में स्थान उपलब्धता (ह) ; *एकाग्रता में जो निर्णय प्रत्यक्ष हुआ, उसका स्थूल रूप; यहाँ राह का अर्थ मानसिक व भौतिक दोनों रूपों में लिया जा सकता है।*
राहु	**छिपा हुआ स्थान** = अंगीकृत एकाग्रता (रा) को असत् में छिपा स्थान उपलब्ध (ह) ; *जिसकी एकाग्रता असत् में छिपे हुऐ भाव को जानने की है। संचर प्रक्रिया।*
रिक्त	प्रत्यक्ष एकाग्र (रि) का स्पष्टोन्मुखात्मक (क्) भाव (त) ; *बहिर्गमन में एकाग्र की भोगात्मक स्पष्टता जिसके द्वारा प्रस्तुत होती है, उसे 'रिक्त' कहते हैं, अ–विस्तार को प्रत्यक्ष स्पष्ट करता हुआ भाव।*
रिग	**ऋक्** = प्रत्यक्ष प्रज्ञा/प्रत्यक्ष अंगीकृति (रि) की स्पष्टता (ग) ; एकाग्र अंगीकृतात्मक (ऋ) स्पष्टोन्मुखात्मक (क्), *प्रज्ञा के द्वारा जो ज्ञानात्मक की जा रही है।*
रिर्जव	प्रत्यक्ष अंगीकृत एकाग्र (रि) बल में (ज़्) छिपे हुऐ सत् के द्वारा (र्व) ; *छिपे हुऐ सत् (अलग से छिपाया हुआ) के द्वारा जो बल अंगीकृत हो रहा है अर्थात् आत्मविश्वास पैदा हो रहा है।*
रिप	**पृथ्वी** = प्रत्यक्ष अंगीकृत एकाग्र (रि) का अनुमोदन (प) ; *जो एकाग्र होकर निरन्तर आकाश से अनुमोदित हो रही है।*

रिपोर्ट	प्रत्यक्ष अंगीकृत एकाग्र (रि) को अनुमोदन की दिशा (पो) प्रवृत्त के द्वारा (र्ट) ; *प्रवृत्त के द्वारा जो "अनुमोदन की दिशा" ज्ञानात्मक प्रत्यक्ष हो रही है उसका अंगीकरण।*
रिसना	बहिर्गमित प्रवाह (रि) को व्यक्त (स) करना (ना)।
रिहा	बहिर्गमित प्रवाह (रि) असत् में स्थान उपलब्धता (हा);*सत्ता से बाहर निकलना।*
रीझ	बाह्यप्रत्यक्ष होती अंगीकृत एकाग्र (री) में अनियन्त्रित/ असंयमित ऊर्जता (झ) ; *बाह्यप्रत्यक्ष होती (सुन्दरता) को अंगीकृत एकाग्र (देखने) से जो असंयम होता है, वही रीझना कहलाता है।*
रीता	**खाली** = बहिर्गमित होते हुए प्रवाह (री) की प्रस्तुत उन्मुखता (ता) ; *बाहर की तरफ आने का अर्थ अन्दर से खाली है।*
रीत	**रस्म = रिवाज** = निरन्तर प्रत्यक्ष होती हुई अंगीकृति (री) प्रस्तुत हो रहा भाव (त) ; *जिसे हम निरन्तर अंगीकृत करते चले आ रहे हैं।*
रील	निरन्तर प्रत्यक्ष होती हुई अंगीकृति (री) उपलब्ध विस्तार (ल) ; *प्रत्यक्ष होती उपलब्ध विस्तार की प्राप्ति।*
रुकना	अवरोधित रत का/रत के छिपाव को (रु) स्पष्टोन्मुख (क) करना (ना)।
रुक्ष	**रूखा** = अवरोधित रत (रु) के योग्य (क्ष); शामिल नहीं होने के योग्य
रुख	अन्तर्मुखी रत (रु) का चेतन के लिये स्थान उपलब्धता (ख); *यहाँ चेतन क्रियात्मक हो तो 'गति' का रूख होगा, और यदि ज्ञानात्मक होगा तो 'विचार' का रूख होगा, यदि भोगात्मक होगा तो 'रूचि' का रूख होगा।*
रुचि	अन्तर्मुखी रत (रु) में प्रत्यक्ष ऊर्जस् हो रहा (चि);यहाँ ऊर्जस् भोगात्मक है।
रुद्र	अन्तःस्थित रत (रु) के द्वारा (द्र) प्रस्तुति (द)।
रूखा	अन्तर्मुखी होते हुऐ रत में (रू) चेतन विहीनता (खा) ; *ताजा ना होना अर्थात् चेतन विहीनता।*
रूप	निरन्तर अन्तर्गमित होते हुऐ अंगीकृत एकाग्र (रू) में अनुमोदन (प) ; *जिसका एकाग्रित होकर अन्तर्गमित अनुमोदन किया जा रहा है।*
रूम	***कमरा* = खाली जगह** = अन्तर्गमन अंगीकृत एकाग्र (रू) प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक में (म) ; *जो अपने अन्तः में स्थान प्रस्तुत करता है एकाग्र होने के लिये।*

रूह	**आत्मा** = अन्तर्विलीन अंगीकृत एकाग्र (रू) को असत् {देह} में स्थान उपलब्धता, (ह) ; *इस देह में जो अन्तःस्थित हो कर आत्मा प्रवेश करती है वही रूह है। इस देह में जो अन्तर्गमित हो, स्थित तथा विलीन हो वही रूह (आत्मा) है।*
रेख	इंगित दिशा को अंगीकृत एकाग्र (रे) में चेतन के लिये रिक्त स्थान (ख) ; *चेतन केवल इंगित दिशा में चल रहा है।*
रेट	***भाव*** = इंगित दिशा में अंगीकृत एकाग्र (रे) के लिये प्रवृत्त उन्मुखता (ट) ; *इंगित को अंगीकृत करने के लिये प्रवृत्त होना।*
रेल	इंगित दिशा में अंगीकृत एकाग्र (रे) का उपलब्ध विस्तार (ल)।
रैन	**रात्रि** = सत् के अंगीकृत एकाग्र में प्रत्यक्ष (रै) रिक्तता (न) ; *अंधेरा।*
रैसा	**कलह** = सत् के अंगीकृत एकाग्र में प्रत्यक्ष (रै) व्यक्त सत्ता (सा) ; *बहुत वक्ताओं को सुना जा रहा है।*
रोकना	अंगीकृत एकाग्र में छिपाव का सत् (रो) में चेतना (क) करना (ना)।
रोग	अंगीकृत एकाग्र में छिपाव का सत् (रो) की स्पष्टता (ग) ; *देह को छिपकर जिसने अंगीकृत किया हुआ है।*
रोचक	अंगीकृत एकाग्र की दिशा में (रो) जीवन्त हो रही (च) चेतना (क); *चेतना भोगात्मक है।*
रोज़	**गुलाब** = अंगीकृत एकाग्र की दिशा में (रो) व्यक्त जीवन्त (ज़)
रोप	**रस्सी** = छिपी अंगीकृत एकाग्र की दिशा से (रो) अंगीकरण- उन्मुख (प) ; *पकड़ कर लटकने के काम भी आती है।*
रोम	**बाल** = अंगीकृत एकाग्र की छिपी दिशा में (रो) में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक संग्रह (म) ; *रोम बहुत बारीक व छिपे हुऐ संग्रह के रूप में होते हैं।*
रोर	**शोर** = अंगीकृत एकाग्र में छिपाव का सत् (रो) में एकाग्र (र) ; *शोर में एकाग्रता छिप रही है।*
रौद्र	अस्तित्व में अंगीकृत एकाग्र का छिपाव (रौ) के द्वारा (द्र) प्रस्तुति (द) ; *एकाग्रता के छिपाव से विस्तारता प्रकट होती है, अतः अस्तित्व में जो विस्तारता (बहिर्गमिता) प्रकट है, उसकी प्रस्तुति।*
रौला	**हल्ला** = अस्तित्व में अंगीकृत एकाग्र का छिपाव (रौ) के उपलब्ध विस्तार की

	सत्ता (ला), *एकाग्रता के छिपाव से विस्तारता प्रकट होती है, अतः अस्तित्व में जो विस्तारता (बहिर्गमिता) है, उसकी विस्तारित सत्ता।*
लंक	उपलब्ध विस्तार (ल) का होता हुआ (ङ्) भोगात्मक चेतना (क)।
लंगर	उपलब्ध विस्तार (ल) की होती हुई (ं) स्पष्ट (ग) एकाग्र (र) ; *भोज/भोजन के लिये लंगर। यहाँ स्पष्ट भोगात्मक है।*
लंगर	उपलब्ध विस्तार (ल) रिक्तात्मक (ं) स्पष्ट (ग) में एकाग्र (र) ; *यहाँ रिक्तता क्रियात्मक है। अतः विस्तार में क्रियात्मक रिक्तता का स्पष्ट हो रहा है। जहाज को रोकने का लंगर।*
लम्बा	उपलब्ध विस्तार (ल) होती हुई (म्) बन्धित सत्ता (बा) ; *विस्तार होने में बन्धित सत्ता।*
लकड़ी	उपलब्ध विस्तार (ल) चेतन (क) बीत चुकी हुई की बाह्यप्रत्यक्षता (ड़ी), *पेड़ जो कि वानस्पतिक चेतन का विस्तार था, अब बीत चुका है।*
लक्ष्मी	उपलब्ध विस्तार (ल) में योग्यत्व (क्ष्) का बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक संग्रह (मी) ; *संग्रह केलिये उपलब्ध विस्तार के योग्य।*
लक्ष्य	विस्तार (ल) में योग्यत्व (क्ष्) का प्रत्यक्ष (य) ; *क्रिया योग्य विस्तार का प्रत्यक्ष।*
लघु	उपलब्ध विस्तार का (ल) अन्तःस्थित घेराव (घु) ; *विस्तार के सन्दर्भ में अन्त : में घिरा हुआ अर्थात् 'लघु'।*
लचक	उपलब्ध विस्तार (ल) ऊर्जित हो रही (च) चेतना (क) ; *उपलब्ध विस्तार में ऊर्जा के द्वारा हिलना–डुलना (चेतना) होना है।*
लज़ाना	अर्पित भावना (ल) की व्यक्त जीवन्तता (ज़ा) करना (ना) ; *जीवन्तता को अर्पित भाव के साथ व्यक्त करना।*
लता	उपलब्ध विस्तार (ल) प्रस्तुत कर रहा (ता)।
लप	**लपकने की क्रिया का भाव** = उपलब्ध विस्तार (ल) का अनुमोदन /अंगीकरण हो रहा (प)।
लपट	उपलब्ध विस्तार (ल) के अनुमोदित (प) में प्रवृत्त हो रहा (ट)।
लब	**होट** = उपलब्ध विस्तार अर्पित भावना (ल) का बन्धन (ब)।
लय	उपलब्ध विस्तार (ल) का प्रत्यक्ष (य) ; *ध्वनि के विस्तार का प्रत्यक्ष 'लय' है।*
लवण	उपलब्ध विस्तार (ल) में छिपे सत् (व) को प्रवृत्त करने की इच्छा (ण) ; *द्रव के घोल*

	में जो छिपा सत् है, लवण उसे प्रवृत्त कर क्रियाशील कर देता है।
लाइ	आग = उपलब्ध विस्तारित सत्ता (ला) का प्रत्यक्ष (इ)।
लाग	लगाव = अर्पित भावना सत्ता (ला) का बोध/स्पष्ट (ग) ; *एक–दूसरे से लगाव होना अर्पित भावना के कारण है।*
लात	**पैर** = उपलब्ध विस्तारित सत्ता (ला) में प्रस्तुत हो रहा (त) ।
लाद	**लादने की क्रिया** = उपलब्ध विस्तारित सत्ता (ला) की प्रस्तुति (द) ; *यहां विस्तार वजन का है जिसकी प्रस्तुति 'लादना' ही है।*
लाभ	उपलब्ध विस्तारित सत्ता (ला) का स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; *स्वच्छन्द अंगीकरण के द्वारा सत्ता (संग्रह की) विस्तारित होती है।*
लिंग	प्रत्यक्ष उपलब्ध विस्तार (लि) का स्पष्ट उत्सुक होता हुआ (ङ्) स्पष्ट (ग) ; *मैथुन प्रक्रिया में, यहाँ स्पष्ट भोगात्मक स्पष्ट है।*
लिखना	प्रत्यक्ष भावना की उपलब्धता (लि) में चेतन के लिये स्थान उपलब्धता (ख) करना (ना) ; *भावना को चेतन द्वारा विश्लेषित कर असत् (कागज) में स्थापित करना।*
लिपि	प्रत्यक्ष भावना की उपलब्धता (लि) का प्रत्यक्ष बन्धित अनुमोदन (पि) ; *अनुमोदित बद्ध करना। लिपी भावना को अनुमोदित कर आकृति में बांधने का काम है।*
लीक	**रेखा** = बाह्यप्रत्यक्ष होते हुए उपलब्ध विस्तार (ली) स्पष्ट हो रहा (क) ; *प्रत्यक्ष होते हुऐ विस्तार उपलब्ध हो रहा है।*
लीग	बाह्यप्रत्यक्ष होते हुए उपलब्ध विस्तार (ली) की स्पष्टता (ग) ; *जिस सीमा तक विस्तार है, उसकी स्पष्टता। यहाँ स्पष्टता **वैचारिक** होने से ग्रुप बनते हैं व **भौतिक** होने से समुद्र की सीमा का माप होता है।*
लीला	बाह्यप्रत्यक्ष होते हुए अर्पित भावना (ली) की विस्तारित सता (ला) ; *विस्तारित सत्ता में अर्पण को प्रत्यक्ष करते रहना।*
लुगाई	**औरत** = अन्तःस्थित अर्पित भावना (लु) की स्पष्ट सत्ता (गा) बाह्य– प्रत्यक्ष होती हुई (ई) ; *औरत जो अन्तः से अर्पित भावना की प्रत्यक्ष सत्ता है।*
लुटिया	**छोटा लोटा** = अन्तःस्थित उपलब्ध विस्तार (लु) में बाह्यस्थित प्रवृत्त हो रही (टि) प्रत्यक्षता (या) ; *अन्दर की तरफ जिसका विस्तार हो।*
लुप्त	**छिपा हुआ** = छिपे उपलब्ध विस्तार (लु) का अनुमोदनात्मक (प्) भाव (त) ;

	छिपाव को मानने का भाव।
लूक	**लपट = तपस** = अन्तर्गमित होते हुऐ भाव उपलब्धता (लू) का (भोगात्मक) (क) ; *तपस अन्दर तक महसूस होती है।*
लूट	अन्तर्गमित भाव (द्रव्यात्मक) उपलब्धता (लू) में प्रवृत्त उन्मुख (ट) ; *अन्दर में सम्पत्ति बटोरते रहने में प्रवृत्त।*
लेइ	**तक = पर्यन्त** = इंगित दिशा में उपलब्ध विस्तार (ले) का प्रत्यक्ष (इ); *जहाँ तक विस्तार उपलब्ध है वहाँ तक।*
लेख	इंगित दिशा में भाव उपलब्धता (ले) में चेतन के लिये स्थान उपलब्धता (ख) ; *इंगित भाव को चेतन द्वारा विश्लेषित कर असत् (कागज) में स्थापित करना।*
लेज	**रस्सी** = इंगित दिशा में उपलब्ध विस्तार (ले) का बल (ज) ; *दिखाई देती दिशा में बल के साथ जो विस्तारित है वही रस्सी है।*
लेट	**देर = लेटना** = इंगित दिशा में अर्पित भावना (ले) में प्रवृत्त हो रहा (ट) ; *स्वयम् को अर्पित करने के भावना में प्रवृत्त होना अर्थात् आराम करना है। अर्पण यदि भावना की जगह समय का है तो अंग्रेजी का लेट है।*
लेना	इंगित दिशा में भाव उपलब्धता को (ले) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुकता (ना) ; उपलब्ध *भाव को प्राप्त करने की इच्छा।*
लेप	इंगित दिशा में भाव उपलब्धता (ले) का अनुमोदन (प) ; *दिखाई देते स्थान पर भाव (लिपाइ) को उपलब्ध कराने की स्वीकृति।*
लैस	सत् में भाव उपलब्धता के प्रत्यक्ष (लै) उपलब्ध/व्यक्त/ दर्शनीय (स) ; *सत् में साधन का भाव उपलब्ध हो रहा है, उसका व्यक्त।*
लेन	**लकीर** = इंगित दिशा में उपलब्ध विस्तार (लै) को अंगीकार करने के लिये उत्सुक (न) ; *विस्तार एक ही दिशा में है।*
लो	**किसी को देना** = भाव उपलब्धता की दिशा (लो) ।
लोक	उपलब्ध विस्तार की दिशा में (लो) चेतना (क) ; *जहां तक क्रियात्मक चेतन को विस्तार उपलब्ध है।*
लोच	अर्पित भावना की छिपी दिशा (लो) में ऊर्जित हो रहा (च) ; *अर्पित भावना के कारण बल लोच उत्पन्न कर रहा है।*
लोप	अर्पित भावना के छिपी दिशा में (लो) अनुमोदन (प) ; *छिपी दिशा में अर्पित*

	होता हुआ, लोप होना।
लोभ	उपलब्ध विस्तार के छिपी दिशा में (लो) स्वच्छन्द अंगीकरण (भ) ; *विस्तार के लिये किसी भी दिशा से वस्तु को स्वीकार कर लेना।*
लौ	**लगन = चाह** = सत् के अर्पित भावना में छिपा हुआ (लौ) ; *अन्दर जो समर्पण छिपा हुआ है।*
लौज	**बादाम** = सत् के अर्पित भावना में छिपा हुआ (लौ) ओजस् (ज) ; *सत् के अन्दर जो जीवन्तता छिपी हुई है।*
वंक	**टेढ़ा** = छिपे सत् (व) का होता हुआ (ङ्) स्पष्ट–उन्मुख (क) ; *स्पष्ट–उन्मुखता में छिपाव हो रहा है अर्थात् सीधा नहीं टेढा है जैसे नदी का मोड़।*
वंदना	**स्तुति** = छिपे सत् (व) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुकात्मक (न्) प्रस्तुति (द) करना (ना) ; *गुण बोध (देव) को प्राप्त करने के लिये प्रस्तुति करना।*
वंश	छिपे सत् {गुण सूत्र} (व) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुकात्मक (न्) जीवन्त उपलब्धता (श) ; *वो जीवन्तता जो गुणसूत्रों को अंगीकृत करती है।*
वकालत	छिपे सत् {तर्क} (व) को स्पष्ट कर रहे (का) का उपलब्ध विस्तारित (ल) भाव (त)।
वक्त	छिपे सत् {काल} (व) का चेतनात्मक (भोगात्मक) (क्) भाव (त)।
वज्र	छिपे सत् {वजन} (व) का बाह्य केन्द्रित (ज्र्) बल (ज)।
वत्	**समान = तुल्य** = छिपे सत् (व) का भावात्मक (त्) ; *छिपे सत् के अनुसार।*
वध	छिपे सत् {सत् समाप्ति} (व) में धारित (ध) ; *सत् की समाप्ति को धारित कर देना, हत्या।*
वन	छिपे सत् (व) को अंगीकरण करने के लिये उत्सुक (न) ; *जहां छिपा जा सकता है।*
वर	छिपे सत् {गुण सूत्र} (व) का अंगीकृत एकाग्र (र) ; *वर छिपे गुण सूत्र है तो वधु छिपी हुई अन्तः धारणा है, दोनों के मिलने से गुण सूत्र के अनुसार धारणा स्थापित होकर सत्ता बनाती है।*
वर्ण	छिपे सत् {कर्म सूत्र} (व) के द्वारा (र्) प्रवृत्तित होने की इच्छा (ण) ; *कर्म बन्धन के अनुसार प्रवृत्त होने को उत्सुक।*
वर्तन	छिपे सत् {स्थान} (व) के भावों के द्वारा (र्त) क्रिया (न) ; *वर्तन के अन्दर जो*

	स्थान होता है, उन्हीं भावों के अनुसार उसकी क्रिया होती है
वलय	घेरा = छिपे सत् (व) के उपलब्ध विस्तार (ल) का प्रत्यक्ष (य) ; *सत् जो छिपा है, परन्तु उसका प्रत्यक्ष विस्तार ले रहा है जैसे इन्द्रधनुष में केन्द्र छिपा रहता है व विस्तार प्रत्यक्ष होता है।*
वश	सक्षमता = अन्तःस्थित सत् (व) की जीवन्त अनुभूति (श) ; *अन्तः से ही जीवन्तता की अनुभूति हो रही है।*
वसीयत	छिपे सत् (व) का बाह्यप्रत्यक्ष होते हुऐ व्यक्त (सी) का प्रत्यक्ष (य) भाव (त) *बाह्यप्रत्यक्ष होने के लिये जो छिपा हुआ है, उसका प्रत्यक्ष भाव।*
वाँ	**उस जगह** = छिपी सत्ता (वा) की कामनात्मकता (ाँ)।
वाइन	**मदिरा** = छिपी सत्ता (वा) के प्रत्यक्षात्मक (इ) क्रिया (न) ; *छिपी सत्ता अर्थात् नशे की सत्ता को प्रत्यक्ष करना।*
वाक्	छिपी सत्ता की (वा) स्पष्ट उन्मुखात्मक (क्); *सत्ता में जो स्पष्टोन्मुखता है वह वैविध्यता के कारण है।*
वाच्	वाणी = छिपी सत्ता की (वा) जीवन्त उन्मुखात्मक (च्) ; *सत्ता में छिपी हुई बात जब जीवन्त होता है तो वाणी प्रकट होती है।*
वाट	**मार्ग = अंग्रेजी में "क्या"** = छिपी (अनिश्चित) सत्ता (वा) अंग्रेजी में 'ट' व 'त' समान होते होने से प्रवृत्त {मार्ग}/प्रस्तुत {क्या} हो रही (ट)।
वाद	छिपी हुई सत्ता की (वा) प्रस्तुति (द)।
वार् (अं)	**जंग** = अनिश्चित सत्ता (वा) में एकात्मता (र) ; *जंग में यह अनिश्चित रहता है कि सत्ता पर ऐकात्म किसका होगा।*
वाली	**सुग्रीव का भाई** = छिपी सत्ता (वा) का प्रत्यक्ष होता हुआ विस्तार (ली) ; वाली जिससे भी युद्ध करना था उसका बल दुगना हो जाता था।
वाष्प	छिपी सत्ता (वा) का व्याप्तात्मक (ष्) अनुमोदन (प) ; *वाष्प की सत्ता व्याप्त होकर प्रत्येक दिशा में अनुमोदित होती है।*
विंदु	छिपे सत् में प्रत्यक्ष (वि) की रिक्तात्मक (न्) अन्तःस्थित प्रस्तुति (दु) ; *विंदु के अन्तःस्थित मं रिक्तात्मक प्रस्तुति होने से सत् भाव शून्य होता है, मात्र अस्तित्व भाव होता है।*
विकट	प्रत्यक्ष अनिश्चितता (वि) जो चेतन (क) को प्रवृत्त हो रही (ट) ; *सोचने को*

	मजबूर हैं, कि क्या करें।
विकर्षण	**आकर्षण** = छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) में चेतना की (क) इच्छा शक्ति द्वारा (र्ष) प्रवृत्तित होने की इच्छा (ण) ; *छिपे हुऐ खिंचवा का बल, चेतना की इच्छा शक्ति द्वारा जो प्रवृत्त हो रहा है, वह खिंचवा का बल है, जो कि छिपे हुऐ सत् में प्रवृत्त हो रहा है।*
विकास	छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) में चेतनता (का) उपलब्ध (स) ; *छिपे (किसी भी) सत् को जब चेतनता उपलब्ध होती है तो विकास होता है।*
विग्रह	**प्रतिमा** = छिपे सत् के प्रत्यक्ष के (वि) द्वारा स्पष्ट (ग्र) स्थूलता (ह) ; *छिपे सत् के प्रत्यक्ष को स्थूल के द्वारा स्पष्ट करना।*
विचार	छिपे सत के प्रत्यक्ष (वि) जीवन्त कर रहे (चा) में एकाग्र (र) ; *छिपे सत् को गुणात्मक जीवन्त करते हुऐ एकाग्रता में प्रत्यक्ष करना 'विचार' है।*
विद्या	छिपे सत् के प्रत्यक्ष में (वि) धारणात्मक प्रस्तुति (द्य) की सत्ता (ा) ; *ज्ञान को प्रत्यक्ष करके धारित करना।*
वितरण	छिपे सत् के प्रत्यक्ष में (वि) प्रस्तुत हो रही (त) एकाग्रता से (र) में प्रवृत्त होने की इच्छा (ण) ; *छिपे सत् को एकाग्र प्रस्तुत करने के लिये (बांटने के लिये) प्रवृत्त होना।*
वितान	फैलाव = छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) को प्रस्तुत कर रही (ता) अंगीकृत करने की उत्सुकता (न) ; *छिपे सत् के प्रत्यक्ष को फैलाव के द्वारा ही प्रस्तुत कर अंगीकृत किया जाता है।*
विज्ञान	छिपा सत् के प्रत्यक्ष (वि) की प्रकट सत्ता (ज्ञा) को अंगीकृत उत्सुक (न), *प्रकट सत्ता को जानने की इच्छा के द्वारा छिपे सत् को प्रत्यक्ष करता है।*
विप्र	बाह्मण = छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) का बाह्य केन्द्रित (ा) अनुमोदन (प) ; *जो प्रज्ञात्मक अनुमोदन के द्वारा छिपे सत् को प्रत्यक्ष करता है।*
विभु	***महान्*** = छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) का अन्तःस्थित स्वच्छन्द अंगीकरण (भु) ; *जो बिना किसी बन्धन के छिपे सत् की प्रत्यक्षता को अन्तः में अंगीकृत करता है।*
विरह	**वियोग** = छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) में एकाग्र (र) को असत् में स्थान उपलब्धता/स्थूल भाव (ह) ; *जो छिपा है, उसे प्रत्यक्ष करने में एकाग्र होने का भाव असत् (भौतिक) में होना।*

विराम	**रुकना** = छिपे सत् के प्रत्यक्ष में (वि) में ध्यान (रा) का होना (म) ; *छिपा सत् अर्थात् रोकने में ध्यान होना।*
विलास	छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) के उपलब्ध विस्तारित सत्ता (ला) की उपलब्धि व्यक्त (स) ; *छिपा सत् अर्थात् मनोरंजन के प्रत्यक्ष में विस्तार की उपलब्धि।*
विलुप्त	छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) में छिपे भाव उपलब्धता (लु) का अनुमोदनात्मक (प्) भाव (त) ; *छिपे सत् को प्रत्यक्ष करने में भाव के छिपाव का ही अनुमोदन हो रहा है, अर्थात् सत् विलुप्त हो गया।*
विवेक	छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) में इंगित छिपे सत् (वे) की चेतना (क) ; *प्रत्यक्ष करने में जो प्रत्यक्ष इंगित दिशा में ज्ञानात्मक चेतना को रखता है।*
विष	छिपे सत् के प्रत्यक्ष (वि) की व्याप्तता (ष) ;*सत् का छिपाव व्याप्त हो रहा है*
वीज	**मूल कारण** = बाह्यप्रत्यक्ष में छिपे सत् (वी) का ओजस् (ज) ; *बाह्यप्रत्यक्ष होते छिपे सत् का ओजस् 'सत्व' है जो कि सबका मूल कारण है।*
वीजन	**दिखाई देना** = छिपे सत् {छिपे दृश्य} के बाह्यप्रत्यक्ष (वी) के जीवन्त को (ज) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (न) ; *बाह्यप्रत्यक्ष छिपे सत् में से ज्ञानात्मक जीवन्त अंगीकृत करने के लिये उत्सुक होना।*
वीणा	छिपे सत् {संगीत} के बाह्यप्रत्यक्ष (वी) को प्रवृत्तित करने की इच्छा (णा) ; *बाह्यप्रत्यक्ष होते छिपे सत् (संगीत) को प्रवृत्तित करने की इच्छा।*
वीत	**समाप्त** = छिपे सत् {काल} का बाह्यप्रत्यक्ष (वी) प्रस्तुत–उन्मुख (त), *बाह्यप्रत्यक्ष होते छिपे सत् को प्रस्तुत करना, समाप्त को प्रस्तुत करना।*
वीर	छिपे सत् {शोर्य} के बाह्यप्रत्यक्ष (वी) में एकाग्र अंगीकरण (र), *बाह्यप्रत्यक्ष होती शोर्यता में एकाग्र।*
वीर्य	बाह्यप्रत्यक्ष में छिपे सत् {गुण सूत्र} (वी) का स्वप्राज्ञत (ी) प्रत्यक्ष सत् (य) ; *बाह्यप्रत्यक्ष करने के लिये छिपे सत् (गुण सूत्र) का प्रज्ञित रूप से प्रत्यक्ष होता होना।*
वृक्ष	अन्तः में छिपे सत् के द्वारा (वृ) योग्यता (क्ष) ; *वृक्ष की योग्यता उसके छिपे सत् के द्वारा प्रवृत्तित है।*
वेग	छिपे सत् इंगित दिशा में (वे) की स्पष्टता (ग) ; *छिपा सत् (किसी भी) की इंगित दिशा में क्रियात्मक स्पष्टता।*

वेद	छिपे सत् की दिशा में (वे) की प्रस्तुति (द)।
वेध	**वेधना** = छिपे सत् की इंगित दिशा में (वे) का जमाव (ध) ; *निशाना लगाना।*
वैध	सत् के छिपे सत् में प्रत्यक्ष (वै) की धारणा (ध) ; *सत् का जो छिपा सत् है उसके प्रत्यक्ष द्वारा रोग की धारणा बनाने वाला।*

9. 0 THE THEORY OF PHONOSEMANTICS

9.1 INTRODUCTION

There are number of energies which are being utilized by nature and every energy has a distinctive utility. Sound is one such energy. If sound had no utility, nature would have vanished long ago as the 'no utility' existence cannot exist. The Universal Theory of Existence states that the utility of sound is to transmit messages from one entity to another irrespective of whether a message is Physical, Biological or Psychological.

The existence of sound is self proven with the existence of the universe. Although, we cannot decipher what the physical objects are talking to one another, the flow of sound cannot be denied. Every sound has some specific meaning, and the message is made according to the specific meanings only. There is no difference if the sound is being produced in India or in America, today or tomorrow.

Take the example of a water drop falling on the floor or a surface. At the time of hitting the floor/surface, two functions are being performed

simultaneously. These functions are denoted by two different sounds. The first sound is 'ta' (move on, activating) indicating the water molecules are 'activating to move apart' and the second sound is 'p' (towards acquiring, accepting) indicating that the floor or the surface is accommodating the water. The composite sound is 'tap'. The stress towards 'ta' denotes greater 'move' and stress towards 'p' denotes greater 'accommodation'.

The above example belongs to the physical world; however this fundamental is applicable to the biological and psychological world as well. Applying The Universal Theory, we can easily presume that the sound produced by any human being is repre-senting meanings of all the three worlds. Without meaning, the sound cannot exist. Every sound has the same meaning for different speakers from all over the universe.

9.2 LIMITATIONS OF THE NATURAL PRONUNCIATION

When the nature pronounces any sound physically, biologically, and psychologically, it pronounces within its natural phonos-emantics. The un-natural (fabricated) sound may not have any useful meaning. This is the first limitation of the Phonosemantics Science.

Every object has unlimited views, but to define the same, we can explain it within the limit only. For example, an object which is 'dark' in colour as well as 'High' in length can be called either 'dark' or 'long'. Although both denotations are correct, 'dark' and 'long' are not the same things. In this way, there are two pronunciations for single object. Thus an object having different qualities can be pronounced in different way. Here the word 'object' is always applicable to every existence.

The vocal organs for all the human beings differ. Although Indians can pronounce the sound 'r-r', the English cannot. Similarly many vowels used by the English cannot be prono-unced by Indians. This is the third limitation in Phonosemantics.

The forth limitation is the geographical and social situation. While an Indian, calls his father as 'PITĀ', the English as **'father'**. The 'PITĀ' denotes the "towards conditional protection (PI) offerings (TĀ)**"**, that is 'offering protection with conditions'. In the case of English, the **'father'** denotes "unconditional protection **(fa),** offered **(the),** involve **(r)".** That is "involve in offering the un-conditional protection". This difference is due to different social and cultural values, as there are more responsibilities and boundaries of an Indian son towards the family when compared to those of the English son.

9.3 SCIENCE OF PHONOSEMANTIC AND REALITY

There is difference between 'truth' and 'reality'. Whatever we visualize, is made of two components. **First** – The clarity of the view supported by logic and Second – the liveliness of the view supported by the belief. The `belief' filter the incoming view and the supported existent is allowed to enter in the logical frame. The support provides the strength to the visible. So we can visualize only what our beliefs allow to us. In this way, what we are visualizing is **truth** but cannot be taken as **reality**.

How to achieve the reality? The answer of this question is not easy. There are number of theories to crystallize the process of achieving the reality. But still none is universally approved theory. The Indian philosophy has a separate branch of this subject called 'NYĀY'**.** I have

adopted my own process. The readers can justify the process with their own intelligence.

Listening to a sound with deep concentration, trying to surrender our 'ego and stimulus mind', we can get some hints. Applying these hints at different places of practical application, we can achieve some idea. Even then, we cannot treat this 'idea' as 'reality', because the raw material of our own existence consists of 'ego and stimulus mind'. Try not to believe this. Whatever we had visualized till today may be wrong, try to keep this thought always with you. This may help you to create new ideas.

A time comes, when we feel that we are losing our intelligence and moving towards illusions. At that time we should start to believe ourselves. A habit of 'Not believing on self' prevents us from writing anything. In that situation ask your 'existence' to please write some - thing. That is, make yourself feel that 'I' is not doing, but the existence made by the creature is doing something ('I' is the ego and stimulus mind).

9.4 INTERNATIONAL PHONETICS

The most popular language in the world has a great set back of not pronouncing as it spells. /c/denotes 'Center' as well as 'Call'. To save the world from these types of problems, **The International Phonetic Association** has developed a pattern of writing the pronunciation. All languages whether Hindi, German, or English; have a common platform to read the language with their own pronunciation.

Phonetics is not based on any physical, biological or psychological phenomena; it's simply based on as how a word is pronounced. Under

the circumstances, phonetics does not have a direct relationship with The Universal Theory. Even then, it supports The Theory to large extent.

It is to be understood that the pronunciation varies from place to place due to differences in social values and geographical situations. Hence, the same natural language is pronounced differently at different places. 'The International Phonetics Association' has made a common pronunciation system, but it is neither complete nor does it represent the actual pronunciation. It would have been a better, if Hindi would have been developed as an international language as Hindi has all the consonants and nearly all the vowels, scientifically placed. Although there are certain vowels, which are not included in the language, they can be adopted as required. Under the circumstances, we also have adopted the IPA to symbolize the natural pronunciations for our purpose.

Although the Hindi is very near to the IPA, but there are many vowels in IPA which are made by different composition, And which perhaps the Indian (myself) cannot even pronounce. I have tried to visualize these vowels in Hindi format and explain the meaning there under. At many places hit & trial is also used.

10.0 THE UNIVERSAL THEORY OF EXISTENCE

10.1 INTRODUCTION

All the biological bodies have a 'dna'. This 'dna' forms as well as controls all the functions of the body. Imagine, the whole universe is a body, and there is some basic 'dna' (Universal Theory), which is the root cause as well as the controller of the universe. Our universe includes everything, both known and unknown.

How this universe evolved? Is 'big bang' is correct? What are the root scientific reasons working in the universe? What is the cause of relativity? What is string? What is electromagnetic wave? What is perception? What are the reasons of phobias? How do we listen? What is sex? How does the intelligence work? There are infinite numbers of questions and all must have a common answer. This common answer is **'The Universal Theory of Existence'.** The sole theory governs all the root causes of the universe.

Long before, Einstein had a dream. He was trying to establish a 'unified theory'. But Einstein was working with the physical science only. The present theory is beyond the imagination of Einstein, and clarifies all the aspects of the universe including the physical, biological and psychological.

'The Universal Theory of Existence' claims that 'all existence has two basic constituents. We call them the 'star' and the 'hole'. 'Star' always offers the existent (Property-movement-substance) and the 'hole' always accepts the same. As soon as the existent is accepted by the 'hole', the 'existence' evokes. 'The limitations of 'star' and the 'hole' signify the difference in the existence.

The 'star' and 'hole' disintegrate further in two ingredients. One is 'bright', used for conscious and second is 'dark' used for power. Thus we get five basic motivating reasons, on which the existence lies. We cannot go beyond.

The whole existence is covered by a basic 'reason' called the 'occupier'. It signifies the relationship of existence with the lower world. Explaining the lower world, we can say that the physical world is lower relative to the biological world and the biological world is lower relative to the psychological world. There may be intellectual world, super intellectual world and so on. The universe is unlimited may have infinite number of worlds.

There must be some motivating reason (occupier), which connects the two worlds. and that reason must be the same for all the worlds bounded with each other.

The model of the existence is explaining the five motivating reasons, which motivates not only to connect the successive worlds but also to

establish its own existence. As the theory is 'The Universal Theory of Existence', and hence the reasons must always be the same for all the worlds, yes, after taking the reference in account for.

10.2 MOTIVATING REASONS

These motivating reasons are as follows {refer the universal model of existence page 167,168}:-

1. **Support** (ĀNAṄDA) {dark hole}…………...refer 14.5.5
2. **Analyzer** (VIJÑĀNA) {bright hole}………...refer 14.5.7
3. **Activator** (MANA) {activator}…………..refer 14.5.8
4. **Vibrations** (PRĀṆA) {dark star}………..…refer 14.5.6
5. **Variations** (VĀKA) {bright star}………….refer 14.5.4

10.3 EXPRESSING IMAGE

Due to the 'activator (MAN)', all other four reasons interact with each other and form five vectors, which express the image of existence:-

10.3.1 Acquire-ability (ṚṢI) {hole}

It forms due to interaction between 'the support (ĀNAṄDA) {dark hole}' and 'the analyzer ((VIJÑĀNA)) {bright hole}'. It allows perceiving the substance from the 'star' under its own limitations. These limitations are called as 'the formulation (identity, NĀMA)' of the image. ……………………....*refer14.5.18*

10.3.2 Offer-ability (GAṄDHARVA) {dark star}

It forms due to the interaction between 'the vibrations (PRĀṆA) {dark star}' and 'the variations' (VĀKA) {bright star}'. It offers the substance to the 'hole' with own limitations. These limitations are called 'the available (appearance, RŪPA)' of the image. ……….refer14.5.19

10.3.3 Liveliness-ability (PITṚ) {dark}

It forms due to interaction between 'the support (ĀNAṄDA) {dark hole}' and 'the vibrations' (PRĀṆA) {dark star}'. This 'dark' can be defined as the 'power' (controlled) of the image. *…refer14.5.17*

10.3.4 Analyzing-ability (DEVA) {bright}

It forms due to interaction between 'the analyzer (VIJÑĀNA) {bright hole}' and 'the variations (VĀKA) {bright star}'. This 'bright' can be defined as the 'the analyzed (explanation)' of the image. *……refer 14.5. 16*.

10.3.5 Stimuli (ASUR) {occupier}

It forms due to the 'inter-relationship' among all the five 'reasons', and inter-relationship with the lower world. Because of this relationship with the physical (lower) world, we can visualize the image physically. ……. *.refer14.5.20 A*

10.4 OTHER DEFINITIONS

10.4.1 The existence

There are two waves at, right angle to each other, dependent on each other, called 'the life wave' and 'the entity wave'. When these two waves superimpose on each other, we attain the existence of an object.

10.4.2 Life wave

The analyzing {bright} and the liveliness {dark} while interacting with each other, form a wave, called the 'life wave'. This wave has two variables. One is 'the maximum analyzing' and the 'minimum liveliness' (ɲ)', and second is 'the maximum liveliness' and the 'minimum analyzing' (ŋ). These two variables form the 'sine wave' called life wave. In case the physical world, it is called as 'the magnetic wave'.

10.4.3 Entity wave

The offer-ability {star}' and the 'acquire-ability {hole}' while interacting with each other form a wave called the 'entity wave'. The wave has two variables. One is "maximum eager to acquire and minimum availability (n)" and second is "maximum availa-bility and minimum of acquire-ability by the 'hole' (m)". These two variables forms 'the sine wave' called the entity wave. In the physical world, it is called as 'the electric wave. By superimposing each other, we get the 'electromagnetic wave, which is called as the image of the existence.

10.4.4 Thought Process

The Brain has two parts. One part stores maximum data of identity 'NĀM' showing 'acquire-ability {hole}' like man. The other part stores maximum data of 'RŪPA' showing 'offer-ability' {star} like woman. The 'ṚṢI {hole}' and the 'GAṄDHARVA {star}' interact with each other at the center at the 'activator' (MAN).

The 'hole' disintegrates to 'bright hole' and 'dark hole', in the same way the 'star' disintegrates to 'bright star' and 'dark star'. The 'bright hole' and 'bright star' interact and form 'bright' (clarity) and the 'dark hole' and 'dark star' interact and form 'dark' (power). This clarity and the power meet at the centre and form an image.

The image disintegrates in to 'star' and 'hole', and the process repeats. Every repetition of the process provides different comb-ination of 'clarity' and 'power', forming different image. This process is called 'thought processes'.

11.0 THE UNIVERSAL THEORY AND THE PHONOSEMANTICS

As we know that The Universal Theory applies in every field of the universe, it applies in the Phonosemantics also. The only thing that remains is the proper placement of the phonemes in the model. The correct placement of the phonemes is just like a cross quiz. Every placement must satisfy The Universal Theory. We have to visualize the psychological relationship between the phonemes, and that relationship must satisfy the model also. The relationship between 'KA' and 'KHA' must be the same as the relationship between 'C' and 'CH'. All the five vectors must have the same relationship. This relationship should further satisfy the inner and outer world relationship.

I have placed all the phonemes of Hindi as well as those of the IPA in the model of 'The Universal Theory of Existence'. The model itself explains the semantics of all the phonemes**.**

……Think like a wise man but communicate in the language of the people.
William Butler Yeats
……

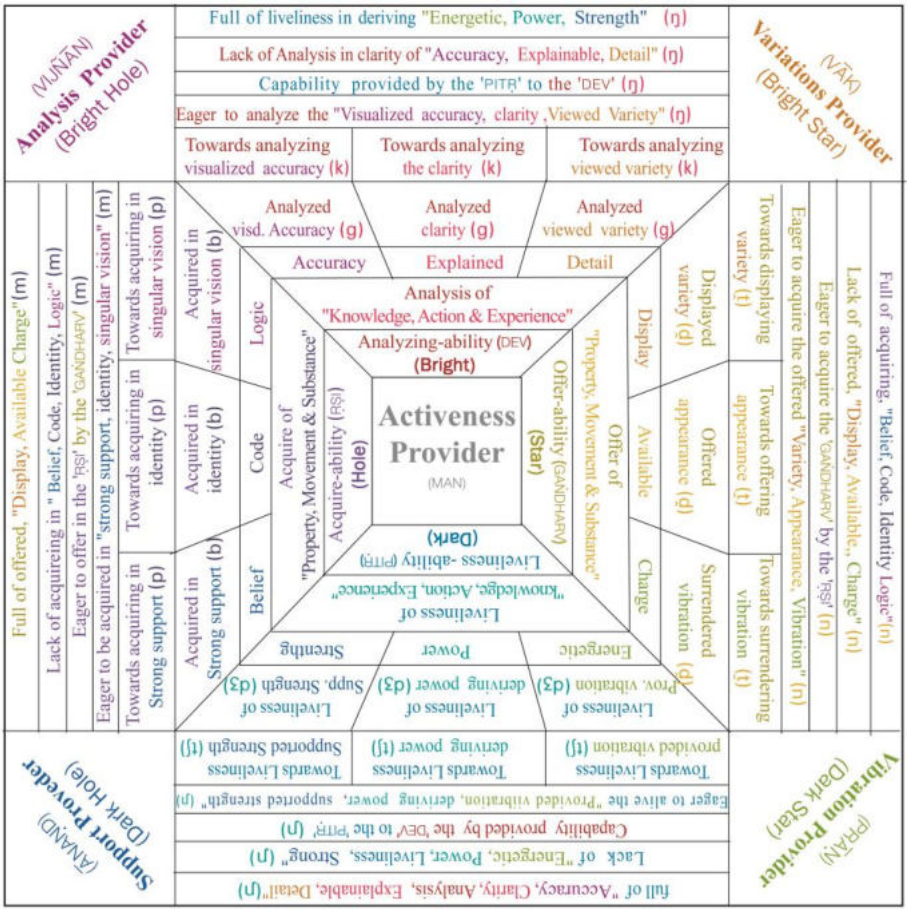

Go to Contents

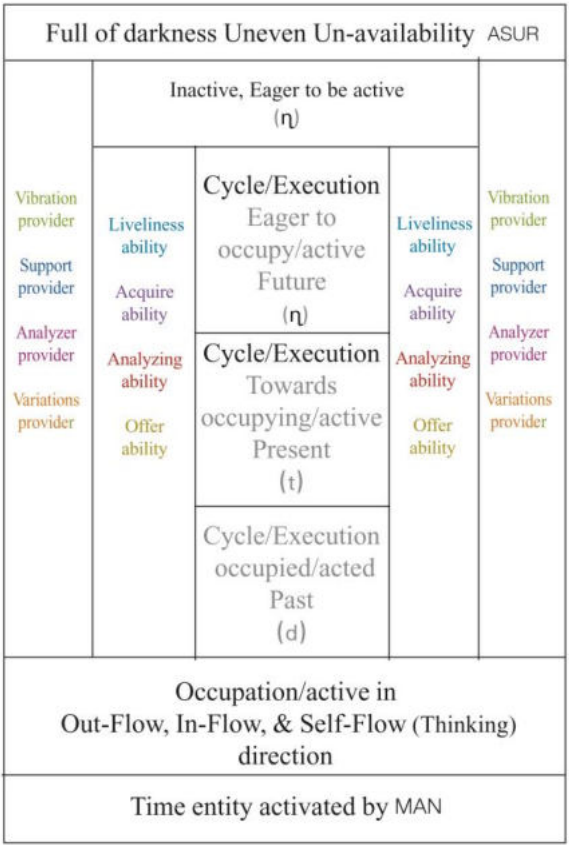

Positive	k	g	tʃ	dʒ	t̪	d̪	p	b	t	d
Negative	kʰ	gʰ	tʃʰ	dʒʰ	t̪ʰ	d̪ʰ	pʰ	bʰ	tʰ	dʰ

PHONOSEMANTICS
&
MODEL OF EXISTENCE

169, 170 / Page

Go to Contents

12.0 PHONOSEMANTIC AND DIVISION OF SOUNDS

12.1 INTRODUCTION

There are trillions-trillions images in the universe. And we have limited number of sound with us. The nature has divided all the images among these sounds. Hence, the every sound represents a group of images. At the time of making the languages, a sound was adopted representing a particular group of images only, not for a particular image. In other way, the one sound represents a group of images, and we can define only the group, not a particular image. During the first stage, we have divided the sounds in three groups – the consonants, vowels, and the physical availability.

12.1.1 THE CONSONANTS are divided into 25 sounds.

1. Positive present	(RAJAS-VIDYĀ)	(k)	(tʃ)	(t)	(t̂)	(p)
2. Neg. presents	(RAJAS-AVIDYĀ)	(k^h)	($tʃ^h$)	(t^h)	(ɵ, $t̂^h$)	(f)
3. Positive past	(SAT-VIDYĀ)	(g)	(z,dʒ)	(d)	(ð, d̂)	(b)
4. Negative past	(SAT-AVIDYĀ)	(g^h)	($ʒ^h$)	(d^h)	($d̂^h$)	(b^h)
5. Future	(TAMAS)	(ŋ)	(ɲ)	(ɳ)	(n)	(m)

The sounds of all above combinations are denoted as under:-

1. First sound - the analyzing phenomena (DEV) {bright},
2. Second sound - the liveliness phenomena (PITṚ) {dark},
3. Third sound - the stimulus phenomena (ASUR) {occupation},
4. Forth sound –the offering phenomena (GAṄDHARV) {star},
5. Fifth sound – the acquiring phenomena (ṚṢI) {dark}.

12.1.2 THE VOWELS are divided into five parts

1. Hidden quantity is (ʊ u),
2. Visible quantity is (ɪ),
3. Self-involving quantity, existence is (ə),
4. Concentrating quantity is (rʲ),
5. Expanding quantity is (lʲ),

Apart from the above vowels, there are composite vowels, which are made of the combination of two or three vowels.

12.1.3 THE PHYSICAL AVAILABILITY of four types

1. Expression availability is (s),
2. Feeling availability is (ʃ),
3. Pervading (occupying) availability is (s̱),
4. Physical availability is (h).A

12.2 CONSONANTS

12.2.1 ACQUIRE-ABILITY (ṚṢI) {hole}:-

The function of the 'hole' is to acquiring the 'offered available' from the 'star', with the help of 'logical support' (approval). These available are of two forms. One is in the form of 'variety' and second in the form of 'charge'. The 'hole' applies its conditions and acquires both with the help of {bright hole} and {dark hole} respectively. In the process of

acquiring, if "the variety is not being analyzed" or "the charge is not being supported", the acquisition will not be possible. And in that case, we will not get any image.

The process of acquisition can be symbolized as under:-

1. Keen to be approved, un-approved, being (m),

2. Towards conditionally approving (p),

3. Towards un-conditionally approving (f),

4. Bound acquisition (b),

5. Un-bound acquisition (b^h)

12.2.2 OFFER-ABILITY (GAṄDHARV) {star}:-

The function of the 'star' is to offer the charged variations (offer) to the approving 'hole'. The 'star' offers the 'available substance' for the purpose of acquiring by the 'hole'. While offering the availables, some of availables remained with the 'star' itself, and does not be offered.

In this way we can divide the 'star' in following five parts.

1. Keen to acquire the offerings, emptiness (n)
2. Towards offering the available substance (existent) {along with displayed variations and surrendered vibrations (charge)} (t̂)
3. Towards not to offer the available substance (existent) or offer the non- available substance (ɵ, $t̂^h$)
4. Offered the available substance (ð, d̂)
5. Grabbed the available substance, and offered the non available substance ($d̂^h$)

12.2.3 ANALYZING-ABILITY (DEV) {bright}:-

One of the parts of the 'star' named 'bright star' offers the variations to be analyzed by the 'bright hole'. The interaction between the 'bright hole'

and the 'bright star' give rise the 'bright'. We are calling that as 'clarity'. The clarity is made of accuracy and the detail.

In the process of analyzing, part of the image is not analyzed due to lack of light (intellect). This part of the image is called the covered image. In this way we get the five part of the 'analyzing process' of the image as follows.

In the life wave, the 'liveliness' comes just against the 'analyzing', hence we can use the symbol of analyzing as non-liveliness.

1. Keen to be analyzed, full of liveliness, unclear (ŋ)
2. Towards analyzing to clarify (k)
3. Towards analyzing to non-clarity, towards non–analyzing to clarity (k^h)
4. Analyzed the clarity (g)
5. Non-analyzed, non-clarity, darkness, density, limitations in analysis (g^h)

12.2.4 LIVELINESS-ABILITY (PITṚ) {dark}:-

Second of the parts of the 'star' named the 'dark star'. It offers vibrations to be supported by the 'dark hole'. The interaction between the 'dark hole' and the 'dark star' give raise the 'dark'. It provides power, strength, energy to the image. We call it as liveliness.

The Function of the 'dark' is to derive the power to the image. In the process of deriving power, some part of the image could not achieve the power due to lack of positive emotions (moon). This part of the image is called the covered image. This function can be divided into five parts.

1. Keen to get power, full of clarity, lack of power (ɲ)
2. Towards getting power with no obstruction (tʃ)
3. Towards not getting power due to obstruction ($tʃ^h$)
4. Liveliness, power, balanced, strength, control (dʒ)

5. Un balanced, uncontrolled power/strength (dʒʰ)

Apart from the above, in IPA we have two more voices; these are feel able liveliness (ʒ) and expressible liveliness(z)

12.2.5 STIMULI (ASUR) {occupier}:-

Every existence wants to be visualizes in lower world. In other way we can say that the psychological body tries to govern the biological body. The biological body tries to govern the physical body. The Stimuli which tries move the sense towards the lower world is called the {occupier}

Why the occupier wants to come towards the lower word, because the image is made of four constituents, these are analysis, liveliness, offer and acquire. All the four factors are just opposite to each other. Struggling with each other and trying to get a final image. This final image can only be formed in the lower world. For example, the mental tension can only be felt by the blood pressure. The blood pressure can only be measure by physical apparatus.

The sense orbits around the four ingredients to make out the image. One cycle of this rotation called one 'NIMIṢ' (smallest unit of time). This 'cyclic function' transmits the existence in physical word. Cyclic function can further be divided into five parts.

1. Keen to be occupied, keen to be active {future} (ɳ)
2. Occupying in, active in {present} (t)
3. Limitations/stopping in occupying, move on and activeness {present} (tʰ)
4. Already occupied, done, had {past} (d)
5. Limitations in what had done {past} (dʰ)

12.2.6 PHYSICAL APPEARANCE OF THE IMAGE:-

Whatever we visualize comes out in the form of physical (lower world) image. This physique of a body can be divided in four parts.

1. The availability of clarity, knowing, expressing (s)
2. The availability of power, feelings (ʃ)
3. The availability of occupation ($ʃ^h$)
4. Complete availability in physical world (h)

Thus It is to be understood that whatever one expresses, always lies in between or is formed by these 29 Basic consonants. It is further to be understood that all these consonants change its shape by the changing the vowels available to it.

12.3 VOWELS

The Vowels are the quantitative phenomena of the consonants. Without vowels you cannot pronounce consonants. If there is any consonant which is not supported by a vowel, it has to get the support from the consonant attached with vowels.

12.3.1 BASIC VOWELS

1. Hidden quantity (ʊ)

2. Visible quantity (ɪ)

The quantity, which is available for you to visualize are visible quantities. Take an envelope. The address written on it is the visible quantity. And the message written in the letter inside the envelope will be in-visible (hidden) quantity. The direct is visible but the indirect is hidden. These two quantities are 'available quantities' to the viewer.

3. Concentrating quantity (rʲ)

4. Expanding quantity (lʲ)

We can visualize an object in two types. Firstly, viewing with concentration, with logic, with involve, with deep, with reason, with science, with acquisition, with left hemisphere of brain are concentrating quantities (rʲ). Secondly, viewing with expansion, with glance, with emotion, with length, with availability is expanding quantities (lʲ).

5. Self involving quantity, existence (ə)

This is the existence having zero existent. What will remain if you release the existent from the existence? A place will remain of which visibility is simply the indication. When we say that 'It is a book", here the indicative phenomena (It) is existence quantity.

6. Non-satisfying quantities (ãː)

7. Continuing quantities (əh)

These above five quantities are 'SAT' (already existed). Apart from these five, we have two more quantities. These quantities are 'TAMAS' and 'RAJAS', representing the dissatisfaction (ãː) and continuity quantities (əh) respectively.

12.3.2 CONTINUOUS VOWELS

When one vowel is supported by the same vowel, we can denote them as established/continuous vowels. There can be five established 'SAT' vowels.

1. Continuous hiding quantity (uː)

When the hidden quantities are supported by the hidden quantities, the quantity comes in to the continuity form. Just like an airplane is hiding in the sky.

2. Continuous visible quantity (iː)

When the visible quantities are supported by the visible quantities, the quantity comes in to the continuity form. Just like a sound of scream.

3. Continuous self involving quantity (ɑ)

Existence when occupied the time (continuity form), it form the entity. But without the existent, the entity is just like an open house of without name. It can provide place to any consonant to form a known entity.

4. Concentrated concentration (rʲː)

Although it is not available and used in human language, but may be available in animal sounds. As the definition suggest, it is a continue concentration on a pin point, closing all other senses.

5. Expanded expansion (not available) (lʲː)

It is also not used anywhere, but the definition suggest that one has made his emotion in continue to offer available yield.

12.3.3 COMPOSITE VOWELS

When one vowel is supported by different vowels, they are called the composite vowels. Some of them are as follows.

1. Available from the visible existence (e)

When the (ə) is supported by (ɪ), it became ‘existence of existent (ə) in visible (ɪ)’.

2. Visibility of existent in existence (æ,ɛ)

When the (ɪ) is supported by (ə), it became ‘visible (ɪ) of existent (ə) in existence’.

3. Available from the hidden entity (o)

When the (ə) is supported by (ʊ), it became 'existence of existent (ə) in hidden(ʊ)'.

4. Hidden ability of existent in existence (ɔ)

When the (ʊ) is supported by (ə), it became 'hidden(ʊ) existent(ə) in existence'.

12.3.4 OTHER COMBINATIONS

There are many other vowels in IPA, which are made from the different combinations of different basic vowels. As the combina-tions of these vowels are not clear, we have adopted the meanings of these vowels with our imagination and logic. Some of these vowels are **eː ɛː oː ɔː a aː ɜː ʌ ɒ** etc.

12.4 CONSONANTS MADE OF VOWELS

As per 'The Universal Theory', we can only have five vectors. Thus in the vowel itself we have five basic vowels. By mixing any of the two, we can get ten mixtures of vowels. Mixing of these vowels converts them in to a shape of operator which works like a consonant thus gets the power to accept the vowel for quantum.

1. **Hidden existent (ə+ʊ), equivalent to (v)**
2. **Visible existent (ə+ɪ), equivalent to (j)**
3. **Concentration (ə+r^j), equivalent to (r)**
4. **Expansion (ə+l^j), equivalent to (l)**
5. **Exposed of the hidden (ʊ+ɪ), equal. to (near to w)**
6. **Un-known (ʊ+r^j)**

7. Un-known (ʊ + lʲ)

8. Un-known (ɪ + rʲ)

9. Un-known (ɪ + lʲ)

10. Un-known (rʲ + lʲ)

It is to be made clear that if we say the word 'un-known', it means that it does have existence in the universe, but may be deleted due to no-use, or it may exist in animals or some physical sounds. First four consonants are available in Hindi itself.

……

Human language appears to be a unique
phenomenon, without significant
analogue in the
animal world.
Noam Chomsky

……

13.0 INTERNATIONAL PHONOSEMANTICS USING I P A

I have taken approximately 400 words of different world languages. Vowels made of un-clear combinations are always a problem for me. But I have tried to give the best possible meaning of these vowels. These words are taken from the **'Hand Book of International Phonetic Association'** and **'Introduction of English Phonetics and Phonology'**. There are great chances of mistake while transferring these foreign languages to 'IPA'. So, while understanding the meaning of the word, we have to consider a lot of tolerance, patience, and imagination.

IPA (English)	**हिन्दी अर्थ** = शब्द मीमांसा ; English Meaning
13.01 ENGLISH (England)	
iːvən (even)	**संध्या** = बाह्यप्रत्यक्ष करता हुआ (iː) बिना शर्त अनुमोदित छिपा सत् का अस्तित्व (və) अंगीकृत करने का उत्सुक (n) *{बाह्यप्रत्यक्ष होते हुऐ अन्धकार (भौतिक) को अंगीकृत करने को उत्सुक}* ; accepting (n) the exposing (iː) of hiding existence (unclear) (və) *{accepting exposure of unclear}*
iːvl (evil)	**दुष्ट, पाप, बुरा** = प्रत्यक्ष करता हुआ (iː) बिना शर्त अनुमोदित छिपा सत् (v) प्रस्तुत भावना (l) *{बाह्यप्रत्यक्ष होते हुऐ अवेचतन में छिपे अन्धकार (मानसिक) का विस्तार होना, अंधकार अविवेक का सूचक है।}* ; exposing (iː) offering emotions (l) hiding existent (v) *{exposing the offering emotions of darkness}*

i:tʃ (each)	**प्रत्येक**=बाह्यप्रत्यक्ष करती हुई (i:) ऊर्जित तरंग, पुनः पुनः (tʃ)*{बाह्यप्रत्यक्ष होती प्रत्येक अर्जित तरंग}* ; exposing (i:) the repeating liveliness (tʃ) *{coming one by one}*
i:zɪ (easy)	**आसान, सहृदय** = प्रत्यक्ष करता हुआ (i:) प्रत्यक्ष व्यक्त होने योग्य जीवन्तता (zɪ) *{ जो प्रत्यक्ष है, उसे ही व्यक्त करते रहना की क्रियात्मक जीवन्त /}* ; exposing (i:) towards easiness (zɪ) *{exposing towards easiness}*
bi:tʃ (beach)	**समुद्र तट** =बन्धित (b) बाह्यप्रत्यक्ष करती हुई (i:) स्पन्द उन्मुख जीवन्तता {लहर} (tʃ) *{स्पन्दित होती हुई गत्यात्मक जीवन्त होती हुई (लहर) का बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ बन्धन, समुद्र का तट लहर को बन्धित करता है}*; bound (b) continue exposing (i:) quiver, repeating liveliness (tʃ)*{the continuous exposing quiver are bound by the beach}*
tʃi:z (cheese)	**पनीर** =जीवन्तता उन्मुख (tʃ) प्रत्यक्ष करती हुई (i:) आनन्द(z) *{अर्जनात्मक ऊर्जित होता हुआ व्यक्त भोगात्मक जीवन्त}* ; towards getting liveliness (tʃ) to exposing (i:) pleasure (z) *{exposing the liveliness of pleasure }*
si:v (sieve)	**झरनी, छलनी** =व्यक्त होता (s) बाह्यप्रत्यक्ष (i:) बिना शर्त अन्दर अनुमोदित (v), *{छेदों में से बिना शर्त अनुमोदित का व्यक्त होता है}* ; available (s) exposing out /coming out (i:) unconditionally approved inside (v)*{matter con flow unconditionally from the holes} {matter coming out due to inherent (passage) approval}*
ti: (tea)	**चाय** = प्रवृत को (t) प्रत्यक्ष करती हुई (i:) *{चाय से स्फूर्ति आती है}* ; exposing (i:) the activeness (t)
ni: (knee)	**घुटना** = अंगीकार उत्सुक (n) बाह्यप्रत्यक्ष को करती हुई (i:) *{बाह्यप्रत्यक्ष होते हुऐ (वजन) को अंगीकार करने के लिये उत्सुक}* ;eager to acquire (n) the continue exposing /executing/experiencing (i:) *{acquiring all the weight of the body}*
fri: (free)	**स्वतन्त्र** = बिना शर्त अनुमोदन (f) में संलिप्त (r) को प्रत्यक्ष करता हुआ (i:) *{बन्धन विहीन अनुमोदन में एकाग्रता प्रत्यक्ष होती हुई}* ; involve in (r)

	exposing (iː) un-conditional approval (f) *{providing un-conditional approval}*
dɪgriː (degree)	**उपाधि** = प्रत्यक्ष बीते हुऐ (dɪ) स्पष्ट (g) की अंगीकृत एकाग्रता को बाह्यप्रत्यक्ष करता हुआ (riː) *{जो ज्ञानात्मक स्पष्ट (ज्ञान) पहले प्रत्यक्ष होआ हुआ है, उसकी प्रत्यक्षता में एकाग्र}* ;exposing (iː) the clear (g) Involve (r) towards past (dɪ) *{exposing for what you have done in past}*
siː (see)	**देखना** = व्यक्त/उपलब्ध (s) प्रत्यक्ष करता हुआ (iː) ; exposing (iː) the expressed/available (s) *{Expressing the exposed}*
biː (bee)	**मधुमक्खी** =सुरक्षा को (b) प्रत्यक्ष करता हुआ (iː)*{शहद को कैसे सुरक्षित / बन्धित रखा जाता है, उसका प्रत्यक्ष करते रहना।}* ; executing (iː) the protection (b) *{continue restrictions}*
ɪt (it)	**यह** = प्रत्यक्ष (ɪ) प्रवृत्त (t) प्रत्यक्ष सत् (य) का भौतिक (ह); visible (ɪ) occupied with (t) ; *{occupied with the display}*
ɪnsekt (insect)	**कृमि** = अन्दर (ɪn) इंगित उपलब्धि (se) का चेतनात्मक (k) प्रवृत्त (t) ; the active (t) conscious (k) indicated (e) available (s) inside (ɪn) *{the insects are active inside the body}*
ɪndʌstrɪ (industry)	**निर्माण स्थल** = अन्दर (ɪn) होता हुआ (d) अन्दर से बाहर (ʌ) उपलब्ध (s) प्रवृत्त (t) संलिप्त (r) का प्रत्यक्ष (ɪ) *{जो कुछ अन्दर उपलब्ध हो रहा है, उसे अन्दर से बाहर (उत्पादन) प्रवृत्त में संलिप्त का प्रत्यक्ष होना, अर्थात् अन्दर हो रहे उत्पादन को बाहर प्रवत्त करते रहना}* ; towards (ɪ) Involve (r) in occupation (t) of making available (s) from self to out (ʌ) acted (d) in side (ɪn) *{towards involve in occupation to make available (production), from inside to outside}*
ɪl (ill)	**बुरा** =प्रत्यक्ष (ɪ) एकाग्रता विहीन (l) *{विचलन अवस्था का प्रत्यक्ष, भौतिक विचलन-भूकम्प, वानस्पतिक विचलन-दैहिक अव्यवस्था, मानसिक विचलन एकाग्रता विहीन}* ; towards (ɪ) lack of concentration / offering emotions (l)*{cannot concentrate, and offering the emotions}*

ɪnsʌlt (insult)	**अपमान** = प्रत्यक्ष रिक्तता (ɪn) के व्यक्त (s) अप्रत्यक्ष से प्रत्यक्ष (ʌ) भाव उपलब्ध (l) प्रवृत्त (t) *{अन्तःस्थित व्यक्त हीनता को अन्दर से बाहर भाव उपलब्ध कराने में प्रवृत्त, अन्दर की हीनता यदि बाहर प्रत्यक्ष होती है तो अपमान होता है}* ; occupied with (t) surrendering emotions (l) from indirect to direct (ʌ) perceived (s) in side (ɪn). *{perceiving surrendering emotions(defeat) occupied inside}*
ɪndʒərɪ (injury)	**चोट, क्षति** = अन्दर (ɪn) बल के अस्तित्व (dʒə) की प्रत्यक्ष अंगीकृति (rɪ) *{देह के अन्दर बल (चोट) के अस्तित्व को प्रत्यक्ष रूप से अंगीकृत करना।}* ; towards (ɪ) involve (r) in power (dʒ) existence (ə) in side (ɪn) *{something hard has gone in side}*
dʒɪn (gin)	**जाल, बिनौला निकालने का यन्त्र** = बल (dʒ) अन्दर (ɪn) *{अन्दर की तरफ बल को प्रयुक्त करना}* ; strength (dʒ) in side (ɪn) *{having strength inside}*
tʃɪk (chick)	**चिड़िया का बच्चा** = प्रत्यक्ष जीवन्त उन्मुख (tʃɪ) में चेतन (k) *{जीवन्तता प्राप्त करने के लिये क्रियात्मक/भोगात्मक चेतना}*; towards (ɪ) liveliness achieving (tʃ) conscious (k) *{conscious is towards the liveliness achieving }*
sɪt (sit)	**बैठना** = प्रत्यक्ष व्यक्त {स्थान} (sɪ) पर प्रवृत्त (t) *{जो भी प्रत्यक्ष उपलब्ध है उस पर प्रवृत्त हो जाना}* ; occupied at (t) visible (ɪ) available *{place}* (s)
tʃɪt (chit)	**छोटा बच्चा व युवा स्त्री** = प्रत्यक्ष जीवन्तोन्मुख (tʃɪ) में प्रवृत्त (t) *{जीवन्तता प्राप्त करने के लिये समर्पण प्रवृत्त}* ; occupied (t) towards (ɪ) liveliness achiever (tʃ) *{child and female occupy liveliness from the male }*
kɪk (kick)	**लात मारना** = विषय (k) के लिये प्रत्यक्ष (ɪ) क्रियात्मक चेतना (k) *{भोगात्मक प्रत्यक्ष के लिये क्रियात्मक चेतना}* ; conscious (k) towards (ɪ) opposite of liveliness (hurt) (k) *{consciousness towards hurting}*
si:t (seat)	**बैठने का आसन्** = बाह्यप्रत्यक्ष करते हुऐ उपलब्धता {स्थान} (si:) में प्रवृत्त (t)*{बाह्य उपलब्ध होते हुऐ स्थान में प्रवृत्त}* ;making noticeable (i:) the

	available *{space}* (s) to occupied (t)
biːt (beat)	**पीटना** = बन्धन को बाह्यप्रत्यक्ष करते हुऐ (biː) में प्रवृत्त (t) *{बाह्यप्रत्यक्ष होता हुआ बन्धन में प्रवृत्त करना, नियन्त्रण में लेने के लिये पीटना।}* ; active in (t) towards notifying (iː) bound conditions (b) {active toward visualizing the restrictions}
tʃiːt (cheat)	**छल करना** = जीवन्त–उन्मुख (tʃ) बाह्यप्रत्यक्ष करते हुऐ (iː) को प्रवृत्त (t) *{प्रत्यक्ष करते हुऐ भोगात्मक जीवन्त उपलब्ध करानेमें प्रवृत्त, चापलूसी करना अर्थात् आप आश्वासन की जीवन्तता दिये जा रहे हैं}* ;occupied in (t) exposing / revealing (iː) liveliness achieving (tʃ) *{intentionally encouraging}*
hiːt (heat)	**गरमी** = असत् में प्रत्यक्ष करते हुऐ (hiː) में प्रवृत्त (t) *{प्रवृत्त जो असत् में बाह्यप्रत्यक्ष हो रहा है वह भौतिक जगत में गर्मी, मानसिक जगत में क्रोध, मैथुन में उत्तेजन के रूप में बाह्यप्रत्यक्ष हो रहा है।}* ; occupied in (t) exposing (iː) physical energy (h) *{end product of every task is heat}*
bɪt (bit)	**रोकना** = बन्धन (b) का प्रत्यक्ष (ɪ) में प्रवृत्त (t) *{बन्धन करने में प्रवृत्त।}* ; occupied (t) towards (ɪ) restrictions (b)
hɪt (hit)	**भिड़ जाना** = स्थूल में (h) प्रत्यक्ष (ɪ) प्रवृत्त (t) *{ भौतिक वस्तु के अन्दर प्रवृत्त हो जाना।}* ; active (t) towards (ɪ) the physical (h)*{to act against the physical body}*
ʌp (up)	**ऊपर** = स्वयम् से बाहर आते हुऐ को (ʌ) अनुमोदन (p) *{ऊपर से ही आप बाहर आ सकते है।}* ; support (p) from self to outside (ʌ) *{approval to coming upwards}*
ʌtməʊst (utmost)	**अत्यन्त** = स्वयम् से बाहर आता हुआ (ʌ) प्रवृत्त (t) होने के अस्तित्व (mə) ; की दिशा में (ʊ) प्रवृत्त व्यक्त (st) *{स्वयम् की सीमा से बाहर प्रवृत्त होने का अस्तित्व}* ; occupied (t) expression (s) existent exist inside (ʊ) of being (mə) active (t) from self to outside (ʌ) *{'exist expressions occupied inside' are active to come outside}*
ʌtr	**बोल** = स्वयम् से बाहर आता हुआ (ʌ) प्रवृत्त (t) में अंगीकृत एकाग्रता

(utter)	(r)*{ध्वनि जो स्वयम् से बाहर आने के एकाग्रित प्रवृत्त हो}* ; involve in (r) to act (t) from self to outside (ʌ) *{the voice is coming from self to outside}*
ʌndə (under)	**नीचे** = स्वयम् से बाहर आते हुए (ʌ) से रिक्त (n) होए हुए (d) अस्तित्व (ə)*{ऊपर नहीं आते हुऐ का होना हुआ अस्तित्व।}* ; had (d) existence (ə) in the lack (n) 'from self to outside' (ʌ) *{existence had from 'self to negative outside' (ʌn) that is inside}*
ʌglɪ (ugly)	**कुरुप** = स्वयम् से बाहर होती हुई (ʌ) स्पष्टता (g) का विस्तारित प्रत्यक्ष (lɪ) *{त्वचा जो अन्दर से बाहर आ रही है उसका भोगात्मक स्पष्ट का प्रत्यक्ष}* ; the visible (ɪ) expansion (l) of detail (g) coming from self to outside (ʌ) *{skin coming outside always looks ugly}*
hʌt (hut)	**झोंपड़ी** = स्वयम् से प्रत्यक्ष होता हुआ (ʌ) प्रवृत्त (t) में स्थूल में स्थान उपलब्धता (h) *{जो स्वयम् स्थूल में स्थान उपलब्ध कराने में प्रत्यक्ष प्रवृत्त है।}* ; occupied (t) self to visible (ʌ) physical place for specified purpose (h)*{Self is occupying the visible physical place for specific (living) purpose}*
pʌblɪk (public)	**लोक सम्बन्धी** = अनुमोदित (p) स्वयम् से बाहर (ʌ) बन्धित (b) प्रत्यक्ष विस्तार की (lɪ) चेतना (k) *{स्वयम् सेबाहर होते हुऐ जो एक बन्धित (सीमित) विस्तार है जहाँ से भोगात्मक चेतन को सुरक्षा व बन्धन प्राप्त होते हैं, उसे समाज कहते है}* ; conscious (k) towards available expanded (lɪ) conditional approval (p) binding with protection (b) from self to outside (ʌ) *{from self to out, the society gives expanded conditions (restrictions) and protection}*
rʌf (rough)	**अव्यवस्थित** = अंगीकृत एकाग्र में (r) स्वयम् से बाहर होता हुआ (ʌ) अपरीक्षित अनुमोदन (f) *{सतह से बाहर होते हुऐ में अंगीकृत करते हुऐ बिना देखे भाले अनुमोदन करना।}* ; involve in (r) un-examined approval (f) from self to outside (ʌ) *{from self to outside means the surface is not even}*
lʌk	**संयोग** = भाव उपलब्धता में (l) स्वयम् से बाहर होता हुआ (ʌ) ; चेतन (k) *{भाव उपलब्धता में अन्दर सेबाहर होती हुई भाव उपलब्धा में भोगात्मक चेतन}*

(luck)	; expanded yield available (l) from self to outside (ʌ) conscious (k) *{experiencing conscious in the available yield from hidden to outside }*
dʌbl (double)	**दोहरा** = होआ हुआ (d) स्वयम् से बाहर (ʌ) बन्धित (b) भाव उपलब्धता (l) *{स्वयम् से बाहर होआ हुआ स्वयम् के अनुसार (बन्धित) भाव उपलब्धता}* ; from self to outside (ʌ) had (d) bound (b) expansion (l) *{self and outside, both were in bound}*
dʒʌdʒ (judge)	**न्यायाधीश** = आत्म संयम में (dʒ) स्वयम् से बाहर होता हुआ (ʌ) दृढ़ता (dʒ) *{आत्म संयम में स्वयम् की सोच को बाहर प्रकट करती हुई दृढ़ता}* ; balanced in (dʒ) self to outside (ʌ) strength (dʒ) *{showing outside strength with balanced self}*
ɑːm (arm)	**बाहु** = सत्ता के द्वारा (ɑː) प्रस्तुत उत्सुक (m) ; eager to offers (m) by the entity (ɑː) *{the entity, which offers to execute}*
ɑːts (arts)	**कला** = सत्ता की प्रज्ञा के द्वारा (ɑː) प्रवृत्त (t) व्यक्त (s) *{सत्ता प्रज्ञा की प्रवृत्त के द्वारा जो व्यक्त करती है}* ; act of (t) expression (s) by the intellect of the entity(ɑː) *{expression by the intellectual entity}*
ɑːgjʊ (argue)	**तर्क** = सत्ता की प्रज्ञा के द्वारा (ɑː) स्पष्ट के (g) प्रत्यक्ष स्वीकृत (j) में छिपा हुआ (ʊ) *{सत्ता के द्वारा जो ज्ञानात्मक स्पष्ट हो रहा है, उसकी स्वीकृति तर्क के कारण ही होती है}* ; hidden inside (ʊ) displaying accepted (j) explained (g) by the intellect of the entity (ɑː) *{hidden inside the 'accepted display of explained (logic)' by the intellect of the entity}*
ɑːmz (alms)	**भिक्षा** = सत्ता की प्रज्ञा के द्वारा (ɑː) पदार्थ में प्रस्तुत उत्सुक (m) में जीवन्तता(z) *{सत्ता के द्वारा पदार्थ को प्रस्तुत करने (देने के लिये) क्रियात्मक जीवन्तता}* ; liveliness (z) in eager to offering the matter (m) by the intellectual entity (ɑː)*{eager to offer the matter by the entity}*
ɑːmɪ (army)	**सेना** = सत्ता के द्वारा (ɑː) बहिर्गमित प्रस्तुत उत्सुक (mɪ) *{ सत्ता के द्वारा बहिर्गमित गत्यात्मक प्रस्तुत उन्मुख}* ; eager to offer self (m) visible (ɪ)

	the entity (ɑː) *{eager to offer self towards the entity (country)}*
ɑːsk (ask)	**पूछना** = सत्ता के द्वारा (ɑː) व्यक्त (s) स्पष्टोन्मुख (k) *{सत्ता के द्वारा ज्ञानात्मक स्पष्ट-उन्मुख(जानने के लिये उन्मुख) व्यक्त करना}* ; carifying (k) knowing phenomenon (s) by the entity (ɑː) *{the entity clarifying the knowing phenomena}*
fɑːm (farm)	**खेत** = सत्ता के द्वारा (ɑː) बिना शर्त अनुमोदन के (f) प्रस्तुत उत्सुक (m) *{खेत की सत्ता बिना शर्त प्रस्तुति (फसल) अनुमोदित कर रही है}* ; eager to offer self (m) the un-conditional acceptance (f) by the entity (ɑː) *{the land is offering itself to the unconditional acceptance of the crop}*
tʃɑːdʒ (charge)	**चार्ज** = सत्ता के द्वारा (ɑː) जीवन्तोन्मुख (tʃ) ताकत (dʒ) *{सत्ता (बैटरी) के द्वारा जीवन्त होते हुऐ शक्तिशाली होना}* ; charging (tʃ) by the entity (ɑː) of power (dʒ) *{charging the power}*
fɑːst (fast)	**तेज** = सत्ता के द्वारा (ɑː) बिना शर्त अनुमोदित (f) व्यक्त में (s) प्रवृत्त (t) *{शर्ते ही गति में अवरोध होती है} {सत्ता के द्वारा व्यक्त होती हुई प्रवृत्ति जो बिना शर्त (बिना रूके) गत्यात्मक अनुमोदित हो}* ; move on (t) to express (s) the un-conditional approval (f) by the entity (ɑː) *{the entity is occupied in expressing the un-conditional approval of speed}*
bɑːm (balm)	**औषधि** = सत्ता के द्वारा (ɑː) सुरक्षा (b) में प्रस्तुत उत्सुक पदार्थ (m) *{सत्ता, जो प्रस्तुत-उत्सुक है सुरक्षा के लिये}* ; eager to offer self (m) by the entity *{balm}* (ɑː) to protect (b) *{the entity offering the protection}*
jɑːd (yard)	**नाप** =सत्ता के द्वारा (ɑː) प्रत्यक्ष स्वीकृत (j) किया हुआ (d)*{जो स्वीकृत है वही नाप माना हुआ है}* ; towards acceptation (j) had made (d) by the entity (ɑː) *{accepted (standard) by the entity }*
ʃɑːk (shark)	**धूर्त** = सत्ता के द्वारा (ɑː) उपलब्ध बल अनुभूति की (ʃ) चेतना (k) *{उपलब्ध जीवन्त अनुभूति की सत्ता द्वारा क्रियात्मक चेतन}* ; conscious {alert} (k) of available feel of power (ʃ) by the entity (ɑː) *{the*

	entity, whose conscious is made of power (not of analyzing)}
staː(r) (star)	**सितारा** = सत्ता के द्वारा (aː) व्यक्त (s) प्रवृत्त (t) रत (r), *{जो स्वयम् ही चमकता हो} {सत्ता के द्वारा जो व्यक्त (चमक) में प्रवृत्त हो रहा है।}* ; Involve in (r) actively (t) expressing (s) by the entity {star} (aː) *{The entity, who is actively involved in shining}*
baː(r) (bar)	**रोक** = सत्ता के द्वारा (aː) बन्धित अंगीकरण (b) में रत (r) *{सत्ता के द्वारा जिसको बन्धित कर रखा है}* ; involve in (r) restrictions (b) by the entity (aː)*{involve in the restrictions by the entity}*
zaː(r) (czar)	**राजा** = सत्ता के द्वारा (aː) व्यक्तात्मक जीवन्तता (z) में रत (r) *{सत्ता की जीवन्तता 'राजा' के द्वारा व्यक्त होती है।}* ; involve in (r) the expressible liveliness (power) (z) by the entity (aː) *{entity (czar) is involved in expressing power}*
dʒaː(r) (jar)	**झगड़ा** = सत्ता के द्वारा (aː) शक्ति में (dʒ) रत (r) *{सत्ता के द्वारा शक्ति प्रयुक्त करने में संलिप्त।}* ; involve in (r) the Power (dʒ) by the entity (aː) *{entity is involved in power}*
taː(r) (tar)	**तारकोल** = सत्ता के द्वारा (aː) प्रवृत्त (t) में रत (r) *{सत्ता द्वारा चारों तरफ फैलने में प्रवृत्त हो रहाहै}* ; involve (r) in occupying (t) by the entity (aː)*{the entity (tar) is involved in occupying/spreading over the surface}*
gɪtaː(r) (guitar)	**गिटार** = स्पष्ट प्रत्यक्ष (gɪ) सत्ता के द्वारा प्रवृत्त (taː) केन्द्रित (r) *{प्रवृत्तित सत्ता के द्वारा क्रियात्मक स्पष्ट (बजाने) को प्रत्यक्ष (ध्वनि) में रत}* ; concentration (r) occupying (t) by the entity (aː) towards clarity (gɪ) *{the entity (guitar) concentrate in occupying towards clear (display)}*
ɒfn (often)	**बहुधा** = सीमा के अन्दर रहने वाला (ɒ) बिना शर्त अनुमोदन (f) की क्रिया (n) *{वह क्रिया जो चाहे जब होती है लेकिन हमेशा नहीं}* ; action (n) un-conditional {many time} approval (f) with in limit (ɒ) *{many time action, with in the limit (often not always)}*
ɒfɪs	**कार्यालय** = सीमा के अन्दर रहने वाला (ɒ) बिना शर्त अनुमोदित (f) का

(office)	प्रत्यक्ष (ɪ) व्यक्त (s)*{कार्यालय वह सीमा है जिसके अन्दर आसानी से किसी भी व्यक्त को देख सकते हैं}*, towards available information (sɪ) of un-conditionally approved (f) kept in side (ɒ) *{approving un-conditionally to keep the available information inside}*
ɒtə (otter)	**जलमार्जार** = सीमा के अन्दर रहने वाला (ɒ) प्रवृत्त (tə) *{जो जल के अन्दर ही प्रवृत्त रहता है}* ; occupying (t) existence (ə) living inside (ɒ) *{entity living inside}*
ɒrɪndʒ (orange)	**नारंगी** = अन्दर रहने वाले (ɒ) प्रत्यक्ष एकाग्रित होते हुऐ (rɪ) अंगीकार उत्सुक (n) जीवन्त (dʒ) *{ओरेन्ज के अन्दर जो रहता है वह जीवन्त को अंगीकार करने के लिये है।}* ; eager to accept the liveliness (ndʒ) visible concentration (rɪ) kept inside (ɒ) *{whatever is kept inside, the orange is providing the liveliness}*
ɒnr (honor)	**आदर** = अन्दर रहने वाले (ɒ) अंगीकरण उत्सुक (n) में रत (r) *{अन्दर रहने वाली अन्तः स्वीकृति}* ; involve in (r) the eager for accept (n) keeping the existent inside (ɒ) *{involved in the acceptance from inside}*
kɒt (cot)	**कोट** = स्पष्टोन्मुख (k) सीमा के अन्दर रखने में (ɒ) प्रवृत्त (t) *{पहनने वाले को अपनी सीमा में रखने में प्रवृत्त, पूरा शरीर ढक जाता है}* ; clarifying (k) keeping the existent inside (ɒ) to occupation (t) *{clarifies as to occupied in keeping the existent inside}*
ʃɒt (shot)	**फेंक** = उपलब्ध जीवन्तता के (ʃ) सत को अन्दर रखने वाली सत्ता (ɒ) का प्रवृत्त (t) *{तीव्रता (जीवन्तता को वस्तु को अन्दर रखकर जो प्रवृत्ति हो रही है}* ; *courage (feeling of power)* (ʃ) keeping the existent inside (ɒ) to active on (t)*{Keeping the power inside the object}*
bɒtl (bottle)	**बोतल** = बन्धित (b) सत को अन्दर रखने वाला (ɒ) प्रवृत्त (t) उपलब्ध विस्तारत्व (l) *{बन्धित उपलब्ध विस्तार को अन्दर रखने में प्रवृत्त रहता है}* ; The boundary provided (b) keeping the existent inside (ɒ) the occupation (t) of available expansion (l)*{The boundary provided by the entity, keeping the expansion inside}*
hɒtə	**गर्मतर** = स्थूल को (h) सत के अन्दर रखने वाली सत्ता (ɒ) प्रवृत्त अस्तित्व

(hotter)	(tə), *{सत्ता के अन्दर रहने वाला सत् यदि स्थूल है तो गर्म ही होगा, उस गर्मी में प्रवृत्त, अर्थात् और गर्मी}* ; active (t) existence (ə) of the physical (h) entity keeping the existent inside (ɒ) *{the physical existent in the entity will always be the heat, and occupying the heat means, increasing the same.}*
klɒk (clock)	**घड़ी** = चेतनात्मक (k) विस्तार (l) की सीमा के अन्दर रखने वाली (ɒ) चेतना (k) *{क्रियात्मक चेतना के विस्तार को नियन्त्रित करने वाली}* ; conscious (k) entity keeping the existent inside (ɒ) to expanded (l) analysis (k) *{the entity (watch) keeping the expanded analysis conscious inside}*
fɒləʊ (follow)	**अनुगमन करना** = अपरीक्षित अनुमोदित की (f) सीमा के अन्दर रखने वाली (ɒ) भाव उपलब्धता (lə) की दिशा में (ʊ) *{बिना शर्त हमने जिसको अनुमोदित (माना) हुआ है, उसकी सीमा में ही भावों का विस्तार उपलब्ध करना।}* ; in the direction of (ʊ) existence (ə) entity keeping the existent inside (ɒ) offering emotions (l) of un-conditional approval (f)*{entity is keeping the un-conditional approval inside towards the direction with offering emotions}*
æks (axe)	**कुठार** = अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) की चेतना (k) का व्यक्त (s) *{अस्तित्व में क्रियात्मक चेतना का व्यक्त प्रत्यक्ष होता है}*; expressing (s) conscious (k) visible existent in existence (æ) *{displaying the existent of expressing action conscious}*
ækrɪd (acrid)	**कड़ुआ/तीखा** = अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) चेतनात्मक (k) प्रत्यक्ष एकाग्रता (rɪ) होई हुई (d) *{अस्तित्व में भोगात्मक चेतना में एकाग्रता होई हुई।}* ; had (d) towards concentrated (rɪ) conscious (k) of visible existent in existence (æ) *{had concentrated in experience conscious towards the visible existent (acrid) in existence}*
æd (add)	**जोड़ना** = अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) होआ हुआ (d) *{अस्तित्व में किसी नये सत् का प्रत्यक्ष होआ होना।}* ; had (d) towards substance in existence (æ) *{the visible existent in existence (the added existent)}*

ædmɪrəl (admiral)	**सेना नायक** = अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) होआ हुआ (d) प्रत्यक्ष प्रस्तुत उत्सुक (mɪ) प्रज्ञा का (rə) विस्तार (l) *{अस्तित्व का समर्पण प्रज्ञा के विस्तार के लिये।}* ; visible existent in existence (æ) made (d) submission (m) towards (ɪ) with in expansion (l) of intellectual (rə) *{the entity has submitted towards the expansion of intellectual}*
ækt (act)	**कार्य करना, कानून** = अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) का चेतनात्मक (k) प्रवृत्त (t) *{अस्तित्व में प्रत्यक्ष चेतना (कार्यकरना – क्रियात्मक, ज्ञानात्मक – कानून) का प्रवृत्त होना।}* ; visible existent in existence (æ) of conscious (k) occupation (t) *{Entity is towards the existent of conscious (knowledge - law, Action - active) occupation}*
æktʃʊəl (actual)	**यर्थाथ** = अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) स्पष्टोन्मुख (k) जीवन्तोन्मुख (tʃ) का छिपाहुआ अस्तित्व विस्तार (ʊəl)*{अस्तित्व में प्रत्यक्ष होता हुआ यर्थाथ (स्पष्ट + जीवन्त + भाव उपलब्धि = यर्थाथ}* ; visible existent in existence (æ)clarifying liveliness (ktʃ) in the direction of expanded existence (ʊəl)*{the visible existent has (clear + liveliness + available yield = actual) existence }*
ædem (adam)	**आदि पुरुष** = अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) भूतकाल में (de) होना (m) *{अस्तित्व का प्रत्यक्ष जो भूतकाल में था}* ; being (m) past time (d) indicated (e) visible existent in existence (æ) *{Existence of the indicated existent (adam) being in past}*
sæk (sack)	**लूटना, बोरे में भरना** = उपलब्ध (s) अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) में चेतना (k), *{जो उपलब्ध हो गया उसके बारे में चेतना} {उपलब्धता के अस्तित्व में प्रत्यक्ष क्रियात्मक चेतना करना}* ; conscious (k) for the visible substance in existence (æ) available (s)*{conscious (action) of what is available}*
mædʒɪk (magic)	**जादू** = पदार्थ (m) अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) प्रत्यक्ष जीवन्त (dʒɪ) चेतना (k) *{अस्तित्व में पदार्थ के प्रत्यक्ष रूप को जीवन्त रूप में भोगना}* ; conscious (k) towards (ɪ) Liveliness (dʒ) of visible existent in existence (æ) matter (m) *{viewing the matter as Liveliness in perception}*

væn (van)	**माल रखने की गाड़ी** = अस्तित्व में प्रत्यक्ष अन्दर को बिना शर्त अनुमोदित (væ) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (n) *{अस्तित्व को बिना शर्त अन्दर रखने की स्वीकृति}* ; eager to accept (n) unconditionally keeping inside approved (v) of the visible existent in existence (æ)*{accepting the visible existence inside with unconditional approval}*
dʒækɪt (jacket)	**जाकेट** = जीवन्तता (dʒ) अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) चेतना {भोग} में (k) प्रत्यक्ष (ɪ) प्रवृत्त (t)*{गर्मी की प्रत्यक्ष चेतना में प्रवृत्त}* ; occupied (t) towards conscious (kɪ) of the visible existent in existence (æ) of liveliness (dʒ) *{occupied towards experience conscious for the visible existent that is heat.}*
fækt (fact)	**यर्थाथ** = बिना शर्त अनुमोदित (f) के अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) का चेतनात्मक (k) प्रवृत्त (t) *{बिना शर्त स्वीकृत अस्तित्व का प्रत्यक्ष रूप से ज्ञानात्मक चेतन प्रवृत्त}* ; the conscious (k) occupation (t) visible existent in existence (æ) with un-conditional approval (f) *{"the unconditional approval in existence (Fact)" to the occupied in knowledge conscious}*
ten (ten)	**दस** = इंगित प्रवृत्त (te) की रिक्तता (n) *{जहाँ संख्या को प्रवृत्त करना (गिनती गिनना) समाप्त हो जाये}* ; emptiness (n) in the indicated occupation (te)*{there is no figure/number left after this}*
ken (ken)	**बुद्धि विषय** = इंगित चेतना (ke) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (n) *{इंगित ज्ञानात्मक चेतना में जानने की जिज्ञासा}* ; eager to acquire (n) the indicated conscious (ke) *{acquiring towards the knowledge conscious.}*
kæn (can)	**सकना** = चेतन के (k) अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (n) *{क्रियात्मक चेतन के अस्तित्व में क्रिया को अंगीकृत करने की उत्सुकता}* ; visible conscious in the existence (kæ) action (n)*{action of visible 'action conscious' in existence}*
fen	**दलदल** = इंगित अपरीक्षित अनुमोदन (fe) को अंगीकृत करने के लिये

(fen)	उत्सुक (n) *{बिना समझे बूझे सबको अपने अन्दर अंगीकृत करने के लिये उत्सुक।}* ; eager to acquire (n) the un-checked support (f) indicated (e) *{eager to acquire in the indicated un-checked support} {the fen has no support}*
fæn (fan)	**पंखा** = बिना शर्त अंगीकृत करने के लिये उन्मुख (f) में अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (æ) की क्रिया (n)*{बिना शर्त अनुमोदन के अस्तित्व (हवा) को अंगीकृत करने की उत्सुकता}* ; eager to acquire (n) visible existent in existence (æ) of un-conditionally approving (f)*{eager to acquire the visible (feel able) existent (air) with un-conditional approval}*
end (end)	**अन्त** = इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (e) रिक्त (n) होआ हुआ (d) *{जो समाप्त हो चुका है, उसे इंगित करने वाला }* ; had (d) empty (n) indicated (e) *{indicated is already empty, nothing remained}*
efɜːt (effort)	**प्रयत्न** = इंगित (e) बिना शर्त अनुमोदित (f) सत् के द्वारा (ɜː) प्रवृत्त (t) *{इंगित को बिना रोक टोक के द्वारा प्रवृत्त करना}* ; active (t) by the un-conditional support (fɜː) towards indicated (e)*{active towards indicated with un-conditional support }*
endʒin (engine)	**इंजन** = इंगित (e) रिक्तता में (n) जीवन्तता (dʒ) अन्दर (in) ; indicated (e) acquiring (n) of the energy (dʒ) inside (in)*{acquiring the indicated power inside (by using fuel)}*
edʒ (edge)	**तीक्ष्णता** = बाहर प्रत्यक्ष करने वाली (e) दृढता (dʒ) *{बाहर प्रत्यक्ष होती हुई दृढ़ता (मजबूती)}* ; the strength (dʒ) visualized outside (e)
entə(r) (enter)	**प्रवेश** =इंगित (e) अंगीकृत करने को उत्सुक (n) के प्रवृत्त (tə) में एकाग्र (r) *{इंगित जो अंगीकृत करने को उत्सुक है, अर्थात् "अन्दर की तरफ" प्रवृत्त होने में एकाग्र}* ; involve in (r) occupation (tə) towards indicated inside (en) *{act to move towards inside}*
tʃek (check)	**अवरोध** = जीवन्तोन्मुख (tʃ) में इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (e) विश्लेषणोन्मुख (k) *{क्रियात्मक जीवन्तता में इंगित ज्ञानात्मक चेतन}* ; clarifying (checking) (k) towards indicated (e) liveliness achieving (tʃ)

	{applying check in getting the indicated achievement}
beg (beg)	**मांगना** = बन्धन / मजबूरी (b) बाहर प्रत्यक्ष करने वाला (e) स्पष्ट (g) *{मजबूरी को प्रत्यक्ष करना}* ; the clarity (g) visualizing outside (e) to the bound /compulsion (b) *{showing clearly the compulsion }*
men (men)	**आदमी** = प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक (m) इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (e) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (n) *{इंगित प्रस्तुति को अंगीकृत करने की उत्सुकता, पुरुष का मूल स्वरूप}* ; eager to acquire (n) the indicated (e) to 'keen to offer herself' (m)*{eager to acquire the indicated offerings from outside, definition of man}*
fel (fell)	**गिरा** = अपरीक्षित (अनालम्बित) अनुमोदन को (f) बाहर प्रत्यक्ष करने वाला (e) विस्तार (l) *{बिना आलम्ब के जो इंगित स्वयम् ही में विस्तारित (गत्यात्मक) हो रहा है}* ; expansion (l) of indicated (e) un-examined (un-supported) approval (f)*{result of un-supported approval}*
ded (dead)	**मरा** = होए हुए (d) इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (e) भूतकाल (d) *{इंगित प्रत्यक्ष मृत}* ; had (d) indicated (e) past (d)*{indicated past}*
set (set)	**स्थापित** = व्यक्त का (s) इंगित (e) प्रवृत्त (t) *{व्यक्त को इंगित करने में प्रवृत्त हो}* ; occupa-tion in (t) indicating (e) expression (s) *{indicated expressions are occupied}*
wit (wit)	**बुद्धिचातुरी** = छिपे हुऐ के व्यक्त को बाहर (w) प्रत्यक्ष (i) में प्रवृत्त (t) *{छिपी हुई बात को जानने में प्रवृत्त रहना}* ; occupied (t) in visualizing (i) the exposed of the hidden (w)*{occupied in exposing the hidden}*
wet (wet)	**गीला** = छिपे हुऐ के व्यक्त को बाहर (w) प्रत्यक्ष करने वाला (e) प्रवृत्त (t) *{कपड़ा गीला होने से छिपे हुऐ को बाहर व्यक्त कर देना है}* ; occupied in (t) indicating (e) the exposed of the hidden entity (w)*{hidden entities exposed due to wet}*
əgəʊ (ago)	**पहले का** = स्पष्ट होए हुऐ में (əg) अस्तित्व (ə) में छिपा (ʊ) *{इंगित में जो भोगात्मक स्पष्ट है, उसका अस्तित्व छिपा हुआ है, यदि छिपा हुआ है तो पहले से होगा}* ; hidden in (ʊ) the existence (ə) of already evident

	(əg) ; already existed.
ətend (attend)	**ध्यान रखना** = अस्तित्व को (ə) बाहर प्रत्यक्ष करने वाले प्रवृत्त में (te) क्रिया (n) होए हुऐ (d) *{अस्तित्व को निरन्तर प्रत्यक्ष करने में प्रवृत्त।}* ; had (d) Act (n) of occupied (t) in indicated (e) existence (ə) *{occupied in the act of visualizing the indicated existence}*
əmju:z (amuse)	**मन बहलाना** = अस्तित्व की (ə) अंगीकृत होने के लिये उत्सुक (m) अन्तर्गमित होती हुई प्रत्यक्ष स्वीकृत (ju:) जीवन्तता आनन्द (z) *{जो स्वीकृत होने के लिये उत्सुक अस्तित्व है उसकी निरन्तर अन्तः में होती हुई स्वीकृति से जीवन्त होता आनन्द}* ; existent (ə) of Eager to offer variations (m) continue inside (u:) displayed accepted (j) pleasure (z)*{pleasure due to display accepted, continue inside, by the variation offerings}*
əbʌv (above)	**ऊपर की ओर** = अस्तित्व में (ə) बन्धित (b) स्वयम् से बाहर होता हुआ (ʌ) बिना शर्त अन्दर अनुमोदित (v) *{जो बिना शर्त अन्दर बन्धित है, उसका अन्दर से बाहर (ऊपर) अस्तित्व}* ; bound (b) existence (ə) unconditionally approved kept inside (v) from self to outside (ʌ)*{the bound existence, which was kept un-conditionally inside, is coming out (upward)}*
kərek (correct)	**सुधारना** = स्पष्टोन्मुख अस्तित्व (kə) इंगित (e) एकाग्र चेतना में (rk) *{एकाग्र चेतना इंगित ज्ञानात्मक शुद्धता में उन्मुख}* ; in the concen-trated conscious (rk) indicated (e) towards accuracy (kə) *{towards accuracy by indicated concentrated conscious}*
gəzet (gazette)	**राज–पत्र** = स्पष्ट अस्तित्व को (gə) व्यक्तात्मक जीवन्तता (z) बाहर प्रत्यक्ष करने वाली (e) प्रवृत्त (t) *{शुद्ध व्यक्त (सूचना) जीवन्तता (आज्ञा) के साथ प्रत्यक्ष होने में प्रवृत्त}* ; occupied in (t) of indicated (e) expressing liveliness (z)the existing clarity (gə)*{occupied in expressing with liveliness (right full expression) the indicated `clear' (order)}*
pəraed (parade)	**कबायत** = अनुमोदित (pə) ऐकात्म सत्ता से (ra) स्थापित इंगित प्रत्यक्ष (de) *{इंगित एकात्म सत्ता को गत्यात्मक अनुमोदित करना, कबायत में सभी सदस्य एक ही सत्ता के अन्तर्गत गति करते।}* ; indicated (de)

	concentrated /stream line/flowing entity (ra) approval (pə) *{movement approval of indicated singular entity}*
kəset (cassette)	**कैसेट** = स्पष्टोन्मुख अस्तित्व (kə) में व्यक्त (s) को बाहर प्रत्यक्ष करने वाली (e) प्रवृत्त (t) *{ज्ञानात्मक व्यक्त अस्तित्व को बाहर प्रत्यक्ष करने में प्रवृत्त}* ; occupied with (t) visualizing outside (e) the expressed (s) clarifying existence (kə)*{occupied in expressing outside the existence of subject}*
meʒə(r) (measure)	**परिमाण** = प्रस्तुत उत्सुक (m) को इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (e) में जीवन्त को अंगीकरण (ʒə) में रत (r)*{द्रव्य में भोगात्मक जीवन्त को इंगित करने में एकाग्र}* ; involve (r) of feeling liveliness (ʒ) existence (ə) towards indicated (e) substance (m) *{Involve in indicating the life (quantum) in the offered matter}*
kʌlə(r) (colour)	**रंग** = स्पष्टोन्मुख (k) स्वयम् से बाहर होता हुआ (ʌ) भाव उपलब्धता के अस्तित्व (lə) में रत (r) *{ज्ञानात्मक स्पष्टता को बाहर प्रत्यक्ष में* भाव उपलब्धता *कराने में रत}* ; involve (r) in the expanding (lə) from self to outside (ʌ) clarity (k) *{involved in expanding coming out clarity. colour expands the clarity}*
seɪlə(r) (sailor)	**नाविक** = व्यक्त (s) को बाहर प्रत्यक्ष करने वाले (e) प्रत्यक्ष विस्तार (ɪl) में एकाग्र (ər) *{व्यक्त को बाहर (पानी से) प्रत्यक्ष रखते हुऐ उपलब्ध गत्यात्मक विस्तार}*; involve in (r) the expanding (lə) towards (ɪ) visualizing outside (e) appearance (s)*{expanded concentration towards in the view of indicated appearance}*
fʊl (full)	बिनाशर्त अंगीकृत उन्मुख (f) अन्तःस्थित (ʊ) विस्तार (l) *{बिना नियन्त्रण अंगीकृत का विस्तार करने से जगह 'फुल' हो जाती है।}* ; available expansion (l) in side (ʊ) towards unconditional acquiring (f) *{acquiring unconditionally inside up to the available expansion}*
fʊt (foot)	बिना शर्त अंगीकृत उन्मुख (f) अन्तःकी दिशा में (ʊ) प्रवृत्त (t) *{ बिना शर्त शरीर के वजन को अंगीकृत करने की दिशा में प्रवृत्त }* ; carry on (t) in the direction of (ʊ) un-conditional support (f) *{foot always*

	provides the un-conditional support}
pʊʃ (push)	**दबाना** = अनुमोदन (p) की दिशा में (ʊ) उपलब्ध अनुभूतित जीवन्त (ʃ) *{जिस के कारण जीवन्त (भोगात्मक) अनुभूति की उपलब्धि होती है, स्वीकृति की दिशा में}* ; available liveliness feelings (ʃ) in the inner direction of (ʊ) support (p) *{when we push something, it gives support to feel pressure}*
wʊl (wool)	**घना बाल** = छिपे को व्यक्त करने (w) की अन्तः में (ʊ) उपलब्ध विस्तार (l)*{बाल अन्दर से व्यक्त होने की दिशा में विस्तारित होते रहते हैं}* ; expansion (l) in side of (ʊ) displaying from hidden inside (w) *{the hair expands from inside}*
ʃʊd (should)	**चाहिये** = संस्कार (ʃ) की अन्तः में (ʊ) होआ हुआ (d) *{संस्कार में जो भूतकाल से स्थित है}* ; had (d) in side (ʊ) of belief (ʃ) *{direction of belief}*
gʊd (good)	**अच्छा** = स्पष्ट की अन्तः में (gʊ) होआ हुआ (d) *{पहले से शुद्ध होआ हुआ}* ; had (d) in side (ʊ) of analyzed clarity (g) *{fixed in the direction of analyzed clarity/accuracy}*
ɜːθ (earth)	**पृथिवी** = सत् के द्वारा होता हुआ ठहराव उन्मुख (ɜːθ) *{सत् का ठहर कर स्थापित होना ('पृथिवी' की परिभाषा, जहाँ सत् स्थापित होता है वह 'द्यावा' कहलाता है)}* ; towards establishing (θ) by the existence (ɜː) *{establishing to the existent (matter)}*
ɜːn (urn)	**पात्र** = सत् के द्वारा होता हुआ (ɜː) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (n) *{जो सत् को निरन्तर अंगीकृत करने केलिये उत्सुक हो}* ; eager to acquire (n) by the existence (ɜː)*{eager (continue) to acquire by the existence}*
ɜːdʒ (urge)	**शक्ति लगाना** = शक्ति (dʒ) सत् के द्वारा होता हुआ (ɜː) *{सत् रूप में शक्ति उपस्थित}* ; power (dʒ) by the existence (ɜː) *{powering the existence}*
pɜːl (pearl)	**मोती** = अनुमोदित (p) सत् होता हुआ (ɜː) का विस्तार (l) *{अनुमोदन रूपी सत् अर्थात् पसन्द के द्वारा होता हुआ भाव विस्तार।}* ; expansion (l) by the

	existence (ɜː) approval (p) *{approval expansion by the existence}*
dɜːθ (dearth)	**अकाल** = बीतते हुऐ {समाप्त होते हुऐ} (d) सत् के द्वारा होता हुआ (ɜː) ठहराव उन्मुख (θ) *{बीतने रूपी सत् अर्थात् समाप्त होते होने में ठहराव उन्मुख, अर्थात् सब समाप्त हो रहा है।}* ; establish (θ) by the existence (ɜː) ending (d) *{establishing the end}*
wɜːd (word)	**शब्द** = छिपे को व्यक्त करता हुआ (w) सत् के द्वारा निरन्तर होता हुआ (ɜː) हुआ होना (d) *{छिपे हुऐ सत् के द्वारा होया हुआ}* ; had (d) by the existence (ɜː) the display of the hidden (w) *{displayed the hidden by the existence}*
gɜːl (girl)	**लड़की** = स्पष्ट (g) सत् के द्वारा होती हुई (ɜː) उपलब्ध भावना (l) *{शुद्धता रूपी सत् अर्थात् सौन्दर्य के द्वारा होती हुई भाव उपलब्धता।}* ; available emotions (l) by the existence (ɜː) clarity {beauty} (g) *{available emotion of clarity (beauty) by the existence}*
tɜːn (turn)	**बारी** = प्रवृत्त (t) सत् के द्वारा होता हुआ (ɜː) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (n) *{प्रवृत्त रूपी सत् अर्थात् प्रवृत्ति के द्वारा अंगीकृत करने की उत्सुकता होती हुई }*; eager to acquire (n) by the existence (ɜː) occupy (t)*{the existence is occupying due to 'eager to acquire'}*
fɜː(r) (fur)	**महीन रोवें** = बिना शर्त अनुमोदन (f) एकाग्र के द्वारा होता हुआ (ɜːr) *{एकाग्र द्वारा होता हुआ बिना शर्त अनुमोदन}* ; by the existence involve (ɜːr) un-conditional approval (f) *{involve in approving un-conditionally}*
ɜː(r) (err)	**गलती** = सत् का होता हुआ (ɜː) एकाग्र (r) *{सत् में एकाग्रित होना अर्थात् किसी के प्रभाव में आ जाना।}* ; involve (r) by the existence (ɜː) *{in influence}*
stɜː(r) (stir)	**उकसाना मथना** = व्यक्त (s) प्रवृत्त (t) के प्रभावित (ɜːr) *{व्यक्त के द्वारा प्रवृत्त को प्रभावित करना}*; influencing (ɜːr) expression(s) carry on (t) *{occupied in expressing the influence}*
spɜː(r)	**प्रेरणा** = व्यक्त के (s) अनुमोदन का (p) प्रभाव (ɜːr) *{व्यक्त के द्वारा*

(spur)	*अनुमोदन को प्रभावित करना}* ; influencing (ɜːr) expression (s) with approvals (p) *{providing the influencing expression to the approvals}*
prɪɜː(r) (prefer)	**चुनना** = अंगीकृत उन्मुख (p) के प्रभाव में (ɜːr) प्रत्यक्ष (ɪ) रत (r) *{प्रभावित होकर अंगीकृत– उन्मुख होने में रत होना (चुनना)}* ; influence (ɜːr) towards (ɪ) involve (r) approving (p) *{involved in approving towards influenced}*
ɔːl (all)	**पूर्ण** = सत् के अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता (ɔː) उपलब्ध विस्तार (l) *{उपलब्ध विस्तार को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता, सत्ता ने पूर्ण विस्तार को छिपाया हुआ है।}* ; available expansion (l) entity hiding the existent inside (ɔː) *{availability of expansion at the inside the entity}*
ɔːt (ought)	**उचित होना चाहिये, योग्य** = सत् को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता (ɔː) प्रवृत्त (t) *{प्रवृत्त को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता, अर्थात् प्रवृत्त के संस्कार}* ; occupied (t) entity hiding the existent inside (ɔː) *{biased }*
pɔːz (pause)	**विराम, विश्राम** = अनुमोदन (p) सत् को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता (ɔː) व्यक्त जीवन्तता (z) *{अनुमोदन द्वारा व्यक्त जीवन्तता को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता, व्यक्त जीवन्तता के छिपने से सब कुछ रूक जाता है}* ; approving (p) entity hiding the existent inside (ɔː) calm (z) *{relaxing at the inside of approved entity}*
kɔːt (caught)	**पकड़ा** = चेतन (k) सत् को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता (ɔː) प्रवृत्त (t) *{गिरफ्तार करने वाले चेतन में प्रवृत्त}* ; active (t) entity hiding the existent inside (ɔː) conscious (checking) (k) *{occupied under arrest}*
drɔː (draw)	**खींचना, चूसना** = बीतती हुई (d) अंगीकृत प्रवाह (r) सत् को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता (ɔː) *{सत् को सत्ता के अन्दर अंगीकृत प्रवाह किया हुआ}* ; ending (d) accepting flow (r) entity hiding the existent inside (ɔː) *{entity hiding the accepted flow inside}*

dʒɔː (jaw)	**जबड़ा** = दृढ़ता (dʒ) सत् को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता (ɔː) *{दृढ़ता को अन्दर छिपाये रखने वाली सत्ता }* ; strength (dʒ) entity hiding the existent inside (ɔː) *{entity hiding the strength inside}*
tʃuːz (choose)	**चुनना** = जीवन्त उन्मुख (tʃ) अन्तर्गमित होती हुई (uː) व्यक्त होती जीवन्तता (z) *{जो भी जीवन्तता अन्तर्गमित हो रही है उसमें से चुनी हुई को व्यक्त करना}* ; expressing liveliness (z) by the introversive (uː) the liveliness achieving (tʃ) *{expressing the selected liveliness out of what we are inflowing inside}*
zuːm (zoom)	**बढ़ाना** = व्यक्त होती जीवन्तता (z) निरन्तर अन्तर्स्थित होती हुई (uː) प्रस्तुत उत्सुक (m) *{अन्तः में निरन्तर जीवन्तता व्यक्त होने से आकार बढ़ जाता है।}* ; being (m) by inner accepting (uː) expressing liveliness (z)*{size is expanded due to acceptance of liveliness inside the object}*
huː (who)	**कौन** = स्थूल के लिये (h) अन्तर्मुखिता के द्वारा (uː)*{जो स्थूल सामने है, उसके बारे में अन्दर ही विचार करना}* ; introverting (uː) physical (h) *{thinking (introvert) to identify the person in physical}*
juː (you)	**तुम** = प्रत्यक्ष स्वीकृति (j) अन्तर्मुखिता के द्वारा (uː)*{प्रत्यक्ष को अन्तर्मुखित हो (विचार कर) स्वीकृत करना, पहचानना}* ; displaying acceptation (j) by the introverting (uː) *{accepting the displayed identity by introverting}*
truː (true)	**सत्य** = प्रवृत्त (t) प्रज्ञा की अन्तः स्वीकृति के द्वारा (ruː)*{प्रवृत्त प्रज्ञा की अन्तः स्वीकृति के द्वारा जो उपलब्ध है।}* ; carry on (t) intellectual (r) by inside accepting (uː)*{occupied in the available by the intellectual accepting inside}*
œ (Zzz)	**खरार्टा** = शान्ति–शान्ति–शान्ति (नींद में) (œ) *{जीवन्तता के निरन्तर व्यक्त करता हुआ}* ; expressing pleasure peace peace *(sleep)*
13.02 ARABIC (Arab)	
malla (got	**मन न लगना** = अ–अंगीकृत सत्ता (ma) में विस्तार होती हुई सत्ता (lla) *{अंगीकृत होने के लिये सत्ता निरन्तर विस्तारित हो रही है परन्तु अंगीकृत ना*

bored)	*हो पाना। अनुमोदनात्मक भाव की अनुपलब्धता।}* ; the continue expanding entity (lla)In the non-acquiring (un-supported) existing entity (ma)*{expanding the un-supported feelings}*
daθara (covered)	**ढका हुआ** = होआ हुआ (da) ठहराव सत्ता (θa) में अंगीकृत एकाग्र सत्ता (ra) *{सत्ता की अंगीकृत उपलब्धता में ठहराव होना।}* ; existing entity involve in (ra) had (da) not to offer (θa)' *{the entity is involved in not offerings, hence it is covered}*
dijin (religion)	**आस्था** = प्रत्यक्ष बीता हुआ (di) में प्रत्यक्ष स्वीकृत (j) प्रत्यक्ष को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक {अन्दर} (in) *{बीती हुई प्रत्यक्ष अन्तगर्मित स्वीकृति को अन्तः में स्थान देना, संस्कारों का सर्जन होना।}* ; *{पूर्व काल में जिसे हमने स्वीकार किया हुआ है उसी प्रत्यक्ष को हम अपना आस्था मान लेते है}* visualized in past (di) viewing acceptation (j) inside (in) *{whatever is visualized in past and accepted is kept inside as the religion}*
nadda	**छोड़ना** = अंगीकृत उत्सुक सत्ता के प्रत्यक्ष का (na) का होता हुआ समापन का प्रत्यक्ष (dda) *{अंगीकृति का निरन्तर समापन हो रहा है।}* ; ending (dda) of eager to acquiring entity (na) *{the entity is ending its 'eager to acquire'}{releasing}*
saara (walked)	**चाल** = व्यक्त होती हुई निरन्तर सत्ता (saa) में एकाग्र सत्ता (ra) *{गत्यात्मक /क्रियात्मक व्यक्त सत्ता में एकाग्र}* ; the accepted concentration (ra) in expressing (knowledge, action, experience) entity continuously (saa)*{the accepted concentration is towards the action expressing entity}*
zaara (visited)	**देखा हुआ** = व्यक्त होती जीवन्त सत्ता को (zaa) अंगीकृत एकाग्र करना (ra) *{व्यक्त होती जीवन्त सत्ता में एकाग्र}* ; the accepted concen-tration (ra) in the displaying liveliness entity (zaa) *{the accepted concentration is towards the displayed entity}*
dʒadda (grand	**दादी माँ** = दृढता की/स्थायित्व की सत्ता (dʒa) का होता हुआ समापन (dda) *{स्थायित्व की सत्ता का निरन्तर बीतना}* ; continuously ending (dda) strengthen entity (dʒa) *{the strength of the*

mother)	*entity is continuously ending}*
13.03 BULGARIAN (Bulgaria)	
pija (I drink)	**मैं पीता हूँ** = प्रत्यक्ष अंगीकरण उन्मुख कर रहे (pi) को प्रत्यक्ष स्वीकृत करना (ja)*{अंगीकृत हो रहे की प्रत्यक्ष स्वीकृति करना}* ; the displaying acceptation (ja) visible towards acquiring (pi) *{accepting the acquiring}*
bija (I beat)	**मैं पीटता हूँ** = प्रत्यक्ष बन्धिन (bi) को प्रत्यक्ष स्वीकृत करना (ja) *{बन्धन की प्रत्यक्षता को प्रत्यक्ष स्वीकृत करना (सजा द्वारा)}* ; displaying acceptance (ja) by applying restrictions (bi) *{displaying the application of restrictions}*
most (bridge)	**पुल** = प्रस्तुत के लिये उत्सुक (m) दिशा में (o) व्यक्त (s) प्रवृत्त (t) *{उद्देश्य की दिशा में प्रवृत्त होने के लिये व्यक्त साधन}* ; occupied (t) in expressing (s) the submission (m) in the direction of (o) *{expressing the way to achieve towards the direction of your submission }*
far (light house)	**प्रकाश स्तम्भ** = बिना शर्त अनुमोदन (f) की सत्ता में (a) अंगीकृत एकाग्र (r) *{यह बिना शर्त सभी जहाजों को प्रकाश दिखाता है}* ; accepted concentration (r) by the entity (a) towards un-conditionally acquiring (f) *{accepted concentration in the entity of light house providing unconditional protection}.*
var (lime stone)	**चूने का पत्थर** = बिना शर्त आन्तरिक अनुमोदित सत्ता (va) में अंगीकृत एकाग्र (r)*{चूना दो पत्थरों के बीच बिनाशर्त आन्तरिक अनुमोदन से दोनों को एकाग्र कर जोड़ता है}* ; involve in (r) in the unconditionally keeping inside approved (va) *{lime is un-conditionally involved towards the 'unconditional acceptance inside' it (cementing effects)}*
riza (rose)	**गुलाब** = प्रत्यक्ष अंगीकृत (ri) एकाग्र (व्यक्तात्मक जीवन्तता) की सत्ता (za) *{प्रत्यक्ष अंगीकृत एकाग्र में जीवन्तता का व्यक्त होना।}* ; towards visible involve (ri) in the entity of expressed liveliness (za) *{rose always*

	involved in expressing liveliness}
tom (volume)	**फैलाव** = प्रवृत्त की दिशा में (to) प्रस्तुति के लिये उत्सुक (m) *{प्रवृत्त की परोक्ष दिशा में प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक होना}* ; eager to submit (m) towards the available direction of occupation (to) *{spreading (submitting self) to occupy any available direction}*
dom	**घर** = बीते हुऐ स्थापित दिशा में (do) प्रस्तुति के लिये उत्सुक (m) *{पूर्व स्थापित स्थान में प्रस्तुत उन्मुख होना}* ; eager to submit self (m) in the available direction of already had (do)*{submitting self at where we were earlier}*
nos (nose)	**नाक** = अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (n) छिपी दिशा से (o) व्यक्त (s) *{यहां सूंघने का भाव उदित हो रहा है} {किसी भी दिशा से होते हुऐ व्यक्त (सुगन्ध) को अंगीकृत (स्वीकृत) करने के लिये उत्सुक}* ; expressing (s) from any direction (o) eager to accept (n)*{eager to accept the expression (smell) coming from any direction}*
kol (pole)	**खम्बा** = चेतन (k) की उपलब्ध दिशा में (o) उपलब्ध *विस्तार* (l) *{भोगात्मक चेतन एक ही दिशा में विस्तार को देख रहा है}* ; available expansion (l) towards available direction of (o) conscious (k) *{conscious available in the direction of length}*
13.04 CHINESE (China)	
pa (father)	**पिता** = सशर्त अंगीकरण उन्मुख सत्ता (pa) *{सशर्त सुरक्षा प्रदान करने वाली सत्ता}* ; conditionally approving (p) entity (a) *{the father approves (providing protection) conditionally}*
ma (mother)	**माता** = प्रस्तुति के लिये उत्सुक सत्ता (ma) *{पदार्थ प्रस्तुत करने वाली सत्ता}* ; eager to submit the material (m) entity (a) *{the entity, providing the material }*
fa (flower)	**फूल** = बिना शर्त अंगीकरण उन्मुख सत्ता (fa)*{स्वच्छन्द रूप से अनुमोदित सत्ता}* ; un-conditionally approving (f) entity (a) *{the un-conditionally approved entity}*
ts^h	**शूल** = प्रवृत्त में (t) जीवन्त अहसास (s^h) *{जीवन्त अहसास कराने में प्रवृत्त}*

(fork)	; occupied in (t) live feeling (sʰ) *{feeling of irritation}*
kʰa (truck)	**माल ढोने वाली गाड़ी** = विषय के लिये उपलब्ध स्थान (kʰa) *{भोगात्मक चेतना के लिये उपलब्ध स्थान की सत्ता।}* ; entity (a) providing place for the subject (kʰ)
pʰaŋ (to cook)	**पकाने के लिये** = बिना शर्त अनुमोदित सत्ता (pʰa) में स्पष्ट उत्सुक (ŋ) *{बिना शर्त अनुमोदित सत्ता में विश्लेषण (पकाने) की उत्सुकता}* ; eager to clarify {analyze process}(ŋ) un-conditionally approving (pʰa){*eager to process (cooking) is un-conditionally approved}*
13.05 CATALAN (Catalonia)	
piga (speak)	**बोलना** = अनुमोदित होना बाह्यमुखी (pi) स्पष्ट सत् (ga) *{प्रत्यक्ष अनुमोदन (ज्ञानात्मक) की क्रियात्मक स्पष्ट सत्ता}* ; approving the extrovert (pi) clear existent/explained (ga) *{'extrovert approving (speaking)' to explain}*
biga (beam)	**बीम** = प्रत्यक्ष बंधित अंगीकरण (bi) की स्पष्ट सत्ता (ga)*{प्रत्यक्ष अवधारित (भोगात्मक) की स्पष्ट सत्ता, बीम ने छत को अवधारित किया हुआ है।}* clear entity (ga) by visible protection acquisition (bi) *{beam is giving protection to the roof}*
mama (mum)	**खामोश** = प्रस्तुति के लिये उत्सुक सत्ता (ma) का अ-अनुमोदनता (ma) *{प्रस्तुति के लिये स्वीकृति ना मिलना}* ; Non approving entity(ma) of eager to offer (ma) *{Offerings are not permitted by the entity}*
mana (he commands)	प्रस्तुत होने के लिये उत्सुक सत्ता (ma) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुकता (na) *{प्रस्तुति को स्वीकृति प्रदान करना।}* ; eager to manliness entity (na) towards the submissive (m) entity (a) *{manliness commands over submissive entity}*
serra (saw (n))	**कहावतें** = व्यक्त को बाहर प्रत्यक्ष करने वाला (se) एकाग्र बुद्धि के द्वारा (rra) *{इंगित व्यक्त में एकाग्र बुद्धि की सत्ता}* ; indicated expressions (se) with intelligent concentration (rra) *{accepting with intelligent concentration the indicated expressed }*
palla	**भूसा** = अनुमोदित सत्ता (pa) के विस्तार में विस्तारित होती हुई (lla) *{अति*

(straw)	*विस्तार होते होने का अनुमोदन होना}* ; approving (p) entity (a) expanding (ll) entity (a) *{the approval as multi expanding entity}*
13.06 CROATIAN (Crotia)	
faza (phase)	**अवस्था** = अबन्धित अनुमोदनता (fa) में व्यक्तात्मक जीवन्तता (za) *{व्यक्तात्मक जीवन्तता का अबन्धित अनुमोदन, अर्थात् जैसी भी जीवन्तता व्यक्त हो रही है, उसका अनुमोदन}* ; the expressed liveliness (z) entity (a) un-conditionally approving (f) entity (a) *{expressing the Liveliness without applying any condition}*
vaːza (vase)	**फूलदान** = छिपे सत् / अन्तःस्थित (v) सत्ता के द्वारा (aː) आनन्दता (za) *{फूलदान के अन्तः में स्थित सत्ता (फूल) द्वारा निरन्तर जीवन्तता (आनन्द) व्यक्त करना}* ; expressed liveliness (happiness) (z) entity (a) inside (v) by the entity (aː) *{the entity (flower) expressing liveliness inside the entity (vase)}*
nos (nose)	**नाक** = अंगीकृत उत्सुक (n) की छिपी दिशा मे उपलब्ध (o) व्यक्त (s) *{गंध स्वीकृति}* ; eager to accept (n) the available, in direction of (o) expressed (s) *{entity (nose) accepting the smell from any direction}*
ʃal (scarf)	**स्कार्फ** = अनुभूत ऊर्जा (ʃ) का सत्ता (a) में विस्तारत्व (l)*{शरीर की ऊर्जा शरीर में ही रहें}* ; the expansion (l) of the energy feeling (ʃ) in of entity(a)*{expansion of energy feeling by the scarf}*
ʒaːl (beach)	**समुद्र तट** = अनुभूतित जीवन्तता (ʒ) की सत्ता के द्वारा (aː) विस्तारत्व (l) The expansion (l) *{अनुभूतित जीवन्तता की सत्ता के द्वारा होता हुआ फैलाव}*; of feeling liveliness (ʒ) by the entity (aː) *{expansion of liveliness and happiness feeling at the entity (beach)}*
raːd (work (n))	**कार्य** = अंगीकृत एकाग्र (r) सत्ता के द्वारा (aː) किया हुआ (d) *{सत्ता के द्वारा क्रिया को एकाग्रता से अंगीकृत किया हुआ है}* ; had (d) involve (r) by the entity (aː) *{done by involved entity}*
loːv	**अनुसरण** = भाव उपलब्धता (l) की दिशा के द्वारा (oː) बिनाशर्त अनुमोदित (v) *{भाव उपलब्धता के द्वारा बिना शर्त अन्तः में अनुमोदित}* ;

(chase)	unconditionally approved inside (v) available emotion (l) in the continue direction of (oː)*{unconditional acceptance kept inside by the available emotions}*
13.07 CZECH (Bohemia)	
pɛrp (pen)	**पेन** = अस्तित्व में सत् का प्रत्यक्ष करने वाले अनुमोदन (pɛ) में संलिप्त (r) अनुमोदन (p)*{पेन अस्तित्व में सत् को प्रत्यक्ष करने का अनुमोदन देता है}* ; appro-ving (p) display existent in existence (ɛ) with concentration (r) approved (p)*{approving the display (written) in existence, approved by concentration}*
bota (shoe)	**जूते** = सुरक्षित दिशा से उपलब्ध (bo) प्रवृत्त सत्ता (ta) *{सत्ता की प्रवृत्तता के लिये सुरक्षा की उपलब्धता}* ; from secured direction (bo) move on entity(ta) *{to secure the 'move on' entity}*
tɛnto (this)	**यह** = अस्तित्व में सत् का प्रत्यक्ष करने वाले प्रवृत्त (tɛ) अंगीकृत करने के लिये उत्सुक को (n) प्रवृत्त दिशा में उपलब्धता (to) *{सत् को अंगीकृत करने की उत्सुकता को प्रवृत्त दिशा में उपलब्धता}* ; occupied direction of (to) eager to acquire (n) the visible existent in occupation (tɛ) *{acquiring towards the available occupied direction}*
duːm (house)	**घर** = पूर्व स्थापित (d) में अन्तःस्थित होता हुआ (uː) संग्रह (m) *{पूर्व स्थापित स्थान जहाँ संग्रह अन्तःस्थित होता है}* ; made (d) for inner existing (uː) material (m)*{made for storing material inside}*
kolo (wheel)	**पहिया** = विस्तार की दिशा में (lo) चेतन के उपलब्ध के सत में छिपा (ko) *{क्रियात्मक चेतना में छिपी विस्तार की दिशा।}* ; direction of expansion (longing) (lo) Available from the hidden entity of conscious (ko)*{axial is the hidden entity of the conscious, from where the expansion is take place}*
fakulta (faculty)	**योग्यता** = अपरीक्षित अनुमोदित सत्ता (fa) में छिपी चेतना (ku) के विस्तार में (l) प्रवृत्त सत्ता (ta) *{सत्ता में जो छिपी चेतना है उसे विस्तार में प्रवृत्त करना}* ; unconditionally approval (fa) of the hidden conscious (ku) for expansion (l) Occupation (ta) *{uncon-ditionally*

	approving the occupation expanding the 'hidden conscious' (intelligence) of the entity}
sila (strength)	**शक्ति** = बाह्यमुखी (i) व्यक्तता (s) के विस्तार की सत्ता (la) *{विस्तारित क्रियात्मक सत्ता का बाहर व्यक्त होना}*; visible (i) expression (s) of the expanded entity (la)*{out flow expression of expanded entity}*
ruka (hand)	**हाथ** = अन्तःस्थित संलिप्तता (ru) में क्रिया सम्बध्य चेतनता की प्रत्यक्ष सत्ता (ka)*{आन्तरिक एकाग्रता के द्वारा क्रियात्मक चेतन का होना}* ; the inner exist involve (ru) in 'action conscious' entity (ka) *{act conscious entity is involve from inside}*
lɛt (flight)	**उड़ान** = विस्तार के सत् का अस्तित्व प्रत्यक्ष करने (lɛ) में प्रवृत्त (t) *{जो विस्तार के सत् को प्रत्यक्ष करने में प्रवृत्त}* ; occupying in (t) displaying the existence of expansion (lɛ) {Occupied in displaying the existence of expansion}
auto (car)	**कार** = सत्ता में (a) छिपी (u) प्रवृत्त की दिशा (to)*{प्रवृत्त की दिशा अन्दर छिपीसत्ता से संचालित है}* ; In the direction of move on (to) exist inside (u) entity (a) *{the 'move on' is directed by hidden inside}*
13.08 DUTCH (Netherland)	
pen (pen)	**पेन** = बाहर प्रत्यक्ष करने वाले अनुमोदन (pe) की क्रिया (n) *{क्रियात्मक अनुमोदन से बाहर ज्ञानात्मक प्रत्यक्ष करने वाला}* ; act (n) of approving (p) of visualizing outside (e) *{pen is approving the visualization outside}*
tak (bough)	**शाखा** = चेतनता (k) में प्रवृत्त (t) सत्ता (a) *{सत्ता वृक्ष से चेतनता प्राप्त कर रही है।}* ; conscious (k) occupying (t) entity (a) *{the entity is occupying the consciousness from tree}*
dak (roof)	**छत** = समाप्त की सत्ता (da) का स्पष्टोन्मुख (k) *{कार्य की समाप्ति का स्पष्ट होना}* ; the explaining (k) of the completion (d) entity (a) *{the roof completes the house}*
gat	**फाटक** = प्रवृत्त (t) स्पष्टता की (g) सत्तामें (a) ; Move on (t) in clear

(hole)	(without confusion) (g) entity (a)*{clear entity (hole) to move on}*
13.09 FRENCH (France)	
si (if)	**यदि** = व्यक्त (s) को प्रत्यक्षात्मक (i) *{नये व्यक्त को प्रत्यक्ष करने का प्रयास}* ; viewing (i) expressible (s) *{trying to express, if anything visualized}*
se (his , hers)	**उसका** = व्यक्त (s) का इंगित करने वाला (e) *{प्रत्यक्ष व्यक्त को इंगित करना}* ; express (s) indicated (e) *{express towards the indication}*
sɛ (know)	**जानना** = व्यक्त (s) अस्तित्व में सत् के प्रत्यक्ष (ɛ)*{अस्तित्व में (ज्ञानात्मक) व्यक्त/उपलब्ध का प्रत्यक्ष}* ; visible existent in existence (ɛ) expressed (s) *{the visible existent (knowledge) is expre-ssed in existence}*
sə (ths that,is)	**यह** = व्यक्त (s) अस्तित्व होना (ə) *{अस्तित्व का व्यक्त होना}* ; exposed (s) existence (ə)
su (under)	**नीचे** = व्यक्त (s) के अन्तःस्थित (u) *{अन्तःस्थिति को व्यक्त करना}* ; available/expressed (s) inside (u) {expressing towards inside}
bu (mud)	**कीचड़** = बन्धन अन्तःस्थित (bu) *{अन्तःस्थित में बन्धित अनुमोदन, कीचड़ में वस्तु फस जाती है।}* ; bounding (b) inside (u) *{bounding due to mud}*
fu (crazy)	**पागल** = अपरीक्षित अंगीकरण उन्मुख (f) के अन्तः में स्थित (u) *{अन्तः में स्वच्छन्द(बिना तर्क के) अनुमोदन}* ; the inner exist (u) un-examined approval (f) *{the entity has unexamined approvals (biased) exist inside}*
13.10 GALICAIN (Iberian Peninsula)	
tinta (ink)	**स्याही** = प्रत्यक्ष प्रवृत्त को (ti) अंगीकृत करने के लिये उत्सुकात्मक (n) प्रवृत्त सत्ता (ta) *{ऐसी प्रवृत्त सत्ता (स्याही) जो प्रत्यक्ष करने की प्रवृत्ति की क्रिया करती है।}* ; occupying entity (ta), eager to acquire (n) the visible occupation (ti) *{the entity in eager to acquire the visible*

	occupation}
fa (already)	**पहले से** = बिना शर्त अनुमोदित सत्ता (fa) *{पहले से अनुमोदन}* ; un-conditionally {already} approved (f) entity (a) *{already approved before applying conditions}*
owro (gold)	**सोना** = अप्रत्यक्ष दिशा में (o) छिपे हुऐ का व्यक्त (w) सम्मोहन (ro) *{अप्रत्यक्ष दिशा से जो व्यक्त हो रहा है, उसमें सम्मोहन होना}* ; captivate (ro) available in the direction of (o) displaying the hidden (w)*{when the gold is displayed. we captivate in that direction}*
baja (goes)	**जाता है** = सत्ता में प्रत्यक्ष स्वीकृति (ja) बन्धन की सत्ता (ba) (बन्धित स्थान पर ना रहने की स्वीकृति करना) ; displaying accepting (ja) of restrictions (ba) *{display of 'accepting the restriction' means to go out}*
bow (I go)	**मैं जाता** = अप्रत्यक्ष बन्धित दिशा में (bo) छिपते हुऐ का व्यक्त (w) *{बन्धित स्थान पर उपस्थित ना रहने का व्यक्त}* ; displaying the hidden (w) in the direction of restrictions (bo) *{displaying from inside (going outside) as per restrictions applied}*
bir (to come)	**आना** = प्रत्यक्ष बन्धन में (bi) अंगीकृत एकाग्र (r) *{प्रत्यक्ष बन्धन/सुरक्षा में अंगीकृत होना।}* ; acquiring involvement (r) in visible (i) boundary (b) {acquiring involvement in the visible boundary(b)
ter (To have)	प्रवृत्त (t) इंगित (e) संलिप्त (r) *{प्रवृत्तता इंगित में संलिप्त है।}* ; Involve (r) in occupying (t) as indicated (e) *{involve in occupying the indicated }*
koro (I run)	**मैं भागता हूँ** = चेतन की दिशा में (ko) प्रवाह की दिशा में (ro) *{क्रियात्मक चेतन के दिशा में निरन्तर होना}* ; the action-conscious is directed (ko) in the direction of decided concentration (ro) *{involve in the direction of Action-conscious}*
duro (hard)	अन्दर छिपाया हुआ (du) अप्रत्यक्ष उपलब्ध एकाग्रता (ro) *{ अन्दर जो भोगात्मक एकाग्रता छिपी हुई है, उससे सख्त हो रहा है।}* ; in the direction of the available concentration (ro) hided inside (du)

	{the concentration is hided inside} {hard is due to concentration}
13.11 GERMAN (Germany)	
passe (skip)	**कूदना** = अनुमोदन के सत्ता (pa) के व्यक्त होते हुऐ को (ss) को बाहर प्रत्यक्ष होने वाला (e)*{सत्ता द्वारा स्वीकृत बाहर की तरफ व्यक्त होता हुआ}* ; approved (pa) towards expressing (ss) as visualized outside (e)*{the entity is expressing the approved visualization outside (jumping)}*
fasse (catch)	**पकड़ना** = अपरीक्षित अनुमोदित सत्ता (fa) के व्यक्त होते हुऐ (ss) को इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (e) *{बिना अनुमोदन के जो सत्ता व्यक्त हो रही है, उसे इंगित करना}* ; un-checked (fa) expressing (ss) as visualized outside indicated (e) *{expressing the indicated un-checked entity}*
lange (long)	**लम्बा** = शुद्ध (g) इंगित (e) विस्तार (l) की सत्ता के (a) अस्तित्व को अंगीकृत उत्सुक (n) *{स्पष्ट दिखाई देता हुआ विस्तारित (लम्बी) सत्ता का अस्तित्व}* ; eager to acquire (n) the clear (g) indicated (e) expanded (l) entity (a) *{acquiring the clear indication of elongated entity}*
ja (yes)	**स्वीकृति** = प्रत्यक्ष स्वीकृत सत्ता (ja) ; displaying acceptation (j) entity (a)
hasse (hate)	**घृणा** = अस्तित्व में असत् उपलब्धता (ha) का व्यक्त होते होने (ss) को इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (e)*{स्थूलता (असत्) के व्यक्त होते हुऐ में इंगित भाव}* ; false (h) entity (a) expressing (ss) as visualized outside (e) *{the expression, visualizing outside as 'false motivating entity'}*
lasse (let)	**अनुमति** = अस्तित्व में उपलब्ध विस्तार (la) का व्यक्त होते होने (ss) को इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (e) *{विस्तार उपलब्धता के व्यक्त होते होने में इंगित भाव, आप क्रिया का विस्तार कर सकते हैं।}* ; available expansion (l) entity (a) expressing (ss) as indicated (e)

	{expressing indicates availability the expansion (to be used)}
bieten (to offer)	**प्रस्ताव** = बन्धित अंगीकरण को (b) प्रत्यक्ष इंगित प्रवृत्त (iet) को अंगीकृत करने को उत्सुख (en) *{बंधित होते हुए प्रस्ताव को अंगीकृत करने को उत्सुक}* ; eager to acquire indicated (en) towards indicated occupation (propose, offer) (iet) with bound (b)*{eager to acquire the 'offer' with bindings}*
beten (to pray)	**प्रार्थना** = इंगित सशर्त अनुमोदन (विश्वास) (be) को इंगित प्रवृत्त करने में (te) क्रिया (n) *{सशर्त अनुमोदन में प्रवृत्त होने की क्रिया}* ; eager to acquire (n) towards occupation (te) of the indicated (e) beliefs (b)*{eager to acquire the occupation towards 'indicated bound (belief)'}*
bauten (build)	**रचना करना** = बन्धित सत्ता (ba) के छिपे सत् (u) के प्रवृत्त को इंगित प्रत्यक्ष करने में उत्सुक (ten) *{छिपे बन्धन (नक्शा) के अनुसार, इंगित को प्रत्यक्ष (क्रियान्विति) करने में प्रवृत्त}* ; eager to acquiring the indicated (en) occupying (t) 0f hidden existent (u) bound entity (ba) *{eager to present (build) the occupation of hidden existent (map) of the bound entity}*
13.12 HEBEW (Israel)	
par (bull)	**तेज, नर** = अनुमोदन सत्ता के प्रत्यक्ष (pa) में अंगीकृत एकाग्र (r) *{अनुमोदित करने में एकाग्र}* ; concentration (r) entity (a) of approving (p) *{concentration in approving the entity}*
bar (wild)	**उन्मत्त** = बन्धित सत्ता (ba) में अंगीकृत एकाग्र (r) *{बन्धित/अविवेक सत्ता में एकाग्र}* ; involve (r) in bound (un-intellectual) (b) entity (a) *{the un-intellectual entity}*
gam (also)	**भी** = स्पष्ट का अस्तित्व (ga) प्रस्तुत उत्सुक (m) *{प्रस्तुत होता हुआ नया अस्तित्व}* ; eager to offer (m) clear (g) entity (a) ; *{offering something new}.*
tsaf (floats)	**तैरने वाला** = प्रवृत्त व्यक्त के सत्ता (tsa) का बिना शर्त अनुमोदन (f) *{बिना आधार के (पानी) प्रवृत्त (तैरने) को व्यक्त करने वाली सत्ता।}* ; un

	conditional support (f) to the occupying (t) exposed (s) entity (a) *{occupying the expression of un-conditional support (in water)}*
ram (high)	**उच्च** = प्रज्ञा की सत्ता (ra) का प्रस्तुत उत्सुक होना (m) *{प्रज्ञा की सत्ता की प्रस्तुति}* ; being (m) intellectual (r) entity (a) *{entity of being intellectual}*
tar (tours)	**पर्यटन** =प्रवृत्त की सत्ता (ta) में अंगीकृत एकाग्रता (r) *{प्रवृत्त की सत्ता में संलिप्त}* ; involve (r) in move on (t) entity (a) *{involve in 'move on'(tour) entity}*
gan (garden)	**बगीचा** = विविध स्पष्ट की सत्ता के प्रत्यक्ष (ga) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक (n)*{विविध प्रकार की चेतना को स्वीकृत करने वाला}* ; eager to accept (n) the clear variety (g) entity (a) *{accepting the entities of varieties}*
gal (wave)	**तरंग** = विविध स्पष्ट की सत्ता (ga) का उपलब्ध विस्तार (l) *{भोगात्मक चेतन के विस्तार की उपलब्धता}* ; available expansion (transm-ission) (l) of explained clarity (message) (ga) *{message can be transmitted through expansion}{explanation of expansion}*
har mount ain	**पर्वत** = स्थूल की सत्ता (ha) में अंगीकृत एकाग्र (r) *{स्थूल अर्थात् भौतिक}* ; involve (r) in physical (big) (h) entity (a) *{involve in physically big}*
jam (sea)	**समुद्र** = प्रत्यक्ष स्वीकृत की सत्ता (ja) का संग्रह (m) *{स्वीकृत अस्तित्व जल का ही द्योतक है} {स्वीकृत सत्ता को 'जल' के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।}* ; store of (m) displaying acceptation of entity (ja) *{displaying the store of 'accept ting entity (water)'*
13.13 HINDI (India)	
bal (hair)	**बाल** = बन्धित सत्ता के द्वारा (ba) उपलब्ध विस्तार (l) *{सिर में बंधा हुआ, पर विस्तारित}* ; available expansion (l) of the bound object (ba)*{the hairs are bound with the head and have expansion}*
pʰal	**फाल** = अपरीक्षित अनुमोदित सत्ता (pʰa) का उपलब्ध विस्तार (l) *{बिना बन्धन के गिरने में अनुमोदन का विस्तार}* ; available expansion (l) of

(knife blade)	the un examined supported entity (p^hɑ) *{knife blade cannot be examined due to sharpness and have a length}*
mɑl (goods)	**माल** = संग्रहित सत्ता (mɑ) का उपलब्ध विस्तार (l) *{पदार्थ की विस्तारित उपलब्धता}* ; expansion (l) of storing entity (mɑ)
dʒɑl (net)	**जाल** = मजबूती की सत्ता (dʒɑ) का उपलब्ध विस्तार (l) *{फैली हुई (विस्तारित) मजबूत सत्ता।}* ; expansion (l) of strong entity (dʒɑ) *{the net is strong, even if it is expanded}*
pət̪ɑ (address)	**पता** = अनुमोदित अस्तित्व होने में (pə) प्रस्तुत-उत्सुक सत्ता (t̪ɑ) *{अस्तित्व को अनुमोदित करने में प्रस्तुत करनेवाला}*; entity of offering (t̪ɑ) of approved existence (pə) *{the entity is offering the approved existence}*
pət̪ːɑ (leaf)	**पत्ता** = अंगीकृत उन्मुख अस्तित्व की (pə) प्रवृत्त होती हुई (t̪ː) प्रज्ञ सत्ता (ɑ) *{प्रकाश संस्लेषण में पत्ता सूर्य के प्रकाश को अंगीकरण में प्रवृत्त रह जीवन्त को प्राप्त करता है}* ; the entity (ɑ) continue offering (t̪ː) towards acquiring existence (pə) *{the leaf continue offers and acquires energy from sun}*
bətʃɑ (save)	**बचत** = सुरक्षित अस्तित्व होने की (bə) ऊर्ज अर्जित हो रही (tʃ) सत्ता (ɑ) *{जो अर्जित हो रहा है उसे सुरक्षित करने से बचत होती है}* ; secured existence (bə) from achieving energy wave (tʃ) in entity (ɑ)*{saving something by energy achieving in entity}*
bətʃːɑ (child)	**बच्चा** = बन्धित/सुरक्षित अस्तित्व होने को (bə) निरन्तर जीवन्तित होती हुई (tʃː) सत्ता (ɑ) *{बच्चे में निरन्तर जीवन्त उन्मुख होती हुई बन्धित (सुरक्षित) सत्ता}* ; entity (ɑ) continue achieving energy (tʃː) the secure/bound the existence (bə) *{the secured/bound entity continue achieving energy}*
pkːɑ (firm)	**पक्का** = अनुमोदित (p) निरन्तर स्पष्ट होती हुई (kː) सत्ता (ɑ) *{सत्ता में निरन्तर अनुमोदन स्पष्ट हो रहा है।}* ; explaining (kː) approving (p) entity (ɑ) *{the entity is clarifying to be approved}*
mel	**मेल** = प्रस्तुत उत्सुक होने को इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (me) उपलब्ध

harmony	विस्तार (l) *{समर्पण भाव का विस्तार}* ; available expansion (l) of eager to offer self (m) to be visualized outside (e) *{the harmony can be developed if each of us tries to offer self towards outside}*
bol (speak)	**बोल** = बन्धित (अवधारणा) दिशा में (bo) उपलब्ध विस्तार (l) *{विचारों की अवधारणा को ही व्यक्ति बोलता है}* ; available expansion (l) in the direction of (o) beliefs (b)*{available expansion in the direction of what we believes (bias)}*
13.14 HUNGARIAN (Hungary)	
pipa (pipe)	**नाली** = प्रत्यक्ष अंगीकरण उन्मुख (pi) की अनुमोदित सत्ता (pa) *{पानी नाली का अनुमोदन करता है}* ; towards acquiring (pi) to appr-oving entity {water} (pa) *{water is always considered as submissive phenomenon and approves all objects}*
bot (stick)	**लाठी** = सुरक्षा की दिशा में (bo) प्रवृत्त (t) *{सुरक्षा करने में प्रवृत्त}* ; occupied in (t) the direction of protection (bo)*{always gives the protection}*
fa (tree)	**पेड़** = बिना शर्त अनुमोदन की सत्ता (fa) *{ बिना शर्त छाया व फल देते हैं }* ; entity (a) towards un-conditional protection (f) *{trees always give the fruits and shelter un-conditionally}*
tseːl (goal)	**लक्ष्य** = प्रवृत्त (t) उपलब्धि में (s) इंगित कराने वाला (eː) उपलब्ध विस्तार (l)*{प्रवृत्त को इंगित उपलब्धि में विस्तारित करने वाला}* occupied (t) to achieve/express (s) the continue visualizing expansion (Aim) (eːl) *{occupied in expressing the aim}*
loː (horse)	**घोड़ा** = उपलब्ध विस्तार निरन्तर सत् की दिशा में (loː) *{ गत्यात्मक विस्तार की दिशा में निरन्तरता}* ; available expansion (l) continue in dthe direction of (oː) *{the horse continue provides the expansion of movement}*
hoː (snow)	**गिरती बर्फ** = छिपी हुई दिशा से निरन्तर (oː) असत् उपलब्धता (h) *{गिरती बर्फ स्थूल उपलब्धता है, जो छिपी दिशा से प्रकट होती है।}* ; physically (h) continue available from the hidden existent (oː)

	{the snowfall available from the hidden direction (space) continuously}
nɛm (no)	**नहीं** = रिक्तता को (n) प्रत्यक्षित सत् (ɛ) होना (m) ; visible existent (ɛ) of having (m) emptiness (n)
soː (word)	**शब्द** = व्यक्त (s) छिपे हुए सत् में से निरन्तर उपलब्ध (oː) *{छिपे हुऐ सत् में से जो व्यक्त उपलब्ध हो रहा है वह शब्द है}* ; expression (s) continue available from the hidden (un-expressed) existent (oː) *{the word is the expression of un-expressed identity}*
dʒɛs (jazz)	**शोरगुल** = शक्ति (ऊर्जा) (dʒ) प्रत्यक्षित सत (ɛ) व्यक्त (s) *{ऊर्जात्मक (तेज ध्वनि) सत् का प्रत्यक्ष होना}* ; expressing (s) visible (listen-able) existent in existence (ɛ) with energy{strong sound}(dʒ) *{expressing existent of strong sounds in existence.}*
roː (carve)	**मूर्ति बनाना** = छिपी हुई सत् में से उपलब्ध होता हुआ (oː) अंगीकृत एकाग्र (r)*{छिपी हुई कल्पना में से उपलब्ध होती एकाग्रता}* ; acquired concentration (r) from the hidden direction continuously (oː)*{idea to work is coming continuously from the hidden (intellectual) direction}*
joː (good)	**उत्तम** = उपलब्धता की दिशा में करता हुआ (oː) प्रत्यक्ष स्वीकृति (j) *{उपलब्ध करने के लिये प्रत्यक्ष स्वीकृत, अनुमोदित}* ; displaying acceptation (j) continue available from the hidden existent (oː)*{displaying acceptance from hidden (intelligence)}*
keːp (picture)	**चित्र** = स्पष्टोन्मुख (k) का प्रत्यक्ष होता हुआ (eː) अनुमोदन (p) *{ज्ञानात्मक/भोगात्मक शुद्धता की प्रत्यक्षता का अंगीकृत होता हुआ।}* ; approval (p) of visualizing (eː) the clarity (explained) (k) *{approving the subject by visualizing}*
ʒɛb (pocket)	**जेब** = अनुभूत्यात्मक जीवन्तता की (ʒ) प्रत्यक्षित सत् (ɛ) सुरक्षा (b) *{अनुभूत्यात्मक जीवन्तता (सामर्थ्य) (धन) की प्रत्यक्ष सुरक्षा}* ; security (b) of visible existent (ɛ) felt liveliness (ʒ)*{the pocket is a secured place for existent where we can feel the safety}*

ɛz (this)	**यह** = प्रत्यक्षित (ɛ) व्यतात्मक जीवन्तता (z) *{ व्यक्त होता हुआ प्रत्यक्ष जीवन्त}* ; the expressing liveliness (z) visible existent (ɛ) *{the expressed is visible }*
hɑt (took)	**लिया** = स्थूल {भौतिक} की सत्ता (hɑ) में प्रवृत्त (t) *{स्थूल को प्राप्त करने के लिये प्रवृत्त}* ; occupied with (t) physical (h) entity (ɑ) *{took the physical entity}*
viːz (water)	**पानी** = बाह्यप्रत्यक्ष करते हुऐ बिनाशर्त अन्दर अनुमोदित छिपा सत् (viː) में व्यक्तात्मक जीवन्तता (z) *{व्यक्त होती जीवन्तता, जो कि 'बिना शर्त अनुमोदन' के आन्तरिक गुण को बाहर प्रत्यक्ष करती रहती है}* ; exposing (ɪː) unconditionally approved from inside (v) of expressing liveliness (z) *{water expresses liveliness, and exposes the unconditionally approved from inside}{water approves unconditionally to anything}*
toː (lake)	**सरोवर, झील** = छिपी हुई सत् में से उपलब्ध (oː), प्रवृत्त (t), *{पानी प्रवृत्त छिपी हुई दिशा में से प्रवृत्त होता हुआ झील बनाता है}* ; move on (t) continue available from the hidden existent (oː) *{water moves from hidden places and collected as lake}*
eːl (live) (exist)	**जीना** = इंगित का प्रत्यक्ष होता हुआ (eː) उपलब्ध विस्तार (l) *{प्रत्यक्ष होता हुआ इंगित (जीवन) की विस्तारित उपलब्धता}* ; available expansion(l) continue visualizing indicated(eː)*{availability of continue indicated visualizing}*
13.15 JAPANESE (Japan)	
nani (what)	**क्या, वो कुछ कितना** = अंगीकृत उत्सुकता में (na) प्रत्यक्ष अंगीकृत उत्सुक (ni) *{उत्सुकता}* ; visible (i) eager to accept (n) entity of 'eager to accept' (na) *{the visibility of eagerness to accept the entity}*
taijo (the sun)	**सूर्य** = प्रवृत्त सत्ता (ta) की प्रत्यक्षात्मक (i) प्रत्यक्ष स्वीकृति करने (j) की दिशा, छिपी सत् उपलब्धता (o) *{सत्ता की प्रवृत्तता से प्रत्यक्ष को स्वीकृत करने की}* ; available from the hidden entity (o) displaying acceptance (j) visible (i) active entity (ta) *{the sun is visible*

	active entity accepts the displaying any available hidden entity}
jama mount ain	**पर्वत** = प्रत्यक्ष स्वीकृत सत्ता के प्रत्यक्ष (ja) में संग्रह की सत्ता (ma) *{संग्रह की सत्ता की प्रत्यक्षता को स्वीकृति}* ; displaying acceptance (ja) of material entity (ma) *{accepting the display of the entity of matter}*
kaze (wind)	**हवा** = स्पष्ट करती सत्ता की (ka) व्यक्तात्मक जीवन्तता को (z) बाह्यप्रत्यक्ष होने वाला (e)*{भोगात्मक चेतना में प्रत्यक्ष (महसूस) होने वाली व्यक्तात्मक जीवन्तता (स्पर्श)}* ; visualized outside (e) the expressing liveliness (z) by consciousness (ka) *{one can consciously visualize liveliness when it flow}*
hana (nose)	**नाक** = असत् की सत्ता {हवा}(ha) को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक सत्ता (na) ; the entity eager to accept (na) the physical entity {air} (ha) *{the entity (nose) is eager to accept the physical entity (air)}*
13.16 KOREAN (Korea)	
pal sucking	**चूसना** = अंगीकृत-उन्मुख की सत्ता (pa) में भाव उपलब्धता (l) *{सत्ता द्वारा अंगीकृत में उन्मुख होने से भाव की उपलब्धता}* ; Available Emotion (l) towards acquiring entity (pa)*{available of 'towards acquiring' (sucking) of the entity (drinkable)}*
p^hal (arm)	**बाहु** = बिना शर्त अनुमोदन की सत्ता (p^ha) की उपलब्धता (l) *{सत्ता द्वारा बिना शर्त अंगीकृत करने में उन्मुख होने का उपलब्ध भाव (क्रियात्मक)}* ; available Emotion (l) of unconditional supporting entity (p^ha)*{available emotion of the entity supports unconditionally}*
mal (horse)	**घोड़ा** = सत् {गति} प्रस्तुति के लिये उत्सुक सत्ता (ma) का उपलब्ध विस्तार (l) *{गति प्रस्तुति की विस्तारित उपलब्धता}* ; available Expansion (l) of eager to offer the entity {speed} (ma) *{the entity offering the available expansion/quantum of existent (speed/energy)}*
tal	**पुत्री** = प्रवृत्त सत्ता (ta) का उपलब्ध भाव विस्तार (l) *{प्रस्तुत भावना में प्रवृत्त*

daughter	*सत्ता}* ; offered emotions (l) active entity (ta)*{the active entity of offered emotions}*
zal (flesh)	**विस्तार में जाना, मांस** = व्यक्तात्मक जीवन्तता की सत्ता (za) का उपलब्ध विस्तार (l) *{भोगात्मक जीवन्तता की सत्ता जो व्यक्त रूप में दिखाई देती है अर्थात् 'मांस' का विस्तारित होना।}* ; expansion (l) of liveliness expressing entity (za) *{liveliness expressing entity can be 'beef' or 'subject', both are correct}*
gal (going)	**गमन** = {क्रिया} स्पष्ट की सत्ता के प्रत्यक्ष (ga) का उपलब्ध विस्तार (l) *{क्रियात्मक स्पष्ट सत्ता का गत्यात्मक विस्तारित होना।}* ; available expansion (l) in (action) clear entity (ga)*{the expanding towards action clarity}*
baŋ (room)	**कमरा** = बन्धित/सुरक्षित सत्ता के प्रत्यक्ष (ba) की होती हुई स्पष्टता उत्सुक (ŋ)*{सुरक्षित अंगीकरण को स्पष्ट करने में उत्सुक, कमरे ने आपको सुरक्षित रूप में अंगीकृत किया हुआ है।}* ; the eager to clarifying (ŋ) the secured/ bound entity (ba)*{the room is clarifying the boundaries for security}*
ma:l (speech)	**भाषण** = सत् प्रस्तुत करने के लिये उत्सुक (m) सत्ता के द्वारा प्रत्यक्ष (a:) में विस्तार (l)*{प्रस्तुत उन्मुख सत्ता के द्वारा प्रत्यक्ष होता हुआ ज्ञानात्मक विस्तार}* ; expansion (l) by the entity (a:) with needing to offer (submit) the matter (m) *{offering the matter with expansion}*
bo:zu (salary)	**वेतन** = बन्धित/सशर्त अंगीकरण की (b) उपलब्धता की दिशा में होता हुआ (o:) अन्तःस्थित व्यक्तात्मक जीवन्तता (zu) ; *{अंगीकरण की शर्त में उपलब्धता* (वेतन) *जीवन्तता (मेहनत) के साथ जुड़ी हुई है}* (zu) ; inner exist expressing liveliness (labor) (zu), continue available from the hidden entity (o:) conditional acquisition (b) *{acquisition of 'availability' is conditioned with the work (expressing liveliness)}*
jezan (budget)	**बजट** = इंगित प्रत्यक्ष स्वीकृति में (je) व्यक्तात्मक जीवन्तता (za) **क्रिया** (n) *{जो भी इंगित रूप से स्वीकृत किया गया है, उसी व्यक्त में जीवन्तता की क्रिया}* ; towards accepted indication (je) the expressing liveliness

	(za) action (n)*{liveliness in the indicated accepted direction }*
jɛːgi (story)	**कहानी** = प्रत्यक्ष स्वीकृति में (j) इंगित प्रत्यक्ष करती हुई (ɛː) प्रत्यक्ष स्पष्ट (gi) *{ इंगित ज्ञानात्मक स्पष्ट (कहानी) की प्रत्यक्षता को स्वीकृत करना}* ; visible detail (gi) indicated visualizing (ɛː) in displaying acceptance (j) *{towards indicated visualizing the displayed clear knowledge}*
dwi (back)	**पिछला** = पीछे हो चुके (d) में छिपते हुऐ का व्यक्त (w) की प्रत्यक्ष (i) *{भूतकाल में छिपे हुऐ को व्यक्त करना।}* ; towards (i) exposing the hidden (w) past (d) *{exposing the hidden past (back)}*
gwe (box)	**संन्दूक** = स्पष्ट (g) में छिपे हुऐ को व्यक्त (w) इंगित करने वाला (e) *{इंगित छिपे हुऐ को (सन्दूक के अन्दर) बाहर स्पष्ट व्यक्त करना।}* ; Clear (g) exposing the hidden (w), indicated (e) *{Clear exposing the indicated hidden}*
13.17 PERSIAN(FARSI) (Tehran)	
pær (feather)	**पंख** = अनुमोदित अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् (pæ) का अंगीकृत एकाग्र (r) *{हवा के अस्तित्व के प्रत्यक्ष अनुमोदन में एकाग्र}* ; involve (r) appr-oving (p) displaying existent in existence (æ) *{involve in approving the display of existent (moving air) in existence}*
bær (fruit)	**फल** = सुरक्षित अस्तित्व में प्रत्यक्ष सत् में (bæ) अंगीकृत एकाग्र (r) *{अस्तित्व की प्रत्यक्ष सुरक्षा में एकाग्र}* ; accepting involve (r) in secured (b) visible existent in existence (æ) *{involve in the secured visible existence}*
nom (name)	**नाम** = अंगीकृत उत्सुक की दिशा में (no) प्रस्तुत उत्सुक (m) *{अंगीकृत उत्सुक दिशा स्वभाव कहलाता है तथा स्वभाव की प्रस्तुति 'नाम' है।}* ; eager to presents (m) in the direction of (o) eager to acquire (n) *{the direction of eager to acquire denotes the nature of entity. offer to present own nature means the 'identity' of self}*
nɒv warship	**प्रार्थना** = अन्दर छिपाने वाली दिशा में अंगीकृत उत्सुक (nɒ) बिना शर्त अन्दर छिपा अनुमोदन (v) *{प्रार्थना एक बिना शर्त अन्दर छिपा अनुमोदन है जो*

	आर्शीवाद को अन्दर छिपाने में उत्सुक है} ; eager to accept (n) the existing inside (ɒ) unconditionally inside hidden approved (v) *{worship is a 'unconditionally approved hidden inside' (faith), eager to accept the will power inside}*
tir (arrow)	तीर = प्रत्यक्ष प्रवृत्त (ti) में एकाग्र (r) *{जो प्रवृत्त में प्रत्यक्ष रूप से एकाग्रित रहता है}* ; concentrated (r) displaying with move on (ti) *{displays the movement towards concentration}*
dir (late)	देर = प्रत्यक्ष बीता हुआ (di) में एकाग्र (r) *{जो बीत चुका है, उसमें एकाग्र}* ; involve (r) in visible past (di)
nɒn (bread)	**रोटी** = रिक्तता (n) में सत् को अन्दर छिपाने वाली दिशा में (ɒ) अंगीकृत उत्सुक (n) *{रिक्त पेट में सत् (रोटी) को अन्दर छिपाने के लिये अंगीकृत उत्सुक होना}* ; eager to acquire (n) the hiding inside the existent (ɒ) in emptiness (n) *{eager to acquire the existent (bread) inside towards emptiness (hungry)}*
kur (blind)	**अन्धा** = छिपी स्पष्टोन्मुखता (ku) में एकाग्र (r) *{अन्धत्व उन्मुख एकाग्र}* ; concentration (r) towards hidden clarity (ku) *{blind}*
por (full)	**पूर्ण** = अनुमोदन की दिशा (po) में अंगीकृत एकाग्र (r) *{अनुमोदन की दिशा में एकाग्रित रहना}*; concentrated (r) approval (p) available from the inside existent (o) *{concentrated in the direction of acquiring}*
13.18 PORTUGUESE (EUROPEAN) (Lisbon)	
patu (duck)	**बतख** = अनुमोदित सत्ता में (pa) के छिपा हुआ प्रवृत्त (tu) *{पानी द्वारा अनुमोदित सत्ता का पानी के अन्दर ही छिपा हुआ प्रवृत्त, तैरने की प्रवृत्ति पानी के अन्दर छिपी रहती है।}* ; hidden activeness (tu) of the approving entity (pa) *{the entity is approving the hidden (inside the water) activeness}*
batu (I strike)	**हड़ताल** = बन्धित अंगीकृत सत्ता में (ba) अन्तर्मुखी {मैं} प्रवृत्त (tu) *{मैं का प्रवृत्त, गत्यात्मक बन्धन को अंगीकृत करने वाली सत्ता में}* ; introvert occupation {I} (tu) of bound entity (ba) *{I occupied as bound*

	entity}
matu (I kill)	**हत्या** = अनंगीकृत सत्ता के प्रत्यक्ष में (ma) का अन्तर्मुखी {मैं} प्रवृत्त (tu) *{मैं का प्रवृत्त सत्ता को अ–अंगीकृत (जीवन्त विहीन) करना।}* ; hidden occupation {I} (tu) towards un-acquired (non-living) entity (ma) *{I occupied in making the entity as un-acquired (non-living)}*
fatu costume	**पहिनावा** = बिना शर्त अंगीकरण उन्मुखता के प्रत्यक्ष में (fa) छिपाने में प्रवृत्त (tu) *{बिना शर्त (किसी भी) अनुमोदित सत्ता को छिपाने में प्रवृत्त}* ; hiding occupation (tu) to unconditional approving entity (fa) *{the cloths are occupied to hide the entity without any condition}*
tatu (tact)	**चतुराई** = प्रवृत्त सत्ता में (ta) में छिपा प्रवृत्त (tu) *{सत्ता जो प्रवृत्त है, उसका प्रवृत्त छिपा हुआ है}* ; hidden activeness (tu) in occupied entity (ta) {the entity is occupied in some hidden activity}
datu (I date)	**काल की अवधि** = बीतने की सत्ता में (da) में छिपा प्रवृत्त (tu) *{बीतने की सत्ता में अवधि ही छिपी होती है।}* ; inner occupation {I} (tu) in time passing (past) entity (da) *{I occupied in time passing entity, time schedule of entity}*
kazu (I marry)	**विवाह** = चेतनता में (ka) में अन्तर्गमित व्यक्तात्मक जीवन्त उपलब्धता (zu) *{भोगात्मक चेतन में व्यक्तात्मक जीवन्त उपलब्धि को अन्तः में स्वीकृत करना।}* ; inside expressible liveliness (zu) in the conscious entities (ka) *{accepting inside the expressible liveliness in the experience-conscious}*
sei (know)	**जानना** = इंगित व्यक्त/उपलब्ध (se) का प्रत्यक्ष (i) *{इंगित उपलब्ध को प्रत्यक्ष करना}* ; the view (i) of available indicated expression (se) *{viewing the indicated available expression}*
mau (bad)	प्रस्तुत उन्मुखता (ma) छिपा हुआ (u) *{समर्पण/प्रस्तुत उन्मुखता में छिपाव, कुछ भी प्रस्तुत ना करना।}* ; hidden inside (u) towards offering entity (ma) *{offering to the self only }*
13.19 SINDHI (Sindh)	

pənu (leaf)	**पत्ती** = अनुमोदन (pə) में अन्तर्मुखी अंगीकृत उत्सुक (nu), *{पत्ती धूप का अन्तर्मुखी अनुमोदन कर ऊर्जा को अंगीकृत करती है}* ; the eager to accept (n) from inside (u) approval (pə) *{approving the acceptance of sun light live inside}*
tjo (bottom)	**तल** = प्रवृत्त (t) की दिशा में उपलब्ध प्रत्यक्ष स्वीकृति (jo) *{जिस दिशा में प्रवृत्त हो रहा है, उसकी उपलब्धि की प्रत्यक्ष स्वीकृति, अर्थात् और आगे नहीं जा सकते}* ; move on (t) visible acceptance (j) available in the direction of (o) *{while moving towards a direction, when we accepts the visibility (reached to end) is bottom}*
dʊnu (navel)	**नाभि** = छिपे भूतकाल (dʊ) में छिपा अंगीकृत उत्सुकता (nʊ) *{गर्भावस्था में नाभि के जरिये ही अंगीकृत करता है}*; Hidden eager to acquire (nʊ) in the hidden past (dʊ) *{Before birth, the child acquire the food through navel.}*
nalo (name)	**नाम** = पौरुष की सत्ता की (na) की दिशा विस्तार (lo) *{पौरुष की सत्ता की दिशा उसके गुणसूत्र है, जो कि उसका परिचय भी हैं}* ; directional expansion (should be known as) (lo) the entity eager to acquire under formulation (identity)(na) *{should be known as your identity}*
gano (song)	**गाना** = सत्ता को स्पष्ट (ga) को करने की दिशा में (no) *{सत्ता को स्पष्ट करने की क्रियात्मक दिशा (जीवन्तता के अभाव में स्पष्टता गायन का रूप ले लेता है।)}* ; the entity (a) of available clarity (g) have direction (o) to act (n) *{to act upon the clear availability} {the clarity is converted in to song due to lack in liveliness}*
harʊ necklace	**हार** = स्थूल की सत्ता का प्रत्यक्ष में (ha) में अन्तर्स्थित अंगीकृत एकाग्र (rʊ) *{अन्तः करण की एकाग्रता में स्थूल की सत्ता का प्रत्यक्ष होना। यहाँ स्थूल यदि मुख्य है तो 'हार' लड़ाई में हार होगी, यदि 'प्रत्यक्ष' प्रमुख है तो गले का हार होगी}*; inner accepted concentration (hidden agreeable) (rʊ) towards the physical viewing entity (ha) *{here physical viewing entity has two meaning, one for the 'necklace' where 'viewing' is important. and second is 'lost the fight', here*

	'physical' is important}
jaru (friend)	**दोस्त** = प्रत्यक्ष स्वीकृत सत्ता में (ja) में अन्तःस्थित अंगीकृत एकाग्र (ru) *{अन्तःस्थित में अंगीकृत एकाग्र की सत्ता में स्वीकृत, जिसको अन्दर से हम स्वीकृति देते हैं}* ; inner exist involve (ru) in display accep-ting entity (ja) *{displayed entity is acceptable from inside}*
limo (lemon)	**नीबू** = प्रत्यक्ष उपलब्ध विस्तार (li) प्रस्तुत उन्मुख के सत् में छिपी उपलब्धता (mo) *{जो अन्तः में छिपी स्वादि टता का विस्तार कर देता है}* ; the eager to offer (m) available from the hidden (o) of visible (taste) available expansion (li) *{offers the expansion of inner hidden taste}*
sarə jealousy	**ईर्ष्या** = व्यक्त सत्ता के प्रत्यक्ष में (sa) में अंगीकृत एकाग्र को इंगित प्रत्यक्ष करने वाला (rə) *{सारा ध्यान दूसरे की व्यक्त सत्ता पर है}* ; *existence of* concentration (rə) on expressed entity(sa) *{concentration on other expressed entity}*
13.21 SWEDISH (Sweden)	
pol (pole)	**ध्रुव** = अनुमोदन की छिपी दिशा में (po) उपलब्ध विस्तारत्व (l) *{जहाँ दिशा समाप्त हो जाती है, अर्थात् सीधा खड़ा हुआ ऊपर की दिशा में विस्तार}* ; approval available from the hidden existent (po) the available expansion (l) *{The vertical expansion in the approved direction}*
bok (book)	**किताब** = बन्धित अंगीकृत दिशा में (bo) स्पष्ट उन्मुखत्व (k) *{बन्धित की हुई वस्तु जो ज्ञानात्मक स्पष्टता करती है}* ; knowing (k) available from the hidden bound (bo) *{All the knowledge is bound and hidden in the entity(book)}*
mod courage	**साहस** = प्रस्तुत उन्मुख की दिशा में उपलब्ध (mo) अन्त (d) *{अन्त की तरफ अपने आप को प्रस्तुत कर देना}* ; death (d) available from the inside existent (o) eager to offer self (m) *{eager to offer self from inside for death}*
fot	**टाँग** = बिना शर्त अनुमोदन की दिशा में उपलब्ध (fo) प्रवृत्त (t) *{जो प्रवृत्त*

(foot)	*होने के लिये बिना शर्त उपलब्ध रहती है।}* ; occupied (t) available in the direction of un-conditional support (fo) *{providing un-conditional support}*
tok (fool)	**मूर्ख** = प्रवृत्त की छिपी दिशा में (to) चेतन (k) *{प्रवृत्त की अन्जान दिशा में चेतन उद्देश्य विहीन चेतन}* ; conscious (k) available from the hidden occupation (to) *{conscious is controlled by hidden (unclear) occupation}*
rov (prey)	**प्रार्थना** = अंगीकृत एकाग्र की छिपी दिशा में (सम्मोहन) (ro) बिना शर्त अन्दर रखा हुआ अनुमोदित (v) *{बिना शर्त अनुमोदन की दिशा (विश्वास) में अंगीकृत एकाग्र}* ; unconditionally approved keeping inside {Faith} (v) available in the hidden direction of concentration (ro) *{the direction of the concentration is 'faith'}*
hot (threat)	**धमकी** = असत् की छिपी दिशा में उपलब्ध (ho) प्रवृत्त (t) *{क्रोध की दिशा में प्रवृत्त करना}* ; active (t) available in the direction of physical act (hot) (ho) *{occupied in the threat}*
mat (food)	**भोजन** = पदार्थ की प्रस्तुत उन्मुखता (ma) का प्रवृत्त (t) *{पदार्थ प्रस्तुति में प्रवृत्त हो रहा है।}* ; occupied (t) towards 'eager to offer' substance (ma) *{food is the substance, always towards 'eager to offer self'}*
13.21 SLOVENE (Slovenia)	
pi:ti (to drink)	**पीना** = बाह्यप्रत्यक्ष करते हुऐ अंगीकरण (pi:) में प्रत्यक्ष प्रवृत्त (ti) *{निरन्तर अंगीकरण में प्रवृत्त होना।}* ; active towards (ti) exposing acceptance (pi:) *{active towards acceptance}*
bi:ti (to be)	**होना** = बाह्यप्रत्यक्ष बन्धित अंगीकरण (bi:) में प्रत्यक्ष प्रवृत्त (ti) *{जैसा है, वैसा ही प्रत्यक्ष होने में प्रवृत्त}* ; towards active (ti) out exposing bound (bi:) *{active towards the bound (fixed)}*
ti:sk (print)	**अंकित करना** = बाह्यप्रत्यक्ष प्रवृत्त में (ti:) व्यक्तात्मक (s) स्पष्टोन्मुखत्व (k) *{स्पष्ट को व्यक्त करने के लिये बाह्यमुखी प्रवृत्ति}* ; occupied in (t) exposing (i:) of expressions (s) towards explain (k) *{occupied*

	in exposing the expressions to explain}
kiːp (statue)	**प्रतिमा** = बाह्यप्रत्यक्ष स्पष्टोन्मुखता (kiː) का अनुमोदन (p) *{बाहर की तरफ जो स्पष्ट हो रहा है उसका अनुमोदन करना}* ; approving (p) towards exposing accuracy (kiː) *{ approval of our exposed towards accuracy}*
tʃiːn (rank)	**पदवी = उपजाऊ** = बाह्यप्रत्यक्ष जीवन्त-उन्मुखता (tʃiː) में अंगीकृत उत्सुक (n) *{जीवन्त प्राप्ति को अंगीकृत करना, उपजाऊ में जीवन्त भोगात्मक है, पदवी में जीवन्त ज्ञानात्मक है।}* ; eager to accept (n) the out exposure (iː) of liveliness achieving (tʃ) *{the definition is applicable for both the meaning}*
dʒiːn (gin)	**बिनौला निकालना** = दृढता की निरन्तर प्रत्यक्ष (dʒiː) को अंगीकृत उत्सुक (n) *{ऊर्जिता का निरन्तर उपयोग करने में उत्सुक}* ; eager to accept (n) the exposing (iː) of power (dʒ) *{continuously consuming the power}*
piu (drank)	**पीआ** = प्रत्यक्ष अनुमोदन (pi) अन्तर्गमित होता हुआ (u) *{अन्तर्गमित (पीने के लिये) प्रत्यक्ष अनुमोदन (क्रिया सहमति)}* ; approved (p) towards (i) accepting inside (u) *{approved (done) towards accepting inside}*
peu (sang)	**गाया** = अनुमोदित को (p) अन्तःस्थित से बाहर प्रत्यक्ष करनेवाला (eu) *{अन्तः से बाहर प्रत्यक्ष किये हुऐ में गति अनुमोदन}* ; supporting (p) the expression from inside to outside (eu) *{the singing is done by the expression from inside to outside}*
13.22 THAI (Thailand)	
fan (to dream)	**स्पप्न देखना** = अपरीक्षित अनुमोदित (भ्रम) सत्ता (fa) क्रिया (n) *{ भ्रम की सत्ता की क्रिया}* ; eager to acquire (n) the un checked accepting existence (fa) *{you are acquiring dreams of which existence cannot be checked}*

sut (last)	**अन्तिम** = अन्तःस्थित होते व्यक्त में (su) में प्रवृत्तत्व (t) *{व्यक्त समाप्ति की ओर प्रवृत्त}* ; occupied with (t) hiding exposure (su) *{exposure is going to be hide in last}*
su:t (to inhale)	**अन्तःस्वीकृत** = उपलब्धि (s) अन्तर्गमित होता हुआ (u:) में प्रवृत्तत्व (t) *{उपलब्धि अन्तर्गमन में प्रवृत्त है।}* ; occupied with (t) continue accepting inside (u:) expression (s) *{expressing the occupation of continue accepting the existent inside}*
rian (to study)	**अध्ययन** = प्रत्यक्ष अंगीकृत एकाग्र (ri) में सत्ता के प्रत्यक्ष को (a) अंगीकृत उत्सुकत्व (n) *{एकाग्रता में जो ज्ञानात्मक प्रत्यक्ष हो रहा है, उसे अंगीकृत करने की उत्सुकता।}* ; towards (i) concentration (r) entity (a) eager to acquire (n) *{entity is eager to acquire with concentration}*
ruin (house)	**भवन** = एकाग्रता (r) में छिपने के लिये (u) अन्दर स्थान (in) (एकाग्रता के लिये स्थान उपलब्धता) ; concentration (r) to hide(u) inside the place (in) *{one can involve inside the place}*
ruan (to be provocative)	**प्रेरित** = अन्तःस्थित एकाग्रता (ru) की सत्ता (a) को आश्रय देने के लिये उत्सुकत्व (n) *{ जिस सत्ता को प्रत्यक्ष कर रहे है, उसे ही आश्रय देने के लिये उत्सुकता}* ; eager to support (n) the entity (a) of inner accepting involve (ru) *{supporting what you are accepting}*
13.23 TABA (Northern maluka province - Indonesia)	
fati (to cover)	**बचाना** = बिना शर्त सुरक्षा (fa) करने में प्रत्यक्ष प्रवृत्त (ti) *{बिना शर्त सुरक्षा देने में प्रवृत्त}* ; visible move on to (ti) unconditional protection (fa) *{unconditional protection}*
top (sugar cane)	**गन्ना** = प्रवृत्त की दिशा मे (to) अनुमोदनत्व (p) *{गन्ना तेजी से ऊपर बढ़ता है}* ; support(p) in the direction of occupation (to) *{the sugarcane occupied in the direction of length}*
dɔ (there)	**वहाँ** = होआ हुआ (d) अप्रत्यक्ष स्थान में (ɔ)*{ अप्रत्यक्ष स्थान पर होआ हुआ}* ; indirect place (ɔ) already (d) *{placed at indirect place}*

sɔ (to ascend)	**उठाना** = उपलब्धि (s) में छिपा हुआ (ɔ) *{परोक्ष रूप से उपलब्ध}* ; Indirect (ɔ) achievement (s) *{achieving indirectly}*
dʒɔu (good)	**उत्तम** = मजबूती में छिपी हुई (dʒɔ) अन्तर्गमित (u) *{ अन्तःकरण समर्थ अन्तर्गमित से निर्मित है}* ; firmly (dʒ) happens to the inner of the entity (ɔ) inflow (u) *{the inner is made of strong inflow}*
lɔat (slice)	**पतला फैला हुआ** = विस्तारात्मकता में छिपी हुई (lɔ) सत्ता (a) में प्रवृत्त (t) *{विस्तार होते हुऐ वस्तु पतली ही होती है।}* ; occupied (t) In the entity (a) hidden (ɔ) in the expansion ability (l) *{due to expansion the thickness is hiding}*
kam (I see)	**देखना** = स्पष्टोन्मुखता (ka) का होना (m) *{ ज्ञानात्मक स्पष्ट-उन्मुखता का होना।}* ; having (m) clarifying of entity (ka)
ŋan (sun)	**सूर्य** = स्पष्ट करने को उत्सुक सत्ता (ŋa) का अंगीकरण उत्सुक (n) *{"स्पष्ट करने की उत्सुकता की सत्ता को" जो अंगीकृत करती है। अर्थात् चेतन को अंगीकृत करती है।}* ; eager to accept (n) the eager to analyze entity (ŋa) *{eager to acquire the entity of 'eager to analyze'}*
13.24 TURKISH (Turkey)	
bul (find)	**प्राप्ति** = अन्तर्गमित अंगीकरण (bu) में भाव उपलब्धता (l) *{अन्दर आती हुई उपलब्धता}* ; available yield (l) inside acquired (bu) *{availability of 'yield acquiring' towards inside }*
far (head light)	**मुख्य प्रकाश** = बिना शर्त अनुमोदन की सत्ता के प्रत्यक्ष में (fa) अंगीकृत एकाग्र (r) *जो बिना शर्त प्रत्येक सत्ता को प्रत्यक्ष करता हो उसमें एकाग्र}* ; involve in (r) un-conditional accepting entity (fa) *{light accept every object without any condition}*
tel (wire)	**तार** = प्रवृत्त का इंगित प्रत्यक्ष होने वाला (te) उपलब्ध विस्तारत्व (l) *{दूर तक प्रवृत्त होने वाला विस्तार}* ; occupation in (t) indicated (e) available expansion (l) *{occupation of length}*
mal	**धन** = संग्रह की सत्ता में (ma) उपलब्ध विस्तार (l) *{संग्रह की सत्ता में*

property	*विस्तारता}* ; expansion in (l) the entity of matter (ma)
rej (vote)	**मत** = अंगीकृत एकाग्र का इंगित (re) में प्रत्यक्ष स्वीकृति (j) *{ एकाग्रित हो कर इंगित को स्वीकृत करना।}* ; displaying acceptation (j) towards indicated (e) involve (r) *{displaying acceptation towards involved}*
zar (membrane)	**झिल्ली** = व्यक्तात्मक जीवन्तता (z) की सत्ता में (a) में एकाग्र (r) *{जीवन्तता आर–पार व्यक्त हो रही है ऐसी सत्ता में एकाग्र।}* ; involve in (r) entity (a) of expressible liveliness (z) *{Involve in the entity of expressible (visible through) liveliness}*
tʃam (pine)	**पेड़** = जीवन्तोन्मुख सत्ता (tʃa) में होना (m) *{पेड़ जीवन्त के प्रति उन्मुख बने रहते हैं}* ; liveliness achieving (tʃ) entity (a) being (m) *{the pine achieve liveliness regularly}*
gam (grief)	**दुख** = स्पष्टता (ga) अ–अंगीकृत (m) *(स्पष्टता का अ–अंगीकृत होना) { भोगात्मक स्पष्टता में अनुमोदन का ना मिलना }* ; not approving (m) the explained (ga) *{not approving the truth}*
gœl (lake)	**सरोवर** = स्पष्ट (g) छिपी दिशा से बाहर प्रत्यक्ष करने वाला (œ) उपलब्ध विस्तार (l) *{पानी छिपी हुई दिशाओं से आकर स्पष्ट हो विस्तार को उपलब्ध हो जाता है, तथा सरोवर कहलाता है।}* ; available expansion (l) of clear (g) from the hidden direction to visualized outside (œ) *{water is coming from hidden direction and get clear expansion in the form of lake}*
kal (stay)	**रोकना** = सत्ता में अजीवन्तता (ka) का विस्तार (l) *{अजीवन्त होने से सत्ता रुक जाती है।}* ; expansion (l) lack of liveliness in the entity (ka) *{stayed as the things have no power}*
kul (slave)	**दास** = छिपी चेतना में (ku) विस्तार (l) *{कोई विचार नहीं करना}* ; available expansion of (l) hidden conscious (ku), *{ conscious is hidden}{can not use conscious}*
kɒl (arm)	**भुजा** = चेतन (k) की दिशा में (ɒ) विस्तार (l) *{क्रियात्मक चेतन की दिशा में विस्तार।}* ; available expansion (l) conscious (k) towards the

	direction of (p) *{available expansion towards the direction of conscious}*
13.25 TUKANG BESI (Tukangbesi Island)	
apa (up to)	**तक** = सत्ता (a) में सशर्त अनुमोदन की सत्ता (pa) *{सत्ता में शर्त अनुमोदित रहने तक।}* ; conditional approval (ap) in the entity (a) *{entity is approving up to limitations}*
ana (child)	**बच्चा** = सत्ता (a) में रिक्तता का प्रत्यक्ष (na) *{ सत्ता में रिक्तत का प्रत्यक्ष होना }* ; view of emptiness (na) in the entity (a) *{child is a entity of emptiness}*
tinti (run)	**भागना** = प्रत्यक्ष प्रवृत्त (ti) की अंगीकृत उत्सुकता में (n) प्रत्यक्ष प्रवृत्त (ti) *{ प्रवृत्त को अंगीकृत करने की उत्सुकता करना}* ; visible occupation in (ti) eager to accept {effort} (n) the visible move on (ti) *{occupying in accepting the move on}*
ara (if)	**यदि** = सत्ता के प्रत्यक्ष (a) में अंगीकृत एकाग्र (r) का सत् (a) *{सत्ता में नये सत् को अंगीकृत करना}* ; Entity (a) accepting involve (r) visible existent (a) *{the entity is involved towards some other existent}*

14.0 अक्षरावली- MEANING OF SOUNDS

14.1 हिन्दी वर्णमाला की ध्वनियां – SOUNDS OF HINDI ALPHABET

हिन्दी ध्वनियां DIACRITICAL MARK OF HINDI	उनके अन्तर्निहित भाव Meanings of sounds
अ A	अभावात्मक अस्तित्व ; सत् शून्य अस्तित्व ; शून्यात्मक सत ; स्वमुखी अस्तित्व ; व्यंजनविहीन अस्तित्व ; सत् से अभावित ; अविचल सत् ; existence without consonant ; existence at zero entity.
आ Ā	सत्ता ; entity ; establishment ; property of being existed with existence ; organization ; object ; unit.
इ I	प्रत्यक्षात्मक अस्तित्व ; बाह्य स्थित अस्तित्व ; बाह्यमुखत्व ; सम्मुख ; relate to visible ; out-exist ; extrovert existence ; in view ; here ; noticeable ; in front of ; towards.
ई Ī	बाह्यप्रत्यक्ष ; प्रत्यक्ष की निरन्तरता ; निरन्तर बाह्यमुखता ; इधर ; out visualizeeing existence ; continue exposing ; continue extrovert ; being noticeable ; towards visualizing ; carrying out.
उ U	छिपाव ; सूत्रत्व ; आलोपन ; छिपावात्मक अस्तित्व ; अन्तःस्थित अस्तित्व ; विलीनात्मक अस्तित्व ; अन्तर्मुखिता ; अन्तः में ; relate to invisible /hidden existence ; inner-exist ; introvert existence ; there ; angular ; indirect.

ऊ Ū	निरन्तर अन्तर्मुखता ; अन्तर्विलीन होता हुआ ; अर्न्तमुखी होता हुआ ; अन्तःस्थित होता हुआ ; inner-hiding existence ; continue towards inside ; being there ; continue inner existing ; continue hiding.
ए E	इंगित दिशा में ; प्रत्यक्ष में सत् का अस्तित्व ; visible indicated existence ; existence of existent in visible ; direct indication ; focused.
ऐ AI	अस्तित्व में सत् का प्रत्यक्ष ; view/visibility of existent in existence.
ओ O	अस्तित्व में छिपाव का सत् ; छिपे हुऐ का सम्बोधन ; परोक्ष अस्तित्व की दिशा में ; existence of existent in hidden ; hidden directed existence ; indirect indication ; unfocussed.
औ AU	अस्तित्व में सत् का छिपाव ; hidden ness of existent in existence ; out of sight existence.
ऌ Ḷ	उपलब्ध विस्तारात्मक ; soul of available-expansion of existence ; soul of non concentration ; dilute ; resistance ; soul of stretching the existence ; soul of presenting emotion ; quantum of 'star' effect.
ॠ Ṛ	अंगीकृत एकाग्रात्मक ; soul of inhered/acquiring ; concentration in existence ; contraction of existence ; fineness ; soul of acquiring with intelligence ; adoptability ; flow ; stream ; quantum of 'hole' effect.
अं AṄ	कामोत्सुक ; उद्दीप्त उत्सुक ; प्रदीप्त उत्सुक ; भावोत्सुक ; तमस् मात्रा ; soul of desire in entity ; desire to move in lower world ; quantum of desire.
अः AḤ	अ का ह में निर्वाण ; सत् शन्यू अस्तित्व की स्थूल में स्थान उपलब्धता की निरन्तर ; रजस् मात्रा ; getting the place in lower or upper world ; continuity of the system ; quantum of continue.
क् K	देव द्वारा विश्लेषित {(शुद्धता ; विश्लेषित ; विवरण) x (ज्ञान ; क्रिया ; भोग)} का स्पष्ट हो रहा ; स्पष्ट उन्मुख ; विश्लेषणोन्मुख ; वैविध्य चेतना ; संचेतक ; विषय ; चेतन ; आनन्द विहीन ; सावधानी ; जीवन्त विहीन ; towards analyzing ; clarifying ; distinguishing conscious ; aware ; explaining

	{(knowledge ; action ; experiences) x (accuracy ; analyzed ; details)} *by the* DEV ; killing, hurting, opposite to liveliness.
ख् KH	'क' की सीमितता ; अ–विश्लेषणोन्मुख ; चेतन की सीमितता ; चेतना विहीन ; आराम ; अतर्कोन्मुख ; अनुपलब्धिता ; चेतन की अविद्यमानता ; क' की प्राप्ति के लिये स्थान उपलाब्धता ; opposite to 'K'; limitations of 'K'; providing place for 'K'; non analyzing ; non clarifying.
ग् G	देव द्वारा विश्लेषित {(शुद्धता ; विश्लेषित ; विवरण) x (ज्ञान ; क्रिया ; भोग)} होआ हुआ स्पष्ट ; स्पष्ट बोध ; भूतकाल में स्पष्ट ; वृतान्त ; स्पन्द विहीन ; 'ज' से अभावित ; सत्य ; आदि ; got the understandable ; analyzed ; clear knowledge ; feature ; available variations ; evident ; description ; manifest ; available clarity {(knowledge ; action ; experiences) x (accuracy ; analyzed ; details)} by the 'DEV' and non-liveliness.
घ् GH	'ग' की सीमितता ; घेराव ; सघन ; अन्धेरा ; density ; stupidity ; darkness and limitations of 'G'
ङ् Ṅ	ऊर्जपूर्णता ; अनुपलब्ध स्पष्ट ; स्पष्टोत्सुक ; lack of clarity ; eager to be clear ; full of courage ; full of energies ; full of strength ; full of control ; full of power ; full of balance ; full of energetic.
च् C	पितृ द्वारा जीवन्त {(ऊर्जित ; दृढ़ता ; शक्ति) x (ज्ञान ; क्रिया ; भोग)} उन्मुख ; जीवन्त हो रहा ; प्राचेतस् ; जीवन्त चेतना उन्मुख ; अस्तित्व उन्मुख ; जीवन्त लहर ; पुनरावृत्ति ; जीवन्तता उन्मुख ; towards deriving liveliness {(knowledge ; action ; experience) x (energetic ; strength ; power)} ; courage ; quiver ; waving etc by the 'PITṚ.
छ् CH	'च' की सीमितता ; छांव ; जीवन्त अवरोध उन्मुख ; जीवन्त सीमित उन्मुख ; obstruction in achieving liveliness ; limitation in achieving liveliness ; obstruction in all the 'C'.
ज् J	पितृ द्वारा जीवन्त {(ऊर्जित ; दृढ़ता ; शक्ति) x (ज्ञान ; क्रिया ; भोग)} हो चुका धैर्य ; बल ; शौर्य ; ओजस साहस ; निश्चय ; सहज ; अस्पष्टता ; अस्तित्व ; साधन ; सामर्थ्य ; derived liveliness {(knowledge ; action ; experience) x (energetic ; strength ; power)} ; balanced ; courage ; determination ; appearance at ease ; firmness ; steadiness ; un-clear by the 'PITṚ'.

ज़् Z	व्यक्त जीवन्त ;
झ् JH	'ज' की सीमितता ; अनियन्त्रित ; धैर्यविहीन ; अनेकात्म ; ओजस में अनियन्त्रण ; अस्थिर ; असहज ; आनन्दविहीन ; परेशान ; uncontrolled liveliness ; un-balanced energy ; lack of strength ; limitation of 'J'.
ञ् Ñ	स्पष्ट की पूर्णता ; अनुपलब्ध जीवन्तता ; जीवत्व उत्सुक ; full of clarity ; absence of liveliness ; eager to achieve the livingness (energetic ; strength ; power) ; living in future.
ट् Ṭ	प्रवृत्त (अन्तःगति, बाह्यगति, स्वगति) में (स्थापन/भंग) उन्मुख ; वर्तमानकाल ; होते होना ; संयोजित उन्मुख ; प्रवृत्त हो रहा ; प्रवृत्त हो चुके ; activating ; move on ; be occupied with ; continue ; going forward ; departing ; arise from ; be produced ; commence ; be active {inflow ; outflow ; self-flow (thinking)} by the ASUR.
ठ् ṬH	प्रवृत्त में सीमित उन्मुख ; अप्रवृत्त उन्मुख ; obstruction in ' Ṭ'; limitation of ' Ṭ' ; non-active ; stopping.
ड् Ḍ	प्रवृत्त (अन्तःगति ; बाह्यगति ; स्वगति) का प्रवृत्त हो चुका ; स्थापित ; हो चुका ; बीता हुआ ; भूतकाल ; हुआ होना ; प्रयत्नशील ; existed ; activated ; departed ; past tense ; death ; already established ; made ; done {inflow ; outflow ; self flow (thinking)} by the ASUR.
ढ़् ḌH	भूतकालीन सत् में स्थान उपलब्धता ; स्थापित में सीमितता ; प्रवृत्त हो चुके में सीमितता ; भूतकाल में सीमितता ; परिणाम ; limitations in 'Ḍ' ; stopped ; not made.
ड़् Ṛ	बीत चुकी हुई, प्रवृत्त होती हुई, स्थायित्व बीत चुका 'ड' में निरन्तरता ; already established ; departed ; broken ; continue of 'Ḍ' ;
ण् Ṇ	प्रवृत्त (अन्तःगति, बाह्यगति, स्वगति) करने की इच्छा ; कामना ; फल की इच्छा ; un-activated ; eager to occupied ; eager to activate {inflow ; outflow ; selfflow (thinking)} ; by the ASUR.
त् T	ऋषि में गन्धर्व द्वारा उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x (गुण ; गति ; द्रव्य)} का प्रस्तुत उन्मुख/प्रस्तुत हो रहा ; भाव ; निवेदन ; towards offering the available {(display ; appearance ; charge) x (properties ;

	movement ; substance)} by the GAṄDHARV in the ṚṢI
थ् TH	'त' की सीमितता ; प्रस्तुत उन्मुख न हो रहा ; संग्रह उन्मुख ; ठहर रहा ; स्थित उन्मुख ; स्थित रह रहा उन्मुख ; सीमित उन्मुख ; पूर्वस्थापित ; towards keeping (not to surrender).
द् D	ऋषि में गन्धर्व द्वारा उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} की प्रस्तुति ; प्रस्तुत किया हुआ ; available {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} offered by the GAṄDHARV in the ṚṢI
ध् DH	'द' में सीमितता ; जमाव ; धारित ; निधार्रित ; अवधारणा ; hold ; not to offer ` D' ; not to remove ; pasted ; biased.
न् N	ऋषि द्वारा मंत्र (तर्क ; नाम ; विश्वास) में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x (गुण ; गति ; द्रव्य)}को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक ; क्रिया ; रिक्तता ; पौरुष ; 'द' की रिक्तता ; प्रस्तुति को प्राप्ति के लिये उत्सुक ; क्रियोत्सुक ; eager to acquire/inhere the available {(display ; appearance ; charge) X (properties ; movement ; substance)} in the code (logic ; identity ; belief) ; empty ; manliness ; effort ; action ; full of PURUṢ etc. by the ṚṢI.
प् P	ऋषि द्वारा मंत्र (तर्क ; नाम ; विश्वास) में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x (गुण ; गति ; द्रव्य)} का सशर्त बन्धनात्मक / सुरक्षात्मक सतर्क अंगीकृत उन्मुख ; अंगीकृत हो रहा ; अनुमोदन ; towards approving ; supporting ; pleasing ; adopting ; bounding ; securing ; acquiring the available {(display ; appearance ; charge)x(properties ; movement ; substance)} in code {(logic ; code ; belief) by ṚṢI;
फ् PH	ऋषि द्वारा मंत्र {तर्क ; नाम ; विश्वास} में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x (गुण ; गति ; द्रव्य)}का {बिना शर्त ; अपरीक्षित ; अबन्धित ; अनियन्त्रित ; बिना तर्क} अनुमोदन ; अंगीकरण उन्मुख / हो रहा ; towards {unbounded ; unconditional ; unchecked } acquiring the available {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} in the code {(logic ; code ; belief) by the ṚṢI;
ब् B	ऋषि द्वारा मंत्र (तर्क ; नाम ; विश्वास) में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} का सशर्त अंगीकरण ; बन्धनात्मक अंगीकरण ; सुरक्षात्मक

	अंगीकरण ; समाहित ; चयनित ; सजा अंगीकृत अवधारणा ; विश्वास आदि ; influence ; secured ; confined ; restricted ; check ; curb ; adopted ;protection;repression ; selected ; acquired the available {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} in the code {logic ; code ; belief} by the ṚṢI.
भ् BH	ऋषि द्वारा मंत्र {तर्क ; नाम ; विश्वास} में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} का बिना शर्त ; स्वच्छन्द ; अ–बन्धित ; अ–सुरक्षित अंगीकरण ; independent ; un-bound (free) and un-secured unprotected acquired (as above) by the ṚṢI.
म् M	गन्धर्व द्वारा उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} को ऋषि के मंत्र {तर्क ; नाम ; विश्वास} में प्रस्तुत करने के लिये उत्सुक ; संग्रह ; द्रव्य ; होना ; अंगीकरण हीनता ; अनंगीकृत ; अंगीकृत होने के लिये उत्सुक ; eager to offer self ; substance ; unapproved ; stored ; full of PRAKṚTI ; being eager to offer available {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} in the code {logic ; code ; belief} of the ṚṢI by the GAṄDHARV.
य् Y	प्रत्यक्ष ; इस जैसा ; प्रत्यक्ष होता सत् ; visible existent ; visible before the eye ; extroverted ; kept outside ; apparent ; observable ; exposed existent ; this ; quantum of visible.
व् V	छिपाव ; परोक्ष ; छिपा सत् ; सूत्रात्मक ; उस जैसा ; स्वभाव ; अनिश्चित ; in-visible existent ; hidden existent ; introverted existent ; kept inside existent ; non-apparent existent ; that ; quantum of hidden.
र् R	अंगीकृत एकाग्र ; प्रज्ञात्मक ; सुकड़ना ; पतलापन ; संलिप्त ; ध्यान ; एकाग्र ; प्रवाह ; विस्तारविहीन ; अक्रिय ; आकर्षण ; involve in ; acquired/ inhere concentration ; logical ; fineness ; flow (quantum of concentration) ; intelligence ; pro-centre ; quantum acquireability ; acquiring in pro centre with flow of concentrated direction.
ल् L	उपलब्ध विस्तार ; विरल ; विकेन्द्रित ; विहंगम ; एकाग्र विहीन ; विस्तरित उपलब्धता ; क्रियान्विती ; विकर्षण ; अर्पित भावना ; available expansion ; de-centralize ; spreading ; quantum of GAṄDHARV ; expansion ability ; outflow ; off-centre ; result ; offered emotions ; devotion

	; quantum of offer-ability ; yield.
र् RA	स्वकेन्द्रित ; स्वप्रज्ञित ; के द्वारा ; inner concentration ; inner intellect ; by the -…. ; continuity ; happening to existence.
ऱ AR	बाह्यकेन्द्रित ; बाह्यप्रज्ञित ; के द्वारा ; outer concentration ; outer intellect ; by the -….
ऱ् AṚ	अन्तःकेन्द्रित ; अन्तःप्रज्ञित ; के द्वारा ; self concentration ; self intellect ; by the ……
स् S	व्यक्त ; उपलब्ध ; स्पष्टता स्वीकृति ; स्थूल वैविधिक उपलब्धि ; साथ ; जाना हुआ ; expression ; available ; expressed ; discernible ; along with ; analyzed acceptation ; known ; physical discernible achievement ; understand ; apparent ; was-power.
श् Ś	माना हुआ ; उपलब्ध ओजस ; संस्कार ; व्यतीत ; उपलब्ध जीवन्त ; जीवन्त अनुभूति ; available livingness ; passing off energies ; making habit ; perception believing ; feelings ; perceptions feeling ; is-power.
ष् Ṣ	संवेग ; व्याप्त ; कामवेग ; इच्छा शक्ति ; कामातुर ; मात्रात्मक ; forcing ; pervading the desiring ; will power.
ह् H	सत् की सीमा से बाहर ; असत् में स्थान उपलब्धता ; सत्ता से बाहर निकल कर असत् में जाना ; मृत्यु ; स्थूल उपलब्धता ; मूर्त रूप ; मात्रात्मक ऊर्जा ; हो चुका ; अकर्मण्य ; समर्पित ; भौतिक ; पूर्ण व्यय ; अन्त ; गायब ; provision of the place for specific purpose in ASAT (physical world) ; energy quantum ; physical ; death ; coming out from the object ; lost ; end.
क्ष् KṢ	योग्यता ; ability.
त्र् TR	असुरक्षा ; प्रकृति द्वारा विसर्जन ; surrender by the nature.
ज्ञ् JÑ	प्राकट्य ; प्रादुर्भाव ; evolve.

14.2 व्यंजन के साथ संयोजित स्वर – VOWELS ALONGWITH CONSONANTS

हिन्दी ध्वनियां DIACRITICAL MARK OF HINDI	उनके अन्तर्निहित भाव Meanings of sounds
ः ःA	व्यंजन का अस्तित्व ; existence of consonant.
ःा ःĀ	व्यंजन की सत्ता ; हो रहा की जगह कर रहा ; कर्ता भाव ; {entity ; establishment ; unit ; doing in place of being} of consonant.
ःि ःI	प्रत्यक्ष व्यंजन ; व्यंजन का प्रत्यक्ष ; बाह्यस्थित व्यंजन ; सम्मुख व्यन्जन ; visible consonant ; out-exist consonant ; extrovert consonant ; and other towards consonants
ःी ःĪ	प्रत्यक्ष होता हुआ व्यंजन ; बाह्यमुखी होता हुआ व्यंजन ; निरन्तर क्रियान्वित व्यंजन ; visualizing consonant ; continue exposing consonant ; executing-out consonants.
ःु ःU	अन्तर्मुखी व्यंजन ; अन्तःस्थित व्यंजन ; व्यंजन का छिपाव ; inner-exist consonant ; introvert consonant ; hidden consonant ; inner moving constant.
ःू ःŪ	विलीन होता हुआ व्यंजन ; अन्तःस्थित होता हुआ व्यंजन ; inner-hiding-consonant ; continuous inner moving consonant ; vanishing consonants.
ःे ःE	इंगित व्यंजन ; व्यंजन की इस दिशा में ; प्रत्यक्ष में व्यन्जन का अस्तित्व /सत् ; indicated consonant ; in the indicated direction of the consonant ; existence of consonant in visible.
ःै ःAI	अस्तित्व/सत् में व्यन्जन का प्रत्यक्ष ; visible consonant in existence /existent.
ःो ःO	व्यंजन की उस (परोक्ष/छिपी) दिशा में ; छिपाव में व्यंजन का अस्तित्व/सत् ; in the direction of the consonant ; existence in hidden

	consonant.
◌ौ ◌AU	अस्तित्व/सत् में व्यन्जन का छिपाव ; hidden consonant in existence/existent.
◌ृ(ऌ) ◌R̤	बाह्य भावना व्यन्जन ; बाह्य विस्तारत्व व्यन्जन ; emotion presenting ability of consonants ; out expansion ability of the consonant ; by the consonants.
◌ृ(ॠ) ◌R̤	अन्तः प्रज्ञितत्व व्यंजन ; अन्तः केन्द्रितत्व व्यंजन ; acquiring concentration ability of consonant ; by the consonants ; property of being continue in one direction
◌ं ◌AṄ	व्यंजन का कामोत्सुक ; उदीप्त उत्सुक ; प्रदीप्त उत्सुक ; भावोत्सुक ; desiring consonant
◌ः ◌H̤	स्व–प्रेरित व्यंजन ; executing ability of consonant ; by the consonants ; continuity in consonant.

14.3 अन्य संकेत – OTHER INDICATIONS

अॅ	व्यंजन को अन्दर छिपाने वाला सत् ; existent hiding the constant inside.
ऑ	व्यंजन को अन्दर छिपाने वाली सत्ता ; entity hiding the consonant inside.
आँ	तमस् सत्ता ; *tamas satta* ; stimulus entity.
क्	प्रश्नात्मक ; स्पष्टोन्मुखात्मक ; question ; clarifying.
क	ऊर्जित होने में अवरोध ; hindrance in getting energy.
का	कर्म सम्बन्धित ; स्पष्ट कर रही ; चेतनता ; कर्म ; action relating; making clear ; consciousness ; execution ; relating.
कि	पहचान उन्मुख ; towards resembling ; towards recognizing.
कु	अन्धत्व ; चेतना विहीन ; अविज्ञ उन्मुख ; अबोध उन्मुख ; वैविध्यता में छिपाव का विषय ; अन्तःस्थित चेतन ; अवधारणा ; blind ; not knowing ; subject hiding.

कू	ज्ञात ; fixed.
के	सम्बन्ध सूचक ; indicated relationship.
क्रे	तीव्र चेतना ; indicating conscious.
क्री	चीख ; cry.
खु	जिद्दी ; दृढ़ता ; blindly ; not understanding.
खे	प्रत्यक्ष में चेतन के लिये उपलब्ध स्थान का अस्तित्व ; existence of available place for conscious in the visible.
घु	निश्चय
च	चेतन की अनुपलब्धिता ; lack of conscious.
चा	जीवन्त अर्जित कर रही ; पुनः पुनः जीवन्त उपलब्ध ; again and again achieving the liveliness.
र्च	प्रयत्न ; effort to achieve.
चे	जीवन्त संचयन ; indicated achieving the liveliness.
चै	प्रफुल्लित हो रहे ; getting happiness.
ज़	व्यक्त जीवन्त
तु	प्राप्त उन्मुख ; towards getting yield.
दि	प्रकाशित करने बाली ; light.
नु	प्राप्त उत्सुक ; eager to get yield.
प्रे	दबाब बनाना ; pressure.
बा	अवधारणा ; पूर्वाग्रह ; affirmation ; biased ; prejudiced.
टा	प्रवृत्त कर रहे ; effort in occupation.
डा	स्थापित भूत सत्ता ; established past entity.
ठा	निश्चित ; no movement ; ascertained.
रू	अन्तर्मुखी सान्लिप्तता ; introvert involve.
रा	सम्मोहन ; मगन ; hypnotism.
रे	आकर्षण ; attraction ; flow in a concentrated direction.
रू	विवेक–विहीन ; lack of accepting the concentration.

लु	अन्तर्स्थित विस्तारित होता हुआ ; look.
ली	निरन्तर विस्तार होता हुआ ; continue expanding.
ले	विकर्षण ; repulsion.
सु	सुनना ; देखना ; introvert.
शु	संस्कार ; learned phenomenon.
ष	इच्छा वेग ; will power.
हा	मृत्यु की सत्ता ; entity of death.

14.4 I P A SOUNDS - आइ पी ए ध्वनियां

I p a sounds हिन्दी ध्वनि	हिन्दी भावार्थ ; English meanings
ə अ	अस्तित्व ; अभावात्मक सत् ; पहले से ; existence ; already.
ɑ अा	सत्ता ; unit ; object ; entity.
ɑː आ	सत्ता के द्वारा ; सत्ता की प्रज्ञा ; सत्ता की निरन्तरता ; by the entity ; viewing of entity ; continuity of entity ; intellect of entity.
ɪ इ	प्रत्यक्ष ; सम्मुख ; in view of ; visible ; noticeable ; in front of ; presenting ; display.
iː ई	बाह्यप्रत्यक्ष करता हुआ ; निरन्तर प्रत्यक्ष करता हुआ ; सम्मुख होता हुआ ; continue exposing ; go with ; making ; being noticeable ; continue executing, continue experiencing,
ʊ उअ्	अन्तर्मुखी सत् ; अन्तःस्थित सत् ; की दिशा में सत् ; existent in the direction of ; existent exist inside ; directional existent
ʊː ऊअ्	अन्तःस्थित होता हुआ सत् ; की दिशा में होता हुआ सत ; continue inner exist existent ; existent continue in the direction of.
u उ	अन्तः स्थित ; अन्तर्मुखी ; छिपे सत् ; introvert ; inner ; hidden ; accepting inside.
uː	छिपे सत् में होती हुई ; अन्तःस्थित होता हुआ ; अन्तर्विलीन होता हुआ ;

ऊ	अन्तः स्वीकृत होता हुआ ; being introverting ; being inner hiding ; vanishing ; disappearing ; by inner accepting.
e ए	इंगित ; बाहर प्रत्यक्ष होने वाला ; प्रत्यक्ष में अस्तित्व ; visualized as indicated ; visualized outside ; perceiving outside as indicated ; indicated ; expose towards view ; existence of existent in visible.
eː ए	बाहर चेतनात्मक प्रत्यक्ष कराता हुआ ; इंगित प्रत्यक्ष करती हुई ; intellectually visualizing ; indicated visualizing continue
æ, ɛ ऐ	अस्तित्व में सत् का प्रत्यक्ष ; प्रत्यक्षित सत् ; visible in existence ; displaying existent in existence.
o ओ	उपलब्ध के सत् में छुपा ; उपलब्ध की छिपी दिशा से/ छिपी दिशा में ; सत् के छिपाव की दिशा में ; available/existence in hidden direction of ; available from the hidden existent ; available in the direction of.
oː ओ॑	उपलब्धता की दिशा में करता हुआ ; छिपी हुई सत् में से निरन्तर उपलब्ध ; continue available from the hidden existent.
ɔ ऑ	सत्ता के अन्तः का होआ हुआ ; सत् को अन्दर छिपाने वाली सत्ता ; छिपे सत् में से उपलब्ध ; Entity hiding the existent inside ; available from the hidden existent.
ɔː ऑ॑	सत्ता के अन्तः का होता हुआ ; सत् को निरन्तर अन्दर छिपाने वाली सत्ता ; सत्ता के अन्तः की तरफ ; entity continue hiding the existent inside ; by the existent hidden inside the entity ; continue available from the hidden existent.
a आइ	सता के प्रत्यक्ष ; सता ; सत् के प्रत्यक्ष ; in view of entity ; entity ; visible entity ; visible existent ; in view of existent etc
aː आई	सता के द्वारा प्रत्यक्ष ; सता का निरन्तर प्रत्यक्ष ; सता की निरन्तरता ; by the entity ; intellectual view of the entity ; in the continue view of entity /existent.
ɜː अ॑	सत् के द्वारा होता हुआ ; अस्तित्व के द्वारा ; प्रज्ञात्मक ; by the existent ; glory ; perceived entity ; by the existence ; intellectual

ɜ:(r) अ्र्	प्रभावित सत् ; influenced existent
ʌ अय्	स्वयम् में बाहर होते हुए/आते हुए ; अप्रत्यक्ष से प्रत्यक्ष ; from self to outside ; from indirect to direct
ɒ ऑव्	अन्दर छिपाने वाले की दिशा में ; सीमा के अन्दर रहने वाला ; hiding inside ; within limit
b ब्	ऋषि द्वारा मंत्र (तर्क ; नाम ; विश्वास) में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} का सशर्त अंगीकरण ; बन्धनात्मक अंगीकरण ; सुरक्षात्मक अंगीकरण ; समाहित ; चयनित ; सजा अंगीकृत अवधारणा ; विश्वास आदि; influence; secured; confined; restricted; protected ;check ; curb ; repression ; selected ; adopted ; acquired the availables {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} in the code {logic ; code ; belief} by the 'Acquire-ability'
d ड्	प्रवृत्त (अन्तःगति ; बाह्यगति ; स्वगति) का प्रवृत्त हो चुका ; स्थापित ; भूतकाल सीमितता में ; बीता हुआ ; ; हुआ होना ; प्रयत्नशील ; existed ; past tense ; death ; established ; made ; existed ; achieved ; old ; pasted ; had ; calamity ; happened ; done ; activated {inflow ; outflow ; self flow(thinking)} by the 'occupier'
f फ्	ऋषि द्वारा मंत्र {तर्क ; नाम ; विश्वास} में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} का {बिना शर्त ; अपरीक्षित ; अबन्धित ; अनियन्त्रित ; बिना तर्क} अनुमोदन; अंगीकरण उन्मुख/होरहा;towards {unbounded;unprotected ; unconditional ; unchecked } acquiring the availables {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} in the code {(logic ; code ; belief) by the 'Acquire-ability'
g ग्	देव {(शुद्धता ; विश्लेषित ; विवरण) x (ज्ञान ; क्रिया ; भोग)} का होआ हुआ स्पष्ट ; स्पष्ट बोध ; भूतकाल में स्पष्ट ; वृतान्त ; स्पन्द विहीन ; 'ज' से अभावित ; सत्य ; आदि ; got the understandable ; clear ; analyzed ; clear knowledge ; feature ; available variations ; description ; evident ; manifest ; available clarity {(knowledge ; action ; experiences) x (accuracy ; analyzed ; details)} by the 'Analyzing-ability' and non-

	liveliness etc.
h ह्	सत् की सीमा से बाहर ; असत् में स्थान उपलब्धता ; मृत्यु ; स्थूल ; समर्पित ; उपलब्धता ; मूर्त रूप ; मात्रात्मक ऊर्जा ; हो चुका ; अकर्मण्य ; भौतिक ; पूर्ण व्यय ; अन्त ; गायब ; provision of the place for specific purpose in ASAT (physical world) ; physical ; death ; lost ; coming out from the object ; energy quantum ; settled in to fixed shapes ; killing ; move apart ; happened ; end.
j यज्	प्रत्यक्ष स्वीकृत ; viewing/displaying acceptation ; observable.
k क्	देव {(शुद्धता ; विश्लेषित ; विवरण) x (ज्ञान ; क्रिया ; भोग)} का स्पष्ट हो रहा ; स्पष्ट उन्मुख ; विश्लेषणोन्मुख ; वैविध्य चेतना ; संचेतक ; विषय ; चेतन ; आनन्द विहीन ; सावधानी ; जीवन्त विहीन ; towards analyzing ; aware ; clarifying ; distinguishing ; conscious ; explaining {(knowledge ; action ; experiences) x (accuracy ; analyzed ; details)} *by the* 'Analyzing-ability' ; still un-analyzed ; hurting ; question mark ; opposite to liveliness. ;
l ल्	उपलब्ध विस्तार ; विरल ; विकेन्द्रित ; विहंगम ; एकाग्र विहीन ; विस्तरित उपलब्धता ; क्रियान्विती ; विकर्षण ; अर्पित भावना ; available expansion ; de-centralize ; spreading ; expansion ability ; outflow ; off-centre ; result ; offered emotions ; devotion ; quantum of offer-ability ; getting expansion ; yield ; lack of concentration.
m म्	उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} को ऋषि के मंत्र {तर्क ; नाम ; विश्वास} में प्रस्तुत करने के लिये उत्सुक ; संग्रह ; द्रव्य ; होना ; अंगीकरण हीनता ; अनंगीकृत ; अंगीकृत होने के लिये उत्सुक ; unapproved ; stored ; being eager to offer the availables {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} in the code {logic ; identity ; belief} of the 'Acquire-ability' by the 'Offer-ability'; matter ; being.
n न्	ऋषि द्वारा मंत्र (तर्क ; नाम ; विश्वास) में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} को अंगीकृत करने के लिये उत्सुक ; क्रिया ; रिक्तता ;

	पौरुष ; 'द' की रिक्तता ; प्रस्तुति को प्राप्ति के लिये उत्सुक ; क्रियोत्सुक ; eager to acquire/inhere the available {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} in the code (logic ; identity ; belief) ; empty ; manliness ; effort ; action ; accepting ; unavailable ; inbuilt logic and belief ; eager to collect , eager to acquire ; eager to bound ; eager to protect.
ŋ ङ्	ऊर्जपूर्णता ; अनुपलब्ध स्पष्ट ; स्पष्टोत्सुक ; lack of clarity ; eager to be clear ; full of courage ; full of energies ; full of strength ; full of control ; full of power ; full of balance .स्पष्ट होता / करता हुआ ; towards getting clear (accuracy ; analyzed ; detail).
p प्	ऋषि द्वारा मंत्र (तर्क ; नाम ; विश्वास) में उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} का सशर्त बन्धनात्मक/सुरक्षात्मक सतर्क अंगीकृत उन्मुख ; अंगीकृत हो रहा ; अनुमोदन ; towards providing conditional acceptance ; supporting ; pleasing ; adopting ; bounding ; securing ; acquiring the available {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)} in code {(logic ; code ; belief) by the 'Acquire-ability';
r र्	अंगीकृत एकाग्र ; प्रज्ञात्मक ; सुकड़ना ; पतलापन ; संलिप्त ; ध्यान ; एकाग्र ; प्रवाह ; विस्तारविहीन ; अक्रिय ; आकर्षण ; involve in ; fineness ; acquired/ inhere concentration ; logical ; flow (quantum of con-centration) ; intelligence ; pro-centre ; quantum acquire -ability ; acquiring in pro centre with flow of concentrated direction.
s स्	व्यक्त ; उपलब्ध ; स्पष्टता स्वीकृति ; स्थूल वैविधिक उपलब्धि ;जाना हुआ ; साथ ; expression ; available ; expressed ; discernible ; along with ; analyzed acceptation ; known ; physical discernible achievement ; understand ; apparent ; was-power ; exposed ; available relativity; appearance ; present.
ʃ श्	माना हुआ ; उपलब्ध ओजस ; संस्कार ; व्यतीत ; उपलब्ध जीवन्त ; जीवन्त अनुभूति ; available livingness ; passing off energies ; making habit ; perception believing ; is-power. feeling liveliness ;

	courage ; energy ; faith ; making habit ; emotional existence.
t ट्	प्रवृत्त (अन्तःगति, बाह्यगति, स्वगति) में (स्थापन / विस्थापन) उन्मुख ; वर्तमान काल ; होते होना ; संयोजित उन्मुख ; प्रवृत्त हो रहा ; प्रवृत्त हो चुके ; activating ; move on ; be occupied with ; continue ; departing ; going forward ; arise from ; be produced ; commence ; be active {inflow ; outflow ; selfflow (thinking)} by the 'Occupier'; thrust ; movement ; quantum ; tendency ; quick motion ; acceleration ; departing.
tʃ च्	पितृ द्वारा जीवन्त {(ऊर्जित ; दृढ़ता ; शक्ति) x (ज्ञान ; क्रिया ; भोग)} उन्मुख ; जीवन्त हो रहा ; प्राचेतस् ; जीवन्त चेतना उन्मुख ; अस्तित्व उन्मुख ; जीवन्त लहर ; पुनरावृत्ति ; जीवन्तता उन्मुख ; पुनः पुनः ; स्पन्द उन्मुख ; strengthening ; getting courage ; liveliness wave ; liveliness achieving ; charging ; not clarifying. towards deriving liveliness {(knowledge ; action ; experience) x (energetic ; strength ; power)} ; by the 'Liveliness-ablilty'
θ थ्	'त' की सीमितता ; प्रस्तुत उन्मुख न हो रहा ; संग्रह उन्मुख ; सीमित उन्मुख ठहर रहा ; स्थित उन्मुख ; स्थित रह रहा उन्मुख ;पूर्वस्थापित ; अविद्यमान प्रस्तुत हो रहा towards keeping ; towards not providing ; towards limitations to 'carry on' ; towards stopping.
ð द्	ऋषि में गन्धर्व द्वारा उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} की प्रस्तुति ; प्रस्तुत किया हुआ ; available {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)}offered by the 'Offer-ability'
v फ़्व्	बिनाशर्त अनुमोदित अन्दर छिपा सत् ; hidden existent ; kept inside unconditionally approved ; faith.
w ईउ	में छिपते हुऐ का व्यक्त ; display the hidden ; exposing the hidden.
z ज़ स्ज़्	व्यक्त होती जीवन्तता ; आनन्दानुभूति ; शान्ति ; आसान ; expressing ; liveliness ; happiness ; pleasure ; calm ; easy ; expressible.

ʒ श्ज्	अनुभूतित जीवन्तता ; अधिकार ; ऊर्जता ; feeling liveliness ; right ; energetic.
dʒ ज	दृढता ; शक्ति ; धेर्य ; नियन्त्रण ; स्थायित्व ; बल ; मजबूती ; power ; strength ; control ; firmness ; steadiness ; hardness ; stable
t̂ त	उपलब्ध {(प्रदर्शन ; प्राकट्य ; आवेश) x(गुण ; गति ; द्रव्य)} का प्रस्तुत उन्मुख /प्रस्तुत हो रहा ; भाव ; निवेदन ; towards offering the available {(display ; appearance ; charge) x (properties ; movement ; substance)}
ʊ व	छिपाव ; परोक्ष ; छिपा सत् ; सूत्रात्मक ; उस जैसा ; स्वभाव ; अनिश्चित ; in-visible existent ; hidden existent ; introverted existent ; kept inside existent ; non-apparent existent ; that ; quantum of hidden.

14.5 PHILOSOPHICAL WORDS - दार्शनिक शब्द ध्वनियाँ

हिन्दी के तकनीकी दार्शनिक शब्दों की अंग्रेजी में व्याख्या अत्यन्त दुरूह है। विषय को अंग्रेजी में समझने के लिये हमने हिन्दी शब्दों की जो अंग्रेजी रूपान्तरण किया है, वह हमारे प्रयास में निकटतम है। लेकिन फिर भी पाठक अंग्रेजी के किसी अन्य निकटतम शब्द का उपयोग करें तो यह ग्रन्थ के लिये उपयोगी ही होगा।

It is very difficult to explain the Hindi technical philosophical words in exact English version. To understand the subject in English, we have taken the nearest English translation of the words. But if in any case, the reader finds any English appropriate word, which will be welcome. The following definitions are explaining the meaning for which we have used a particular word.

SN. DIACTRICAL MARKS (हिन्दी) {Universal Theory of Existence} – English meaning हिन्दी अन्तर्निहित भाव।

1. BRAHM (ब्रह्म) {Ultimate} - The Universal Theory Of Existence ;

अस्तित्व का सार्वभौमिक समग्र सिद्धान्त।

2. PRAKṚTI (प्रकृति) {offering-ability} - The appearance part of the existence, having un-supported vibrations, un-analyzed variations, un-established matter, keen to be {supported, analyzed, and established} in the 'PURUṢ'(acquiring-ability) ; अस्तित्व का रूपात्मक भाव जो कि अनालम्बित स्पन्दन, अविश्लेषित वैविध्यता, अ–स्थापित पदार्थ से युक्त है तथा पुरुष के आलम्बन, विश्लेषण में स्थापित होने करने को उत्सुक है।

3. PURUṢ (पुरुष) {acquiring-ability} - Identity part of the existence, having absence of vibrations, variations, and matter, and eager to provide support, to analyze and to establish the available from ; 'PRAKṚTI' अस्तित्व का नामात्मक भाव जो कि स्पन्दन, वैविध्यता के पदार्थ से रिक्त है तथा आलम्बन, विश्लेषण में स्थापित करने के लिये उत्सुक है।

4. VĀK (वाक्) {bright star} - Indeclinable part of the BRAHM, which (a) is responsible for providing variations to be used by VIJÑĀN for analysis and (b) to be used by PRĀṆ to form appearance ; अव्यय का वाङ्मय कोश जो (a) विज्ञान को विश्लेषण के लिये वैविधिता प्रदान करता है तथा (b) प्राण के साथ समायोजित हो प्राकट्य रूप को प्रस्तुत करता है।

5. ĀNAṄD (आनन्द) {dark hole} - Indeclinable parts of the BRAHM, (a) which provide support to the submitted vibration to derive liveliness and (b) to provide support to the analyzer, to form the identity ; अव्यय का आनन्द मय कोश जो (a) प्राण से समर्पित स्पन्दन को अनुभूति आलम्ब प्रदान कर जीवन उत्पन्न करता है व (b) विज्ञान द्वारा उत्पन्न तर्को को आश्रय प्रदान कर नाम को (Code) उपस्थित कर देता है।

6. PRĀṆ (प्राण) {dark star} – Indeclinable parts of BRAHM, which (a) provide un-supported vibration to the VĀK, to form the appearance of existent and (b) submit the same to ĀNAṄD to derive the liveliness. अव्यय का प्राणमय कोश (a) आनन्द में स्पन्द समर्पित कर जीवन्त को विकसित करता है तथा (b) वाक् में स्पन्दन समर्पित कर सत् के प्राकट्य रूप का संयोजन करता है।

7. VIJÑĀN (विज्ञान) {bright hole} -Indeclinable part of BRAHM, which

(a) provides consciousness for analyzing the variations from VĀK and (b) provide the identity (established logic, code) due to support by the ĀNAṄD. अव्यय का विज्ञानमय कोश (a) वाक् से उपलब्ध विविधिता में चेतना को उपलब्ध कराता है तथा (b) आनन्द में उपलब्ध की स्वीकृति में नाम (Code) को उपलब्ध कराता है।

8. MAN (मन){activator} - Indeclinable part of BRAHM. This provides interaction between other four. अव्यय का मनोमय कोश, जो बाकी चारों में अन्तर्प्रक्रिया का कारण बनता है।

9. SAT (सत्) {past existent} - Existent can be defined as the entity of the lower world. This is the raw material for any existence. Whatever is being in-flowed, offered, or kept inside, is called existent, which is made of "Knowledge, Action & Experience". The 'available' offered by the 'star', when is approved by the 'hole', that 'available' can be called as 'existent'. Existent, always in past, the base of any object. सत् सम्बध्य लोक की सामग्री का स्वरूप है तथा निम्नतर लोक की सत्ता है। सम्बध्य लोक की सत्ता सत् का अन्तर्गमन, बहिर्गमन व स्वगमन कर अपने जीवन को प्रमाणित करती है। अस्तित्व में उपलब्धता अस्तित्व, भूतकाल में स्थित है।

10. RAJAS (रजस्) {present existent} - Involving in execution, in all sense. always in present प्रवृत्त, वर्तमान काल में स्थित।

11. TAMAS (तमस्) {future existent} - Eager to execute, feeling of unexecuted, always in future. प्रवृत्त उत्सुक, अप्रवृत्त, भविष्य काल में स्थित।

12. NĀM (नाम) { Acceptability} - Identity ; परिचय ।

13. RŪP (रूप) {Appearance} - Appearance ; दृष्टिगोचर अनुभूति।

14. ĀYU (आयु) { period } - Cycle of SOM ; सोम की आवृत्ति।

15. SOM (सोम) {continuity} - Cycle of the KĀL (time) available at every place of the ĀTMSATTĀ. "- -DEV-> ṚṢI -> PITṚ -> GAṄDHARV ->DEV -> ṚṢI "- - -" is the 'inflow cycle'. "- - GAṄDHARV->PITṚ –> ṚṢI –> DEV -> GAṄDHARV- - - - -" is the 'outflow cycle' ; आत्म सत्ता में काल की उपलब्धता प्रत्येक स्थान पर आवृत्तिमय होकर होती है। "- - - - देव–>

ऋषि–> पितृ–> गन्धर्व–>देव- - -", यह अन्तर्गमन आवृत्ति है। "- - - - गन्धर्व–> पितृ–>ऋषि –> देव–>गन्धर्व- - -", यह बहिर्गमन आवृत्ति है।

16. DEV **(देव) {bright}** –Eager to analyze the clarity (ŋ)/towards clarity (k)/clear (g) the analyzed {knowledge, action, and experience} with the help of {observed unification (VIJÑĀN)+ demonstrated variations (VĀK)= analyzed clarity} ; {दर्शनोन्मुख एकत्व (विज्ञान) + प्रदर्शनान्मुख वैविध्य (वाक्) = विश्लेषित बोध} के द्वारा स्पष्ट उत्सुक **(ङ)**/स्पष्ट होरही **(क)** /स्पष्ट होचुकी **(ग)** विश्लेषित बोध की स्पष्टता (ज्ञान क्रिया व भोग)

17. PITṚ **(पितृ) {dark}** – Eager to derive liveliness (ɲ) /towards liveliness (tʃ)/livingness (z,ʒ,dʒ) of the derived {energetic, power & strength } with the help of {supported rigidness (ĀNAṄD) + offered vibrations (PRĀṆ) = derive liveliness} ; {दृढ़ आश्रय (आनन्द) + समर्पित स्पन्दन (प्राण) = विकसित जीवन्तता} के द्वारा जीवन्त होने को उत्सुक **(ञ)**, जीवन्त हो रही **(च)**, जीवन्त होचुकी **(ज)** द्वारा विकसित जीवन्तता (ऊर्जित, शक्ति व सुदृढ़ता)

18. ṚṢI **(ऋषि) {hole}** – Eager to be acquired (m), not acquired (m), towards getting acquire (p), acquired (b) to from the code (logic, identity, belief), with the help of { rigid support (ĀNAṄD) + analyzer (VIJÑĀN) = identity (code)} ; { आश्रित दृढ़ता (आनन्द) + विश्लेषणोन्मुख एकत्व (विज्ञान) = पद सूत्र का अंगीकरण} के द्वारा अंगीकृत होने को उत्सुक **(म)**, अंगीकृत हो रहा **(प)**, अंगीकृत हो चुका **(ब)** पद–सूत्र (तर्क, मंत्र व विश्वास)

19. GAṄDHARV **(गन्धर्व) {star}** – Making eager to offer, hungry, cannot offer (n) / towards offering (t̤) offered (d̤) the appearance (display, available & charge) to the ṚṢI with the help of {displaying variations (VĀK) + submitting vibrations (PRĀṆ) = emission of appearance} ; {वैविध्य प्रदर्शन (वाक्) +स्पन्द सर्म्पण (प्राण) = अनुभूति विसर्जन} का प्रस्तुत होने को उत्सुक कर रहा **(न)**, प्रस्तुत कर रहा **(त)**, प्रस्तुत किया हुआ **(द)** उत्सर्ग उपलब्ध का रूप (प्रदर्शन, उपलब्धता व आवेश)

20. ASUR **(असुर) {occupier}** - towards occupying time with the help of {clarity + liveliness + acquiring + offering = cycle of SOM} and

occupies time (inflow, out-flow & self flow). The occupier (ASUR) has stimuli to connect the physical world (lower world) by establishing or by destroying ; {विवरण विश्लेषण होता हुआ (मन), जीवन्त उत्पन्न होता हुआ (मन) पद–सूत्र में अंगीकृत होता हुआ (मन) अनुभूति प्रस्तुत करता हुआ (मन) = सोम की आवृत्ति} में प्रवृत्त होता समय (अन्तर्गमित बहिर्गमित व स्वगमित) असुर स्थूल के निर्माण/विध्वन्स में उद्दीप्त रहता है अतः स्थूल के निर्माण/विध्वन्स की इच्छा (प्रवृत्त–उत्सुक) (ण), प्रवृत्त उन्मुख (ट) व प्रवृत्त हो चुका (ड) की प्रक्रिया का जनक है।

21. SATTĀ (सत्ता) **{Entity}** – Part of the existence representing the bodily part of creature. It is just like the brain in the human. Responsible for all activities of mind and storing all memories, but cannot be defined as mind. Without operative mind we cannot define the entity as existence. The Entity is made of 'property, movement & substance' ; जीवित रहने में सक्षम कोई भी संस्था 'सत्ता' कहलाती है। जिस प्रकार मनुष्य का मस्तिष्क जो कि मन के सभी कार्य कलाप में उन्मुख रहता है, पर 'मन' नहीं कहा जाता। सत्ता गुण, गति व द्रव्य से निर्मित जीवित संस्था है।

22. ASTITVA (अस्तित्व) **{Existence}** – When the entity (brain) is super imposed by the life (mind), we call it as 'the existence'. In other word, a person having coma cannot be consider as existence, even if the entity of brain is existed ; सत्ता को जीवत्व की प्राप्ति ही अस्तित्व है। यदि कोई व्यक्ति 'कोमा' में है तो उसकी मनोवैज्ञानिक सत्ता तो अवश्य है परन्तु मनोवैज्ञानिक अस्तित्व नहीं है। यह उदाहरण सत्ता व अस्तित्व के अन्तर को दर्शाता है।

24. MANAN (मनन) **{Self-flow (thinking)}** – Thought process, internal working of the mind ; सत्ता की अन्तः में स्व–स्वीकृत यज्ञ प्रक्रिया।

25. DRAVYĂ (द्रव्य) **{Substance}** – The offered 'display, available and charge' is available for the acquisition, covering the space is called substance ; प्रकृति द्वारा जो प्रदर्शन, उपलब्धता व आवेश को प्रस्तुत कराया जाता है, उसमें स्थान घेरने की संस्था द्रव्य है।

26. SPAṄDAN (स्पन्दन) **{Vibration}** – The word 'vibration' should not

be treated as 'wave'. It's just like 'the shivering' may be due to fear, due to energetic, due to charge, due to unsupported energy. It is just like a 'string' of modern string theory. It is indivisible part of PRAKṚTI; प्रत्येक सत्ता में, उसकी जीवन्तता का आधार स्पन्दन है। हिन्दू वाङ्मय में इसे पावर्ति तथा आधुनिक विज्ञान में हम इसे 'स्ट्रिग थ्योरी' के नाम से जानते है।

27. JĪVAṄT **(जीवन्त)** **{Liveliness}**– Providing power between the vibrating energy and the support. Producing energy, dynamism, drive, force, strength, heartiness, power, energetic in all the three (knowledge, action and experience) ; स्पन्दन (पावर्ति) व आलम्बन (शिव) के प्रणय से उत्पन्न जो भाव प्राकट्य है, जीवन्तता के नाम से जाता है। सत् की स्थापना में जो बल का समावेश है, जिसके बिना बोध, निर्जीव ही रहता है, हम उसे जीवन्तता कह रहे हैं। मूल रूप से यह ऊर्जा, शक्ति व सुदृढ़ता के द्वारा प्रकट होता है।

28. PAD-SŪTR **(पद–सूत्र)** **{Formulation}{identity}** - These are conditions under which 'the hole' acquires the availables. The human body is made under the limitations of the genetic composition in 'dna'(chromosomes), who acquire the 'availables' under their own limitations and forms the human body. In the same way the human brain has certain limitations under which it can perceive any image ; अनन्त प्रकट नहीं हो सकता, उसमें सीमितता ही प्राकट्य का कारण बनती है। इस सीमितता के बाद संस्था में जो गुण गति व द्रव्य की सूत्रात्मक विवेचना रह जाती है उसे पद–सूत्र कह रहे हैं।

29. CETAN **(चेतन)** **{Conscious}** – Distinguishing the variable data of knowledge, action, and experiences. clarifying, detailing, making accurate, explaining, analyzing, and applying logic in the view all are operated by the conscious ; प्रस्तुत सन्दर्भ में चेतना का अर्थ उस सामर्थ्य से है जो वैविधिता का विश्लेषण कर स्पष्ट करने में समक्ष है।

30. PRĀKAṬYA-VSARJAN **(प्राकट्य विसर्जन)** **{Appearance}** – The 'Star' offers displayed variety and surrendering vibrations, forming apprerance. This phenomenan is 'available' to be acquired by the

'Hole' ; गन्धर्व के वैविधिक प्रदर्शन व स्पन्द समर्पण से जो प्राकट्य उपलब्ध हो रहा है, तथा ऋषि द्वारा अंगीकृत होने के लिये आतुर है।

31. BHOG **(भोग) {Experience}** - We have included the words satisfaction, pleasure, quantum. All acts are performed just to fulfill the basic stimulation. The feeling of that fulfilling the stimuli is being called as experience. Any other meaning of the word 'experience' will not applicable to the thesis ; प्रत्येक सत्ता में उसकी जीवन्तता का आधार स्पन्दन है। हिन्दू वाङ्मय में इसे पावर्ति तथा आधुनिक विज्ञान में हम इसे 'स्ट्रिग थ्योरी' के नाम से जानते है।

32. ASAT,STHŪL **(असत् स्थूल) {Physical}** – Our mind first visualizes the properties of an object. When all the properties are visualized, we found the image in the physical form. This 'physical' is a relative term. We are using this term as the one world below the reference world ; निम्नतर लोक में संस्था स्थूल भाव में प्रकट होती है। उपलब्ध वस्तु में से गुण–गति–द्रव्य का ज्ञानात्मक, क्रियात्मक व भोगात्मक बोध को निकालने के बाद जो बचता है वह स्थूल है।

33. AVVAY **(अव्यय) {Indeclinable}** – The Basics of the universe, cannot be destroyed, Basic reasons for every aspect of universe. सृष्टि का मूल कारण जो कभी व्यय नहीं होता तथा सब संस्थाओं में मूल रूप से उपस्थित रहता है तथा उस संस्था की सत्ता, अस्तित्व का मूल कारण बना रहता है।

34. PRADARŚAN **(प्रदर्शन) {Displaying}** - Offer to view the variations, beauty, properties etc. गन्धर्व द्वारा गुणात्मक, गत्यात्मक द्रव्यात्मक वैविधियता का प्राकट्य करना।

35. DARŚAN **(दर्शन) {Visualizing}** - Accepting to analyze ; ऋषि द्वारा गुणात्मक, गत्यात्मक, द्रव्यात्मक वैविधियता को अंगीकृति हेतु स्वीकृत करना।

36. ADVAIT **(अद्वैत) {Universal existence}** - Universal theory of existence ; अस्तित्व का सार्वभौमिक एकत्व आधारित समग्र सिद्धान्त।

37. ANTARGAMAN **(अन्तर्गमन) {Inflow existent}** - The existent coming from outside to inside, inhaling the existent ; सत् का सत्ता के अन्दर प्रवेश।

38. BAHIRGAMAN (**बहिर्गमन**) **{Outflow existent} -** The existent going from inside to outside, exhaling the existent ; सत् का सत्ता से बाहर गमन

14.6 आगे अभी और {NON-ENDING PROCESS….}

This book is just an introduction of the subject. Nature has given us a great present. We should respect it and try to visualize it in deeper sense. The development in this subject may be difficult but not impossible. A time will come when we will able to visualize every sound as because the sound always says something.

प्रस्तुत करने के लिये इतना कुछ होता है परन्तु शब्दों का अभाव व शब्दों में उपयुक्त भावों का अभाव प्रगति में अवरोध बने ही रहते हैं। अनेक स्थानों पर अशुद्धियों की सम्भावना है, परन्तु यह सम्भावना बनी ही रहनी है। एक शब्द का स्वीकृत भाव विभिन्न व्यक्तियों के लिये विभिन्न है। फिर भी प्रयास किया गया है। अंग्रेजी मीमान्सा में यह कठनाई और भी ज्यादा है, कारण स्पष्ट है, अंग्रेजी हमारी अपनी भाषा नहीं हैं। शब्दों का वास्तविक स्वरूप हमारी कल्पना सीमा के बाहर होता है अतः शब्दों को हम जिस रूप में समझते हैं, उसी रूप में व्यक्त करने का प्रयास तो अवश्य करते हैं, परन्तु सफलता सन्दिग्ध ही रहती है।

विषय का विकास असम्भव तो नहीं परन्तु कठिनाई पूर्ण अवश्य है। किसी नये व्यक्ति के लिये ब्रह्म को उल्लिखित रूप में समझना, उसकी समझ स्वीकृति की दिशा पर निर्भर है जिसका समत्व एक संयोग ही हो सकता है।

प्रक्रिया को आगे बढ़ाना युवा वर्ग के लिये ही सम्भव है क्योंकि युवा वर्ग ही अवधारणाओं की न्यूनता व धारित करने के प्रवाह का सघन माध्यम होता है।यह प्रक्रिया किसी भी रूप में आगे बढ़े, ध्वनि को हम और गहराई से समझें, उसकी उपयोगिता को जानें। प्रकृति की अपूर्व नियामत से हम अभी तक अनभिज्ञ रहे हैं। हमारी आन्तरिक हार्दिक इच्छा है कि हमारी एकाग्रता हमें ध्वनि के उस आयाम तक पहुँचादें, जहाँ हमें प्रत्येक ध्वनि कहती हुई सुनाई पड़े, क्योंकि **प्रत्येक ध्वनि कुछ कहती है।**